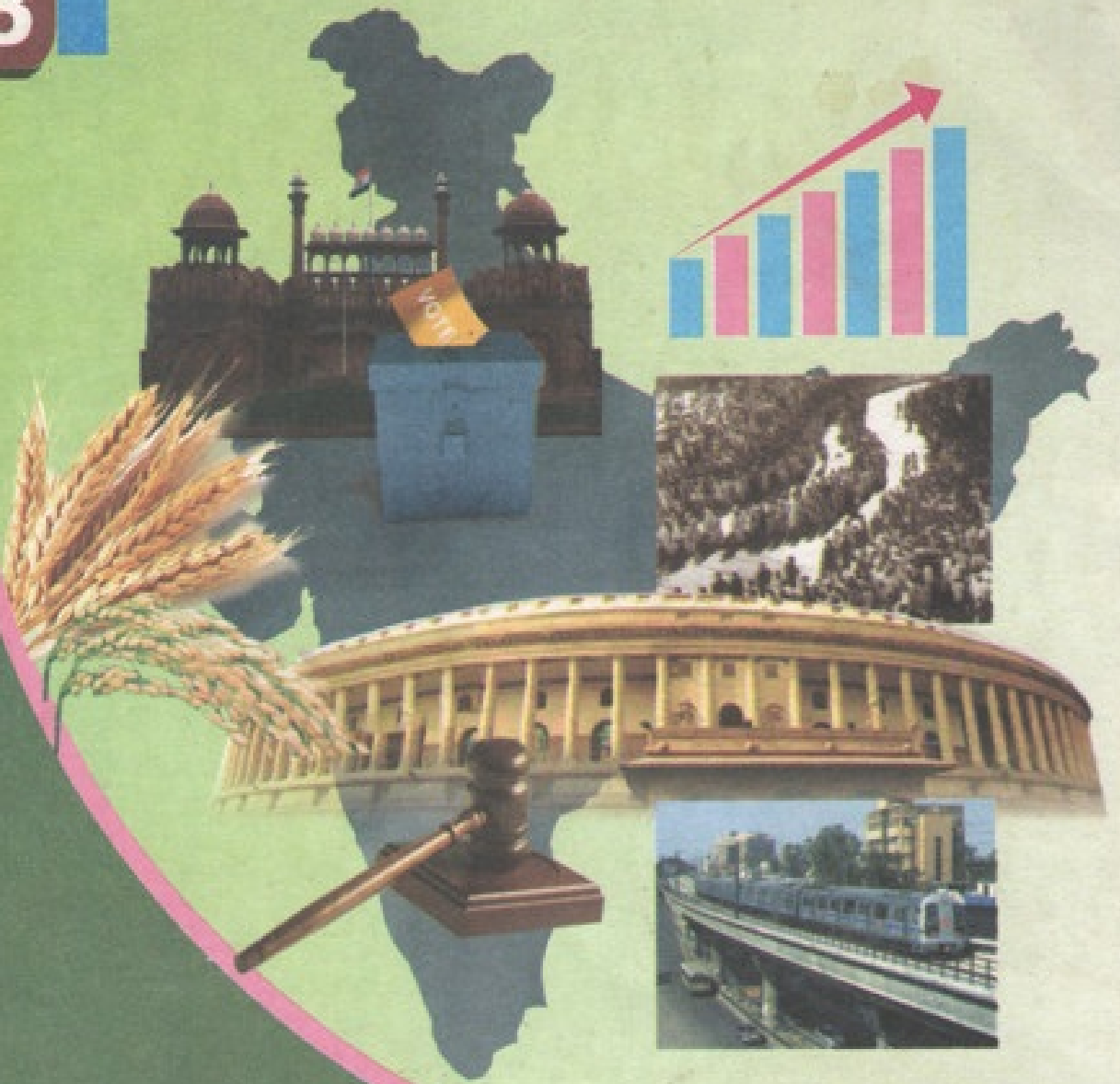


213



माध्यमिक पाठ्यक्रम

सामाजिक विज्ञान

पुस्तक-1



राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

सामाजिक विज्ञान पुस्तक- 1

पाठ्यक्रम समन्वयकर्ता श्रीमति तरूण पुनिया

डॉ. चुन्नू प्रसाद

डॉ. अज़मत नूरी

परियोजना संयोजक (आईपी)

सुश्री आशिमा सिंह

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

(मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार की एक स्वायत्त संस्था)

ए-24-25, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, सेक्टर - 62, नोएडा - 201309 (उ.प्र.)

वेबसाइट www.nios.ac.in

टॉल फ्री नंबर 18001809393

सलाहकार समिति

डा. सीतांशु एस. जेना, अध्यक्ष, रा.मु.वि.शि.सं., नोएडा (उ.प्र.)

डा. कुलदीप अग्रवाल, निदेशक (शैक्षिक), रा.मु.वि.शि.सं., नोएडा (उ.प्र.)

डा. वैकटेश श्रीनिवासन, सहायक प्रतिनिधि, रा.मु.वि.शि.सं., नोएडा (उ.प्र.)

सुश्री गोपा बिस्वास, संयुक्त निदेशक (शैक्षिक), रा.मु.वि.शि.सं., नोएडा (उ.प्र.)

डा. सोनिया महल उप निदेशक (शैक्षिक), रा.मु.वि.शि.सं., नोएडा (उ.प्र.)

पाठ्यक्रम समिति

अध्यक्ष

प्रो. सी. एस. आर. मूर्ति

सी.आई.पी.ओ.डी.एस आई एस

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

सदस्य

प्रो. निवेदिता मेनन, प्रोफेसर, एस.आई.एस., जे.एन.यू, नई दिल्ली

प्रो. अनिल सेठी, डी ई एस एस एच, एन.सी.ई.आर.टी, नई दिल्ली

स्वर्गीय श्रीमति चित्रा श्रीनिवास, पी.जी.टी (इतिहास), स.प. विद्यालय, लोधी कालोनी, नई दिल्ली

प्रो. मोहम्मद कुरैशी, प्रोफेसर, सी एस आर डी, एस एस एस, जे.एन.यू, नई दिल्ली

डा. औष्णा मेनन, रीडर (राजनीति विज्ञान), लेडी श्रीराम कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डा. टी.एन. गिरी, क्षेत्रीय निदेशक, , रा.मु.वि.शि.सं., नोएडा (उ.प्र.)

प्रो. नूर मोहम्मद, से.नि प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डा.बी.एल, गुप्ता से.नि.उपर प्रधानाचार्य, दिल्ली सरकार, दिल्ली

श्री विवेक सिंह, एस.ई.ओ. (शैक्षिक), रा.मु.वि.शि.सं., नोएडा (उ.प्र.)

प्रो. सलिल मिश्रा, इतिहास संकाय, एस एस एस, इग्नू, नई दिल्ली

श्रीमति अपर्णा पांडे, लेक्चरर, डी. एस. एस. एस, एन. सी.आर. टी, नई दिल्ली

सम्पादक मंडल

प्रो. जे. एल. पांडे, से.नि. प्रोफेसर, एन.सी.ई.आर.टी.नई दिल्ली

डा. एस के. महापात्रा, रीडर (भूगोल), इग्नू, नई दिल्ली

सुश्री उर्मिल महेन्द्र, जी-146, एल.वाई कालोनी, पश्चिम विहार, दिल्ली

श्री भगवती प्रसाद यानी, प्रवक्ता (रा.विज्ञान), शिक्षा निदेशालय, दिल्ली सरकार, दिल्ली

श्रीमति तरुण पूनिया, शैक्षिक अधिकार (भूगोल), रा.मु.वि.शि.सं., नोएडा (उ.प्र.)

सुश्री एस.के.अरोड़ा, जी एच 4/190, मीरा अपार्टमेंट, पश्चिम विहार, दिल्ली

डा. अनिता देवराज, प्रधानाचार्य, डी.ए.वी, बहादुरगढ़, हरियाणा

डा. चुन्नू प्रसाद, शैक्षिक अधिकारी, (राजनीति विज्ञान), रा.मु.वि.शि.सं., नोएडा (उ.प्र.)

डा. आर.के. श्रीवास्तव, लेक्चरर. एस.सी.ई.आर.टी., दिल्ली

डा. बी. एल. गुप्ता, से.नि.उप प्रधानाचार्य, दिल्ली सरकार, दिल्ली

डा. अजमत नूरी, शैक्षिक अधिकारी, (इतिहास), रा.मु.वि.शि.सं., नोएडा (उ.प्र.)

डा. टी. गीता, एसोशिएट प्रोफेसर, सी.आई.ई., दिल्ली विश्वविद्यालय

सुश्री रीता थाकचॉम, 4/43 प्रथम तल, विजय नगर, दिल्ली

पाठ लेखक

डा. अनिता देवराज, प्रधानाचार्य, डी.ए.वी, बहादुरगढ़ (हरियाणा)

डा. अल्पना तपाड़िया, टी.जी.टी (सामाजिक विज्ञान), डी.पी.एस., इंदिरापुरम, गाजियाबाद

श्री प्रेम कुमार ओझा, शैक्षिक प्रमुख, प्रिसिडियम, अशोक विहार दिल्ली

डा. ए., के. महापात्रा, रीडर (भूगोल), इग्नू, नई दिल्ली

डा. भूआन झा, उप-रजिस्ट्रार, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

सुश्री नजरीन रिजवी, टी.जी.टी (सामाजिक विज्ञान), डी.पी.एस. इंदिरापुरम गाजियाबाद

डा. रामाश्रय प्रसाद, एसोशिएट प्रोफेसर, डा. अंबेडकर कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

सुश्री समिता दास, टी.जी.टी. (सामाजिक विज्ञान), डी.पी.एस इंदिरापुरम, गाजियाबाद

डा. शाहीन जैन, असिस्टेंट प्रोफेसर, एस.जी.टी.बी. खालसा कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डा. वी.एस.नेगी, एसोशिएट प्रोफेसर, शहीद भगत सिंह कालेज दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

श्री चन्दन श्रीवास्तव, रिसर्च स्कॉलर, सी.ई, दिल्ली विश्वविद्यालय

डा. स्वाति राजपूत, एसोशिएट प्रोफेसर, रिसर्च स्कॉलर, सी.आई. ई. दिल्ली विश्वविद्यालय
जीवन कौशल परामर्श समूह

प्रो. जे.एल. पांडे, से.नि. प्रोफेसर, एन.सी.ई.आर.टी, नई दिल्ली

डा. अनिता देवराज, प्रधानाचार्य, डी.ए.वी., बहादुरगढ़ (हरियाणा)

डा. एस. के. महापात्रा, रीडर (भूगोल), इग्नू, नई दिल्ली

सुश्री आशिमा सिंह, प्रकल्प संयोजक (ए.ई.पी), रा.मु.वि.शि.सं., नोएडा (उ.प्र.)

डा. जया, राष्ट्रीय प्रोग्राम अधिकारी, (यू.एन.एफ.पी.ए), नई दिल्ली

प्रवाह, मानीट्रिंग एजेंसी, सी-24 बी, कालकाजी, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम संयोजक

सुश्री तरूण पूनिया, शैक्षिक अधिकारी, रा.मु.वि.शि.सं, नोएडा (उ.प्र.)

डा. चुन्नू प्रसाद, शैक्षिक अधिकारी (राजनीति विज्ञान), रा.मु.वि.शि.सं, नोएडा (उ.प्र.)

डा. अजमत नूरी, शैक्षिक अधिकारी (इतिहास), रा.मु.वि.शि.सं, नोएडा (उ.प्र.)

रेखा चित्रकार

श्री महेश शर्मा, रेखा चित्रकार, रा.मु.वि.शि.सं, नोएडा (उ.प्र.)

श्री रूपेश खड़कवाल, स्वतंत्र रेखा चित्रकार, नई दिल्ली

मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अन्तर्गत : यू.एन.एफ.पी.ए. के सहयोग से : किशोर शिक्षा कार्यक्रम

प्रिय शिक्षार्थी,

समाज की आवश्यकताएँ, खास तौर पर विशेष समूहों की ज़रूरतें समय के साथ-साथ बदलती रहती हैं? अतएव उनकी आशाओं को पूरा करने के लिए पद्धतियों को भी बदलते रहना चाहिए। शिक्षा परिवर्तन का एक साधन है। सही तरीके की शिक्षा यदि सही समय पर दी जाए, तो उससे समाज की धारणा वैचारिक दृष्टिकोण में परिवर्तन किया जा सकता है। इससे नई चुनौतियों का सामना करने और कठिन परिस्थितियों पर विजय हासिल करने की क्षमता प्राप्त की जा सकती है। इस संदर्भ में निश्चित समय-अंतराल में पाठ्यचर्या में संशोधन करना ज़रूरी है। यदि समय-समय पर पाठ्यचर्या में परिवर्तन नहीं किया जाए तो उससे कोई भी पूरा नहीं होता, क्योंकि उसके द्वारा व्यक्ति तथा समाज की ज़रूरतों और इच्छाओं की पूर्ति नहीं होती।

इसी उद्देश्य के लिए देश भर के शिक्षाविदों ने आवश्यक और उपयोगी परिवर्तनों के बारे में विचार-विमर्श किया। परिणामस्वरूप राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (एनसीएफ़) तैयार की गई जिसमें प्राइमरी, प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक आवश्यकताओं के तरीकों को प्रस्तुत किया गया।

इस रूपरेखा के साथ-साथ अन्य राष्ट्रीय तथा सामाजिक मुद्दों को ध्यान में रखकर हमने माध्यमिक स्तर पर सभी विषयों की पाठ्यचर्या को वर्तमान परिपूरक्षय के अनुसार तथा आवश्यकता अनुरूप बनाकर संशोधित किया है। पाठ्य सामग्री निर्माण एनआईओएस के सभी कार्यक्रमों का अभिन्न और आवश्यक अंग है, जिसे मुक्त तथा दूर शिक्षा प्रणाली के माध्यम से पूरा किया जाता है। इसलिए हमने अध्ययन-सामग्री को शिक्षार्थी-अनुकूल रुचिकर और आकर्षक बनाने पर विशेष ध्यान दिया है।

मैं उन सभी विद्वानों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने इस सामग्री को रुचिकर और उपयोगी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मुझे उम्मीद है कि आप इसे आकर्षक और अनुकूल पाएँगे।

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान की ओर से, मैं आपके उज्ज्वल और सफल भविष्य की कामना करती हूँ।

(डॉ. एस.एस. जेना)

अध्यक्ष

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

निदेशक की कलम से

प्रिय शिक्षार्थी,

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान का शैक्षिक विभाग हमेशा आपकी आवश्यकताओं के अनुरूप नए कार्यक्रम तैयार करने की कोशिश करता है। अब हमने माध्यमिक स्तर पर सभी विषयों की पाठ्यचर्या को संशोधित किया है। हमने सीबीएसई तथा देश के अन्य बोर्डों के समान पाठ्यचर्या उद्देश्य से अनेक माध्यमिक शिक्षा बोर्डों के विभिन्न विषयों की पाठ्यचर्याओं का अवलोकन किया। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान तथा प्रशिक्षण द्वारा तैयार पाठ्यचर्या रूपरेखा को मुख्य रूप से ध्यान में रखा गया। व्यापक तुलनात्मक के उपरान्त हमने अपनी पाठ्यचर्या को और अधिक कार्यात्मक, जीवन से जुड़ी हुई तथा सहज बनाया है। जाहिर है, इसे अधिक प्रभावी और आपके लिए उपयोगी बनाने का दायित्व निभाना ज़रूरी था। हमने देश के प्रमुख शिक्षाशास्त्रियों को आमंत्रित कर उनके निर्देशन में पाठ्यचर्या को संशोधित किया है।

साथ ही, हमने पाठ्य सामग्री पर भी विशेष ध्यान दिया है। हमने पुरानी तथा निरर्थक सूचनाओं को हटाकर नई तथा उपयोगी सामग्री को जोड़ा है तथा इसे आकर्षक और प्रभावी बनाने का प्रयास किया है।

मुझे विश्वास है कि आपके हाथ में जो नई सामग्री है, वह रुचिकर और आकर्षक होगी। आपके सुझावों का स्वागत है।

आपके सुखद तथा सफल जीवन की कामना करता हूँ।

(डॉ. कुलदीप अग्रवाल)

निदेशक (शैक्षिक)

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

प्रिय शिक्षार्थी,

एनआईओएस में स्वागत है।

आपने लक्ष्य निर्धारित करने की दिशा में पहला कदम उठाया है। अक्सर किसी कार्य को शुरू करना मुश्किल होता है। आपने स्वयं पर विश्वास रखते हुए आगे बढ़ने का संकल्प लिया है। आत्म-विकास की इस यात्रा में आप महसूस करेंगे कि अपनी तथा दूसरों की समझ और अपने जीवन तथा परिवेश के बारे में अधिक जानकारी और समझदारी की जरूरत है। आइए, उत्साहपूर्वक इस यात्रा को शुरू करते हैं।

मुक्त शिक्षा-परणाली का उद्देश्य और दृष्टिकोण परिवर्तित हो रहा है। एनआईओएस ने आपके लिए जीवन-कौशल युक्त अध्ययन-सामग्री तैयार करने की पहल की है। हमारा लक्ष्य शैक्षिक क्षमता के विकास के साथ-साथ आपकी व्यक्तिगत और सामाजिक क्षमता को बढ़ाना भी है। इस सामग्री को पढ़कर आपको विषय का ज्ञान होगा और आप जीवन की चिंताओं और कठिनाइयों को दूर करने के उपाय भी जान सकेंगे। आपमें सही और गलत, अच्छे और बुरे के बीच अंतर करने का कौशल विकसित होगा, ताकि आप अपने जीवन और भविष्य के लिए सही निर्णय ले सकें। एनआईओएस का यह प्रयास है कि आपमें ऐसी क्षमता विकसित की जाए ताकि आप चुनौतियों का सामना करते हुए अवसर का लाभ उठाएँ। अपने को अथवा किसी और को हानि पहुँचाए बिना परिस्थितियों के प्रति तार्किक, संवेदनशील और सकारात्मक प्रतिक्रिया कर सकें। एनआईओएस ने विषयवस्तु में जीवन-कौशल को शामिल करने की पद्धति अपनाई है। आपके लिए यह सामग्री 'मुदित रूप में शिक्षक' के समान है, जिसे परस्पर भागीदारी की परणाली अपनाकर जीवन के अनुभवों से जोड़ा गया है।

इस अध्ययन-सामग्री में पाठों के बीच अनेक क्रियाकलाप और पाठगत प्रश्न मिलेंगे। सीखने और अभ्यास के लिए इन्हें दिया गया है। इन्हें पूरा करने का प्रयास कीजिए। पाठगत प्रश्न आपके मूल्यांकन तथा समझ को बढ़ाने के लिए हैं। जीवन-कौशल ऐसी क्षमताएँ हैं जो आपके पास हैं। जरूरत है उन्हें विकसित करने की। इन क्रियाकलापों को करने से जीवन-कौशलों का विकास होगा। आप इस पहल का हिस्सा बनें और इसे सफल बनाने में अहम भूमिका निभाएँ।

प्रिय शिक्षार्थी, आप देश के लाखों किशोरों में से एक हैं। आप इस देश का भविष्य हैं। आप में दूसरों से श्रेष्ठ होने तथा भीड़ से अलग अपनी पहचान बनाने की क्षमता है। आप अपने आदर्श व्यक्ति की प्रशंसा क्यों करते हैं? नेतृत्व-क्षमता, संप्रेषण-कौशल, रचनात्मकता, दूसरों के साथ बेहतर विचार-विमर्श इत्यादि ऐसी क्षमताएँ हैं, जो व्यक्ति को भीड़ से अलग करती हैं। इसलिए, जब आप किसी विषय पर पूर्ण अधिकार प्राप्त करना चाहते हैं, तो उसके साथ-साथ व्यक्तित्व के अन्य पहलुओं को भी विकसित कीजिए।

मुझे विश्वास है कि ये जीवन-कौशल पाठ्य-सामग्री को समृद्ध करेंगे और आपकी दिनचर्या में सहायक होंगे। इनके समायोजन द्वारा आपमें सकारात्मक चिंतन, भावना और व्यवहार के विकास का मार्ग विस्तृत होगा।

मात्र जानकारी पर्याप्त नहीं है, उसका उपयोग होना चाहिए। केवल जानना पर्याप्त नहीं है, हमें करना चाहिए।

(आशिमा सिंह)

परियोजना-समन्वयक

(किशोर शिक्षा परियोजना)

आपसे कुछ बातें

प्रिय शिक्षार्थियों,

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान माध्यमिक स्तर के सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम में आपका स्वागत करता है। इस पाठ्यक्रम की अध्ययन सामग्री दो पुस्तकों में विभाजित है। पहली पुस्तक इतिहास और भूगोल तथा पुस्तक दूसरी पुस्तक राजनीति विज्ञान से सम्बन्धित है। सामाजिक विज्ञान के अन्तर्गत मानव समाज का अध्ययन किया जाता है जो मानव समाज के उद्भव और विकास से हमें परिचित कराता है। इस विषयमाला में विश्व की सभी मुख्य सभ्यताओं को शामिल किया गया है। आप इसमें प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिककाल के भारत व विश्व के विषय में अध्ययन करेंगे। पहली पुस्तक आपको क्रमविकास की पूरी जानकारी देगी तथा भारत पर उपनिवेशवाद के प्रभाव समाज सुधार के साथ-साथ ब्रिटिश शासन के विरुद्ध प्रतिरोध से अवगत करायेगी। इसी कड़ी में आगे, शिक्षार्थी भौगोलिक तथ्य व अवधारणाओं का अध्ययन करेंगे तथा प्रकृति, पर्यावरण संसाधन और विकास के अन्तर्सम्बन्धों को समझने में सक्षम होंगे। इस तथ्य से भी आप अवगत हो पायेंगे कि कैसे कुछ जीवन कौशलों को अपनाकर हम पृथ्वी में जैविक संतुलन कायम कर सकते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में दिये गये अध्यायों को पढ़ते समय आपको कई किर्याकलाप जैसे सर्वेक्षण, स्थिति/घटना अध्ययन (केस स्टडी), समस्या निवारण आदि मिलेंगे। ये गतिविधियाँ और किर्याकलाप आपकी सोचने विचारने, सम्प्रेषण, वार्ता व संधि और ऐसी ही अन्य निपुणता और क्षमताओं की अभिवृद्धि के लिये विशेष रूप से तैयार की गयी है। इन किर्याकलापों को अवश्य समय दे क्योंकि उनका उद्देश्य शिक्षार्थियों के रूप में आपके ज्ञान और समझ का संवर्धन करना है।

हम अपेक्षा करते हैं कि प्रस्तुत पुस्तक व पाठ्य सामग्री परीक्षापयोगी होने के साथ-साथ आपको एक अच्छा नागरिक बनने के लिये भी उत्प्रेरित करेगी। पाठ्यपुस्तक सम्बन्धी किसी भी प्रकार की कठिनाइयों, प्रश्नों व जिज्ञासाओं को हमें लिखने के लिये आपका स्वागत है। आपकी प्रतिपुष्टि व प्रतिक्रियाओं का समाधान होगा।

तरुण पुनिया, शैक्षिक अधिकारी (भूगोल) रा.मु.वि.शि.सं. नोएडा, उ.प्र.

डॉ. चुन्नू प्रसाद, शैक्षिक अधिकारी (राजनीतिक विज्ञान) रा.मु.वि.शि.सं. नोएडा, उ.प्र.

डॉ. अजयमत नूरी, शैक्षिक अधिकारी, (इतिहास), रा.मु.वि.शि.सं., नोएडा उ.प्र.

अपने आप कैसे पढ़ें!

बधाई! अपने स्व-शिक्षार्थी बनने की चुनौति स्वीकार की है। एनआईओएस हर कदम पर आपके साथ है। आपकी पाठ्य सामग्री हिंदी क्षेत्र के विशेषज्ञों का समिति ने तैयार की है। इसे विशेष रूप से आपकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए निर्मित किया गया है। आप स्वतंत्र रूप से स्वयं पढ़ सकें, इसके लिए इसे एक प्रारूप में ढाला गया है। निम्नलिखित संकेत आपको सामग्री का सर्वोत्तम करने का तरीका बताएंगे। दिए गए पाठों को कैसे पढ़ना है, आइए जानें-

पाठ का शीर्षक : इसे पढ़ते ही आप अनुमान लगा सकते हैं कि पाठ में क्या दिया जा रहा है। इसे पढ़िए।

भूमिका : यह भाग आपको पूर्व जानकारी से जोड़ेगा और दिए गए पाठ की सामग्री से परिचित कराएगा। इसे ध्यानपूर्वक पढ़िए। साथ ही यह विषय की पृष्ठभूमि देगा तथा आपको पाठ पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करेगा।

उद्देश्य : प्रस्तुत पाठ को पढ़ने के बाद आप इस पाठ के उद्देश्यों को प्राप्त करने में समर्थ हो जाएंगे। इन्हें याद कर लीजिए और जाँच लीजिए कि आपने उद्देश्यों को प्राप्त कर लिया।

टिप्पणी : प्रत्येक पृष्ठ पर महत्वपूर्ण बिन्दुओं अथवा टिप्पणी बनाने के लिए आपके लिये हाशिये में रिक्त स्थान है।

पाठगत प्रश्न : इसमें एक शब्द अथवा एक वाक्य में पूछे गए प्रश्न हैं तथा कुछ वस्तुनिष्ठ प्रश्न हैं। ये प्रश्न पढ़ी हुई इकाई पर आधारित हैं, इनका उत्तर आपको देते चलना है। इसी से आपकी प्रगति की जाँच होगी। ये सवाल हल करते समय आप हाथ में पेंसिल रखिए और जल्दी-जल्दी सवालों के समाधान ढूँढते चलिए और अपने उत्तरों की जाँच पाठ के अंत में दी गई उत्तरमाला से कीजिए। उत्तर ठीक न होने पर इकाई को पुनः पढ़िए।

क्रियाकलाप : पाठ में स्थान-स्थान पर कुछ क्रियाकलाप दिए जा रहे हैं जिन्हें आप सरलता से कर पाएंगे। ये आपको बेहतर ढंग से पाठ के बिंदु समझने में मदद करेंगे तथा विषय के और निकट लायेंगे। आप उन्हें स्वयं करने का प्रयत्न करें अथवा घर में बड़ों से या साथियों से चर्चा करें। ये क्रियाकलाप आपमें जीवन-कौशल विकसित करेंगे तथा व्याकरण का अभ्यास भी कराएंगे।

आपने क्या सीखा : यह पूरे पाठ का संक्षिप्त रूप है। इन मुख्य बिंदुओं को याद कीजिए। यदि आप अपने अनुभव की मिलती-जुलती कुछ नई बातें जोड़ना चाहते हैं, तो उन्हें भी वहीं बढ़ा सकते हैं।

पाठांत प्रश्न : पाठ के अंत में लघु उत्तरीय तथा दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिए गए हैं। इन्हें आप अलग पन्नों पर लिखकर अभ्यास कीजिए। यदि आप चाहें तो अध्ययन-केन्द्र पर अपने शिक्षक या किसी अन्य व्यक्ति को दिखा सकते हैं और उनसे सुझाव ले सकते हैं।

क्या आप जानते हैं : इस बॉक्स में अतिरिक्त जानकारी दिया गया है। इन बॉक्स में दिये गये तथ्य महत्वपूर्ण हैं, जिसे निश्चित रूप से ध्यान देना चाहिए। ये मूल्यांकन के दृष्टिकोण से नहीं बल्कि आपके सामान्य ज्ञान की वृद्धि हेतु दिया गया है।

उत्तरमाला : इनके माध्यम से आप बोध प्रश्नों तथा पाठगत प्रश्नों के उत्तर का मिलान कर सकते हैं।

वेबसाइट : अतिरिक्त अध्ययन के लिए वेबसाइट के संदर्भ दिए गए हैं।

विषय सामग्री पर एक विहंगम दृष्टि

माड्यूल 1: भारत तथा विश्व विभिन्न युगों में
सामाजिक विज्ञान की प्रस्तावना

1. प्राचीन विश्व
2. मध्यकालीन विश्व
3. आधुनिक विश्व - I
4. आधुनिक विश्व - II
5. भारत पर ब्रिटिश शासन का प्रभाव : आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक (1757-1857)
6. औपनिवेशिक भारत में धार्मिक एवं सामाजिक जागृति
7. ब्रिटिश शासन के विरुद्ध लोकप्रिय जन प्रतिरोध
8. भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन

माड्यूल 2: भारत : प्राकृतिक पर्यावरण संसाधन तथा विकास

9. भारत का भौतिक भूगोल
10. जलवायु
11. जैव विविधता
12. भारत में कृषि
13. यातायात तथा संचार के साधन
14. जनसंख्या हमारा प्रमुख संसाधन

माड्यूल 3: लोकतन्त्र की कार्यप्रणाली

15. संवैधानिक मूल्य तथा भारत की राजनीतिक व्यवस्था
16. मौलिक अधिकार तथा मौलिक कर्तव्य
17. भारत एक कल्याणकारी राज्य
18. स्थानीय शासन तथा क्षेत्रीय प्रशासन
19. राज्य स्तर पर शासन
20. केन्द्रीय स्तर पर शासन
21. राजनीतिक दल तथा दबाव समूह
22. जनता की सहभागिता तथा लोकतान्त्रिक प्रक्रिया

माड्यूल 4: समसामयिक भारत : मुद्दे एवं चुनौतियाँ

23. भारतीय लोकतन्त्र के समक्ष चुनौतियाँ
24. राष्ट्रीय एकीकरण तथा पंथ निरपेक्षता
25. सामाजिक आर्थिक विकास तथा अभावग्रस्त समूहों का सशक्तीकरण
26. पर्यावरणीय क्षरण तथा आपदा प्रबन्धन
27. शान्ति और सुरक्षा

विषय सूची

मॉड्यूल 1 : भारत तथा विश्व विभिन्न युगों में
सामाजिक विज्ञान की प्रस्तावना

1. प्राचीन विश्व
2. मध्यकालीन विश्व
3. आधुनिक विश्व -1
4. आधुनिक विश्व - 2
5. भारत पर ब्रिटिश शासन का प्रभाव : आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक (1757-1857)
6. औपनिवेशिक भारत में धार्मिक एवं सामाजिक जागृति
7. ब्रिटिश शासन के विरुद्ध लोकप्रिय जन प्रतिरोध
8. भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन

मॉड्यूल 2 : भारत : प्राकृतिक पर्यावरण संसाधन तथा विकास

9. भारत का भौतिक भूगोल
10. जलवायु
11. जैव विविधता
12. भारत में कृषि
13. यातायात तथा संचार के साधन
14. जनसंख्या हमारा प्रमुख संसाधन

पाठ्यक्रम

प्रतिपुष्टि फॉर्म

मॉड्यूल I भारत तथा विश्व विभिन्न युगों में

सामाजिक विज्ञान की प्रस्तावना

1. प्राचीन विश्व
2. मध्यकालीन विश्व
3. आधुनिक विश्व - 1
4. आधुनिक विश्व - 2
5. भारत पर ब्रिटिश शासन का प्रभाव : आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक (1757-1857)
6. औपनिवेशिक भारत में धार्मिक एवं सामाजिक जागृति
7. ब्रिटिश शासन के विरुद्ध लोकप्रिय जन प्रतिरोध
8. भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन

कल्पना कीजिये की आप के पास एक समय मशीन है और आप अपने आप को समय में पीछे ले जाकर उस समय पर चले जाते हैं जब आप के दादा दादी बच्चे थे। आप ने पाया कि आपका मकान और उस के आस पास का वातावरण बहुत ही भिन्न है। अगर आप और भी पीछे जाते हैं तो आपको आश्चर्य और हैरानी होगी कि उस समय का खाना, पीना, पहनावा यहां तक की भाषा भी काफी भिन्न थी। क्या आप जानना चाहेंगे कि भूतकाल में क्या हुआ था? क्या आप जानते हैं कि हम अब भी भूतकाल से सम्बन्ध रख सकते हैं। यह सब क्या एक रहस्य है जो हम सुलझा सकते हैं। यह सब करने के लिये हमें उन तत्वों का प्रयोग करना पड़ेगा जो हमें इतिहास से आज तक को समझने के लिये करते हैं।

उद्देश्य

इस अध्याय को पढ़ने के बाद आप यह जान पायेंगे कि -

- समाजिक विज्ञान में इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, राजनैतिक विज्ञान तथा सामाजिक विज्ञान भी शामिल होते हैं।
- यह समझ जाएंगे कि यह सारे विषय आपस में सम्बन्धित हैं और सब मिलकर सामाजिक विज्ञान है।
- आपस में इस विषय पर मंथन भी कर सकते हैं कि इन्सान कैसे समाज में रहता है।
- पहचान सकेंगे कि मौके कब आते हैं और उसका सामना कर सकें।

0.1 सामाजिक विज्ञान

जैसे नाम सुझाता है कि सामाजिक विज्ञान हमारे समाज से सम्बन्धित है। इसका मुख्य उद्देश्य समाज के हर पहलू को सुलझाने का काम आता है। इसके ज्ञान का दायरा बहुत बड़ा होता है और उसमें कई पहलू होते हैं। उनमें से कुछ पहलू जो आपके समझने के लिये हैं, वे हैं-

- इतिहास और ऐतिहासिक भवन
- भूगोल

- राजनैतिक विज्ञान
- सामाजिकता
- अर्थशास्त्र

इसके कई पहलू जो कि समाजिक विज्ञान से सम्बन्धित हैं। इस वर्ग में उन सारे तत्वों का अध्ययन व समझने कि कोशिश करेंगे खासतौर से इतिहास। हम यह समझेंगे कि सामाजिक विज्ञान का अध्ययन कर के यह जानने कि काशिश करेंगे कि वो हम सबकी जिन्दगी से कैसे जुड़ी हुई हैं। हम यह जानेंगे कि हम कितने स्तर से गुजरे हैं जो गुफाँ में रहने से आज के वर्तमान विकसित देशों में रहते हैं। हम इस इतिहास को केवल एक विषय समझ कर अपने भूत के बारे में जानने की कोशिश न करके उससे ज्ञान लेने कि कोशिश करेंगे।

हम यहाँ सीखेंगे कि कैसे समय के अनुसार उन्नति तथा कार्यक्रम आपस में जुड़े हुये हैं। यह हमें भूत, भविष्य एवं वर्तमान में आपस में कैसे जोड़ता है। इसका हम अध्ययन करेंगे कि इन सब बातों का हमारे जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है।

आप क्या सोचते हैं कि सामान्य विज्ञान का हमारे जीवन में क्या महत्व रखता है? इसको दो उदाहरण सहित समझायें।

आप क्या सोचते हैं कि सामान्य विज्ञान का हमारे जीवन में क्या महत्व रखता है? इसको दो उदाहरण सहित समझायें।

0.2 सामान्य विज्ञान का अध्ययन

पढ़ाई के क्षेत्र में ऐसी कई शाखाएँ हैं जो कि हमें विद्या को कई स्तर अग्रिम शिक्षा का अध्ययन कराता है। हो सकता है कि इनकी शाखाएँ कई बार एक दूसरे के साथ मिल सकती हैं, कुछ मुख्य शाखाएँ सामाजिक विज्ञान के साथ जो जुड़ी हैं वे हैं अर्थशास्त्र, इतिहास एवं ऐतिहासिक भवन, भूगोल, राजनैतिक विज्ञान एवं मनोविज्ञान।

आपको जानकर आश्चर्य होगा कि शुरू में केवल एक ही विषय था उदाहरण के लिये वह था दर्शनशास्त्र का मतलब होता है ज्ञान और उस विषय पर जानकारी। बाद में जब जानकारी बढ़ने लगी तो जरूरत पड़ी कि हम इनकी शाखा अलग करे। इसलिये विज्ञान और सामान्य विज्ञान अलग किये गये। दोनों विषय अलग-अलग चीजों को दर्शाते हैं। पर्यावरण विज्ञान हमको विश्व के बारे में समझता है तो सामाजिक विज्ञान हमें समाज और इंसानों के रहन-सहन के बारे में सिखाता है। चलो हम इतिहास से शुरू करते हैं।

0.2.1 इतिहास एक ऐतिहासिक भवन

इतिहास क्या है? इतिहास एक साध्य है जो कि भूतकाल में जो कई चीजें हुई हैं। यह सच्चे लोग और सच्ची घटनाओं के बारे में है। यह केवल विचारों और ख्यालों से नहीं बना कि क्या होना चाहिये था बल्कि यह एक ज्ञान है कि क्या हुआ था। वह किसी एक के बारे में सम्बन्धित नहीं है। यह देशों तथा समाजों से सम्बन्धित है न कि किसी राजा या रानी के बारे में नहीं, परन्तु पूरे समाज और व्यक्तियों के बारे में है। यह हर एक इंसान नर या मादा, अमीर और गरीब के बारे में है इस बात से बेहतर कि उनका धर्म क्या है या जात क्या है। क्या आपने कभी सोचा कि हमारे पूर्वजों का बीते हुये समय में क्या हुआ था? इसकी जानकारी आपको इस पुस्तक से मिलेगी। इस विषय को पढ़ते समय जो चीज आपको पसन्द आये उसे आप उसको एक कापी में लिख लें। उसके बाद आप इंटरनेट और पुस्तकालय में जा कर उसके बारे में और जानकारी निकालें। इस विषय में अधिक जानकारी प्राप्त करने में हम भी आपकी मदद करेंगे।

हम इतिहास क्यों पढ़ते हैं?

इतिहास कि शिक्षा हमें अपने पूर्वजों कि जड़ तक, उनकी ताकत तथा उनकी उपलब्धियों के विषय में हमें बताती है जिन पर हमें गर्व होता है तथा उनसे हमें आगे बढ़ने की दिशा मिलती है। हमारी उपलब्धियाँ की जब तक हमें पूरी जानकारी नहीं होगी तो हम भूत के इतिहास को समझ नहीं पायेंगे। एक, आम राय तो यह है कि इतिहास तो मरे हुये लोगों से ही जुड़ा होता है। हकीकत में भूत हमारे जीवन में वर्तमान और भविष्य में काफी महत्व रखता है। इन सबका कुल मतलब यह हुआ कि इतिहास का ज्यादा परभाव नर एवं मादा के जीवन का अपनी जिन्दगी में बढ़ोतरी की वजह बन सकता है। जब हम सोचते हैं कि हम अपने भूत के बारे में जानते हैं तो हम ऐतिहासिक भवनों से जुड़ते हैं। ज्यादातर हम जब भूत से जुड़ते हैं तो हमें गर्व होता है। इसे हम अपने आने वाली पीढ़ियों के लिये सुरक्षित रखते हैं।

ऐतिहासिक भाव का ज्ञान

ऐतिहासिक विज्ञान एक ऐसा विज्ञान है जो हमें भूत के समाजों तथा संस्कृति के विषय के जानकारी देता है। इन सब की जड़ हमें उस सब वस्तुओं में मिल जायेगी जैसे कि कलासच, दफनाना, टूटी हुई इमारतें और ऐतिहासिक भवनों इत्यादि। वो इसका रूपांतर करके यह जानने के लिये कि यह वस्तुएं कौन से समय से हैं इसी अध्ययन से हमें पुराने शिल्प तथा लिखित रिकॉर्ड्स भी प्राप्त होते हैं जो कि प्रभावी हो सकते हैं। यह तत्व हमें ज्यादा जानकारी प्राप्त कराते हैं।

ज्यादा समय यह तत्व जमीन में दफन होते हैं और उनको निकालने के लिये हमें खुदाई करनी पड़ती है। मोहनजोदड़ो, हडप्पा, और नालंदा कुछ ऐसे ही स्थान हैं जिनकी खुदाई करके निकाले गए जिन में हमें बहुमूल्य वस्तुओं की प्राप्ति हुई। ऐसी खुदाइयों के बारे में ज्यादा तर जानकारी हमें समाचार पत्रों से प्राप्त होती है। एक बहुत ही आश्चर्यजनक खोज प्रसी फिठालू में हमें गुजरात के निकट समुद्र से मिले। यह माना जाता है कि जो खोज हुई वह जगह हिन्दू भगवान श्री कृष्ण की नगरी द्वारका है। राखीगढ़ी, जो कि हरियाणा में है वह भी हमने अभी ढूँढ़ा है।

एक सफर ऐसे स्थानों पर हमें उस समय पर ले जाती हैं। ऐसी जगह पर जाने का जब भी आपको मौका मिले तो जाना चाहिए। आपको ऐसे स्थानों पर विदेशों में भी जाना चाहिए।

मिली, हुई प्राचीन सामग्री में हमें लिखित हस्तलिपि, स्तम्भ लोहे की तख्तीयाँ, सिक्के, मोहरें, औजार, खिलौने एवं तस्वीरें भी शामिल हैं। वह हस्तनियम, चित्र और इमारत हमें उस समय का एक सुझाव देते हैं कि उस समय क्या हुआ था? अपने शहर में उस जगह जाये जहाँ पर ऐतिहासिक इमारत हो पर जहाँ प्राचीन वस्तुओं का संग्रह हो और जानकारी प्राप्त करें कि वह वस्तुये किस समय की हैं उन को जानने के लिये आप इंटरनेट पर, पुस्तकालय से ज्यादा जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। आज तो आपको यह सब ज्ञान पुस्तकों, समाचार पत्रों एवं मैगजीन से मिल सकते हैं।

क्या आप जानते हैं

प्राचीन की खोज का कार्य संस्कृति के मंत्रालय के अन्तर्गत आता है। इनके बारे में ज्ञान प्राप्त करना; या नई खोज करना और उन चीजों को हिफाजत करना इसी मंत्रालय के पास है। इस कार्य को देखने के लिए इसको 24 खण्डों में बांटा गया है। इस कार्य मण्डल के पास बहुत ही शिक्षण कार्यकारी होते हैं जैसे कि जो प्राचीन की वस्तुओं की पूरी जानकारी रखते हैं चित्रकार मौसम को जानकारी रखने वाले तथा वैज्ञानिक हैं। इस जानकारी के बारे में ज्यादा जानकारी प्राप्त करने के लिये आप उनके वेबसाइट www.asi.nic.in पर जा कर प्राप्त कर सकते हैं।

पाठगत प्रश्न 0.1

1. उन सभी विषयों के बारे में लिखें कि सामान्य ज्ञान की जानकारी के लिये जरूरी हो?
2. क्या आप समझते हैं इतिहास को पढ़ना जरूरी है? दो उदाहरण सहित बताइये?
3. इतिहास और प्राचीन ज्ञान के बीच में एक अन्तर का एक उदाहरण दें?
4. पाँच स्रोतों को बताइये जो हमें अपना अतीत जानने में मदद करता हो?
5. कम से कम चार ऐसी प्राचीन इमारतों के बारे में जानें जो कि पाठ में दी हुई इमारतों से अलग हो।

0.2.2 भूगोल

इतिहास और प्राचीन ज्ञान अधूरा रहता है बिना वहाँ का भूगोल जाने बिना। भूगोल एक ज्ञान है जो कि जमीन का नक्शा, वहाँ के लोग जगहें तथा वहाँ का वातावरण का ज्ञान देता है। आसान शब्दों में हम कह सकते हैं

भूगोल वह ज्ञान है जो हमें उन संसार के बारे में बताता है जहाँ रहते हैं। भूगोल एक ऐसा विषय है जो सामान्य ज्ञान के वास्तविक विज्ञान से जोड़ता है। समाज एवं जिन्दगी

को बनाने में भूगोल एक जरूरी मुद्दा माना जाता है। यह हमें अलग-अलग स्थानों; वहाँ का रहन सहन, राजनैतिक शास्त्र, अर्थशास्त्र और वातावरण का ज्ञान देता है। यह आपस में जोड़ने के काम आता है। भूगोल हमें दूसरी विषयों का भी ज्ञान देती है। अगर हमें किसी देश के भूगोल के विषय में जानते हैं तो हम यह भी जान जाते हैं कि वहाँ के इतिहास में क्या हुआ है? इस पाठ में हम यह जान पायेंगे कि प्राचीन युग में मनुष्य ने धनुष, वाण और अन्य औजार कैसे बनाये। भूगोल पढ़ने से हमें यह ज्ञान होता है कि क्यों, बर्फ युग के बाद वातावरण में कोई बदलाव आया है इसी का परिणाम है कि कई घने जंगल समाप्त हो गये हैं। क्या आप सोच सकते हैं कि क्या हुआ होगा? तभी तो घास खाने वाले जानवर जैसे कि हिरण, बकरी, भेड़ या बारहसिंगा की तदाद बढ़ी। आप यह तो जानते होंगे कि यह जानवर तेज भागते हैं। इन तेज दौड़ने वाले जानवरों का शिकार भारी हथियारों से होना मुमकीन नहीं था। इसके लिये हलके हथियार चाहिये थे जो कि उस युग के मनुष्य ने बनाये। क्या आप जानते हैं कि इण्डो गंगा का मैदान बहुत ही उपजाऊ ज़मीन है भारत में। यह इसलिये क्योंकि बड़ी नदी गंगा अपने साथ बहुत साफ़ पानी लाती है जो कि पीने और सिंचाई के काम आता है। यही एक वजह है कि बड़े साम्राज्य यहाँ पर बने जैसे कि मौर्या, गुप्ता और मुग़ल। लोहे की बड़ी तादात में यहाँ पाने की वजह से इन्होंने बहुत उन्नति की। क्यों यह जानने के लिये पाठ 4 का अध्ययन जरूरी है।

मुख्य नगर जैसे कि आगरा, नासिक, पटना और कोलकत्ता ऐसी ही बड़ी नदियों के तट पर बसे हुये हैं। आप को जानकर आश्चर्य होगा कि इन सभी शहरों में इतिहास लिखा गया है। तीन ऐसे कारण बतायें कि ऐसे बड़े शहरों में व्यापार तथा संचालन कैसे बढ़ा।

0.2.3 राजनैतिक विज्ञान

सरकार एक ऐसा शब्द है जिससे आप परिचित हैं। यह शब्द आप ने कई बार पढ़ा होगा या टेलीवीजन पर सुना होगा। क्या आप जानते हैं कि सरकार क्या होती है? क्या आप जानते हैं कि सरकार नियम बनाती है? और उस देश में रहने वाले सभी व्यक्तियों को वह नियम मानने पड़ते हैं। प्रजातंत्र में आम इन्सान ही उस व्यक्ति को चुनते हैं जो मिलकर सरकार बनाते हैं। इस प्रकार सब मिलकर सरकार बनाते हैं जो कि देश के लिये नियम बनाते हैं। उस देश में जहाँ राज चलता हो वहाँ का राजा या रानी यह नियम बनाते हैं। सामान्य विज्ञान का सम्बन्ध हमारे देश को कैसे चलाना चाहिये है। यह हमें यह समझाना है कि सरकार और इस देश को कैसे चलाना है। इसको हम राजनैतिक विज्ञान कहते हैं।

राजनीतिक शास्त्र एक समाजिक विज्ञान है जो कि राजनीति से हमारी जान पहचान करता है। यह हमें बनाता है कि सरकार कैसे चुनी जाती है? राजनैतिक पंडित अध्ययन करते हैं कि राजनैतिक गति विधियों और हालातों में क्या सम्बन्ध है, इसमें सरकार जन समूह राजनैतिक सम्बन्ध और राजनैतिक बर्ताव के बारे में पता चलता है। अगर आप उच्च शिक्षा

में राजनीति शास्त्र पढ़ेंगे तो आप को राजनैतिक सिद्धान्त, राजनैतिक सम्बन्ध और राजनीतिक अर्थशास्त्र जो कि इस की मुख्य शाखायें हैं उसके बारे में ज्ञान मिलेगा ।

0.2.4 समाजशास्त्र

समाजशास्त्र भी एक बहुत ही जरूरी सामान्य विज्ञान का भाग है । यह इन्सान का व्यवहार समाज में कैसे होता है इसका अध्ययन करता है । समाजशास्त्र एक लेटिन शब्द 'सोशोलोजी' से बना है । जिसका मतलब अपने साथी के बारे में जानकारी प्राप्त करना होता है । समाजिक शास्त्र समाज को समझने तथा उसके काम करने के तरीके के बारे में जानकारी देता है । यह हमें समाज को बनाने के लिये क्या अन्य चीजें हैं, उसकी भी जानकारी देता है । इसमें जात, लिंग की पहचान, संस्कृति, सभ्यता, धर्म और सरकार भी शामिल हैं । समाजशास्त्र में समाज को चलाने में एक अकेले मनुष्य तथा समूह कैसा वर्ताव करता है ।

0.2.5 अर्थशास्त्र

समाज में रहने का मतलब है कि हमें अपने जीवन को कैसे संगठित करना होता है । हमें कम खर्च में अपनी आय, समय और अन्य संचित कोष का प्रयोग करना आना चाहिये क्यों कि यह सब सीमित होता है । आपको यह भी सीखना चाहिये कि समय का सदुपयोग करके अपना कार्य पूरा कर सके । इसी प्रकार जब हम अपना बजट बना कर

उन सभी वस्तुओं का सेवन कर सकें । इससे हम अनेक परेशानियों से बच सकते हैं । इसी विद्या को हम अर्थशास्त्र कहते हैं, यह बजट बनाने से भी अधिक है । यह एक वैज्ञानिक विद्या है जो कि इन्सान को बनाना प्रयोग करना व धन को इस्तेमाल करने में मदद करता है । ये बहुत ही जरूरी है कि हमें इसका ज्ञान अपने निश्चित साधनों का प्रयोग कर सके । यह हमारी जरूरतों के साधनों के बीच में तालमेल बनाता है । इसका एक उदाहरण है अपना बजट या समय सारणी बनाना है ।

ये सभी विषय हमें अपने जीवन की तरक्की के लिये जरूरी है । हम भूत में जाकर मनुष्य ने कदम दर कदम कैसे तरक्की की जान सकते हैं । क्या आप जानते हैं कि विज्ञान के विकास का भी हम अध्ययन करते हैं । कैसे पेड़ पौधे और पशु विकसित हुये? क्या आप को पता है कि जीवविज्ञान में मनुष्य का नाम होमो सेपियन्स है । इसके बारे में अब हम पढ़ेंगे ।

1. इतिहास को समझने में भूगोल कैसे सहयोग देता है?
2. राजनैतिक शास्त्र के मुख्य भाग लिखे?
3. समाजशास्त्र किस बात को दर्शाता है?
4. अर्थशास्त्र क्या है?
5. आप के विचार से राजनैतिक शास्त्र, शास्त्र तथा अर्थशास्त्र हमारे समाज को विकसित करने में कैसे सहायता करता है?

0.3 मनुष्य का विकास

दो करोड़ वर्ष पूर्व पहला मनुष्य देखा गया था, वो भले वन मानुष जैसे दिखते थे। वैज्ञानिक इसको होमो सैफियरन कहते हैं। इसका मतलब है वह व्यक्ति जिस में दिमाग होता है। उनको खेती वाड़ी करनी नहीं आती थी। न ही उनको मकान बनाने आते थे। यह लोग गुफों तथा पेड़ों पर रहते थे। क्या आप यह जानते हैं कि वह जमीन पर रहने लगे थे तब उनको लिखना भी नहीं आता था। लेखन कला की खोज एक बहुत ही महत्वपूर्ण खोज थी। इसकी वजह से वह लिखने लगे थे। इसी को हम इतिहास कहते हैं।

इस सब की जानकारी के लिये ही इतिहासकार तथा खोज करने वाले वो हथियार, जेवरात तथा गुफाओं में बने चित्रों की समीक्षा करते हैं।

इतिहासकारों ने मनुष्य का विकास के सम्बंध अनेक पुस्तकें लिखी हैं। ऐसी लिखावट हमें पत्थरों, स्तम्भों, और लोहे पर दिख जाते हैं और आजकल कागजों पर भी मिल जाता है।

0.3. 1 भ्रमणकारी जीवन: पाषाण युग व्यतीत करता

पूर्व जीवन में मनुष्य एक भ्रमणकारी जीवन व्यतीत करता था। वह एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहते थे। ताकि उन्हें खाने के लिये कुछ मिल सके। यह लोग एक समूह में ही रहते थे। ताकि वह जंगली जानवरों से अपना बचाव कर सकें। और उनका साथ भी रहे। वह पत्थरों से औजार तथा हथियार बनाने लगे। इससे उनके रहन-सहन में विकास होने लगा। इनके मुख्य कारण थे :

1. पूरा पाषाण युग : (500, 000 ई. पू. से 10,000 ई. पू.)

जंगली युग में मनुष्य पहाड़ों के नजदीक रहते थे जहाँ कि नदियाँ बहती थीं। नदियों के द्वारा उन्हें पीने का पानी मिलता था तथा शिकार भी मिलता था जो कि वहाँ पर अपनी प्यास बुझाने आते थे। जंगली जानवरों वहाँ की वजह से उन्हें रहने के लिये गुफा मिल जाती है। इस प्रकार उनको अपने खाने, पीने व रहने का स्थान मिल जाता था। क्या आप जानते हैं? कि उनको बड़े-बड़े जानवरों को भगाना पड़ता था। ताकि अपने रहने के लिये जगह बना सकें।

अपने शरीर को ठण्ड और गर्मी से बचाने के लिये पेड़ की खाल और जानवरों की खाल को धूप में सुखा कर पहनते थे। आप को यह जानकर बड़ा आश्चर्य होगा कि वातावरण हमारे जीवन में कितना अहम भूमिका निभाता है। कुछ स्थान जैसे कि अंडमान व निकोबार जैसे इलाके हैं जहाँ कि भ्रमणकारी मनुष्य अब भी रहते हैं।

आदि मानव जिन गुफाओं में रहते थे उनकी दीवारों पर उनके शिकार करने के चित्र बने हुये थे। जानवरों का शिकार खासतौर से बड़े जानवर जैसे कि जंगली भैंस तथा बारह सिंगा, अब भी भीम बेटका की गुफाओं जो कि मध्य प्रदेश में देखने को मिलते हैं। यह हो सकता है कि इस तरीके के चित्रों को दर्शाने से वे अपनी बच्चों की शिकार करने में मदद करते हैं। या यह भी हो सकता है कि शायद यह अपने रहने वाली गुफाओं की दीवार को अच्छा बनाने में लगे हों।



चित्र 0.1: भीमबेटका गुफा में चित्रकारी

क्या आप जानते हैं

भीम बेटका एक ऐसी प्राचीनतम जगह है जो कि रायसीना प्रांत मध्य प्रदेश में है। भीम बेटा की गुफाओं में प्राचीन अंश मनुष्य के पूर्व इतिहास के बारे में जानकारी मिलती है। कुछ लोगों का मानना है कि कुछ झुगीयाँ 10,000 वर्ष पूर्व की है। कुछ झुगीयाँ तो कम से कम 30,000 वर्ष पूर्व की हैं।

पूर्व इन्सानों ने कुछ ऐसी परंपराये शुरू की हमें लगता है कि वो उनकी भावनात्मक भावनाओं समन्वित हों। वो अपने पूर्वजों को पूजते थे और उनकी मौत के बाद वो उनको दफनाते थे उनके औजारों तथा भोजन पानी के साथ ताकि वे अगले जन्म में आराम से जा सकें। उनको बिजली और बादलों की गरज से डर लगता था। वो यह नहीं समझ पाते थे सूरज क्यों उगता और डूबता था। पर वो यह जानते थे कि सूरज के उगने से गर्मी तथा डूबने पर शांत और ठण्डे वातावरण का अहसास दिलाता था। यह सब उनके लिये एक अंधविश्वास सा था। क्योंकि वह इसको समझ नहीं पा रहे थे। इसलिये वह सूर्य चाँद, बिजली और बादलों की गर्जन की पूजा करने लगे पर उन्होंने कुदरत के साथ कोई भी खिलवाड़ नहीं किया। उन्होंने कुदरत से केवल उतना ही लिया जितनी की उनको जरूरत थी और चैन से रहने लगे। क्या आप नहीं मानते कि आज अगर हम भी वैसा ही करते जैसे कि हमारे पूर्वजों ने किया वो संसार में खुशहाली रहती, इस तरह से हम पूर्व पाषाण युग से मध्य पाषाण युग में पहुँच गये। यह समय पूर्व पाषाण युग से नव पाषाण काल के बीच का है।

2. मध्य पाषाण युग: (10,000 ई. पू. - 8,000 ई. पू.)

हम लोग देखते हैं। कि मध्य पाषाण युग में आग की खोज कैसे हुई। यह मूमकिन है कि जब हम दो पत्थरों को आपस में ठकरायेंगे तो उसमें से चिंगारी निकलेगी। यह चिंगारी किन्हीं सूखे हुये पत्तों पर जब गिरी उससे उन पत्तों में आग लग गयी। इस आग से उस समय उन्हें हैरानी या डर जरूर लगा होगा। लेकिन बुद्धी जिवियों ने इसे अपने फायदे के लिये इस्तेमाल करना सीख लिया। उन्होंने पाया कि जानवर आग से डरते हैं तो उन्होंने अपनी

गुफाओं के सामने उसको जलाकर रख लिया ताकि जानवरों का डर न रहे। यह रात को रोशनी भी करती थी। खाने का स्वाद भी अच्छा हो गया जब वह आग पर खाना बनाते थे। उन्होंने यह भी पाया की सर्दी में यह गर्मी भी देती है। आज के युग में भी सर्दी में लोग, आग के चारों तरफ बैठ कर उसका लुप्त उठाते हैं। क्या, आप समझ सकते हैं। कि पूर्व मनुष्य जो कि पेड़ों की डाल पर रहते थे उन्होंने आग की खोज तक क्या तरक्की की। यह सब एक रात में तो हुआ नहीं था। जाहिर है कि इन सब में वर्षा लगे होंगे। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि आग एक आश्चर्य तथा पूजनीय वस्तु बन गया।

सोचिये कि आप एक ऐसी जगह जा रहे हैं जहां पर बिजली नहीं है। वह एक ठंडी रात है और आपको डर लग रहा है। विचारिये कि हमारे पूर्वजों ने अपने आप को गर्म रखने के लिये क्या किया होगा। अब आप तीन तरीके बतायें जिसमें आप अपने आप को गर्म रख सकें।

आग की ही तरह औजारों का प्रयोग भी एक जरूरी खोज थी। यह औजार जो उस समय के थे उनको साईको लिथसा कहते हैं। यह तेज थे और बहुत काम के भी थे। इनके लिये जानवरों की हड्डीयों का प्रयोग किया गया था। इनसे औजार तथा हथियार जैसे कि छेद करने के लिये। उठाने के लिये, तीर, काँटे, तीर के नुकीले कोण तथा हथोड़ी तथा काटने वाले तथा कुल्हाड़ी जिससे की छोटे पेड़ कट सकें। इससे वह जानवरों का शिकार खाने के लिये तथा अपने रहने के लिये छोटी छोटी झुगीयाँ बनाने के काम में लाये। छोटे पत्थरों को तराशों के साथ ही उन्होंने इन पत्थरों को चाकू की तेज धार वाला बना लिया। इन पत्थरों को, अपने तीर और भाले में जोड़कर ज्यादा फायदेमंद बना लिया। अब वह एक सुरक्षित दूरी से भी जानवरों का शिकार कर सकते थे। ऐसे ही कुछ पत्थर और हथियार हमें पंजाब कश्मीर की घाटियों, हिमालयों के निचले हिस्सों में तथा नर्मदा घाटी में मिले हैं। अगर आप पुस्तकालय में जाकर या इंटरनेट पर इन चीजों के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे तो ऐसी कई जगहों की विवरण आपको मिल जायेंगे।



चित्र 0.2 : पाषाणयुगीन औजार

चित्र 0.2 : पाषाणयुगीन औजार

3. नवपाषाण युग - नवीन पत्थरों का युग (8,000 ई.पू.- 4,000 ई.पू.)

शुरु शुरु में मनुष्य केवल शिकार तथा खाना इकट्ठा करते थे। हजारों वर्ष लग गये ज बवह इन सब के बाहर खाना पैदा करने वाले बने। यही वह युग था जब मनुष्य अपने आप खुद उगाने लगे और खाने के लिये दर दर नहीं घूमना पड़ा। आप क्या सोचते हैं कि यह कैसे हुआ? शायद जैसे आग की खोज हुई उसी प्रकार हो सकता है कि कुछ बीज ज़मीन पर गिर गये होंगे तथा उनमें अंकुर फूट कर कोई पौधा निकल आया होगा। यही पौधे खाने के साधन बन गये। मनुष्य ने इसी तरह बीज बोकर खेती शुरू कर दी। अब उनको जो बीज उन्होंने बोये थे। उसकी देखभाल शुरू कर दी। क्योंकि कम से कम बीज बौने के बाद फसल के लिये छह महीने का इन्तजार करना पड़ता था। यह खेतीवाड़ी की शुरुआत थी। इसके लिये अब लोगों को दर दर न घूम कर एक जगह रुकने की जरूरत पड़ी जिसकी वजह से मनुष्य के जीवन में कई फेर बदल व परिवर्तन आये उन्होंने अपने लिये झुगीयाँ बनानी पड़ी जो कि एक तरफ से दीवार से बनी थी। उनके खेत इसी दीवार की सीमा से शुरू होते थे अब उनके पास रहने के लिये एक जगह हो गयी थी जिसने एक गाँव की शक्ल ले ली थी। इस गाँव में कई परिवार जो कि एक दूसरे का संरक्षण करते थे। इसी समय उन्होंने पाया कि वो लोग कुछ जानवर भी अपने पास रख सकते हैं। यह सब खेतीवाड़ी की वजह से सम्भव हुआ। अब यह

मनुष्य अन्न अपने लिये तथा उसकी खोल जानवरों के लिये रख लेते थे। क्या आप को मालूम है कि कुत्ता पहला ऐसा जानवर है जो कि पालतू बना। बाद में मनुष्यों ने बकरी, गाय, भैंस, और भैस, भी रखनी शुरू कर दी जिससे कि उन्हें दूध व गोشت खाने को मिलता था। वो भेड़ों के बाल और उनकी खालों से वस्त्र बनाने लगे। खेतीवाड़ी से उन्हें अन्न तथा जानवरों से दूध, गोشت व ऊन मिलता था।

इन मनुष्यों ने बीज में से पौधे जिससे की उन्हें फल प्राप्त होता था ज़मीन से निकलते देखा और देखा कि कैसे एक माँ छोटे से बच्चों को पाल पोस कर बड़ा करती है, उन्होंने पृथ्वी की पूजा करना आरम्भ कर दिया। इस युग के लोग भी पूर्व युग के लोगों की तरह से अंधविश्वास में ही रहते थे।

जैसे जैसे ज्ञान का विकास हुआ मनुष्य को अपने जीवन में आराम से रहने की आवश्यकता महसूस हुई। उन्हें एहसास हुआ कि अच्छे औजार और सामान की उन को जरूरत है, उन्होंने उसे और तेज बनाना शुरू कर दिया। कुल्हाड़ी पेड़ काटने व गिराने के काम आने लगी। यह कुल्हाड़ी मजबूत पत्थर की थी जो कि एक तरफ से पतली व पैनी होती थी। और उसको एक लकड़ी पर कीलों के साथ लगा दिया जाता था। इसी प्रकार एक हंसिया का प्रयोग फसल में काम आता था। इन हथियारों को वह साफ सुथरा तथा चमका कर रखते थे, क्या आप जानते हैं कि इन औजारों का इस्तेमाल आज भी कई छोटी-छोटी जगहों पर होता है।

एक और खोज इस समय पहिले की हैं। कोई भी यह नहीं सोच सकता था कि पहिले कैसे मनुष्य के जीवन को इतना परिवर्तित कर देंगा। पहिले कुँए से पानी निकालने के लिये एक पुलिया का काम करता है। धागा बुनने के काम और कपड़े बनाने के काम के लिये एक चक्र का काम करता है। मिट्टी के वर्तन बनाने के लिये भी यह काम आता है। यह वर्तन खाना पकाने के काम आते थे। यह लकड़ी के बने होते थे जो कि बाहर से मिट्टी का लेप चड़ा होता था। पहिले का सबसे

बड़ा इस्तेमाल गाड़ी के काम आता था जो कि समान को एक जगह से दूसरी जगह ले जाया करता था। आज भी यह पहिये कई जरूरी काम में सहायक होते हैं।



चित्र 0.3 : नवपाषाण युगीन बर्तन

चित्र 0.3 : नवपाषाण युगीन बर्तन

जैसे जैसे आप पढ़ते गये होंगे आप ने जाना होगा कि कैसे मनुष्य ने पूर्व पत्थर काल से नये पत्थर युग तक उन्नति की ।

पूर्व मनुष्य से वर्तमान मनुष्यों की तुलना इन शब्दों को लेकर करें ।

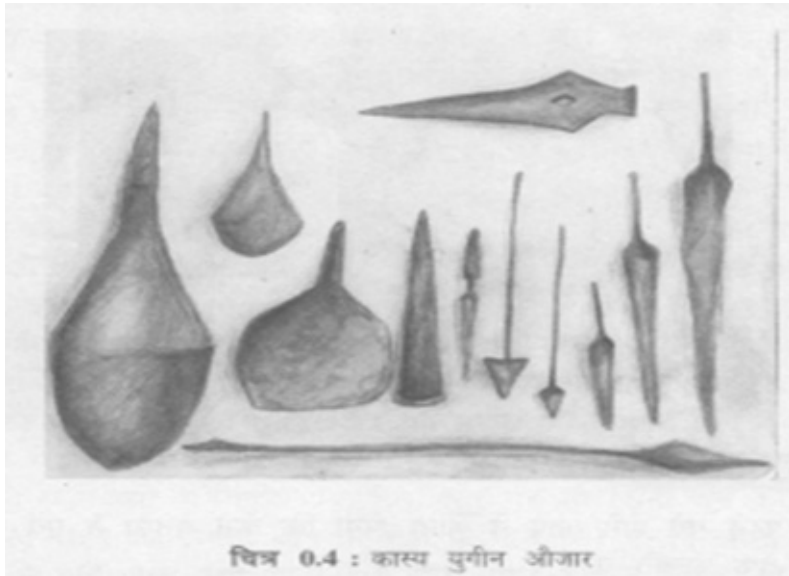
जैसे आग, औजार, कृषि, मिली-जुली खेती, पहिये, धर्म और रहन-सहन वातावरण को लेकर करें ।

1. पूर्व युग के मनुष्य बन्जारे क्यों कहलाते थे ।
2. पूर्व पाषाण युग तथा नवीन पाषाण युग में कम से कम दो अन्तर बतायें ।
3. नव पाषाण युग की दो खोज बताये ।
4. तीन ऐसी चीजें बताये जिसका प्रभाव पहिले की खोज से आम मनुष्य के जीवन पर पड़ा होगा?

0.3. 2 धातु का प्रयोग

धातु युग मनुष्य खाना इकट्ठा करने से लेकर पाषाण युग से काफी आगे आ चुका था फिर भी वह संतुष्ट नहीं था । शीघ्र ही उन्होंने ताँबे की खोज कर ली । यह युग धातु युग कहलाने लगा ।

इस युग में मनुष्य ने ताँबे से सामान बनाना शुरू कर दिया। क्या आप यह पढ़ चुके होंगे कि मिट्टी के वर्तन बनाने के लिये आग का इस्तेमाल होता था। यह अब भी मिट्टी के रूप में काम आता है। ताँबा वो पहला धातु था जो कि पिघला कर दूसरी चीजों को बनाने में काम आया।



चित्र 0.4 : कांस्य युगीन औजार

चित्र 0.4 : कांस्य युगीन औजार

जैसे जैसे धातु मिलने लगे मनुष्य ने उनके साथ खोजबीन शुरू कर दी। ताँबे को दूसरे धातुओं के साथ मिला कर जैसे कि जस्ता, लोहा और ताम्बे का मिश्रण कर के काँसे को तैयार किया। पहले बने, औजारों की तुलना इन धातुओं के बने औजार ज्यादा फायदेमंद लगे। लौहे के बने कुलहाड़े और चाकू ज्यादा जल्दी पेड़ काटने तथा कृषि के काम आने लगे। जब मनुष्य लोहा और पत्थरों के मिले जुले, औजारों का प्रयोग करने लगे तो यह युग लौह युग कहलाने लगा। इस युग में इस्तेमाल वस्तुओं को हमें ब्रह्मगिरी जो कि माइमोर में है, नबाब नोली नजदीक नर्मदा नदी और छोट्टा नागपुर में मिले। अगर आप कभी भी इन जगहों पर जायें तो उनको लिख ले और उसकी तुलना किसी भी दूसरी जगह से जो आपने देखी हों या पढ़ी हों के साथ कीजिये।

जन समूह की शुरुआत

खेतीवाड़ी, मिली जुली खेती, औजारों की प्रगति और पहिये की खोज से मनुष्य एक जगह समूह में रहने लगा इसको हम गांव कहते हैं। यह समूह धीरे-धीरे बढ़ने लगा। इस बढ़ते हुये समूह को नियंत्रण में रखने के लिये किसी ऐसे व्यक्ति विशेष की जरूरत पड़ी जो वहाँ पर कानून और आपस में मिल-जुल कर रहने में सहायता करे। अनेक समूह अपने तरीके से अपना नेता चुनने लगे। यह नेता ज्यादातर कोई बुर्जग ही होता था या फिर कोई बहुत ताकतवर। यह नेता ही इन सबका ख्याल रखने लगा। अगर कभी दो लोगों में कोई मतभेद होता है। तो यह नेता ही उनको सुलझाता था। धीरे-धीरे यह समूह बढ़ता गया तब नगर व शहर बनने लगे। क्या आप

जानते हैं कि सबसे पहला कस्बा सरस्वती और सिन्धु में सन् 2500 ई.पू. में बना था। इसलिये सिन्धु घाटी सभ्यता कहा जाता है। यह नाम हड़प्पा की खोज के बाद हुआ था।

धर्म:- पूरे विश्व में मनुष्यों को अनहोनी का भय लगा रहता है। कोई भी ऐसा हादसा जो उनकी समझ से बाहर था वो उसको बड़े आश्चर्य व हैरानी से देखता था। जमीन ने एक माँ का रूप ले लिया था। जो अपने बच्चों के लिये खाना पीना देती थी। सूर्य हमें जिन्दगी और गर्मी देता था और रात के अन्धेरे में रोशनी देता था। इसी प्रकार चाँद, तारे और बारिश के बारे में था। मनुष्य इन सब चीजों को पूजने लगे। यह लोग उस के लिये कुरबानी देने लगे तथा उनके सम्मान में गीत गाने लगे। ऐसे ही कुछ इन्सान जादू टोना करने वाले उभरे जो यह कहते थे कि वो अपने जादू टोने से लोगों की मदद कर सकते हैं। कुछ लोगों ने कुरबानी दी और जनता समूहों की मदद करने के लिये पूजा पाठ

करने लगे। यह लोग पंडित कहलाने लगे।

लोग यह जान गये थे कि मृत्यु एक ऐसा सफर था जहाँ से कोई जिन्दा वापस नहीं आया। उन्होंने मरे हुये लोगों के लिये कब्र खोदनी शुरू कर दी। ऐसी कब्र को ढ़क कर रखने के लिये बड़े पत्थरों का इस्तेमाल किया जिसको हम मेगालिथ्स कहते हैं। कभी कभी कई ऐसी चीजें जो कि रोज के काम आती हैं कब्र में रखने लगे।

क्या आप को जाना कि यह तरीका आज के युग में भी होता है। आप को बहुत हैरानी होगी कि आज भी हमारी कई चीजें ऐसी हैं जो कि हमारे पूर्वजों से मिलती जुलती हैं।

0.3.3 लोहा युग और आगे

जैसा कि आपने पढ़ा और सीखा कि मनुष्य की सभ्यता और सभ्य रहने के तौर तरीके में काफी विकास हुआ है। पूर्व युग में मनुष्यों ने औजारों को पत्थर से बनाया। बाद में लोहे की खोज से यही औजार ज्यादा फायदेमंद साबित हुये। तब, काँसा और लोहे की खोज क्रम से हुई।

लोहे की खोज मनुष्य की प्रगति की बहुत ही महत्वपूर्ण कड़ी थीं इससे बने हुये औजार ज्यादा मजबूत तथा देर तक चलने वाले थे। बाद में और धातुओं का इस्तेमाल होने लगा। लोग दो धातुओं को मिलाकर और एक अन्य धातु बनाने लगे। पीतल इसका एक उदाहरण है उसके बाद हमने स्टील कार्बन और लोहे को मिलाकर एक नया धातु का निर्माण किया। प्लास्टिक का निर्माण हुआ। प्लास्टिक का इस्तेमाल अब और औजार और वस्तुओं के बनाने में काम आने लगा। यह दूसरे धातुओं से ज्यादा फायदेमंद लगा।

प्लास्टिक का इस्तेमाल हमारे वातावरण पर गलत प्रभाव डालने लगा। इसलिये इसका प्रयोग अब कम होने लगा है। आपको प्लास्टिक के बने बैग पर पाबन्दी लगाने की बात तो मालूम होगी। वैज्ञानिक ऐसे प्लास्टिक की खोज कर रहे हैं जिसका हमारे वातावरण पर गलत असर न पड़े तो अब तो आप जान गये होंगे कि मनुष्य की हर खोज एक चुनौती छोड़ जाती है। यह ही एक चुनौती हमारे आगे बढ़ने में सम्मिलित होती है। इस के बारे में हम अब आगे जानने की कोशिश करते हैं।

ऐसी धार्मिक कार्यों कि एक लिस्ट बनाये और उनके बारे में अपने या दोस्तों से चर्चा करें। इस वार्तालाप के मद्दे नजर रखते हुये अपने किसी दोस्त जो कि किसी अन्य शहर में रहता हो चिट्ठी लिखिये। उन धार्मिक कार्यों के आज के युग पर क्या प्रभाव पड़ता है। उसे जानिये।

1. हम यह क्यों कहते हैं कि धातु युग के औजार पत्थर युग से बने औजारों से बेहतर होते हैं?
2. उन तत्वों के बारे में लिखिये जो कि पूर्व मनुष्य थे । जिनसे एक जगह पर रुक कर अपना जीवन बीताने लगे । वे तत्व का आज का युग में क्या महत्व रखते हैं ।
3. सामुहिक जीवन व धर्म का समाज पर क्या असर पड़ा था ।
4. पूर्व मनुष्य के जीवन में लोहे की खोज का क्या असर पड़ा?

हमने ऊपर पढ़ा कि मनुष्य की सभ्यता विकास के विभिन्न मंचों से होकर गुजरी है विश्व में बहुत ही आम है। हमने यह भी पाया कि कुछ खोज पूर्व से जो कि आज के युग में भी इतनी ही जरूरी हैं जैसे कि पहिया।

1. शिकार युग : ऐसी कई घटनाओं को हमारे पुरानी चीजों को ढूँढने वालों को मिली जिससे हम अपने पूर्व जीवन के बारे में जान सके। इस प्रकार कि जिन्दगी को हम पूर्व आदम कहते हैं क्योंकि हमेशा जिन्दगी में मनुष्य वातावरण पर निर्भर रहता था। मनुष्यों ने अपने जीने के लिये जानवरों, पक्षियों, मच्छी का शिकार करा जैसे कि जानवर करते हैं। वह शिकारियों की तरह कई वर्ष तक रहे। यह शाखा पत्थर युग कही गयी थी यही वह समय था जब पशु पालने शुरू हुआ था। यही वह समय का जब लोगों को खाना मिलने की पूरी उम्मीद थी और कुछ नई चीजें जैसे कि दूध, मक्खन और चीज मिलने लगी थी। लोगों के लिये जिन्दगी अब काफी सुरक्षित थी पहले के मुकाबले क्योंकि जानवरों की देखभाल करना शिकार करने से कहीं आसान थीं। मनुष्यों के पास अब सोचने के लिये समय था। लेकिन उनको फिर भी एक जगह से दूसरी जगह अपने मवेशियाँ के साथ चारे के लिये घूमना पड़ता था।

2. गांव का जीवन (देहात) : खेतीवाड़ी की वजह से मनुष्य एक जगह रुक कर रहने लगे। इन्होंने सीख लिए था कि किस तरह चीजों को ज़मीन में बो कर फसल उगायी जा सकती है। इस तकनीक से वह एक जगह पर रुक कर फसल उगाने लगे। अब उनके पास रहने के लिये एक पक्की जगह हो गयी थी जिसने आगे चलकर एक गाँव की शक्ल ले ली जहाँ से सभ्यता सही मायने में जन्म लिया। इसको हम देहाती काल भी कह सकते हैं।

3. शहरी जिन्दगी : देहाती जीवन में गाँव में रह कर खेती करने के साथ ही मनुष्य शहरी जिन्दगी की तरफ आगे बढ़ा। इस समय जनसंख्या की बढ़ोतरी के साथ मनुष्य केवल भोजन जमा करने वाले नहीं रहे वह अब भोजन बनाने वाले बन गये थे। परिवारों का समूह बढ़ता गया और समाज बनने लगे। अब यह जरूरी नहीं था कि सारा परिवार खेती ही करे। उनमें से कुछ कुम्हार, कुछ कपड़ा बुनने वाले या बढ़ई बन गये। यह लोग अपने काम के बदले अनाज लेते थे और उनके जीवन में काफी बदलाव आ गया था। धातुओं की खोज से उनके जीवन में और प्रगति हुई कुछ कारीगर दूसरी के मुकाबले बेहतर थे। यही एक कारण था कि समाज में भी कुछ कुशल और कुछ अर्धकुशल कारीगर अपने क्षेत्र में हुये। इनही समय में धातुओं जैसे कि तांबा और पीतल की भी खोज हुई। इन सब का इस्तेमाल जरूरी सामान बनाने में होने लगा था जो कि एक आरामदायक जीवन व्यतीत करने के काम आता था। कारीगर अपनी कुशलता के साथ बर्तन, चमड़े का काम और राजगिरी करने लगे। लोग एक जगह मिलकर अपना सामान बदलने लगे। यहीं पर किसान भी अपना अन्न बेचने व बदलने के लिये आते थे। यह सब काम एक केन्द्रीय जगह पर होता था। सभ्यता की दौड़ में मनुष्यों अपने भोजन की पूर्णता के साथ बर्तन, कपड़े, प्रादी भी खरीदने बेचते लगे। यह वह समय था जब लोहे की खोज हुई थी। अब एक ऐसा माहौल बनाने की जरूरत पड़ी की कार्य कुशलता के साथ छोटे-छोटे समूह बनायें यही वह समय है जब कार्य क्षमता के साथ विभाजन होने लगा। मनुष्य अब अपने जीवन में आगे बढ़ने और उन्नति की तरफ अग्रसर हो गया। लेखनकला खोज हमारी बढ़त का एक बहुत ही जरूरी कदम था। इससे हमने यह सारी विद्या को लिखकर आने वाली अगली पीढ़ी के लिये किया ताकि वह इसका फायदा उठा सके लिखना उन सभी लोगों के लिये जरूरी भी हो गया था जो व्यापार करते थे। और जो लोग गाँव, कस्बा और शहरों के कानून की देख रेख करते थे।



चित्र 0.5: हड़प्पा अभिलेख

4. शहरी जिन्दगी:- धीरे-धीरे किसानों ने अधिक मात्रा में अन्न पैदा करना शुरू कर दिया और उनका संचार भी करने लगे ताकि वह आगे काम आ सके। इसका परिणाम यह हुआ की आम आदमी के पास समय बचने लगा जिसकी वजह से सभ्यता का विकास हुआ। तस्वीरें बनाना, मूर्तियों बनाना, संगीत और अन्य ऐसी कलाओं का विकास हुआ। अब जब लोगों के पास सुरक्षा थी और उनके निजी जीवन की चीजें पूरी होने लगी तो उनका ध्यान इन अन्य बातों की तरफ बढ़ा। यही एक समय था जब जाति और उनके रहन-सहन से उनका विभाजन होने लगा। कस्बों से निकलकर एक शहरीकरण होने लगा। हड़प्पा और मोहनजोदड़ो जो कि अब पाकिस्तान में हैं कुछ ऐसे ही शहर थे। भारत में रोपड़ जो चन्डीगढ़ के पास, लोथल, अहमदाबाद के नजदीक और कालीबंग जो कि राजस्थान में है

कुछ ऐसे ही शहर थे। यह शहर बहुत ही सोच समझ के बनाये गये थे और यहाँ सुविधाएँ भी उपलब्ध थी। इनमें पक्की सड़कें जो की एक दूसरे को त्रिकोण में, पानी निकालने की सुविधा और पक्की ईंटों से तैयार किया गया था। विज्ञान और शिल्प विज्ञान की उन्नति के साथ, सामान बनाने की विद्या में भी काफी सुधार आया है।



चित्र 0.6 : सिंधुघाटी सभ्यता का पतन लोथल (गुजरात)

चित्र 0.6 : सिंधुघाटी सभ्यता का पतन लोथल (गुजरात)

जिन्दगी कुछ लोगों के लिये तो काफी आरामदायक हो गयी थी। शीघ्र ही शहरों ने भी अपनी अपनी पहचान बना ली इनमें से कुछ राजधानी शहरों में तबदील हो गये। ऐसे शहरों में हमें ऊँची-ऊँची मीनारें, जरूरी दफतर, बड़े व्यापारिक भवन तथा कारखानों भरमार है। जीवन कुछ लोगों के लिये काफी सरल व अच्छी हो गयी है। हम लोगों ने इस समय बहुत सी खोजें, नई वस्तुओं का बनाना आदि साफ पानी पीने के लिये भी उपलब्ध नहीं है। इस की वजह से कई समस्याएँ खड़ी हो गयी है जिसका समाधान हम लोगों को ढूँढना पड़ेगा। इन सब चीजों के बारे में हम इस पाठ पढ़ेंगे।

पाठगत प्रश्न 0.4

1. मनुष्य की उन्नति के हर चरण से दो लक्षण बतायें?
2. जानवरों के शिकार में पूर्व मनुष्य तथा आधुनिक मनुष्यों के बीच की भिन्नता बतायें?
3. ऐसी क्या परिस्थियाँ थी जिस की वजह से शहरीकरण हुआ?
4. लिखावट ने मनुष्य के जीवन की प्रगति में कैसे मदद की?

हमने एक जंगल में रह कर शिकारियों की जिन्दगी से आज के युग में जहाँ हम अन्य ग्रहों की खोज उपग्रह भेजे हैं। यह जानकारी कम्प्यूटर में हम संचित कर सकते हैं। हम उस युग में जहाँ जानकारी तथा आपसी वार्तालाप की शिल्पकारी से समलित होती है। इसके बावजूद हम बदल रहे हैं आगे बढ़ रहे हैं और प्रगति की ओर अग्रसर हो रहे हैं।

अब तक तो आप यह समझ ही गये होंगे कि कैसे हम पत्थर युग से नवीन सभ्यता तक का सफर तय किया है। यह एक लम्बासफर है जिसमें हमने नई खोजें व अन्य परिस्थितियों का सामना किया और उनका फायदा लिया। यह सम्बन्ध मनुष्य का केवल अपने आप से ही नहीं, बल्कि समाज और वातावरण में प्रेरणा डालकर समाज में हम सब मिल कर उन्नति की ओर आगे बढ़े ताकि इसका फायदा केवल कुछ लोग ही नहीं अन्य भी पा सकें।

हालांकि हमने बहुत प्रगति कर ली है किन्तु अब भी ऐसी कई समस्याये हैं जिनका हमको सामना करना है। आप ऐसी कई समस्याओं के बारे में आगे पढ़ेंगे और उन समस्याओं का हल भी ढूँढना पड़ेगा। वह समस्याये निम्नलिखित हैं।

1. गरीबी व भूखमरी
2. धन का सामान्य विभाजन न होना
3. बेरोजगारी या कम आँके जाने वाला काम
4. सामान्य अर्थशास्त्र कर की चोरी और काला धन
5. सामान्य जीवन में घोटाला
6. वायु प्रदूषण
7. अपने देश के प्रति कम लगाव
8. लिंग से सम्बन्धित समस्याये, औरतों के खिलाफ जुर्म तथा दहेज, लिंग की पहचान तथा वैश्यावृत्ति
9. बदमाशी और गूँझागर्दी, देश में गड़बड़ी मचाना आदि
10. देश की उन्नति व प्रगति में रुकावट:- जैसे कि भाषा, धर्म, जातपात और आपसी भेदभाव आदि।

1. ऐसी कुछ समस्याओं के बारे में लिखें जो कि इस पाठ में नहीं बताई गयी हो?
2. ऐसी समस्याओं को जो कि सामान्य ज्ञान से सम्बन्ध रखती है। उनका हल बतायें?
3. मनुष्य की सभ्यता के विकसित होने के साथ समाज में शहरीकरण तथा उपनीकरण की कुछ समस्याओं के बारे में बतायें।

आपने क्या सीखा

1. सामान्य विज्ञान को पढ़ने की महत्वता और कैसे यह हमें दूसरे विषयों में मिलाप कराता है ।
2. इतिहास हमें बताता है कि कैसे मनुष्य ने अपने जीवन को खुशहाल बनाने में मदद की ।
3. गृह शिल्पियों द्वारा उन सब इमारतों, लोगों का दफन टूटी हुई इमारतें और शिल्पियों के बारे में हमें ज्ञान दिया और भूगोल हमें जमीन के बारे में, लोगों के बारे में और वातावरण के बारे में सिखलाता है ।
4. राजनैतिक विज्ञान से हमें राज्य तरीके तथा राज्य के बारे में बताता है ।
5. सामाजिक शास्त्र समाज के बारे में तथा अर्थशास्त्र हमें धन के संग्रह से लेकर मनुष्य कैसे उसका सद उपयोग करके यह बताता है कि हम उसका प्रयोग कैसे करें ।
6. हमने सीखा कि कैसे पत्थर युग में आग की खोज की कैसे उन्होंने हथोड़े, चौपर और कुल्हाड़ी बनाकर छोटे पेड़ तथा जानवरों का शिकार अपने जीवन चलाने के लिये करते थे । वो मरने के बाद अपने पूर्वजों की पूजा करते थे और उनकी कब्र में औजार तथा खानेपीने का सामान रखते थे ताकि वह दूसरे युग में आराम से जा सकते थे । बाद में उन्होंने अपने औजार और तेज बनाने शुरू कर दिये ।
7. आज के युग में जीवन और भी आरामदायक हो गया है । पहिये की खोज और उसकी हमारे जीवन में क्या महत्व है । खेतीवाड़ी ने मिलीजुली खेती तथा एक नगर में रुक कर रहने लगे । यह एक समाज की शुरुआत था । शीघ्र ही यह ग्राम, कस्बों और शहरों में विकसित होने लगे ।

पाठान्त प्रश्न

1. सामान्य विज्ञान कैसे अन्य शास्त्रों से सम्बन्धित है उदाहरणों के साथ समझाये ।
2. क्या आप सोचते हैं कि इतिहास का पाठ्यक्रम जरूरी है । अपने विचारों के साथ लिखिये
3. इतिहास तथा शिल्पकारी में क्या सम्बन्ध है?
4. मनुष्य के समाजीकरण के लिये अन्य ज्ञान सामान्य विज्ञान से कैसे सम्बन्धित है?
5. संक्षिप्त में बतायें कि समाज को बढ़ावा देने में मशीनी युग और पीतल के युग ने क्यों योगदान दिया है ।
6. आग की खोज का क्या महत्व है

7. संक्षिप में अर्थशास्त्र के महत्व बतायें ।

8. अर्थशास्त्री देश के लिये क्यों महत्वपूर्ण होता है । क्या आप इसे स्वीकारते हैं यदि हां तो क्यों?

9. पता करें कि प्लास्टिक बैग पर क्यों पाबन्दी लगानी चाहिये । एक ऐसी योजना बनायें जिससे हम चालू और प्लास्टिक के फायदे और नुकसान बतायें ।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

0.1

1. अर्थशास्त्र, इतिहास और भौगोलिक ज्ञान, भूगोल, राजनैतिक विज्ञान और समाजशास्त्र

2. इतिहास के अध्ययन से हमें हमारे पूर्वज, हमारी ताकत तथा हमारी उपलब्धियों के बारे में बताता है तथा हमें दिशा का ज्ञान देता है ।

3. इतिहास एक ऐसी कहानी है जो कि जो हमें हमारे पूर्वजों के बारे में बताते हैं । और गृहशिल्पी हमें वैज्ञानिक तत्वों को समझकर यह बताता है । कि कैसे जो भवन आदि शेष है उससे हमारे जीवन पर क्या असर पड़ता है ।

4. शिला लेख सिक्के, स्मारक, मुहर और खोजे हुये स्थान ।

5. हडप्पा, मोहनजोदड़ो, राखीगढ़ी, द्वारका और नालंदा ।

0.2

1. भूगोलिक चित्र किसी भी सामाजिक की ऐतिहासिक बढ़ाव के बारे में बहुत ही जरूरी है जैसे कि सिन्धु नदी की घाटी इण्डस सम्राज्य के लिये ।

2. राजनैतिक शास्त्र सामान्य विज्ञान की वह शाखा है जो किसी भी क्षेत्र की राज्यनैतिक जानकारी और उसके असर के बारे में बताता है ।

3. समाजशास्त्र वह विद्या है जो कि मनुष्य की सभ्यता बताता है ।

4. अर्थशास्त्र एक ऐसी वैज्ञानिक विद्या है जिससे हमें अपने धन का प्रयोग, किसी चीज की उत्पादन, खपत करना सिखाती है ।

5. यह सब चीजें आपस में सम्बन्ध रखती है । और सामान्य शास्त्र से मतलब रखती है ।

0.3 क

1. क्योंकि वो एक जगह से दूसरी जगह खाने की तालाश में घूमते रहते थे ।

2. नये युग के बढ़े औजार ज्यादा तेज तथा पौलिश होने की वजह से ज्यादा चलते थे यह खासियत पुराने युग के औजारों में नहीं थी ।

3. पहिये की खोज और मिलीजुली खेती

4. सामान इधर से उधर ले जाने में और बर्तन के लिये ।

0.3 ख

1. धातु के बने औजार ज्यादा फायदेमंद पुराने औजारों के मुकाबले थे । धातु के बने छूरी तथा कुल्हाड़ी के प्रयोग से पेड़ काटने में तथा खेती के लिये और जमीन साफ कर सकते थे ।

2. आग, पहिये तथा धातु की खोज । खेतीवाड़ी ने एक सामान्य जीवन बना था । यह सब वस्तुओं मनुष्य की आगे की जिन्दगी जीने के लिये थी ।

3. इसके द्वारा संयुक्त परिवार में रहने की प्रथा चल पड़ी जिसके कारण सामान्य विश्वास, आपसी कार्य वही जैसे कि व्यापार, राजनैतिक एवं सुरक्षा आदि । सामान ज्यादा मजबूत तथा काफी चलनेवाले हो गये थे । इसकी वजह से कार्य क्षमता बढ़ गयी थी ।

0.4

1. 1.3 और 1.4 में इसके संदर्भ में देंगे ।

2. यह शिकार जीवित रहने के लिये और केवल मनोरंजन के लिये शिकार करना ।

3. एक ऐसी जगह जो व्यापार, वाणिज्य तथा कानून व्यवस्था को बनाये रखे ।

4. ज्यादा दूर तक संचार करना तथा हिसाब किताब तथा रिकार्ड करना ।

0.5

1. छोटी लड़कियों की शिक्षा तथा गरीब वर्ग के खिलाफ अत्याचार इत्यादि ।

2. यह उन चीजों में मदद करता है जो कि हमें अपनी परेशानियाँ सुलझाने के लिये चाहियें उन चीजों का समीकरण करना जो हमारी चीजों को टूटने में मदद करती है और हमें उसका सदुपयोग करने में मदद करता है ।

3. समीक्षा करके लिखें कि तरक्की के कैसे आगे बढ़ें?

1. प्राचीन विश्व

आपने अपने पुरा इतिहास के विषय सबसे पहले अध्याय से जानकारी ली। आपने यह भी पढ़ा कि पुरा पाषाण काल में मानव ने किस प्रकार पत्थर लकड़ी और जानवरों की हड्डियों से हथियार और औजार बनाना सीखा। यह मानव गुफाओं में रहते थे और अपने लिये खाने का प्रबन्ध जानवरों का शिकार करके या इधर उधर से इकट्ठा करके करते थे। सैकड़ों हजारों सालों के पश्चात् उन्होंने कृषि के बारे में जानकारी प्राप्त की। लगभग उसी समय उन्होंने पशु पालन भी शुरू कर दिया। वह यह इसलिये कर पाये क्यों कि आदि मानव ने अपने रहने के लिये ठिकाना छू लिया। इसी कारण वह कृषि करने में भी सफल हो पाया। पाषाण युग के बाद आया धातु युग - कांस्य युग और लौह युग। इन युगों से प्रारम्भ होती है एक ऐसी सभ्यता जिसने मानव के जीवन, उसके रहने सहने का ढंग उसकी दैनिक जीवन की क्रियाओं को ही बदल डाला। कांस्य युगीन सभ्यताओं की मुख्य सभ्यताएँ भी मैसेपोटामिया, मिस्र, चीन और भारत लौह युगीन सभ्यताएँ थीं। यूनान, रोम पर्शिया और भारत।

आपको यह जानकारी आश्चर्य होगा कि लोहा जिसका आविष्कार और इस्तेमाल इतना पुराना है लेकिन आज भी इसकी जरूरत हमारे जीवन में कितनी महत्व रखती हैं। हमारे आस-पास और कितनी ही चीजें उपलब्ध हैं जो लोहे से बनी हुई हैं। यहाँ तक कि स्टील के बर्तनों का इस्तेमाल हमारे घरों में कितना अधिक है यह जानकर भी आपको आश्चर्य होगा। स्टील, लोहे का ही एक शुद्ध किया हुआ रूप है। हम इस पाठ में इन सभ्यताओं के योगदान की चर्चा करेंगे। कांस्य और लोहे की सभ्यताओं के साथ-साथ आप प्राचीन भारत के इतिहास के विषय में भी जान सकेंगे। यह भी जान सकेंगे कि उस समय के राजाओं और उनके बंशजों ने क्या योगदान दिया।

मानव समाज को इन सब विषयों की जानकारी हमारी लिये कितनी रोमांचक होगी। चलिये अब हम अपने अतीत में जाकर यह ज्ञान प्राप्त करें कि हम किस प्रकार इतने सभ्य, प्रगतिशील और सफल हो पाये हैं।

उद्देश्य

यह पाठ पढ़ने को बाद आप :

- मेसोपोटामिया, चीन, मिस्र और हड़प्पा की सभ्यताओं के मानव जाति को योगदान के विषय में बता सकेंगे;

- यूनान, रोम और फारस की लौह युगीन सभ्यताओं के योगदान का उल्लेख कर सकेंगे;
- वैदिक युग से लेकर हर्ष काल तक भारतीय इतिहास के महत्वपूर्ण विकास की व्याख्या कर सकेंगे ।

1.1 कांस्य युग

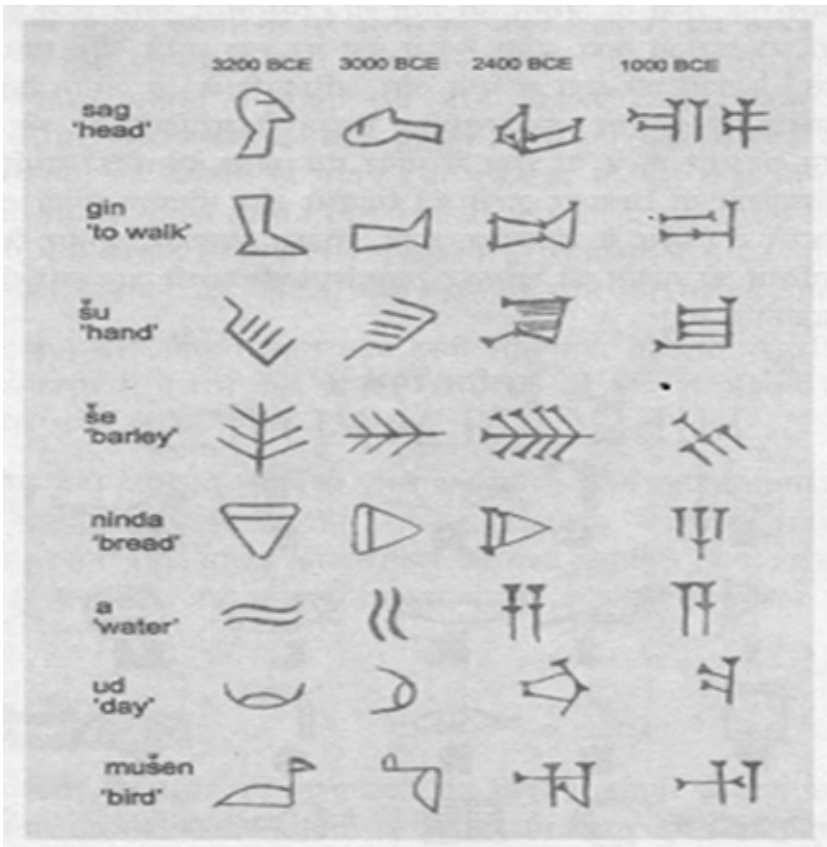
नव पाषाण काल के अंत में धातु का इस्तेमाल शुरू हुआ। तांबा पहली धातु थी, जिसका इस्तेमाल मानव ने किया। पत्थर और तांबा दोनों के इस्तेमाल पर आधारित संस्कृतियों को ताम्र-पाषाण संस्कृति कहते हैं। कांसा जो तांबा और रांगा की मिश्र धातु है, की खोज भी इस काल में हुई इसलिए इसे कांस्य युग भी कहते हैं। इस काल में हथियारों और औजारों के निर्माण में तांबा और कांस्य ने एक हद तक पत्थर, लकड़ी और हड्डी की जगह ले ली। लोगों ने धूप में सूखी और आग में पकी दोनों तरह की ईंटों को बनाना व निर्माण कार्य में इस्तेमाल करना सीखा।

इसी काल में विभिन्न नदी घाटियों में पहली बार नगर आधारित सभ्यताओं का उदय हुआ। ये नगर व्यापार और वाणिज्य के केन्द्र बन गए और एक काल क्रम में राज्यों तथा साम्राज्यों का उदय हुआ। प्राचीन काल में लोगों ने महान सभ्यताओं का निर्माण कर मानवता को महत्वपूर्ण योगदान दिया। ये प्राचीन सभ्यताएं मेसोपोटामिया, मिस्र, भारत व चीन में उभरीं व विकसित हुईं। कृषि, दस्तकारी और वाणिज्य धीरे-धीरे फले-फूले। नगर प्रशासन के भी केन्द्र बनें।

वहां शासक वर्ग थे, जिन पर इन सभ्यताओं के प्रशासन की जिम्मेदारी थी। उन्हें दूसरे अधिकारी मदद करते थे। हम देखते हैं कि नए युग के आगमन के साथ ही समाज में अनेक वर्ग उभर आए थे। अब हम इन सभी सभ्यताओं के बारे में कुछ विस्तार से चर्चा करेंगे।

1.1.1 मेसोपोटामिया सभ्यता

मेसोपोटामिया का शाब्दिक अर्थ है, नदियों के बीच की जमीन। यह दजला और फरात नदियों के बीच स्थित थी और आधुनिक नाम इराक है। इन नदियों में अक्सर बाढ़ आ जाया करती थी। इस प्रक्रिया में उनके किनारों पर ढेर सारी मिट्टी और गाद जमा हो जाती थी। यह किनारों के पास की जमीन को खूब उर्वर बना देती। इसने मेसोपोटामिया वासियों के सामने दो चुनौतियां पेश कीं, बाढ़ को काबू में करना और खेती के लिए जमीन की सिंचाई करना। इससे उपज बढ़ी। कृषि उत्पादन में इजाफे से लोहार, कुम्हार, राजमिस्त्री, बुनकर और बढ़ई जैसे अनेक दस्तकार सामने आए। वे अपनी बनाई चीजें बेचते और बदले में अपनी रोजाना की जरूरतों की चीजें लेते। वे भारत जैसे सुदूर क्षेत्रों के साथ जमीनी और समुद्री दोनों तरह के नियमित व्यापार करते। परिवहन और संचार के लिए ढेलों, चौपहिया गाड़ियों, नौकाओं और पोतों का इस्तेमाल किया जाता था। उन्होंने लिखने की कला भी विकसित कर ली थी। उस समय की लिपि संकेत चिह्नों या चित्रों का समूह थी। बाद में वे फान जैसी लकीरें खींचते थे। यह लिपि कीलाक्षर कहलाती है।



चित्र 1.1: कीलाक्षार लिपि

मेसोपोटामिया के प्रारंभिक शहर छोटे राज्यों के समान थे। उनका अपना प्रशासन वर्गों में पुरोहित, राजा और कुलीन शामिल थे। उनके अलावा सौदागर, आम लोग और गुलाम थे।

मेसोपोटामिया के लोग ढेर सारे देवी-देवताओं- आकाश का देवता, हवा का देवता, सूर्य देवता, चंद्रमा-देवता, प्रजनन की देवी, प्रेम की देवी और युद्ध का देवता और इसी तरह के अनेक अन्य देवी-देवताओं की पूजा करते थे। हर शहर का एक संरक्षक देवता होता था। मेसोपोटामिया में अनेक खूबसूरत मंदिरों का निर्माण किसानों और गुलामों, जो ज्यादातर युद्ध-बंदी होते थे, से करवाया गया।

1.1.2 मिस्र सभ्यता

मिस्र को अक्सर नील नदी का तोहफा कहते हैं, जो बिल्कुल सही है। हर साल नदी में बाढ़ आती और उसके किनारे जनमग्न हो जाते। वहां गाद की एक मोटी तह जमा हो जाती, जो जमीन को बेहद उपजाऊ बना देती। इस तरह वहां बारिश नहीं के बराबर होने के बावजूद किसान अच्छी फसल उपजाते। प्राचीन मिस्रवासियों ने बढ़िया सिंचाई प्रणाली भी विकसित कर ली थी। ईसा

पूर्व 3100 तक मिस्र एक राजा के अधीन आ गया था। मिस्रवासी अपने राजा को भगवान मानते थे। मिस्री राजाओं को फराओं कहा जाता है। वे देश पर राज करते और साम्राज्य की स्थापना के लिए जंग लड़ते। फराओं की सेवा में मंत्री और अधिकारी थे। वे जमीन का प्रशासन चलाते और राजा के आदेश के अनुसार कर वसूलते। समाज में पुरोहितों का भी एक ऊँचा और सम्मानजनक स्थान था। हर कस्बे या शहर में मंदिर एक खास देवता को समर्पित होते। प्राचीन मिस्री लिपि को चित्रलिपि या चित्राक्षर कहते हैं। व्यापारी और सौदागर समुद्री तथा जमीनी दोनों तरह के व्यापार करते थे। मिस्र में संगतराश, बढ़ई, लोहार, चित्रकार, कुम्हार जैसे कुशल मजदूर थे। प्राचीन मिस्रवासियों को गणित की खासकर रेखागणित की अच्छी जानकारी थी। उन्हें मापतोल की भी खासी जानकारी थी।

प्राचीन मिस्र



चित्र 1.2 हिरोग्लिफिक्स लिपि

चित्र 1.2 हिरोग्लिफिक्स लिपि

फराओं ने प्राचीन विश्व के महान स्मारक पिरामिड बनवाए। मिस्रवासी मौत के बाद जिंदगी पर यकीन करते थे और इसलिए उन्होंने शवों को संरक्षित रखा। इन संरक्षित शवों को ममी कहा जाता है। पिरामिड को मृत राजाओं के ममी किए गए शवों को रखने के लिए मकबरों के रूप में बनाया गया था।

1.1.3 चीनी सभ्यता

चीनी सभ्यता उत्तरी चीन में ह्वांग हो नदी घाटी फली-फूली। ऐतिहासिक साक्ष्यों के मुताबिक चीन शुरूआती शासक शांग शासन में एक लेखन शैली ईजाद की गई। इसके काल के दस्तकार, विशेषतः कांस्य शिल्पी अपने काम में माहिर थे। शांग शासकों के मातहत अनेक अधिकारी होते थे, जो राजाओं को राजपाट में मदद करते। किसान अभिजात वर्ग की खाद्य पदार्थों की आपूर्ति करते। चाऊ (1122 ईसा पूर्व) ने शांग वंश की सत्ता खत्म कर दी। उन्होंने पश्चिम की तरफ से हमला किया था और उन्हें शक्तिशाली कुलीन को समर्थन प्राप्त था। लेकिन कोई भी चाऊ

राजा इतना शक्तिशाली नहीं हुआ, जो पूरे राज्य को अपने काबू में रख सके। अगले 500 साल तक कुलीन सत्ता के लिए आपस में लड़ते रहे। दूसरे कुलीन और साथ ही उत्तर से हमला करने वाले खुंखार खानाबदोश कबीलों से अपनी रक्षा करने के लिए उन्होंने मजबूत किले और चारों तरफ से दीवारों से घिरे नगर बनवाए। चाऊ शासन के परवर्ती काल में लोहे का इस्तेमाल होने लगा, जिससे कांस्य युग का समापन हो गया। ईसा पूर्व 221 में चिन राजा चीन के शासक बने। उन्होंने कुलीनों की ताकत कुचल डाली। चिन राजाओं ने साम्राज्य को अनेक प्रांतों में बांट दिया

और हरेक के लिए एक शासक नियुक्त किया। उन्होंने पूरे साम्राज्य में समान भाषा, समान कानून और समान मापतोल अपनाने का आदेश दिया। उन्होंने चीन की मशहूर दीवार भी बनवाई।

चिन वंश के बाद हान वंश आया। उसने 220 इस्वी साल तक चीन पर राज किया। इस दौरान मध्य एशिया और फारस से गुजरने वाले प्रसिद्ध रेशम मार्ग की ओर से पश्चिम से चीनी सौदागरों का नियमित संबंध बना रहा।

चीन के लोग अनेक देवी-देवताओं की पूजा करते थे। पूर्वजों और प्रकृति-आत्माओं की पूजा आम थी। कन्फ्यूशस नामक एक प्रसिद्ध चीनी धार्मिक उपदेशक ने सही व्यवहार प्रणाली का प्रचार-प्रसार किया। इसने चीनी समाज और सरकार को बेहद प्रभावित किया। उन्होंने अच्छे नैतिक सम्मान, परिवार से वफादारी और कानून तथा राज्य की आज्ञाओं के पालन पर जोर दिया।

क्रियाकलाप 1.1

क्या आप ने यह देखा कि सभी बड़े सभ्यताओं का विकास नदियों के तट पर ही हुआ। कुछ ऐसे शहरों का पता कीजिये जो कि नदियों के किनारे विकसित हुये। दो कारण देकर बताइए कि यह शहर उन शहरों से ज्यादा सफल क्यों हैं जो नदी के किनारे नहीं थे?

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. मानव विकास की नवीनतम अवस्था कौन सी है?
2. मनुष्य ने सबसे पहले किस धातु का प्रयोग किया?
3. तांबा और पत्थर दोनों के प्रयोग पर आधारित संस्कृति का नाम बताइए ।
4. उन नदियों के नाम बताइए । जिनके बीच मेसोपोटामिया की विकसित थी ।

1.2 भारत : हड़प्पा सभ्यता

भारत में कांस्य युगीन सभ्यता सिंधु घाटी और इसके अगल-बगल के क्षेत्रों में विकसित हुई। इसे इसके सर्वाधिक महत्वपूर्ण शहरों में से एक शहर हड़प्पा के नाम से हड़प्पा सभ्यता कहते हैं; इसे

विस्तृत सिन्धु घाटी सभ्यता भी कहा जा सकता है। इस सभ्यता के नगर 1920 के दशक में तब प्रकाश में आए, जब पुरातत्वविदों ने वहाँ खुदाई की। अब तक हड़प्पा संस्कृति के सैकड़ों स्थलों का पता चल चुका है, साथ ही इसके तीन चरणों - आरंभिक दशा, परिपक्व अवस्था, और पतन काल - की भी कल्पना की गई है, के दौरान ही यहां शहरी सभ्यता फल-फूल रही थी। इनमें सबसे महत्वपूर्ण हड़प्पा (पंजाब), मोहनजोदड़ो (सिंध), लोथल (गुजरात), कालीबंग (राजस्थान), रोपड़ (पंजाब), बनावली, राखीगढ़ी (हरियाणा) और धौलावीरा (गुजरात) हैं। हड़प्पा संस्कृति की बस्तियाँ उत्तर में मांडा (जम्मू), दक्षिण में दैमाबाद (नर्मदा मुहाना), पश्चिम में सुतकागेंदोर (मकरान तट, बलूचिस्तान) और पूर्व में आलमगीरपुर (मेरठ के निकट, उत्तर प्रदेश) तक फैली थी। दूर जारी अफगानिस्तान में एक हड़प्पाई बस्ती स्थापना शोरतुघई में की गई थी।

1.2.1 नगर योजना

वे लोग सुनियोजित नगरों में रहते थे। हड़प्पाई शहरों की एक महत्वपूर्ण विशेषता थी मजबूत नगर-दुर्ग उपस्थिति। दुर्ग में सार्वजनिक इमारत होती थी। दुर्ग के नीचे नगर का दूसरा हिस्सा था। यहां आम लोगों के मकान थे। नगरों में चौड़ी सड़कें थी, जो समकोण एक दूसरे को काटती थी। मकान ईंट के बने थे। ज्यादातर मकान दो मंजिला थे। हरेक घर में कुएं, स्नानगृह नाली और परनाली थी। साफ-सफाई का स्तर बहुत उन्नत था। खडंजे बिछी सड़कें और सड़कों पर प्रकाश-व्यवस्था अनजानी नहीं थी। मोहनजो-दड़ों के निचले शहर में निवास गृहों के अलावा दुर्ग वाले क्षेत्र में अनेक खंभों वाले विशाल हाल भी मिले हैं। यहाँ सबसे प्रमुख विशेषता थी विशाल स्नानगृह (180 फुट लंबा और 108 फुट चौड़ा) उसमें स्नान के लिए इस्तेमाल होने वाला जलाशय 39 फुट लंबा, 23 फुट चौड़ा और आठ फुट गहरा था। हड़प्पा का विशाल अनाज भंडार एक अन्य महत्वपूर्ण इमारत थी। यहाँ किसानों द्वारा उत्पादित अतिरिक्त का भंडारण होता था।

1.2.2 समाज और अर्थव्यवस्था

हड़प्पावासी कृषि, पशुपालन, दस्तकारी, व्यापार और वाणिज्य में माहिर थे। मुख्य फसलें गेहूं, जौ, राई, तिल और मटर थीं। लोथल और रंगपुर में धान मिले हैं। कालीबंगन में हल की लकड़ी के निशान मिले हैं। उनसे पता चलता है कि वे हल का इस्तेमाल करते थे। फसल काटने के लिए हसुआ का इस्तेमाल होता था। सिंचाई के कई तरीकों का इस्तेमाल होता था। लोगों को कपास और रूई की जानकारी थी। गाय, बकरी, भेड़, सांड, कुत्ते, बिल्ली, ऊँट और गधे जैसे जानवरों को पालतू बनाया जा चुका था। लोग अनाज, मछली, मांस, दूध, अंडे और फल खाते थे। ज्यादातर तांबा और कांस्य के बने औजार और हथियार इस्तेमाल किए जाते थे। जेवरात सोना, चांदी, कीमती पत्थरों, रत्नों, शंख और हाथी के दांत के बने होते थे। दस्तकारों में कुम्हार, बुनकर, राजमिस्त्री बढ़ई, लोहार, सूना, शिल्पकार, संग-तराश ईंट बनाने वाले और ठठरे शामिल थे। वाणिज्य और व्यापार भी महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधियों में शामिल थे। स्थानीय व्यापार के साथ व्यापार भी चलता था। अनेक साक्ष्य इंगित करते हैं कि मेसोपोटामिया के साथ हड़प्पावासियों के संबंध थे। वे सोना, रांगा, तांबा जैसी धातुओं का और अनेक प्रकार के रत्नों को आयात करते थे निर्यात

में कृषि उत्पाद,, सूती सामान, बर्तन, जेवतरात, हाथी के दाँत की बनी चीजें और दस्तकारी सामान शामिल थे। हड़प्पा की मिट्टी की बनी मुहरों का इस्तेमाल संभवतः वाणिज्यिक उद्देश्यों था। समाज वर्गों में विभाजित था। नगर-दुर्ग मौजदूगी शासक वर्ग के अस्तित्व की ओर इशारा है। इसमें संभवतः पुरोहित भी शामिल थे। समाज में उनके अलावा सौदागर, दस्तकार और आम लोग लेकिन हमें इस बारे में ठीक-ठीक पता नहीं है।

1.2.3 धर्म और संस्कृति

मातृदेवियां हड़प्पावासियों के बीच बेहद लोकप्रिय प्रतीत होती हैं। मातृदेवियों की मिट्टी की बनी मूर्तियां मिली हैं। मोहेंजो-दड़ो में एक पुरुष-देवता भी मिला है, जिसे शिव (पशुपति) का आदिरूप कहा गया है। उसे एक मुहर पर पशुओं से घिरे योग की मुद्रा में बैठे दिखाया गया है। लिंग पूजा, वृक्ष और जड़-आत्मवाद भी प्रचलन में थे। विभिन्न स्थलों पर मिले ताबील और जंतर आत्माओं तथा पर उनके विश्वास की ओर इशारा करते हैं। हड़प्पा-वासियों ने उच्च स्तरीय तकनीकी की चीजें हासिल की थीं। उन्हें नागर-अभियांत्रिकी, चिकित्सा मापतोल और स्वच्छता की जानकारी थी। वे भी जानते थे। वे एक लिपि का प्रयोग करते थे, जिसे अभी तक नहीं समझा जा सका है।

1.2.4 पतन

यह कहना कठिन है कि ठीक-ठीक किन कारणों से इस सभ्यता का पतन हो गया एक इतिहासकार मानते थे कि आर्यों के आक्रमण ने हड़प्पा सभ्यता को खत्म कर डाला। लेकिन संदेहास्पद प्रतीत होता है क्योंकि आर्यों के भारत आने से सदियों पहले इस सभ्यता का पतन हो गया प्राकृतिक आपदाएं इस सभ्यता के पतन का सबसे महत्वपूर्ण कारण जान पड़ती हैं। बार-बार बाढ़ आने नदियों का सूखना, मिट्टी की उर्वरता में ह्रास, लकड़ियों के लगातार इस्तेमाल से जंगलों का सफाया, भूकंप, अल्पवर्षा, रेगिस्तान के फैलाव ने संभवतः इस सभ्यता के पतन में भूमिका निभाई। कुछ की राय में मेसापोटामिया से हो रहे समुद्री व्यापार में गिरावट की भी इस सभ्यता के पतन में कुछ भूमिका रही होगी। इस सभ्यता के पतन के साथ ही साक्षर व शहरी जीवन भारत में एक हजार साल से अधिक समय के लिए लुप्त हो गए।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. भारत में सिंधु-सरस्वती सभ्यता के दो स्थलों के नाम बताइए ।

2. निम्नलिखित कथनों में खाली स्थान को भरिए :

(क) विभिन्न स्थलों पर मिले — से पता चलता है कि हड़प्पावासी आत्माओं और भूत-प्रेतों में विश्वास करते थे ।

(ख) — सिंधु-सरस्वती सभ्यता के पतन का सबसे महत्वपूर्ण कारण माना जाता है ।

(ग) सिंधु-सरस्वती — के साथ विदेशी व्यापार करते थे ।

(घ) समाज — में विभाजित था ।

2. मानव ने सर्वप्रथम किस धातु का प्रयोग किया?

3. उन नादियों का नाम बताइये जिनके बीच में मेसोपोटामिया सभ्यता बसी हुई थी?

4. मिस्र की लिपि को क्या कहते थे?

5. हड़प्पा संस्कृति के चार शहरों के नाम बताइये ।

1.3 लौह युगीन समाज

लौह युग का मतलब वह समय है, जब लोहे का उत्पादन बड़े पैमाने पर शुरू हो गया, और इसका आम इस्तेमाल होने लगा। यह करीब तीन हजार साल पहले आरंभ हुआ। लौह युग अलग-अलग जगहों में विभिन्न समय पर आया। इसने लोगों के सामाजिक और आर्थिक जीवन में व्यापक परिवर्तन ला दिए। लोहा तांबा और कांस्य से बहुत सस्ता और मजबूत था लोहे के औजारों ने हमारे पूर्वजों को जंगल साफ करने और कृषि के विस्तार के लिए अतिरिक्त जमीन हासिल करने में मदद। इस तरह कृषि उपज में खासी वृद्धि हुई।

लोहे के इस्तेमाल से परिवहन और संचार पर जबर्दस्त प्रभाव पड़ा लोहे के हल और औजार के इस्तेमाल से पहिया और भी मजबूत हो गया। नाव और पोत बनाने में लोहे की कीलें और चादरें व्यापक रूप से इस्तेमाल की जाती थी। व्यापार और वाणिज्य भी फला-फुला। यह व्यापार खुशहाली लाया। नए हथियार भी इसी युग की देन हैं। भारी तलवारें, तेग, लौह कवच, भाले और बल्लम ने युद्ध का तौर-तरीका बदल डाला।

लौह युग बौद्धिक प्रगति का भी दौर था। उस दौर का सर्वाधिक महत्वपूर्ण विकास वर्णमाला की शुरुआत था। इसने पुरानी चित्रलिपि पर आधारित लिखावट की जगह ली। फिनिशियाइयों ने 22 अक्षरों वाली वर्णमाला विकसित की, यह युग अधिक बड़े स्तर पर राज्यों के निर्माण का भी साक्षी है। जो सभ्यता लौह युग में फली वह देश थे ग्रीस, रोम, परशिया और भारत। यह सभ्यता पूर्व युग से कहीं ज्यादा विकसित है।

1.3.1 यूनानी सभ्यता

यूनानी सभ्यता करीब 2000 साल पहले से कुछ समय बाद यूनान में विकसित हुई। यूनान में अनेक स्वतंत्र नगर-राज्य उभरे, जो एक उल्लेखनीय शासन प्रणाली के रूप में विकसित हुए। नगर-राज्यों का विकास यूनानी सभ्यता की एक अनूठी विशेषता है। हरेक नगर सुरक्षा के लिए दीवारों से घिरा होता था। नगर के अंदर किसी पहाड़ी पर किला होता था, जिसे एकोपोलिए कहते थे।

यूनानी नगर-राज्यों में सबसे प्रसिद्ध एथेंस और स्पार्टा थे। एथेंस धनी और सुसंस्कृत था। एथेंसवासियों में लेखक, दार्शनिक, कलाकार और चिंतक शामिल थे। समाज गुलाम-श्रम आधारित था। लेकिन नागरिकों के लिए लोकतांत्रिक शासन प्रणाली थी। पूरे यूनान में स्पार्टा की सेना सबसे

अच्छी थी। यहां युद्ध कौशल का प्रशिक्षण सर्वाधिक महत्वपूर्ण चीज माना जाता था। वहां कोई लोकतंत्र नहीं था। स्पार्टा लगभग किसी सैनिक शिविर के समान था, जहां हरेक से अपने वरिष्ठ की आज्ञाकारिता की उम्मीद की जाती थी। एथेन्स और स्पार्टा में खासी प्रतिद्वंद्विता थी। लेकिन दारियस प्रथम और जर्जेस ताकतवर ईरानी सेना से दोनों साथ-साथ लड़े। पेरीक्लीज का दौर एथेन्स के लिए स्वर्ण युग था, लेकिन एथेन्स और स्पार्टा के बीच 27 तक चले पेलोपोनिशियाई युद्ध में एथेन्स की हार हो गई। प्राचीन यूनानी कला, विज्ञान, साहित्य और मूर्तिकला में अग्रणी थे। इसलिए यूनान का पश्चिमी सभ्यता की जन्म स्थल कहते हैं। सुकरात, अफलातून और अरस्तू महान दार्शनिक थे। उनके ग्रंथों का अब भी अध्ययन किया जाता है। हेरोडोटस और यूसीडाइडीज प्रसिद्ध इतिहासकार थे। आर्किमीडीज, एरिस्टार्कस और डेमोक्रिटस महान वैज्ञानिक थे। इस्काइलस, साफोकलीज और अरिस्टोफेनीज नाटककार थे। होमर मशहूर महाकाव्य इलियड और ओडिसी का जनक है। यूनानियों को वास्तुकला में भी महारत हासिल थी। उन्होंने अनेक सुंदर मंदिर और महल बनाए। यूनानी मूर्तिकला ने मानव शरीर की बारीकियों को बड़ी जीवंतता के साथ उकेरा। नाटक और संगत भी फले-फुले। ईसा पूर्व 776 में शुरू हुए ओलंपिक खेल ओलंपिया नामक जगह पर हर चार साल पर आयोजित किए जाते थे। खेल और एथ्लेटिक्स देवताओं के राजा जियस के सम्मान में होते। यूनानी अनेक देवी-देवताओं पर विश्वास करते थे। हरेक नगर का अपना संरक्षक देवता या देवी होती थी। माना जाता था कि ये देवी-देवता ओलंपस पर्वत पर वास करते हैं।

जब यूनानी उपनिवेशवादी मुख्य भूमि से सुदूर नई जगहों पर बसे, तो यूनानी जीवन शैली भूमध्य सागरीय क्षेत्र में फैली। यूनानी सौदागर काला सागर और उत्तरी अफ्रीकी तट तक पहुँचे। किसान मुख्यतः अगर जैतून और खाद्यान्न उपजाते थे। शराब और जैतून का तेल उनके महत्वपूर्ण उत्पाद थे। यूनानी नगर प्रशासन तथा सांस्कृतिक-आर्थिक गतिविधियों के केन्द्र थे।

एक समय यूनानियों ने विशाल साम्राज्य भी खड़ा किया। मकदूनिया के सिकन्दर ने, जिसे इतिहास में सिकन्दर महान के नाम से जाना जाता है, यूरोप के बाहर जाकर सीरिया, मेसोपोटामिया, मिस्र अफगानिस्तान और यहां तक कि मध्य एशिया तथा पूर्व-पश्चिमी भारत के हिस्सों को जीता। इस तरह यूनानी विचार और शिक्षाएं दूर-दूर तक फैल गईं। सिकन्दर 33 साल की छोटी सी उम्र में मर गया। उसके बाद उसका साम्राज्य छोटे-छोटे हिस्सों में खंडित हो गया। बाद में रोमवासियों ने यूनान पर कब्जा कर लिया।

1.3.2 रोमन सभ्यता

रोम नगर मध्य इटली में टाइबर नदी के तट पर बसा है। रोमवासियों ने एक गणराज्य की स्थापना की (510 ईसा पूर्व)। रोमन गणराज्य का संचालन सीनेट करता था, जो बुजुर्गों का समूह था। वे सीनेटर कहलाते थे। वे नेतृत्व के लिए हर साल दो सभा (परिषद्) चुनते थे। ईसा पूर्व 200 तक रोम इटली की प्रमुख शक्ति बन चुका था। उसने भूमध्य सागरीय क्षेत्र के नियंत्रण के लिए कार्थेज जैसे प्रतिद्वंद्वी का परास्त कर दिया था।

पूर्व-रोमन समाज में तीन वर्ग थे - पैट्रिशियन (कुलीन), प्लीबियन (आमजन) और गुलाम। रोमन अर्थव्यवस्था गुलाम-श्रम पर आधारित थी। धनी रोमन गुलाम रखते थे।

इन गुलामों को अक्सर 'ग्लैडिएटर युद्ध' के लिए प्रशिक्षित किया जाता था, जो गुलामों और जंगली जानवरों के बीच

लड़ा जाता था। रोम में अनेक गुलाम विद्रोह हुए। उनमें से एक का नेतृत्व स्पार्टाकस (74 ईसा पूर्व) ने किया था।

रोम एक गणराज्य था। इसके बावजूद ताकतवर और प्रभावशाली नेता सत्ता के लिए लड़े जुलियस सीज़र ऐसा ही एक नेता था, जिसने जबर्दस्त शक्ति जमाकर ली थी और तानाशाह बन बैठा था। विरोधियों ने सीज़र की हत्या कर दी और रोम में गृह युद्ध छिड़ गया। युद्ध के बाद आगस्टस सीज़र रोम का पहला सम्राट बना। रोमन साम्राज्य तीन महाद्वीपों - यूरोप, एशिया और अफ्रीका में फैला था। आगस्टस के शासन काल में महान पैगंबर ईसा मसीह का जन्म बेथलेहेम में हुआ। उन्होंने एक नए धर्म का प्रचार शुरू किया। उनके अनुसार सभी नर-नारी ईश्वर की संतान हैं। उन्होंने लोगों को एक दूसरे से मुहब्बत करना सिखाया। उनके निधन के बाद ईसा के अनुयाइयों ने उनकी शिक्षाओं को आम लोगों के बीच फैलाना शुरू किया।



चित्र 1.3 : रोमन साम्राज्य के अवशेष

चित्र 1.3 : रोमन साम्राज्य के अवशेष

जब रोमन साम्राज्य अपने शिखर पर था, तो वह पूर्व में मेसोपोटामिया से लेकर पश्चिम में गॉल और ब्रिटेन तक फैला था। पूरे साम्राज्य में लोग रोमन जीवन शैली अपनाते। हर तरफ स्नानगृहों, मंदिरों, महलों और थियेटरों से सुसज्जित नगर बसाए गए। ग्रामीण इलाकों में रोमवासियों ने विशाल और आरामदेह फार्म हाउस बनवाए, जो विला कहलाते थे। रोम के शासक विजय परेड, धार्मिक समारोह और खेलों की अध्यक्षता करते थे। ग्लैडिएटों की लड़ाई, रथों की दौड़ और थियेटर आम मनोरंजन थे।

रोम साम्राज्य अनेक प्रांतों में विभाजित था। हर प्रांत का शासन एक गवर्नर करता था। उसके मातहत अनेक अधिकारी थे, जो प्रशासन के विभिन्न मामलों की देख-रेख करते थे। रोम की सेना की मुख्य युद्धक शक्ति लीजन या सैन्य दल था। हरेक लीजन में एक कमांडर के मातहत 5000 सैनिक होते थे। रोम का साम्राज्य सम्राट की इच्छा पर चलता था। लेकिन उसकी ताकत का दारोमदार सेना पर था। सैनिक जनरल आम तौर पर कमजोर सम्राटों का तख्तापलट कर देते थे।

वर्ष 395 ईस्वी तक बेहतर प्रशासन के लिए विशाल रोमन साम्राज्य को दो हिस्सों में बांट दिया गया। साम्राज्य का पूर्वी हिस्सा (राजधानी बाइजेटियम) बर्बर हमलों (476 ईस्वी) के चलते पश्चिमी भाग के पतन के बाद भी बन रहा। सम्राट कांस्टैन्टाइन ने बाइजेटियम को एक नया नाम कांस्टैन्टिनापल दिया। यह पूर्वी आर्थोडॉक्स ईसाइयत का केन्द्र और बाइजैन्टाइन सम्राटों की राजधानी बन गया।

रोम की सभ्यता में आपने 'ग्लैडिएटर युद्ध' के विषय में पढ़ा। आपने इस युद्ध को अपने टी वी. पर और किसी फिल्म में भी देखा होगा। क्या आपको इसे देखने के बाद अच्छा लगा? क्या किसी-भी प्राणी को परेशान देखकर कभी प्रसन्नता मिल सकती है। आप इसके विषय में क्या सोचते हैं 50 शब्दों में लिखिये।

1.3.3 ईरानी सभ्यता

लौह युग में फारस (आधुनिक इराक) में आर्य कबीले रहते थे। मीडिज नामक उनकी एक शाखा देश के पश्चिमी हिस्से में रहती थी। एक दूसरी शाखा दक्षिणी और पूर्वी हिस्से में रहती थी और फारसी कहलाती थी। मीडिज ने एक शक्तिशाली राज्य की स्थापना की, जिसमें ईरान का विशाल इलाका शामिल था। पहले फारसियों को भी उनका प्रभुत्व स्वीकार करना पड़ा पारसी राजाओं में से एक साइरस ने 550 ईसा पूर्व में पारसियों को एकताबद्ध किया और मीडिज को पराजित कर एकेमेनी साम्राज्य की स्थापना की। उसने एक ताकतवर सेना संगठित की और एक-एक कर बेबीलोन, असीरिया और एशिया माइनर को जीत लिया। दारा प्रथम ईरान का महानतम सम्राट था। उसका साम्राज्य सिंधु नदी से लेकर भूमध्य सागर के पूर्वी छोर तक फैला था। उसने पर्सेपोलिस के अपनी राजधानी (518 ईसा पूर्व) बनाया। एकेमेनी वंश के इस सम्राट के शासन काल में ईरानी कला, वास्तुकला और मूर्तिकला का विकास हुआ उसने एक शक्तिशाली नौसेना भी संगठित की।

फारसी सम्राट योग्य प्रशासक थे। उन्होंने अपने साम्राज्य को प्रांतों में विभाजित किया, जिनका प्रशासन शत्रप (क्षत्रप) करते थे। फारसी अच्छे सैनिक थे और उनके पास मजबूत घुड़सवार सेना तथा नौसेना थी। उनके पास लोहे के हथियार थे। हालांकि सिकन्दर महान ने उन्हें परास्त कर दिया (331 ईसा पूर्व), लेकिन फारसियों का खात्मा नहीं हुआ। पार्थियाई और सासानी सम्राटों के तहत उनकी सभ्यता तथा संस्कृति फलती-फूलती रही। लेकिन अंततः सातवीं सदी ईस्वी में अरबों ने उन्हें जीत लिया।

हिन्द-आर्यों की तरह फारसी पहले प्रकृति की शक्तियों की पूजा करते थे। वे सूर्य देवता, आकाश देवता और कुछ अन्य देवताओं को मानते थे। वे आग को पवित्रता का प्रतीक मानते थे। वे आग से जुड़े कर्मकांड करते और पशुओं की बलि दिया करते थे। बाद में एक धार्मिक उपदेशक जरथ्रुथ ने उन्हें सिखाया कि तमाम देवताओं से ऊपर अहुर-मज्द है वह स्वर्ग और प्रकाश का मालिक है जो लोगों को ताकत और ऊर्जा देता है। जरथ्रुथ के मुताबिक जीवन अच्छाई (प्रकाश) और बुराई (अंधकार) के बीच एक सतत संघर्ष है। पारसियों का पवित्र ग्रंथ जेंद-अवेस्ता कहलाता है।

1.3.4 भारत : वैदिक काल

प्राचीन भारतीय इतिहास में एक नए चरण की शुरुआत वैदिक युग से होती है। जिसका आरंभ करीब 1500 ईसापूर्व भारत में आर्यों के आगमन से हुआ। यह युग लगभग एक हजार वर्ष का था, जिस दौरान कई आर्थिक, सामाजिक, और धार्मिक परिवर्तन हुए। इसलिए वैदिक युग को बराबर अवधि के दो कालों में विभाजित किया जाता है : पूर्व वैदिक और उत्तर वैदिक।

पूर्व वैदिक काल की जानकारी मुख्यतः ऋग्वेद से मिलती है, जो कि प्रथम वेद है। इस काल के लिए, जब वैदिक कबीले पंजाब व अफगानिस्तान सहित भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिमी भाग में रहते थे, हमारे पास कोई खास पुरातात्विक प्रमाण नहीं है। यह शायद इसलिए है कि पूर्व वैदिक लोग प्रायः घुमन्तू जीवन व्यतीत करते थे, और किसी एक जगह पर लंबे समय के लिए नहीं टिकते थे। उनकी अर्थव्यवस्था मुख्यतः पशुपालन पर आधारित थी। मवेशी-पालन आजीविका का मुख्य साधन था, किन्तु घोड़ों, बकरियों और भेड़ों का भी महत्व था। थोड़ी बहुत खेती भी की जाती थी। समाज की इकाइयाँ थीं परिवार, कुल और कबीला (जन)। जाति-प्रथा नहीं थी। कबीले का मुखिया राजा कहलाता था, और देवी-देवताओं की पूजा की जाती थी, जिनमें इन्द्र सबसे प्रमुख था।

उत्तर वैदिक काल के बारे में हम काफी अधिक विस्तार से जानते हैं, जिसके लिए हमारे स्त्रोत हैं विशाल उत्तर वैदिक साहित्य और प्रचुर पुरातात्विक सामग्री। उत्तर वैदिक साहित्य में शामिल हैं बाकी के तीनों वेद - सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद - चारों वेदों के ऊपर रचे गए ग्रंथ, यानी कि ब्राह्मण, आरण्यक, और उपनिषद। इस काल की ढेर सारे जगहों की भी खुदाई हुई है। हर जगह एक खास किस्म के मृदभाण्ड मिले हैं, जिन्हें चित्रित धूसर मृदभाण्ड (अंग्रेजी में Painted Grey ware) कहते हैं। इसलिए इन स्थलों को चि.धू.मृ. यानी PGW स्थल भी कहते हैं।

उत्तर वैदिक काल के दौरान आर्य समुदाय बड़े पैमाने पर पूरब की ओर प्रस्थान कर सिन्धु-गंगा दोआब और ऊपरी गंगा मैदान में बस गए थे। इस काल के अंत में पूर्व दिशा में और आगे तीन राज्यों की स्थापना की गई : काशी, कोसल और विदेह। खेती-बाड़ी अब प्रधान कार्य था। कई फसलें, यथा गेहूं चावल, और ईख, उगाई जा रही थीं। शिल्पों की संख्या भी बढ़ गई थी और लोहे के हथियार और औजार इस्तेमाल होने लगे थे। लोग अब गाँवों में स्थिर जीवन व्यतीत कर रहे थे। जाति-प्रथा उभर कर चार वर्णों का रूप लेने लगी थी : ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य, व शूद्र। राज और उसके आदमियों की शक्ति बढ़ रही थी, और इसी अनुपात में सभाओं का महत्व घट रहा था। यज्ञ अब बड़े विस्तृत हो चले थे, इन्द्र देवता का महत्व कम हो गया था, और नए देवता, जैसे कि परजापति, अब मुख्य हो गए थे। इस काल के अंत में यज्ञों के कर्म-काण्ड के विरुद्ध एक प्रतिक्रिया भी देखी जा सकती है, खासकर उपनिषदों में।

1.4 वैदिकोत्तर युग

छठी सदी ईसा पूर्व में उत्तर और पूर्व भारत में बड़े-राज्य उभरे, जिन्हें महाजनपद कहते थे। इस तरह के 16 राज्य थे - अंग, मगध, वज्जी, काशी, कोसल, मल्ल, कुरू, पंचाल, वत्स, अवन्ती, कंबोज, गंधार, अस्मक, चेदी, मत्स्य और शूरसेन। उनमें से मगध, कोसल और अवन्ती सर्वाधिक शक्तिशाली थे। कृषि के विस्तार, शहरीकरण की शुरुआत, व्यापार और उद्योग के विकास और क्षेत्रीय राज्यों के उद्भव से समाज में नई शक्तियों को जन्म दिया। इस तरह छठी शताब्दी ईसापूर्व सामाजिक-धार्मिक रूपांतरण का भी एक दौर था। लोगों ने कर्मकांडी ब्राह्मणवाद और वैदिक बलि

प्रथा के खिलाफ अपना असंतोष व्यक्त किया। अनेक पंथ उभर कर आए। इनमें जैन और बौद्ध प्रमुख हैं।

बौद्ध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध का जन्म 563 ईसा पूर्व में भारत-नेपाल सीमा पर स्थित लुंबिनी में हुआ। वह कपिलवस्तु के शाक्य-क्षेत्रीय राजा सुद्धोधन के बेटे थे। उन्तीस वर्ष में गौतम ने घर छोड़ दिया और बोधगया में पीपल के पेड़ के नीचे बोधि (ज्ञान) प्राप्त की। उन्होंने अपना पहला उपदेश (धर्मचक्र प्रवर्तन) वाराणसी के निकट सारनाथ में दिया। उनकी शिक्षाओं में चार आर्य सत्य और अष्टांगिक मार्ग शामिल हैं। बुद्ध के अनुसार (1) दुनिया दुख भरी है; (2) तृष्णा दुख का कारण है; (3) तृष्णा पर जीत हासिल करने से दुख खत्म किया जा सकता है; (4) यह अष्टांगिक मार्ग पर चलकर प्राप्त किया जा सकता है जिनमें (क) सच्ची दृष्टि (ख) सही उद्देश्य (ग) सतवचन (घ) सद्कर्म (च) सच्ची आजीविका (छ) सद्प्रयास (ज) सद्स्मृति और (झ) सद्मनन। उन्होंने भोग-विलास और कंजूसी दोनों चरम बिंदुओं से हटकर 'मध्य मार्ग' पर चलने की शिक्षा दी। उन्होंने अपने अनुयायियों लिए एक आचार संहिता (चोरी नहीं करना, हत्या नहीं करना इत्यादि) भी सूत्रबद्ध किया। 80 साल की उम्र में (483 ईसा पूर्व) उत्तर प्रदेश कुशीनगर में उनको निर्माण प्राप्त हुआ।

ऋषभनाथ जैन धर्म के संस्थापक के रूप में जाने जाते हैं। वर्धमान महावीर इस पंथ के 24वें और पार्श्वनाथ 23वें तीर्थंकर थे। महावीर का जन्म वैशाली (बिहार) के निकट कुंडा ग्राम में 540 ईसा पूर्व में हुआ। इनके पिता ज्ञानिक क्षत्रिय कुल के प्रमुख थे। महावीर 30 साल की उम्र में संन्यासी हो गए उन्होंने 42 साल की ही उम्र में कैवल्य प्राप्त किया। उन्होंने 30 साल तक उपदेश दिए और 468 ईसा पूर्व में राजगीर के निकट पावापुर (बिहार) में उनको निर्वाण प्राप्त हो गया। उनके अनुयायी जैन कहलाते हैं।

जैन धर्म में सर्वशक्तिमान ईश्वर का स्थान नहीं है यह देवी-देवताओं को महत्व देता है, लेकिन उन्हें जैन शिक्षकों से नीचे का स्थान देता है। जैन मत का मुख्य उद्देश्य पार्थिव बंधनों से मुक्ति पाना है। बौद्ध धर्म की तरह यह कर्मकांड और वैदिक ब्राह्मणवाद का विरोध करता है। यह जाति व्यवस्था का भी विरोध करता है और कर्म के सिद्धांत तथा पुनर्जन्म को स्वीकार करता है। इसके पांच प्रमुख सिद्धांत हैं। (1) अहिंसा, (2) सच्चाई, (3) चोरी नहीं करना, (4) जुड़ाव नहीं रखना, और (5) ब्रह्मचर्य। जैनधर्म के त्रिरत्न में (क) सम्यक् दर्शन; (ख) सम्यक् ज्ञान और (ग) सम्यक् चरित्र शामिल हैं।

पाठगत प्रश्न 1.3

1. यूनान के दो महत्वपूर्ण नगर-राज्यों के नाम लिखिए ।
2. रोम क़िस नदी के तट पर बसा है ।
3. निम्नलिखित कथनों में खाली स्थान भरिए :
(क) फारस के राजा साइरस ने वर्ष —— में पारसियों को एकीकृत किया ।

(ख) वैदिक युग में आर्य समाज में स्त्रियों का —- किया जाता है ।

(ग) ग्राम तथा विश्व के प्रमुख को क्रमशः —- और —- कहा जाता था ।

4. वैदिकोत्तर युग में लोगों की मुख्य आजीविका क्या थी?

5. वैदिक ब्राह्मणवाद के कर्मकांडों और कुरीतियों का विरोध करने वाले दो धर्म कौन से थे?

6. बौद्ध धर्म के संस्थापक कौन थे?

7. जैन धर्म का संस्थापक किसे माना जाता है?

क्रियाकलाप 1.3

भगवान बुद्ध और भगवान महावीर की शिक्षाओं पर ध्यान दे उनमें से तीन ऐसी शिक्षाएँ निकालिये जो आप अपने दैनिक जीवन में प्रयोग में ला सकते हैं। अपने परिवार और मित्रों के साथ इनके विषय में चर्चा कीजिये।

1.5 मौर्य काल

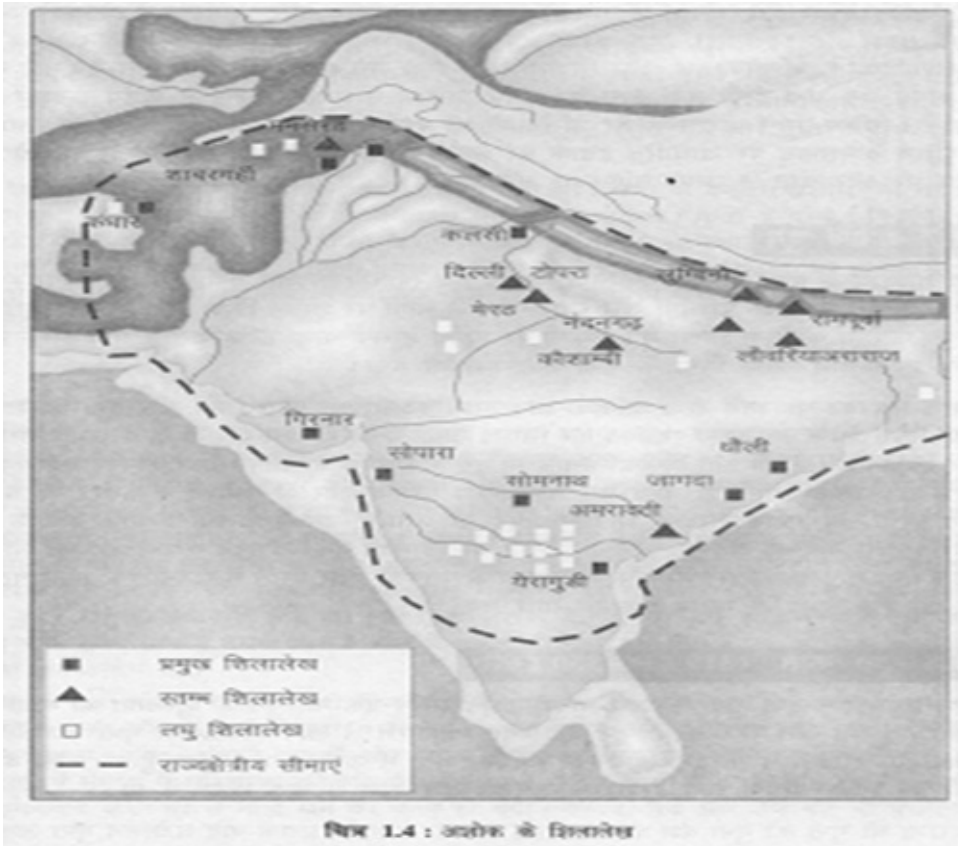
बिंबिसार, अजातशत्रु और महापदमानंद जैसे ताकतवर शासकों के अंतर्गत मगध साम्राज्य का बहुत विस्तार हुआ। नंद वंश के अंतिम राजा को चंद्रगुप्त मौर्य ने 322 ईसा पूर्व में परास्त कर दिया। चंद्रगुप्त ने पंजाब से यूनानियों को और गंगा के मैदानी इलाकों से नंदों को भगा कर मौर्य साम्राज्य की स्थापना की। विजय और विलय की एक सतत प्रक्रिया से वह लगभग संपूर्ण भारत को एकताबद्ध करने में कामयाब रहा। चंद्रगुप्त ने 322 ईसा पूर्व से 297 ईसा पूर्व तक राज किया। भद्रबाहु से प्रभावित होकर उसने जैन धर्म स्वीकार कर लिया। उसका निधन मैसूर के निकट श्रवणबेलगोला में हुआ।

चंद्रगुप्त को प्रसिद्ध दार्शनिक और अध्यापक (आचार्य) चाणक्य ने प्रशिक्षण दिया था, जिन्हें कौटिल्य के नाम से भी जाना जाता है। कौटिल्य ने विद्वत्तापूर्ण ग्रंथ अर्थशास्त्र की रचना की जो राजनीति अर्थशास्त्र के क्षेत्र में कालजयी कृति माना जाता है। चाणक्य की कूटनीति के कारण ही चंद्रगुप्त सफल शासक बना।

चंद्रगुप्त का बेटा और उत्तराधिकारी बिंदुसार (297 ईसा पूर्व-272 ईसा पूर्व) अमित्रघाट (शत्रुहंता) के नाम से भी जाना जाता है। कहते हैं कि उसने दक्कन जीत कर मौर्य साम्राज्य को मैसूर तक पहुंचा दिया। पश्चिम एशिया के यूनानी शासक एंटियोकस प्रथम के साथ उसके संपर्क थे। बौद्ध साहित्य से ऐसा प्रतीत होता है कि बिंबिसार की मौत के बाद उसके बेटों के बीच सत्ता संघर्ष हुआ।

उत्तराधिकार के इस युद्ध में अशोक (272 ईसा पूर्व - 236 ईसा पूर्व) विजयी होकर मगध के सिंहासन पर आसीन हुआ। उसके शासनकाल में एक महत्वपूर्ण घटना 260 ईसा पूर्व में हुआ कलिंग युद्ध है। पत्थरों पर खुदवाए अशोक के 13वें आदेश में इसका जिक्र है। बाद में अशोक ने बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया और युद्ध का परित्याग कर दिया। वह एक परोपकारी राजा था।

और उसने अपनी प्रजा की भलाई के लिए ढेर सारे काम किए। 'धम्म' की उसकी नीति धार्मिक सहिष्णुता, बड़ों की इज्जत, बूढ़ों की देखभाल, दया, सत्य और शुद्धता पर आधारित थी। उसके प्रयासों से बौद्ध धर्म भारत की सरहदों के पर भी फैला। चट्टानों और स्तंभों पर उकेरे उसके आदेशों से उसके शासन का विस्तृत व्यौरा मिलता है।



चित्र 1.4 : अशोक के शिलालेख

अशोक की मौत के बाद उसके साम्राज्य के टुकड़े-टुकड़े हो गए। उस समय विदेशी हमले का भी डर था। देश की आर्थिक स्थिति खराब हो गई थी। मौर्य वंश का अंतिम राजा वशहरथ कमजोर शासक था। उसके महत्वाकांक्षी जनरल पुष्यमित्र शुंग ने 184 ईसा पूर्व में उसकी हत्या कर डाली। मौर्य शासन के बाद पूर्व भारत में शुंग और दक्कन में सातवाहन शासन हुआ।

1.6 संगम युग (300 ई.पू.-200 ईस्वी)

संगम युग से दक्षिण भारत में एक ऐतिहासिक दौर की शुरुआत हुई संगम का अर्थ था विद्वानों या साहित्यकारों का जमा होना। मदुरै के पांड्य राजाओं के शाही संरक्षण में साहित्यिक हस्तियों का जमावड़ा हुआ। जो 'संगम' के नाम से जाना गया। प्राचीन तमिल साहित्य में तोलकप्पियम, 'आठ संग्रह' (एट्टटोगाई), 'दस काव्य' (पट्टपट्टु), 'अठारह लघु ग्रंथ' लर तीन महाकाव्य (सिलप्पादिकरम, मणिमेकालाई और सिवागा सिंदामणि) जैसे प्रारंभिक ग्रंथ शामिल हैं। मोटे तौर पर संगम युग 300 ईस्वी तक फैला है। संगम साहित्य में प्राथमिक रूप से पांड्य राजाओं की चर्चा है। लेकिन उसमें चोल और चेर शासन की भी महत्वपूर्ण सूचनाएं मिलती हैं। पांड्य राजाओं ने दक्षिण तमिलनाडु पर आधारित इलाके पर शासन किया। मदुरै उनकी राजधानी थी। चेर ने केरल पर और चोल ने उत्तरी तमिलनाडु तथा दक्षिणी आंध्र प्रदेश पर राज किया।

1.7 कुषाण युग

मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद यूनानियों, शकों, पार्थ (पार्थियनो) और कुषाणों ने भारत पर हमले किए। उन्होंने भारत के पश्चिमी और उत्तर-पश्चिमी भागों पर शासन किया। कुषाण मध्य एशिया के युए-कबीला की एक शाखा थे। कुषाण का पहला शासक कुजुला कदफिसीज था। उसके बाद विमा कदफिसीज आया विमा के बाद कनिष्क राजा बना।

कुषाण वंश का महानतम राजा कनिष्क था। उसने कश्मीर को जीत लिया और गंगा के मैदानी इलाकों पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया। उसके कब्जे में मध्य एशिया के काशगढ़, यारखंद और खोतोन थे। पंजाब और अफगानिस्तान भी उसके साम्राज्य में शामिल था। कनिष्क एक पक्का बौद्ध था। उसके प्रयासों से बौद्ध धर्म चीन, मध्य एशिया और अन्य देशों में फैला। वह कला और शिक्षा का महान संरक्षक था। पुरुषपुर या पेशावर उसकी राजधानी थी। कनिष्क के उत्तराधिकारी वषिष्क, हुविष्क, कनिष्क द्वितीय और वासुदेव हुए। वासुदेव कुषाण वंश का अंतिम महान राजा था। उसके मरते ही कुषाण साम्राज्य के पतन से उत्तर भारत में राजनीतिक अनिश्चितता का दौर शुरू हुआ जो करीब एक सौ साल तक चला।

1.8 गुप्त काल (319 ईस्वी-550 ईस्वी)

चौथी शताब्दी में गुफा वंश का उदय भारतीय इतिहास में एक नए युग की शुरुआत को रेखांकित करता है। श्रम और राजनीतिक फूट की जगह एकता ने ले ली। शक्तिशाली गुप्त राजाओं के नेतृत्व और संरक्षण में भारतीय जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय विकास हुआ। चीनी यात्री फाहियान चौथी-पांचवीं सदी ईस्वी के अनुसार उस काल में खूब खुशहाली थी।

महाराजा श्री गुप्त को गुप्त वंश का संस्थापक बताया जाता है। उसके बाद धटोत्कच गुफा आया। लेकिन यह चंद्रगुप्त (319 से 355 ईस्वी) था, जिसने महाराजाधिराज की पदवी अपनाई वह पहला प्रसिद्ध गुप्त राजा था। समुद्रगुप्त अन्य प्रमुख गुप्त सम्राट था। उसका बेटा और उत्तराधिकारी समुद्रगुप्त (355-380) बड़ा पराक्रमी था। इलाहाबाद स्तंभ में समुद्रगुप्त की प्रशंसा में दर्ज उसके दरबारी कवि हरिसेन के प्रशस्ति गीत में उसके विजय अभियानों का जीवंत चित्रण है। एक महान

विजेता और शासक होने के साथ ही समुद्रगुप्त एक विद्वान, उच्च स्तर का कवि, कला और विद्या का संरक्षक तथा संगीतज्ञ था। उसने अश्वमेध यज्ञ करवाया।

समुद्रगुप्त के बाद चंद्रगुप्त द्वितीय (380-415 ई.) उसका उत्तराधिकारी बना। उसने पश्चिम भारत के शक राजाओं पर जीत हासिल करने के बाद विक्रमादित्य की उपाधि अपनाई। उसने महत्वपूर्ण वैवाहिक संबंध भी स्थापित किए। उसकी बेटी प्रभावती का विवाह वाटक के शासक रुद्रसेन द्वितीय के साथ हुआ था। उसका उत्तराधिकारी उसका बेटा कुमारगुप्त प्रथम (415-455 ई.) बना। उसके शासन काल में शांति और खुशहाली थी। उसका उत्तराधिकारी उसका बेटा स्कंदगुप्त (455 -467 ई.) बना। उसने कई बार हूण आक्रमण विफल किए। स्कंदगुप्त के उत्तराधिकारी (पुरुगुप्त, बुद्धगुप्त, नारायणगुप्त) उतने शक्तिशाली और योग्य नहीं थे। इससे धीरे-धीरे गुप्त साम्राज्य का पतन हो गया।

गुप्त काल के दौरान राजतन्त्र प्रशासन की प्रमुख प्रणाली थी। राजा के दैनंदिन प्रशासन में मदद के लिए एक मंत्रिपरिषद के साथ अन्य अधिकारी भी शामिल होते थे। गुप्तों के पास शक्तिशाली सेना थी। प्रांतों का प्रशासन गवर्नर करते थे। उनके मातहत अनेक अधिकारी होते थे, जो जिला और नगरों का प्रशासन संभालते थे। ग्राम प्रमुख (ग्रामिक) के नेतृत्व में ग्राम प्रशासन को उल्लेखनीय स्वायत्ता हासिल थी। गुप्त राजाओं ने न्यायिक और राजस्व प्रशासन की एक प्रभावी प्रणाली भी विकसित की थी।

1.8.1 गुप्तोत्तर काल

गुप्त साम्राज्य के पतन और थानेश्वर के महाराजा हर्षवर्द्धन के उदय के बीच के काल को भ्रम और विखंडन का दौर माना जाता है। इस समय भारत अनेक छोटे स्वतंत्र राज्यों में विखंडित हो गया था। हूण राज्य के अतिरिक्त उत्तर भारत में चार अन्य राज्य थे। ये मगध के उत्तर - गुप्त, कन्नौज के मौखरी, थानेश्वर के पुष्यभूती और वलभी (गुजरात) के मैत्रक थे। महत्वपूर्ण दक्षिण भारतीय वंशों में बादामी के चालुक्य और कांची के पल्लव थे। पुलकेशिन द्वितीय (609-642 ई.) उत्तर भारत का सर्वाधिक शक्तिशाली राजा था। हर्षवर्द्धन ने फिर से साम्राज्य स्थापित करने का प्रयास किया। वह सकलोचर पथनाथ कहलाता था, क्योंकि उसने व्यवहारतः समूचे उत्तर भारत पर अपना राज स्थापित कर रखा था। इस काल में भारत की राजनीतिक एकता कुछ हद तक बहाल हुई। हर्ष ने कादंबरी और हर्ष चरित के लेखक बाण भट्ट को संरक्षण दिया। चीनी विद्वान-यात्री ह्वेन सांग ने उसके शासन काल में भारत की यात्रा की थी। बंगाल का राजा शशांक हर्ष का समकालीन था।

इतिहास के इस काल में ब्राह्मणवादी हिन्दू धर्म ने दृढ़ता पाई। ह्वेन सांग ने भारतीय समाज में जाति-व्यवस्था की मौजूदगी के बारे में लिखा है। उस समय अनेक मिश्रित और उप-जातियों का उदय हुआ। ह्वेन सांग ने अछूतों और जाति से निष्कासित लोगों की भी चर्चा करता है। इस काल में समाज में महिलाओं की हैसियत और रुतबे में भी खासी गिरावट आई। धार्मिक क्षेत्र में ब्राह्मणवाद के उभार से बौद्ध धर्म का पतन हो गया। वैष्णव, शैव और जैन मत भी प्रचलन में थे।

1.9 भारतीय सभ्यता : एक नज़र में

विश्व इतिहास में भारतीय सभ्यता की एक महत्वपूर्ण जगह है। प्रारंभिक यूनान और रोम की तरह भारत में भी लोकतांत्रिक और गणराज्य शासन प्रणाली रही है। हमने दर्शन और विज्ञान

की विभिन्न शाखाओं में जबर्दस्त प्रगति की थी। गणित, खगोल शास्त्र, रसायन शास्त्र, धातु कर्म और चिकित्सा में भारत का उल्लेखनीय योगदान है। आर्यभट और वराहमिहिर प्रसिद्ध गणितज्ञ और खगोलशास्त्री थे। चरक और सुश्रुत महान चिकित्सक थे। नागार्जुन प्रसिद्ध रसायनशास्त्री थे। शून्य और दशमलव पद्धति की संकल्पनाएँ पहले भारत में विकसित हुईं।

प्राचीन भारतीयों ने कला, वास्तुकला, चित्रकला और मूर्तिकला में जबर्दस्त महारत दिखाई। अशोक के लाट, अजंता और एलोरा की गुफाएँ, दक्षिण भारतीय मंदिर वास्तुकला, सांची के स्तूप, मथुरा के बुद्ध के भारतीय कला के अथाह समुद्र के महल कुछ उदाहरण हैं। प्राचीन भारत में नालंदा, तक्षशिला, क्रमशिला, बलभी, काशी और कांची जैसे ज्ञान के केन्द्र थे, जहाँ भारतीय और विदेशी छात्रों को शिक्षा जाती थी। प्रसिद्ध विद्वान और शिक्षक वहाँ पढ़ाते थे। भारतीय ज्ञान और विद्वता की बाहर काफी सराहना की गई, खासकर अरब मुसलमानों द्वारा।



चित्र 1.5 : सांची का स्तूप

चित्र 1.5 : सांची का स्तूप

प्राचीन भारत में साहित्य की अनेक महान कृतियाँ सृजित की गईं। ऋग्वेद हिन्द-यूरोपीय साहित्य की प्राचीनतम बानगी है। वेद, सूत्र, महाकाव्य, स्मृति, त्रिपटिका, जैन आगम और अन्य धार्मिक ग्रंथ प्राचीन भारत में सृजित हुए। उसके अलावा अनेक नाटक, काव्य और गद्य कृतियाँ हैं। कालिदास, सेन, विशाखदत्त, भाण और शुद्रक जैसी महान साहित्यिक हस्तियाँ इसी काल की हैं। संस्कृत, पाली प्राकृत साहित्य ने प्राचीन भारत में जबर्दस्त प्रगति की।

पाठगत प्रश्न 1.4

1. उत्तर वैदिक काल के लोगों के मुख्य व्यवसाय क्या थे?
2. अशोक ने कलिंग युद्ध के बाद कौन सा धर्म अपनाया ?

3. प्राचीन भारत में चार मुख्य शिक्षा के केन्द्र कौन से थे?

4. प्राचीन भारत के दो प्रमुख वैद्य के नाम बताइये।

5. निम्नलिखित कथनों में खाली स्थान भरिए :

(क) — साहित्य में तोलकप्पियम आदि आरंभिक तमिल ग्रंथ हैं।

(ख) — पांड्य राजाओं की राजधानी थी।

(ग) कनिष्क — वंश का शासक था।

आपने क्या सीखा

- मानव सभ्यता विभिन्न चरणों से गुजर कर विकसित हुई है - हर चरण ने इस विकास में कुछ नया योगदान किया है।
- मिस्र, मेसोपोटामिया, भारत और चीन के प्राचीन लोगों ने महान सभ्यताओं का निर्माण किया था और इसने मानव प्रगति में भारी योगदान किया।
- लौह युग विभिन्न समयों पर विभिन्न देशों के सामाजिक और आर्थिक जीवन में आमूल परिवर्तन लेकर आया।
- यूनानी, रोमन, फारसी, भारतीयों आदि ने कविता, दर्शन, कला, वास्तुशिल्प और मूर्तिकला आदि क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान किए।
- अपने लम्बे दौर में भारतीय सभ्यता कई महत्वपूर्ण पड़ावों से गुजरी इसका स्वरूप शुरू से अंत तक एक जैसा नहीं रहा।

पाठांत प्रश्न

1. मानव विकास के मुख्य चरण क्या थे?

2. रोम साम्राज्य कब और क्यों विभाजित हुआ?

3. हड़प्पा सभ्यता की मुख्य विशेषताएं क्या थीं?

4. अशोक के अनुसार 'धम्म' क्या है?

5. प्राचीन एथेंस और स्पार्टा की जीवन शैली में क्या अंतर था?

6. पूर्व वैदिक आर्यों के सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक जीवन का वर्णन करो।

7. मौर्य का भारतीय इतिहास में क्या योगदान है?

8. विश्व सभ्यता का भारत के योगदान पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।



चित्र : विश्व का भौगोलिक रेखा-मानचित्र

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

1. होमो सैपियंस सैपियंस

2. तांबा

3. ताम्र - पाषाण

4. दजला और फरात

1.2

1. लोथल (गुजरात) और कालीबंगा (राजस्थान)

2. (क) ताबीज और जंतर

(ख) प्राकृतिक आपदाओं

(ग) मेसोपोटामिया

(घ) वर्गों

3. कांसे का

4. दजला एवं फरात

5. चित्रलिपि या चित्राक्षर

1.3

1. एथेंस और स्पार्टा
2. टाइबर
3. (क) 550 ईसा पूर्व
4. कृषि
5. बौद्ध धर्म और जैन धर्म
6. गौतम बुद्ध
7. ऋषभनाथ

1.4

1. कृषि और शिल्प कला
2. बौद्ध धर्म
3. तक्षशिला, नालन्दा, काशी, विक्रमशिला
3. (क) संगम
(ख) संगम
(ग) मदुरै
4. चरक और सुश्रुत

2. मध्यकालीन विश्व

हमने अभी प्राचीन विश्व की विभिन्न सभ्यताओं का अध्ययन किया है। क्या आपके दिमाग में यह सवाल उभरा कि प्राचीन काल की समाप्ति पर उन सभ्यताओं का क्या हुआ? क्या ये सभ्यताएं भी खत्म हो गईं? या क्या मध्यकाल में उतनी ही उल्लेखनीय सभ्यताओं ने उनकी जगह ले ली। आइए हम इन सवालों के जवाब खोजते हैं। इस पाठ में हम रोमन साम्राज्य की समाप्ति के बाद यूरोपीय समाज के रूपांतरण का अध्ययन करेंगे। हम यह भी अध्ययन करेंगे कि कैसे एक नए धर्म इस्लाम के उदय ने एक विशाल साम्राज्य की नींव रखी जो पश्चिम एशिया से निकला और दुनिया के एक बड़े हिस्से में फैल गया। हम भारत के मध्यकालीन अतीत पर भी निगाह डालेंगे और देखेंगे कि हर्ष के शासन पतन के बाद क्या हुआ।

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के बाद आप :

- मानव समाज के क्रम विकास के एक महत्वपूर्ण चरण के रूप में मध्यकाल का विकास कर सकेंगे;
- रोमन साम्राज्य के पतन के बाद राजनीतिक संगठन में होने वाली परिवर्तनों का उल्लेख कर सकेंगे;
- पश्चिमी यूरोप में व्याप्त सामन्तवाद के राजनीतिक, शैक्षिक और सामाजिक-आर्थिक पहलुओं की व्याख्या कर सकेंगे;
- पश्चिम एशिया में इस्लाम धर्म, समाज और राजतंत्र व्यवस्था के क्रम विकास की चर्चा कर सकेंगे;
- भारत में मध्यकाल के दौरान राजनीतिक संगठन की विशिष्टताओं को चिह्नित कर सकेंगे;
- मध्यकालीन भारतीय अर्थव्यवस्था की प्रमुख विशेषताओं की चर्चा कर सकेंगे; और
- यह विश्लेषण कर सकेंगे कि कैसे मध्यकालीन भारत में सांस्कृतिक और धार्मिक जीवन संश्लेषण की एक अनूठी परंपरा का प्रतिनिधित्व करते थे ।

2.1 मध्य युग में यूरोप

मध्यकाल को मध्ययुग भी कहते हैं क्योंकि जैसा कि नाम से जाहिर है यह वह काल है जो प्राचीन काल के बाद और आधुनिक काल से पहले आता है। लेकिन क्या यह उन सदियों का उचित चित्रण है? क्या यह महज दो महान युगों के बीच फंसा एक 'मध्य' युग है जिसकी अपनी कोई विशेषता नहीं? सचमुच ऐसा नहीं है। मध्यकाल मानव समाज के क्रम विकास का एक महत्वपूर्ण चरण है जिसका अध्ययन उसकी अपनी विशेषताओं के लिए किया जाना चाहिए। सिर्फ यही बात नहीं है। मध्यकाल की उपलब्धियाँ और गौरव आधुनिक काल की दिशा में महत्वपूर्ण कदम भी हैं। एक मायने में 'आधुनिकता' की जड़ 'मध्यकालीनता' में है।

आपको यह बात दिलचस्प लगेगी कि 'मध्य युग' का शब्द यूरोपवासियों ने सत्रहवीं सदी में गढ़ा क्योंकि उन्होंने इसे प्राचीन यूनानी और रोमन क्लासिकी काल और अपने आधुनिक काल के बीच संकट के एक लंबे और अंधकारमय काल के रूप में देखा। लेकिन मध्यकाल पूरी दुनिया के लिए अनिवार्यतः कोई संकट या अंधकारमय काल नहीं था।

इस्लामी जगत के लिए यह एक ऐसा काल था जब एक सभ्यता का जन्म हुआ और वह परवान चढ़ और अपनी बुलंदियों पर पहुँचा। भारत में मध्यकाल मेलजोल और संश्लेषण का युग था। पुरानी और नई राजनीतिक-आर्थिक और सामाजिक व्यवस्थाएँ आपस में धुली-मिलीं। घुलने-मिलने और संश्लेषण की इस प्रक्रिया से सहअस्तित्व और सहिष्णुता का एक अनूठा सांस्कृतिक रुझान उभरा जो मध्यकालीन भारत की पहचान बन गया। यूरोप में भी तस्वीर इतनी स्याह नहीं थी जितना कभी-कभी समझा जाता है। बेशक, वहाँ मध्यकाल की शुरुआत में भौतिक और सांस्कृतिक उपलब्धियाँ थोड़ी कम थीं। लेकिन बाद में यूरोपवासियों ने अपने जीवन स्तर में बहुत सुधार किया। उन्होंने ज्ञान-विज्ञान की नई संस्थाएँ और चिन्तन की नई प्रणालियाँ विकसित कीं और वे साहित्य एवं कला में बहुत उन्नत स्तर पर पहुँचें। दरअसल, उस समय जो नए विचार उभर कर आए उन्होंने न सिर्फ यूरोप को रूपांतरित किया, बल्कि बाद में शेष दुनिया को भी प्रभावित किया। आइए, मध्यकाल के नाम से जाने वाले इस महत्वपूर्ण काल में दुनिया के विभिन्न हिस्सों में हुए रोचक परिवर्तनों का अध्ययन करें।

2.1.1 रोमन साम्राज्य का पतन

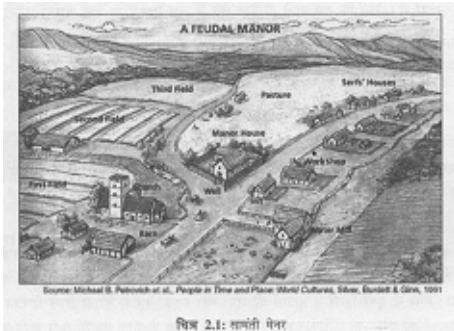
हमने पिछले पाठ में रोमन साम्राज्य की ताकत और महानता के बारे में पढ़ा। इस बीच रोमन साम्राज्य पश्चिमी और पूर्वी क्षेत्रों में बंट चुका था। पश्चिमी प्रांतों की राजधानी रोम था जबकि कुस्तुनतुनिया पूर्वी प्रांतों की राजधानी बना। रोमन सम्राट कांस्टेंटाइन ने 330 ई. में बैजंतिया के पुराने यूनानी शहर में पूर्वी क्षेत्रों की नई राजधानी स्थापित की थी। नई राजधानी उसके नाम पर कुस्तुनतुनिया के रूप में जानी गई। पश्चिमी हिस्से में साम्राज्य के पतन के करीब एक हजार साल बाद भी पूर्वी हिस्से में रोमन साम्राज्य टिका रहा। यह पूर्वी रोमन साम्राज्य या बैजंतिया साम्राज्य के नाम से जाना गया। ऐसे समय में जब पश्चिमी यूरोप अपेक्षाकृत पिछड़ी स्थिति में था, यूनानी भाषी लोगों की पूर्वी सभ्यता आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन में बहुत बुलंदी पर पहुँच गई थी। गाँथ, वंडल, विसीगाथ और फ्रैंक जैसे विभिन्न जर्मनिक कबीलों के हमलों के बाद पश्चिम में रोमन साम्राज्य ढह गया। 476 ई. में रोमन साम्राज्य का तख्तापलट कर इन हमलावरों ने अपने अलग-अलग उत्तरवर्ती (successor) राज्य स्थापित कर लिए।

क्या इन तमाम राजनीतिक उथल से जटिल परिवर्तन आए? क्या रोमनों ने जो राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्थाएं बनाई थीं, वे पूरी तरह से लुप्त हो गईं? नए जर्मन शासक पुरानी व्यवस्थाओं की जगह अपनी व्यवस्थाएं नहीं लाए। दरअसल, रोमन और जर्मनिक समाज एक-दूसरे के संपर्क में आए और एक-दूसरे में घुलमिल गए। इसके और उस समय की राजनीतिक और आर्थिक स्थितियों के कारण यूरोप एक नई किस्म के समाज का जन्म हुआ। इस समाज की संस्थाएं और व्यवस्थाएं रोमन और जर्मनिक दोनों से भिन्न थीं। इन नए समाज की सबसे महत्वपूर्ण संस्था सामंतवाद थीं। सामंतवाद ने सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक संगठनों को पूरी तरह बदल दिया। आइए देखें कैसे यह पद्धति विकसित हुई और इसकी विशेषताएं क्या थीं।

पश्चिम में रोमन साम्राज्य के विघटन के बाद जर्मन लोगों के परवर्ती राज्यों ने एक हद तक राजनीतिक स्थिरता कायम की। दरअसल इनमें से एक राज्य ने तो एक महान राजा शार्लमेन के काल में एक बड़ा-सा साम्राज्य स्थापित कर लिया। यह कैरोलिंगियाई साम्राज्य था, जो नवीं सदी के मध्य में फिर से हो रहे बाहरी हमलों की वजह से बिखरने लगा। इससे हुई राजनीतिक उथल-पुथल से एक नई किस्म की राजनीतिक व्यवस्था का जन्म हुआ जिसे सामंतवाद कहते हैं। सामंतवाद राजनीतिक प्रभुसत्ता का एक श्रेणीबद्ध संगठन था। अगर इसकी तुलना सीढ़ी से की जाए तो हम इस श्रेणीबद्ध ढांचे को आसानी से समझ सकेंगे। इस व्यवस्था में शीर्ष पर राजा खड़ा था। उसके नीचे खड़े थे बड़े सामंत जो ड्यूक और अर्ल के नाम से जाने जाते थे। उनके नीचे खड़े थे छोटे सामंत जो बैरन के नाम से जाने जाते थे। उनके नीचे नाइट थे जो शायद सामंतों की निम्नतम कोटि में आते थे। सिर्फ सामंत राजा से अपना प्राधिकार पाते थे। वे अपने छोटे सामंत को प्राधिकार प्रदान करते थे। और यह सिलसिला नीचे तक चलता जाता था। हर स्तर पर सामंत अपने से ऊपर वाले के प्रति निष्ठा जताते थे और उससे प्राधिकार पाते थे और अपने से बड़े के मातहत जागीरदार कहलाते थे। सामंत और मातहत अर्थात् बड़े और छोटे सामंत के बीच के रिश्तों का यह स्वरूप पदाक्रम की सीढ़ी के शीर्ष से लेकर नीचे तक समान था। सामंत अपने-अपने क्षेत्रों में सर्वशक्तिमान होते थे। जहां रोमन साम्राज्य में सारी शक्तियां राजा के हाथ में केन्द्रित थी, इस व्यवस्था में राजनीतिक सत्ता व्यापक रूप से विकेन्द्रित थी। नये सामाजिक-राजनीतिक ढांचे की एक अनूठी विशेषता यह थी कि सामंत और मातहत के बीच का संबंध निजी प्रकृति का था। सामंत और उसके मातहत के बीच रिश्ता बनाने के लिए एक लंबा चौड़ा अनुष्ठान होता था। इस अनुष्ठान में मातहत जागीरदार जिंदगी भर सामंत की सेवा करने की कसमें खाता था। इसकी के साथ वह सामंत का संरक्षण कबूल करता था। संरक्षण महत्वपूर्ण था क्योंकि वह उथल-पुथल और अस्थिरता का दौर था।

संरक्षण के बदले मातहत जागीरदार को अपने सामंत को कई तरह की सेवाएं देनी पड़ती थीं। इसमें मुख्यतः सैनिक सेवा शामिल थी। इसके तहत सामंत को जब भी जरूरत पड़ती मातहत को उसे एक खास संख्या में सैनिकों की आपूर्ति करनी होती थी। इसके बदले में सामंत उसे अनुदान देता था जो आम तौर पर मातहत और उसके सैनिकों के भरण-पौषण के लिए जमीनें होती थी। इस तरह के अनुदान को फीफ या यूडम कहते थे। इसी से यूडलिज्म (सामंतवाद) शब्द विकसित हुआ। यही सामंतवाद का सैन्य पहलू है। सामंत अपने इलाकों में सशस्त्र समर्थक

गोलबंद करते थे जो सीधे निजी तौर पर उसके बफादार थे। इस सशस्त्र सेना बल के साथ जरूरत पड़ने पर वह अपने से उच्च सामंत को सैन्य समर्थन देता था। इस बल के कारण सामंत अपने इलाके के पूर्ण मालिक बन बैठे थे और राज्य भी उन्हें चुनौती नहीं दे सकता था।



चित्र 2.1: सामंती मेनर

चित्र 2.1 : सामंती मेनर

मध्यकालीन यूरोप की अर्थव्यवस्था बुनियादी रूप से कृषि पर आधारित थी। पिछले पाठ में हमने रोमन साम्राज्य में गुलाम श्रमिकों के व्यापक उपयोग के बारे में पढ़ा है। रोमन साम्राज्य के अंतिम दौर में गुलाम श्रम का इस्तेमाल खासकर कृषि में लगभग खत्म हो चुका था। ऐसा गुलामों की जबदस्त किल्लत के कारण हुआ था। कृषिगत उत्पादन के लिए गुलामों के नहीं मिल पाने से रोमन अभिजातों की जीवनशैली प्रभावित हुई। वे तब तक भोग-विलास और ऐश-आराम नहीं कर सकते थे जब तक उन्हें शोषण के लिए दूसरे लोग न मिलें। उन्होंने यह काम मुक्त किसानों, काश्तकारों और खेत मजदूरों पर बोझ बढ़ाकर अंजाम दिया। आइए देखते हैं उन्होंने यह सब कैसे किया?

राजनीतिक हलचल और अशांति के दौर में किसानों ने सामंतों की ही तरह संरक्षण पाना चाहा। यह एक आम आर्थिक संकट का दौर था और मुक्त किसानों के पास आम तौर पर कम संसाधन थे। उनके पास अपने खेत नहीं थे और न ही खेती-बाड़ी के औजार थे। वे बीज खरीदने की स्थिति में भी नहीं थे। इन सबके लिए और संरक्षण पाने के लिए मुक्त किसानों ने सामंतों की तरफ रुख किया। उन्होंने सामंतों के पास अपनी आजादी गिरवी रख दी और जमीन से बंध गए। बाद में ऐसे कानूनी प्रावधान किए गए जो किसानों को जमीन से हटने या सामंतों को छोड़ कर कहीं और जान से रोकते थे। जब जर्मनिक कबीले रोमन समाज के संपर्क में आए तो उनके अभिजातों ने अपने कबीले के किसानों को भी इसी हैसियत में पहुंचा दिया। उसके बाद जब भी मुक्त किसानों ने शक्तिशाली रोमन भूस्वामियों या जर्मनिक सरदारों से संरक्षण मांगा, उन्हें अपनी आजादी खोनी पड़ी।

किसानों की आजादी खत्म होने की इस प्रक्रिया के साथ-साथ स्थानीय स्तर पर बड़े सामंतों, योद्धा सरदारों और जर्मनिक सरदारों की राजनीतिक और आर्थिक ताकत भी बढ़ती गई। स्थिति में ज व मजबूत और केन्द्रीकृत राज्य का वजूद नहीं था, किसान पूरी तरह कुलीन भूस्वामियों के रहमोकरम पर थे। जैसा कि हम पहले ही देख चुके हैं, इन सामंतों के पास सशस्त्र शक्ति भी थी। वे इसका इस्तेमाल किसानों को धमकाने-सताने में करते थे। इसके अतिरिक्त उनके पास असीम राजनीतिक और न्यायिक अधिकार भी थे। वे उनका इस्तेमाल किसानों को झुकाने और अपने ऊपर आश्रित करने में करते थे। जमीन से बंधे और सामंतों के पूरी तरह अधीन मध्यकालीन यूरोप के इन आश्रित किसानों को भूदास कहा जाता है।

इस काल की अर्थव्यवस्था बहुत हद तक सामंतों के हाथों भूदास के शोषण पर आधारित थी। इस काल के दौरान संपत्ति का एक बड़ा हिस्सा शोषण के जरिए सृजित किया गया। यह समझने के लिए कि यह सब कैसे हुआ, आइए देखें कि इस काल में कृषि किस तरह से संगठित की गई थी।

सामंतों के नियंत्रण वाली समूची जमीन मेनर (गढ़ी) कहलाती थी। मेनर तीन हिस्सों में बंटी होती थी। एक हिस्सा डीमेन कहलाता था। जायदाद का यह हिस्सा सामंत के सीधे प्रबंधन के तहत होता था। मेनर के दूसरे हिस्से में भूदासों की जोत थी। इसके अलावा मैदानी हिस्से थे जिन पर अपने पशुओं को चराने का अधिकार सबको प्राप्त था। भूदासों के जोतों पर अधिकार रखने वालों को सामंत के मेनर काश्तकार माना जाता था। काश्तकार होने के नाते उन्हें सामंत को लगान के रूप में कुछ देना होता था।

काश्तकार सामंत को यह लगान श्रम सेवा के रूप में अदा करते थे। श्रम सेवा के तहत उन्हें हफ्ते में कुछ खास दिन डीमेन पर काम करना पड़ता था। खेती के दिनों में भूदास को ज्यादा मेहनत करनी पड़ती थी। तब हल जोतना, बुआई, कटाई इत्यादि की जरूरत पड़ती थी। इस तरह की अवैतनिक सेवाओं में भवन-निर्माण और ईंधन के लिए लकड़ियां काटने जैसे कष्टसाध्य काम भी शामिल थे।

भूदासों को वस्तु की शक्ति में कुछ शुल्क या कर भी अदा करना होता था। मसलन उन्हें अपनी उपज का एक हिस्सा देना होता था। ये शुल्क मनमाने ढंग से लगाए जाते थे। जब भी सामंतों की अतिरिक्त संसाधनों की जरूरत होती थी, वे शुल्क थोप देते थे। सामंत अप्रत्यक्ष रूप से भी किसानों का शोषण करते थे। मेनर एक आत्मनिर्भर आर्थिक इकाई भी थी। इसका मतलब था कि रोजमर्रा की जरूरतों की करीब-करीब तमाम चीजों का यहां उत्पादन और उपभोग होता था। इन सबके लिए वहां विभिन्न सुविधाएं होती थीं। मसलन लोहे के सामान बनाने के लिए भट्ठी, गेहूं पीसने के लिए चक्की, रोटी बनाने के लिए तंदूर और शराब बनाने के लिए और पेरने के कोल्हू मौजूद थे। ये सब सामंत की मिल्कियत होते थे। किसानों को उन उपकरणों और मशानों के इस्तेमाल के लिए मजबूर किया जाता था। सामंत उनका शुल्क मनमाने ढंग से तय करता था।

आपने रोमन गुलामों के बारे में पिछले पाठ में पढ़ लिया होगा। जानने की कोशिश कीजिए कि आज के युग में जिन किसानों के पास जमीन नहीं होती और जो दूसरों की जमीन पर कार्यरत होते हैं उनकी क्या हालत होती है, यह जानकारी आपको समाचार पत्रों से या अपने बुजुर्गों से प्राप्त हो सकती है। इस को आप रोमन किसानों से तुलना कीजिये। आप किस नतीजे पर पहुँचते हैं इसका एक संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

खाली जगहों को भरो :

1. मतहत जागीरदार को दिया गया सामंत का अनुदान—— कहलाता था ।
2. जमीन से बंधे और सामंतों के पूरी तरह अधीन मध्यकालीन यूरोप के ये आश्रित किसान —— कहलाते हैं ।
3. समंतों के सीधे प्रबंधन में रहने वाला जायदाद का हिस्सा—— कहलाता था ।

2.2.1 सामंती अर्थव्यवस्था में परिवर्तन : खुशहाली और संकट

हमने अभी-अभी सामंती व्यवस्था के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया है। क्या समूचे मध्यकाल के दौरान यह प्रणाली जिस की तस रही? नहीं, सामंती अर्थव्यवस्था में खुशहाली और संकट के रुझान रहे। आइए इन रुझानों को शुरू से देखें

रोमन साम्राज्य के पतन के बाद की कुछ सदियों के दौरान आर्थिक जीवन स्तर निम्न था। हम पहले से ही जानते हैं कि यह राजनीतिक परिवर्तनों और अशांति का दौर था। इस दौर की कुछ विशेषताओं में नगरीय जीवन, व्यापार और मुद्रा विनिमय में गिरावट शामिल हैं। रोमन काल के कुछ शहर टिके रहे। लेकिन वे महल खाली बोटलों की तरह थे। उनकी कोई वास्तविक आर्थिक भूमिका नहीं थी। सड़कें टूट-फूट गई थीं और वस्तु-विनिमय प्रणाली ने मुद्रा की जगह ले ली थी। यूरोपीय अर्थव्यवस्था लगभग पूरी तरह कृषि पर और बेहद सीमित स्थानीय व्यापार पर आधारित थी। उस समय मुख्य आर्थिक इकाई आत्मनिर्भर जागीरें या सामंती मेनर थी जिनके बारे में हम पढ़ चुके हैं। कृषि में इस्तेमाल होने वाली तकनीक पिछड़ी थी और उपज कम थी। ये हालात करीब दसवीं सदी ईस्वी तक बने रहे।

दसवीं सदी के दौरान उत्पादन की सामंती पद्धति में महत्वपूर्ण परिवर्तन आए। 11वीं और 12वीं सदी ईस्वी में यह व्यवस्था पूरे यूरोप में लगातार फलती-फूलती रही। जैसे-जैसे व्यवस्था स्थिरता पाती गई, कृषि उपज में इजाफा होता गया। कृषि तकनीक में सुधार एक अन्य कारक था जिसके कारण कृषि उत्पादकता में इजाफा हुआ। रोमन काल से इस्तेमाल में आने वाले हल्के हल 'अरेट्रम'

की जगह एक नए हल ने ले जो 'चैरय' कहलाता है। नयस हल भारी था। यह पहियों से युक्त था और उसे बैलों का एक दल खींचता था। इसने उत्तरी यूरोप की सख्त और चिपचिपी में मिट्टी की बेहतर जुताई में मदद की। खेती दो भूखण्डों के तरीकों पर आधारित थी जिसमें जमीन के हिस्से पर खेती की जाती थी और दूसरा हिस्सा परती छोड़ दिया जाता था। बाद में इसके बजाय तीन भूखण्डों का तरीका अपनाया गया। इसके तहत एक तिहाई जमीन परती छोड़ दी जाती, एक तिहाई जमीन पर शरत फसल उपजाई जाती और बाकी पर बसंत फसल लगाई जाती। जमीन के सिर्फ तीसरे हिस्से को परती छोड़ देने से फसल बोई गई जमीन का क्षेत्र काफी बढ़ गया। नए हल, तीन भूखण्ड कृषि पद्धति और कृषि तकनीकों में अन्य नई खोजों के इस्तेमाल से उपज में कई गुना वृद्धि हुई।

कृषि में विस्तार के साथ ही दसवीं सदी से 12वीं सदी के बीच के दौर में व्यापार की बहाली हुई और नगरीय जीवन में वृद्धि हुई। स्थानीय हाट में अतिरिक्त अनाज और अंडों की खरीद-फरोख्त से लेकर शराब, और कपास जैसी वस्तुओं की भी दूरी के व्यापार का एक लंबा सिलसिला था। सड़कों के निर्माण से व्यापार में इजाफा हुआ। नदी और समुद्री रास्ते भी व्यापार के लिए इस्तेमाल किए जाते थे। व्यापार की बहाली से भुगतान के नए तरीके जरूरी हो गए क्योंकि वस्तु विनिमय इसके लिए अपर्याप्त थे। नतीजतन लगभग चार सौ साल बाद मुद्रा अर्थव्यवस्था का दौर फिर लौटा। साथ ही शहरों का बड़ा तेज विकास हुआ। लंबी दूरी के व्यापार और अगल-बगल के ग्रामीण इलाकों में खेती से आई खुशहाली से उसे बड़ा बल मिला। जल्द ही शहर कुछ खास उद्यमों के लिए जाने जाने लगे। उदाहरण के लिए, वस्त्र निर्माण शहरों के सर्वाधिक महत्वपूर्ण उद्योगों में से एक बन गया था। दस्तकारों के संघ महत्व धारण करने लगे। व्यापारिक गतिविधियां और दस्तकारी आधारित उत्पादन दोनों शिल्पसंघों के ही ईद-गिर्द संगठित हुए। इससे मध्यकालीन शहरों का महत्व बढ़ता गया और अंततः ये ग्रामीण इलाकों में सामंती संबंधों को तोड़ने वाले महत्वपूर्ण कारक बने।

आर्थिक प्रगति का यह रुझान 12वीं सदी के अंत तक अपनी चरम सीमा पर पहुंच गया तेरहवीं सदी तक सामंती व्यवस्था में उल्लेखनीय परिवर्तन देखे जा सकते थे जिसने प्रगति की प्रक्रिया उलट दी। आर्थिक प्रगति और खुशहाली के काल के चलते आबादी बढ़ी। इसका मतलब हुआ सामंतों के लिए श्रम की आपूर्ति में बढ़ोत्तरी। इसलिए सामंतों ने उन डीमेन को अब बनाए रखना जरूरी नहीं समझा। मेनर को अब डीमेन के एक बड़े हिस्से की छोटी-छोटी जोतों में बांट दिया गया और किसानों को भाड़े पर दे दिया गया। चूंकि ये जोते बहुत छोटी थीं, पहले डीमेन के विशाल भूखण्ड में इस्तेमाल होने वाली प्रौद्योगिकी का अब वहां उपयोग संभव नहीं था। साथ ही बड़ी संख्या में श्रमिकों के मौजूद होने के चलते श्रम-शक्ति बचाने वाली प्रौद्योगिकी को इस्तेमाल करने वाले कुछेक ही थे। इसके साथ ही, चूंकि डीमेन खत्म हो चुके थे, किसानों से श्रम-सेवा वसूलने का तरीका भी खत्म हो गया। इसलिए सामंत अब श्रम-सेवा के बजाय मुद्रा या जिस सामंती लगान की मांग करने लगे। मुद्रा-आधारित अर्थव्यवस्था शहरी केन्द्रों और व्यापार में वृद्धि ने इस विकास को बढ़ाया दिया। श्रम-सेवा में गिरावट और कृषि में प्रौद्योगिकी की गतिरुद्धता ने अन्य कारकों के साथ मिल कर कृषि उपज में जबर्दस्त गिरावट ला दी। अनाज की किल्लत और अकाल का सिलसिला शुरू हो गया। प्लेग की महामारी का प्रकोप टूट पड़ा। इन सब के कारण अर्थव्यवस्था में एक साथ गिरावट आई। लेकिन यूरोपीय समाज दसवीं सदी ईस्वी से पहले

के संकट के मुकाबले इस संकट से आसानी से उबर गया। 1450 ई. के करीब अर्थव्यवस्था में बहाली का सिलसिला शुरू हो गया।

क्या आप जानते हैं

सारी जमीन जमीनदारों के पास होती थी और जिसकी देखभाल वे स्वयं करते थे जिसे डीमेन्स के नाम से जाना जाता था।

हमारे पास अब कुछ जानकारी हो गई है कि मध्यकालीन यूरोप में लोग किन स्थितियों में रहते थे। कई सदियों के एक कालखण्ड में उन स्थितियों में होने वाले परिवर्तनों को भी रेखांकित कर पाए हैं। भौगोलिक स्थिति में हुई इन परिवर्तनों ने मध्यकालीन यूरोप में समाज और संस्कृति को किस तरह प्रभावित किया। आइए हम इस पर विचार करें। दसवीं सदी से पहले के काल के आर्थिक जीवन के अपेक्षाकृत निम्न स्तर को देखते हुए हमें यह जानकर आश्चर्य नहीं होना चाहिए। कि यह ज्ञान-विज्ञान या कला के लिए अच्छा दौर नहीं था। इस दौरान शिक्षा कुछ चुनिंदा लोगों का ही विशेषाधिकार बनी रही। आम लोगों को कोई औपचारिक शिक्षा नहीं दी जाती थी। कुलीनों के ज्यादातर सदस्य तक अशिक्षित थे। सिर्फ पुरोहित वर्ग के सदस्यों को थोड़ी शिक्षा मिलती थी। यह थोड़ी शिक्षा भी बड़ी संकीर्ण प्रकृति की थी। यह ज्यादातर तोतारटंत पर आधारित थी और उसमें तर्क-वितर्क और विवेक की गुंजाइश नहीं थी। सीखने की पूरी प्रक्रिया पर धर्म का आधिपत्य था। स्वाभाविक है कि ऐसी स्थितियों में विज्ञान में मुश्किल से कोई विकास हो सका। पुनरुत्थान के कुछ प्रयास हुए लेकिन उससे भी कोई वास्तविक बौद्धिक सृजनात्मकता नहीं आ पाई। बहरहाल, उसका एक फायदा यह हुआ कि पुरोहितों और मठाधीश जमात के सदस्यों को इतनी शिक्षा मिल गई कि वे रोमन साहित्य की कुछ महत्वपूर्ण कृतियों की नकल कर सकें और उसका संरक्षण कर सकें। इसने कम से कम शिक्षा-दीक्षा के उस दौर के आधार का काम किया जो 11 वीं और 12वीं सदी में शुरू हुआ।

साक्षरता के निम्न स्तर के कारण इस काल में साहित्य के क्षेत्र में कोई ज्यादा उल्लेखनीय कार्य नहीं हुआ। यही बात कला के क्षेत्र में भी रही। बहरहाल, इस दौरान पांडुलिपियों के चित्रण और अलंकरण की एक अनूठी शैली विकसित हुई। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि इस दौर में, अभिजात वर्ग के कुछ लोगों को छोड़कर, पूरे यूरोप में लोग भुखमरी की स्थिति में रह रहे थे। सांस्कृतिक उपलब्धियां कम और छुटपुट थीं। यूरोपीय सभ्यता पड़ोस बैजंटाइन सभ्यता और इस्लामी सभ्यता की तुलना से बेहद पिछड़ी थी। दरअसल दसवीं सदी के एक अरब भूगोलशास्त्री ने उन्हें 'स्थूल प्रकृति, अप्रिय तौर-तरीके और निम्न बुद्धि वाले लोगों' की संज्ञा दी थी।

दसवीं सदी के बाद से आए खुशहाली और अपेक्षाकृत शांति के दौर ने इस काल के सांस्कृतिक जीवन में परिवर्तन लाया। इस दौर में प्राथमिक शिक्षा का प्रसार हुआ। विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई और उनका विस्तार हुआ। क्लासिकी ज्ञान और साथ ही इस्लामी सभ्यता से ज्ञान और दर्शन क्षेत्र में प्रगति हुई। यह बौद्धिक विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था जो आधुनिक काल में अपने उत्कर्ष पर पहुंचा। चर्च ने शिक्षा पर अपना एकाधिकार खो दिया। ज्ञान एवं विद्या

क्रमशः धर्मनिरपेक्ष होती गई । पहले ज्ञान और शिक्षा तर्क-वितर्क और विवके स पूरी तरह कटी थी, अब इस दौर से आलोचनात्मक अध्ययन का एक सिलसिला धीरे-धीरे शुरू हुआ । महिलाएं भी अब शिक्षा पाने लगी, लेकिन उनकी संख्या बहुत कम थी ।

1. जमींदारों तथा किसानों के बीच के सम्बन्ध को समझाये ।
2. खेतीहर मजदूर क्या थे?
3. बताएं कि वक्तव्य सही है या गलत
 1. दसवीं से लेकर 12वीं सदी के दौरान व्यापार में सुधार हुआ और नगरीय जीवन में वृद्धि हुई ।
 2. दसवीं सदी के बाद कृषिगत तकनीकों में सुधार का उपज में इजाफा से कोई ज्यादा सरोकार नहीं था ।
 3. तेरहवीं सदी के बाद सामंती अर्थव्यवस्था में वृद्धि का रुझान उलट गया ।
 4. दसवीं सदी के पहले यूरोप में शिक्षा और कला के विकास के लिए बढ़िया दौर था ।

2.3 मध्य काल में अरब सभ्यता

मध्यकाल में अरब में एक शानदार सभ्यता का उदय हुआ। इसके उदय का कारण वहां इस्लाम का जन्म होना था। इसने न सिर्फ पश्चिम एशिया बल्कि यूरोप, अफ्रीका और भारत समेत एशिया के दूसरे हिस्सों को प्रभावित किया। दरअसल, इस्लाम का जन्म इस काल की इतनी महत्वपूर्ण घटना है कि मध्यकालीन विश्व की दास्तान का जन्म इस काल की इतनी महत्वपूर्ण घटना है कि मध्यकालीन विश्व की दास्तान से इस्लाम की कहानी अलग नहीं की जा सकती। आइए, यहां इसके बारे में थोड़ा पढ़ें।

इस्लाम की दास्तान अरब से शुरू होनी चाहिए क्योंकि यही उसका जन्म हुआ है। अरब रेगिस्तानों का एक प्रायद्वीप है। इस्लाम के उदय से पहले ज्यादातर अरब बहू जाति के थे, अर्थात् ऊंट पर घूमने वाले चरवाहे थे। उनकी आजीविका का मुख्य स्त्रोत पशुपालन और नखलिस्तानों में उगने वाले खजूर थे। शिल्प उत्पादन काफी सीमित था, व्यापार भी धीमा ही था, और शहरीकरण बहुत ही कम।

छठी सदी के उत्तरार्द्ध में लंबी दूरी का व्यापार करने वाले कारवों के रास्तों में परिवर्तन के बाद अरब अर्थव्यवस्था में थोड़ी तेजी आई। अरब के दो पड़ोसी साम्राज्यों - रोमन साम्राज्य और फारसी साम्राज्य के बीच जंग छिड़ी थी। इन जंगों के कारण अरब अफ्रीका और एशिया बीच व्यापार के लिए आने-जाने वाले कारवों का सुरक्षित रास्ता बन गया। इससे कुछ महत्वपूर्ण शहरों के विकास को बढ़ावा मिला। उन्होंने उसका फायदा उठाया। उन्होंने उसका फायदा उठाया। उनमें से सबसे महत्वपूर्ण शहरों मक्का था। जो कुछ प्रमुख व्यापार मार्गों के संधिस्थल पर था। काबा के कारण मक्का को एक स्थानीय

धार्मिक महत्व हासिल था और इसके कारण भी वह महत्वपूर्ण था। उस समय काबा अरब के विभिन्न कबीलों के लिए एक पूजनीय स्थल था। इस धर्मस्थल पर कुरैश कबीले का नियंत्रण था जो मक्का के आर्थिक जीवन में एक शक्तिशाली भूमिका निभाते थे। इस्लाम के संस्थापक हज़रत मोहम्मद का जन्म करीब 570 ई. में कुरैश कबीले में हुआ। हज़रत मोहम्मद के माता-पिता का निधन उनके बचपन में ही हो गया। उनकी परवरिश उनके चाचा ने की। बड़े होकर वह एक खुशहाल सौदागर बने। उन्होंने एक धनी विधवा खदीजा के लिए व्यापार किया। बाद में उन्होंने खदीजा से शादी कर ली। करीब 610 ई. में हज़रत मोहम्मद एक धार्मिक अनुभूति से गुजरे जिसमें माना जाता है कि उन्होंने एक आवाज सुनी जो कह रही थी कि अल्लाह एक है और उसके सिवा कोई भगवान नहीं है। उस समय अरब अनेक देवी-देवताओं की पूजा करते थे और अल्लाह को उनमें से एक, लेकिन उनसे थोड़ा उच्च और शक्तिशाली माना जाता था। हज़रत मोहम्मद के अलौकिक अनुभव के कारण इस बहुईश्वरवाद या अनेक देवी-देवताओं पर आस्था की जगह एकेश्वरवाद ने ले ली। उसके बाद हज़रत मोहम्मद को और भी आकाशीय संदेश आए जो उनके नए धर्म के आधार बने। नया धर्म इस्लाम के नाम से जाना गया और हज़रत मोहम्मद उसके पैगंबर- माने गए। शुरू में वह कुरैश के ज्यादा लोगों को नए धर्म में शामिल कराने में सफल नहीं रहे। उनकी पत्नी समेत कुछ ही लोगों ने नया धर्म स्वीकार किया।

इसी बीच उत्तर में एक दूसरे शहर यसरिब के प्रतिनिधियों ने हज़रत मोहम्मद को अपने यहां आने और वहां के विवाद सुलझाने का न्योता दिया। 622 ई. में हज़रत मोहम्मद अपने अनुयाइयों के साथ यसरिब चले गए। इसे हिजरत कहते हैं। हिजरत के साल को इस्लामी कैलेंडर का पहला साल माना जाता है। हज़रत मोहम्मद ने इस शहर का नाम मदीना रखा और वह वहां के शासक बनने में सफल रहे। अब उन्होंने सचेत रूप से इस्लाम धर्म स्वीकार करने वालों को एक राजनीतिक और धार्मिक समुदाय में संगठित करना शुरू किया। मक्का में इस्लाम को फैलाने के लिए वह और उनके अनुयाइयों ने कुरैश के काफिलों पर हमला करना शुरू किया। हज़रत मोहम्मद अंततः 630 ई. में सफल रहे और कुरैश को परास्त कर मक्का में प्रवेश किया। कुरैश ने नया धर्म स्वीकार कर लिया और इसके बाद से काबा इस्लाम का मुख्य धर्मस्थल बना। मक्का विजय के बाद समूचे अरब के विभिन्न कबीलों ने भी इस्लाम कबूल कर लिया।

European	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9
Arabic-Indic	•	١	٢	٣	٤	٥	٦	٧	٨	٩
Eastern Arabic-Indic (Persian and Urdu)	۰	۱	۲	۳	۴	۵	۶	۷	۸	۹
Devanagari (Hindi)	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९
Tamil		௧	௨	௩	௪	௫	௬	௭	௮	௯

चित्र 2.2 : अंक प्रणाली

चित्र 2.2 : अंक प्रणाली

इस्लाम की शिक्षाएं सीधी-सादी हैं। 'इस्लाम' शब्द का अर्थ है धर्म की अधीनता और पालन, अर्थात् ईश्वर के समक्ष संपूर्ण समर्पण। इसके अनुयाई मुस्लिम या मुसलमान कहलाए। इस्लाम के अनुसार ईश्वर एक है। मुसलमान हज़रत मोहम्मद को आखिरी और महानतम पैगंबर मानते

हैं। वे यहूदियों और ईसाईयों के पैगंबरों को भी मान्यता देते हैं। मुसलमान मानते हैं कि कयामत या महाप्रलय आएगा और नेक तथा अच्छे लोगों को जन्नत में शाश्वत जीवन मिलेगा जबकि दुष्ट और पापी लोगों को जहन्नुम का आग में हमेशा के लिए झुलसना होगा। नेक जीवन बिताने के लिए कुरान की हिदायत पर अमल करना होगा जो मुसलमानों का पवित्र ग्रंथ है। कुरान को उन संदेशों का संकलन माना जाता है जो हज़रत मोहम्मद को ईश्वर से मिले थे। इन कदमों में सदाचार और दया-करुणा का जीवन बिताना, निश्चित समय पर नमाज़ और रोज़ा जैसे धार्मिक अनुष्ठान करना, हज़ (मक्का की तीर्थ यात्रा) करना और कुरान का पाठ करना शामिल है। कुरान के अतिरिक्त मुसलमानों को सुन्नत या हज़रत मोहम्मद के वचनों और आदर्शों और हदीस या पैगंबर की शिक्षाओं पर अमल करना होता है। इस्लाम में अल्लाह के वचनों और आदर्शों और हदीस या पैगंबर की शिक्षाओं पर अमल करना होता है। इस्लाम में अल्लाह और इंसान के बीच कोई मध्यस्थ नहीं है। वहां पुरोहित नहीं है। बस धार्मिक विद्वान या आलिम हैं जो धर्म और धार्मिक कानूनों पर टिप्पणी कर सकते हैं। इस्लाम तमाम लोगों की बराबरी की शिक्षा देता है। उसूलों के मामले में यहूदी और ईसाई धर्म के साथ इस्लाम की बड़ी समानता है।

अब हमारे पास इसकी हल्की-फुल्की समझ बन गई है कि हज़रत मोहम्मद ने इस्लाम धर्म की स्थापना कैसे की और उसकी प्रमुख विशेषताएं क्या क्या हैं। लेकिन अरब के दूर-दराज इलाके में शुरू हुआ यह सीधा-सादा धर्म कैसे एक विश्वव्यापी परिघटना बन गया।

इस्लाम का प्रसार

हज़रत मोहम्मद के निधन के बाद उनके राजनीतिक उत्तराधिकार के बारे में अरबों में कोई स्पष्ट समझ नहीं थी। वास्तव में इस नवजात धार्मिक समुदाय के विखंडन का खतरा पैदा हो गया था। लेकिन हज़रत मोहम्मद के कुछ निकटतम अनुयाइयों ने उनके ससुर अबु बक्र को उनका खलीफा या उत्तराधिकारी चुन कर उसे इस खतरे से उबार लिया। उसके बाद से एक लंबे काल तक खलीफा को तमाम मुसलमानों का सर्वोच्च धार्मिक और राजनीतिक नेता माना जाता रहा। खलीफा बनने के तुरंत बाद अबु बक्र ने उन तमाम अरब कबीलों के खिलाफ सैनिक अभियान शुरू किया जिन्होंने हज़रत मोहम्मद के निधन के बाद उनके उत्तराधिकारी का प्राधिकार मानने से इनकार कर दिया था। यह सैनिक अभियान बेहद सफल रहा। इसे इसके बाद उत्तर की दिशा में अरब की सीमाओं को आगे बढ़ाया गया। आश्चर्य की बात है कि उन्हें इन सैनिक अभियानों में बैजंतिया और फारस जैसे शक्तिशाली साम्राज्यों की ओर से बेहद कम प्रतिरोध का सामना करना पड़ा।

अबु बक्र के निधन के बाद उमर खलीफा बने। उमर ने पड़ोस के साम्राज्यों पर हमला करने का सिलसिला जारी रखा। अरब सेना को लगातार सफलता मिलती गई। जल्द ही अरबों ने पूरे सीरिया पर और एंतिओक, दमिश्क तथा यरुशलम के प्रमुख शहरों पर कब्जा कर लिया। उन्होंने फारस की सेना की परास्त कर दिया। 651 ई. तक समूचे फारस पर अरबों का कब्जा हो चुका था। अरब बैजंतिया साम्राज्य से मिस्र छीनने में कामयाब रहे। इसके बाद वे पश्चिम में उत्तरी अफ्रीका को ओर बढ़े यहां से वे 711 ई. में स्पेन में घुसे। उन्होंने लगभग समूचे स्पेन को जीत लिया। इस तरह एक सदी से कम समय में इस्लाम ने प्राचीन फारस को पूरा और पुराने रोमन जगत का ज्यादातर हिस्सा जीत लिया। इतिहासकारों ने अक्सर अरबों की इस जीत के पीछे के कारणों

पर आश्चर्य जताया है। कुछ मानते हैं कि मजहबी जोश और इस्लाम के प्रसार की धुन थी जिसने अरबों को प्रेरित किया। लेकिन अब अधिकाधिक इतिहासकारों की दलील है कि जहां धर्म ने अरबों का एकताबद्ध रखने में भूमिका निभाई, वहीं जिस चीज ने उन्हें रेगिस्तान से निकलकर बांधे जाने के लिए वास्तव में प्रेरित किया वह वास्तव में समृद्ध क्षेत्र और माल-ए-गनीमत (यानि युद्धों में लूटी गई दौलत) था। बैजंतिया और फारस जैसे उनके दुश्मनों की कमजोरी ने भी अरबों की मदद की।

उमर के बाद उस्मान खलीफा बने, लेकिन उस्मान मजबूत नेता नहीं थे। उनके अनेक विरोधी भी थे। उनकी हत्या कर दी गई और पैगंबर के चचेरे भाई एवं अली को खलीफा बनाया गया। लेकिन जल्द ही अली की हत्या कर दी गई और उस्मान के समर्थक प्रभुत्वशाली पक्ष बनकर उभरे। उसके बाद से मुसलमानों में दरार है अली के अनुयायियों ने एक अलग पंथ बना लिया और शिया कहलाये। बाकी मुसलमान सुन्नी कहलाए। अली की मृत्यु के बाद उमैया परिवार के एक सदस्य ने खिलाफत संभाली उस्मान इसी परिवार के थे। उमैया वंश 950 ई. तक शासन करता रहा। बैजंतिया साम्राज्य की राजधानी पर जबरदस्त हमले में असफलता के बाद उनकी ताकत कमजोर पड़ गई। उमैया वंश के पतन के बाद अब्बासियों ने सत्ता संभाली। जहां उमैया ने अपनी ताकत सीरिया में केन्द्रित की, अब्बासियों ने अपनी राजधानी बदलकर फारसी राजधानी के पास इराक में बगदाद को बनाया। फारसी क्षेत्र में राजधानी के स्थानान्तरण के साथ ही अब्बासी शासन में फारसी तत्वों प्रमुखता मिली। इस शासन के दौरान शुरुआती इस्लाम के समता और भाईचारे के उसूलों की समाप्ति हो गई। उसकी जगह निरंकुश राजशाही ने ले ली। उनके भव्य दरबार में बड़ा तामझाम था। दरबार की यह शानशौकत और कायदे-कानून फारस की परंपराओं से उधार लिए गए थे। अब्बासी शिक्षा और साहित्य के बड़े संरक्षक थे। 10वीं सदी में अब्बासी सत्ता कमजोर पड़ने लगी। इसके बाद विकेन्द्रीकरण एक विस्तृत दौर रहा। मंगोलो ने 1258 में बगदाद को नष्ट कर दिया। अराजकता का यह दौर तब तक जारी रहा जब तक सल्जुक तुर्कों ने बगदाद पर कब्जा नहीं कर लिया। इसने मुस्लिम साम्राज्य पर अरब शासन समाप्त कर दिया। बाद की सदियों में इस्लामी जगत पर तुर्कों का दबदबा रहा।

हमने इस्लामी साम्राज्य के विकास क्रम को रेखांकित किया है कि कैसे यह कुछ एक लोगों की आस्था से विकसित होते हुए एक विशाल साम्राज्य की स्थापना तक पहुंचा। कैसे इस विकास ने लोगों के सामाजिक व सांस्कृतिक जीवन को प्रभावित किया।

2.10 इस्लामी सभ्यता की सांस्कृतिक और बौद्धिक उपलब्धियां

यह कहा जाता है कि हजरत मोहम्मद के समय से लेकर करीब 1500 ई. तक इस्लामी संस्कृति और समाज उल्लेखनीय रूप से सर्वदेशीय और गतिशील रहे। वे विभिन्न संस्कृतियों के संपर्क में आए और उनकी विशेषताओं को ग्रहण किया। इस्लामी संस्कृति ने उनके आदर्श अपनाकर खुद को समृद्ध किया। इस काल में इस्लामी संस्कृति दूसरे धर्मों के प्रति उल्लेखनीय रूप से सहिष्णु थी। उसने अपने सामाजिक ढांचे में और यहां तक प्रशासन में भी यहूदियों और ईसाइयों को जगह दी। उन्होंने यहूदी और ईसाई कवियों को भी संरक्षण दिया।

धर्म के क्षेत्र में मुख्यतः दो किस्म के लोग थे - उलेमा और सूफी। उलेमा विद्वान लोग थे और धर्म तथा धार्मिक कानूनों के तमाम पहलुओं पर सलाह देते थे। आमतौर पर परंपरा का पालन

करते थे। सूफी धार्मिक कानूनों के तमाम पहलुओं पर सलाह देते थे। वे आमतौर पर परंपरा का पालन करते थे। सूफी धार्मिक रहस्यवादी थे जो मुख्यतः ध्यान और हाल आह्लाद पर जोर देते थे। सूफी आमतौर पर लोगों की जिन्दगी को गहराई से छूने में सफल रहते थे)

खासकर अब्बासी शासनकाल में इस्लामी में इस्लामी विद्या की विभिन्न शाखाओं में उत्कर्ष पर पहुंच गई थी। दर्शन उनमें से एक था इस्लामी दर्शन पुराने यूनानी दर्शन के अध्ययन पर आधारित था। बुद्धिमान और विवेकशीलता में यकीन रखने वाले मुस्लिम दार्शनिकों के एक तबके ने यूनानी दर्शन को आगे बढ़ाया। ये दार्शनिक दर्शन के क्षेत्र में चिंतन-मनन के अलावा प्राकृतिक विज्ञान के अध्ययन में भी अग्रणी थे। उन्होंने खगोलशास्त्र और चिकित्सा के क्षेत्र में खासा काम किया। उनका ज्योतिषशास्त्र खगोलीय गणना पर आधारित था। चिकित्साशास्त्र के क्षेत्र में उन्होंने यूनानियों के लेखों का न सिर्फ अध्ययन किया बल्कि उसे बहुत आगे तक ले गए। पश्चिम में अबिसीना के नाम से मशहूर इब्नसीना ने तपेदिक की संक्रामक प्रकृति की खोज की। उन्होंने स्नायुतंत्र की अनेक बीमारियों का जिक्र किया। पश्चिम में राजेज के नाम से मशहूर अल-राजी मध्यकालीन विश्व के महानतम नैदानिक चिकित्सक (क्लिनिकल फिजिशियन) थे। उन्होंने खसरा और चेचक में फर्क खोजा। दूसरे इस्लामी चिकित्सकों ने आमाशय के कैंसर का निदान किया, जहर की काट खोजी और आँख की बीमारियों के इलाज में उल्लेखनीय योगदान किया। मुस्लिम समाज की एक रोचक व्यवस्था यह थी कि अस्पताल की स्थापना और संगठन में वे दूसरी तमाम मध्यकालीन संस्कृतियों से आगे थे। फारस, सीरिया और मिस्र के महत्वपूर्ण शहरों में आधुनिक पद्धति पर संगठित कम से कम 34 अस्पताल थे।

उन्होंने प्रकाश-विज्ञान, रसायनशास्त्र और गणित में भी बहुत उपलब्धियां हासिल कीं। इस्लामी भौतिकशास्त्रियों ने प्रकाश-विज्ञान की नींव रखी। प्रकाश की गति, परेक्षण और प्रवर्तन के बारे में अनेक महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकाले। रसायनशास्त्र क्षेत्र में अन्य चीजों के अलावा, सोडा के कार्बोनेट, फिटकरी, शोरा, नमक के तेजाब, नाइट्रिक अम्ल और सिल्वर नाइट्रेट जैसे अनेक यौगिकों और रसायनों की खोज के लिए हम उनके आभारी हैं। गणित के क्षेत्र में इस्लामी विद्वानों की महानतम उपलब्धि यूनानियों के रेखागणित तथा भारतीयों की अंक प्रणाली को एक जगह करना है। वास्तव में भारतीय अंक प्रणाली का इस्तेमाल इतने व्यापक रूप में फैला कि पश्चिम ने उन्हें 'अरब अंक' का नाम दे दिया। इस तरह उस समय मौजूद विद्या का संश्लेषण कर अरबों ने अंकगणित, रेखागणित और त्रिकोणमिति के क्षेत्र में महान प्रगति की।

अरब सभ्यता अपने साहित्य, खासकर कविता के लिए भी मशहूर हुई। उमर खैयाम की रुबाइयां इसकी एक मिसाल है जिसे आज भी याद किया जाता है अन्य क्षेत्रों की तरह इस्लामी कला भी बैजंतिया, ईरानी इत्यादि विभिन्न शैलियों का सुंदर और शानदार संश्लेषण है। इस्लामी कला में वास्तुशास्त्र सबसे महत्वपूर्ण है। इस्लामी वास्तुशास्त्र के उदाहरणों में मस्जिद, महल, स्कूल, पुस्तकालय, अस्पताल इत्यादि हैं। इनकी मुख्य विशेषताओं में गुंबद, मीनार, महराब इत्यादि शामिल हैं।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि ऐसे समय जब पश्चिम बहुत पिछड़ा था, इस्लामी सभ्यता बौद्धिक और कलात्मक स्तर पर अपनी बुलंदियों पर थी। एक विशाल साम्राज्य की स्थापना ने अरबों को विविध संस्कृतियों के संपर्क में लाया। इसने अरब, फारसी, तुर्क, भारतीय और अफ्रीकी जैसे विविध और भिन्न समुदायों को एक साथ लाने और विविध तत्वों वाले एक शानदार समाज के निर्माण में मदद की। इसने आपने पीछे मौलिक खोजों और उपलब्धियों की एक शानदार विरासत छोड़ दी।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

1. हज़रत मोहम्मद और उनके अनुयाइयों के मक्का छोड़ कर मदीना जाने को क्या कहते हैं?
2. पैगम्बर मोहम्मद के निधन के बाद किन को पहला खलीफा बनाया?
3. किसने तपेदिक की संक्रामक प्रकृति की खोज की?
4. किस चिकित्सक ने खसरा और चेचक के बीच फर्क खोजा?

सोचिये ऐसी 5 इमारतों जो आपने देखी हो या फिर किताब में पढ़ी हों जो कि अरबों की कलाकृति दर्शाती हो। यह इमारतें भारत में हों या भारत से बाहर हो। उनके बारे में लिखिये। इन इमारतों की क्या खास बात थी। ये कहाँ पर हैं और आप के क्या विचार हैं। इनको संरक्षित करने के उपाय बतायें।

2.4 मध्यकालीन भारतीय सभ्यता

पिछले पाठ में हमने, गुप्त साम्राज्य और हर्षवर्धन के शासनकाल के बारे में था। उसके बाद आठवीं और दसवीं सदी के बीच राजनीतिक विकेन्द्रीकरण का एक लंबा दौर रहा। इस दौरान अनेक राज्यों ने वर्चस्व लिए संघर्ष किया। उत्तर भारत में पाल, परिहार और राष्ट्रकुल के तीन प्रमुख राज्य थे। चौहान परमारों इत्यादि के राजपूत वंशों ने छोटे-छोटे और जागीरें स्थापित की। दक्षिण में देश के परायद्वीप में चोल वंश का प्रभुत्व था। राजनीतिक एकाधिकार के विखंडन की यह स्थिति महमूद जैसे आक्रमणकारी के लिए बेहद उपयुक्त थी। पश्चिम और मध्य एशिया अनेक बाद महमूद ने भारत की तरफ किया। भारत पर उसके आक्रमणों की शुरुआत सितंबर 1000 ई. में हुई इसके बाद उसने पंजाब, कश्मीर और पूर्वी राजस्थान और फिर गंगा के उर्वर मैदानी इलाकों पर हमले किए। बहरहाल महमूद की दिलचस्पी भारत पर शासन करने में नहीं थी।

2.4.1 राजनीतिक क्रम

महमूद के हमलों के बाद तुर्क आए। तेरहवीं सदी तक तुर्कों ने उत्तर भारत के ज्यादातर हिस्सों पर अपना शासन कायम कर लिया था। वे सुल्तान नाम से जाने जाते थे। उनका साम्राज्य दिल्ली सल्तनत कहलाया। खिलजी और तुगलक जैसे ताकतवर राजवंश एक-एक कर आए। उनमें से ज्यादातर शासकों को मंगोलों के हमलों का सामना करना पड़ा उन्होंने इस स्थिति से निबटने के लिए विभिन्न कदम उठाए। इस बीच दक्षिण में विजयनगर और बहमनी के दो शक्तिशाली राज्य राजनीतिक वर्चस्व स्थापित करने के लिए लगातार एक-दूसरे से होड़ कर रहे थे।

सोलहवीं सदी की शुरुआत में मुगलों के आगमन ने भारतीय इतिहास में एक नए युग की शुरुआत की। राजनीतिक स्तर पर इतने बड़े पैमाने पर एक अखिल भारतीय साम्राज्य का सुदृढ़ीकरण हुआ जो इससे पहले एक लंबे अरसे से नहीं देखा गया था। राजनीतिक एकीकरण और एक लंबे अरसे तक शांति तथा स्थिरता से आर्थिक प्रगति और खुशहाली आई। सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर सामाजिक जीवन में, धार्मिक क्रिया-कलापों और आस्थाओं में और परस्पर सहिष्णुता तथा सौहार्दपूर्ण सहअस्तित्व पर आधारित कला की विभिन्न विधाओं में यह संश्लेषण का दौर था।

दिल्ली सल्तनत और मुगल साम्राज्य जैसे केन्द्रीकृत साम्राज्यों के समानांतर अनेक छोटे-छोटे क्षेत्रीय और प्रांतीय स्वतंत्र शासक वंश भी रहे। इनमें बंगाल का इल्यास शाही और हुसैन शाही वंश, असम के अहोम, उड़ीसा के गजपति वंश, राजस्थान के मेवाड़ और मारवाड़ वंश और जौनपुर के शर्की वंश शामिल हैं। इन स्वतंत्र वंशों के शासनकाल में क्षेत्रीय एवं उपक्षेत्रीय अस्मिताओं के साथ यहां की भाषा, साहित्य और संस्कृति का विकास हुआ।

2.4.2 राजनीतिक संस्थाएं

तुर्कों और मुगलों के आगमन से संप्रभुता और शासन के नए विचार आए। सर्वप्रथम राजव्यवस्था की इस्लामी परिकल्पना में राजशाही के लिए स्पष्ट रूप से कोई वैधानिक स्थान नहीं है क्योंकि इस्लामी राजव्यवस्था बराबरी पर आधारित है। लेकिन उमैया और अब्बासी खिलाफत (इनके बारे में हम पिछले खंडों में पढ़ चुके हैं) और पश्चिम एशिया में सत्ता का बंटवारा सुलतान और ताकतवर तुर्क सरदारों या कुलानों के बीच होता था। लेकिन बल्बन के शासनकाल में सुलतान का रुतबा इतना ऊंचा हुआ कि वह राज्य और शासन के तमाम मामलों में निरंकुश अधिकारी बन गया। तुर्क कुलीनों की ताकत में खासी कमी की गई। मुगलों ने राजा की ताकत और रुतबे को अभूतपूर्व बुलंदियों पर पहुंचा दिया।

दिल्ली के सुलतानों और मुगलों ने प्रशासनिक व्यवस्था में कुछ नई चीजे जोड़ी दिल्ली सल्तनत में सैनिक कमांडरों को 'इकता' दिया जाता था। इकता क्षेत्रीय इकाई है। लेकिन इकता धारकों को जमीन का मालिकाना हक नहीं सौंपा जाता था। अपने क्षेत्र के राजस्व पर उनका नियंत्रण था। यह राजस्व इकतेदार की अपनी जरूरत और उसके सैनिकों की जरूरतें पूरी करने के लिए था। उससे अपेक्षा की जाती थी कि सुलतान जब भी आदेश करेगा, वह अपने सैनिकों से उसे सैन्य सहायता देगा। बहरहाल, पहले से मौजूद जमीन के नियंत्रण का ढांचा और गांव के पदानुक्रम में कुल मिलाकर कोई फर्क नहीं पड़ा।

मुगलों की प्रणाली ज्यादा व्यापक थी। राजस्व और भूमि लगान पर उनका नियंत्रण ज्यादा गहरा था जो गांव के स्तर तक जाता था। मुगलों ने मनसबदार बहाल किए जो सैन्य और नागरिक जिम्मेदारियां निभाता था। मनसब वास्तव में ओहदा या रुतबा होता था जो अधिकारी की योग्यता और उसके अधीन सैनिकों की संख्या के आधार पर तय होता था। यह इकता से मिलता-जुलता था। सिवा इसके कि इकता में प्रशासनिक जिम्मेदारी भी सम्मिलित होती थी लेकिन ज़ागीर में नहीं। मुगलशाही व्यवस्था मनसबदारी और जागीरदारी प्रणाली के निर्बाध कामकाज पर आधारित थी।

2.4.3 अर्थव्यवस्था

दिल्ली सल्तनत और साथ ही मुगल साम्राज्य किसानों के कृषिगत उत्पादन के अधिशेष था जिसकी वसूली राजस्व के रूप में की जाती थी। मुगल साम्राज्य में, खासकर अकबर के शासनकाल में राजस्व वसूली की पद्धति में दूरगामी परिवर्तन किए गए। अब राज्य और किसान या जागीरदारों जैसे भूस्वामी वर्ग के साथ कोई मनमाना संबंध नहीं रहा। जमीन की अब पैमाइश की गई और उसके रकबे के मुताबिक भू-राजस्व निर्धारित किया गया। जमीन की उर्वरता का भी हिसाब रखा गया। उसके बाद बाजार की तत्कालीन कीमत के आधार पर उत्पादन में राज्य के हिस्से का नकद-मूल्य आंका गया। इसी अनुरूप नकद के रूप में राजस्व तय किया गया। यह कृषि के वाणिज्यकरण का दौर था और राज्य नकदी फसल को बढ़ावा देता था। राज्य ने उन इलाकों में भी खेती को बढ़ावा दिया जहां उस वक्त तक खेती नहीं होती थी या जहां जंगल थे। उसने उद्यमी किसानों को प्रोत्साहन दिए। राज्य ने फसल नष्ट होने पर कर्ज दिए और राजस्व वसूली में राहत दी।

गुप्त वंश के बाद व्यापार और वाणिज्य में बहुत गिरावट आई थी। इसमें भी सुधार हुआ। एक लंबे समय तक गिरावट सहने के बाद शहरी केन्द्र फले-फुले। इस नए शहरीकरण के कारण तेरहवीं और चौदहवीं सदी में व्यापार में इजाफा हुआ। इन शहरी केन्द्रों को जोड़ने सड़कों का एक बड़ा जाल अस्तित्व में आया। इसने व्यापार में मदद की। दिल्ली, आगरा, लाहौर, अहमदाबाद, सूरत और कैंबे जैसे शहरों का महत्व बढ़ा। पंजाब से पश्चिम और मध्य एशिया के बाजारों में माल भेजे जाते थे। मुगलों ने जो राजनीतिक स्थिरता और अपेक्षाकृत शांति का वातावरण कायम किया था, उससे साम्राज्य के किन्हीं दो शहरों के बीच का स्तर ऊंचा था और उसमें ईमानदारी बरती जाती थी। सेठ, बोहरा और मोदी लंबी दूरी का व्यापार करते थे जो खासकर खाद्य पदार्थों का व्यापार करते थे। सराफ या श्राफ

मुद्रा बदलने वाले थे और हुंडियां जारी करते थे। हुंडी एक साख पत्र थी जिसकी अदायगी बाद में एक तय जगह पर की जा सकती थी। इसने देश के एक हिस्से से दूसरे हिस्से तक मालों को लाने-ले जाने में मदद की क्योंकि इसने दूर के इलाकों में मुद्रा का संचलन आसान बना दिया।

2.4.4 सांस्कृतिक और धार्मिक जीवन

धर्म और संस्कृति के क्षेत्र में मध्यकाल में परंपराएं आपस में बहुत घुली-मिलीं। धर्म के क्षेत्र में भक्ति और सूफी आंदोलन इसकी मिसालें हैं भक्ति आंदोलन ने व्यक्तिगत उपासना और भक्ति से भगवान के साथ आत्मसात होने पर जोर दिया। यह आम लोगों की राजमर्मा जिंदगी से जुड़ा। इसने कर्मकाण्डों और बलि की जगह शुद्धता और भक्ति पर जोर दिया। इसने जाति व्यवस्था और ब्राह्मणों के एकाधिकार पर सवालिया निशान लगाए। रामानंद, कबीर, रविदास, मीराबाई, गुरु नानक, तुकाराम, और चैतन्य जैसे भक्ति आंदोलन के संतों ने जनमानस पर गहरा प्रभाव डाला जो आज भी जारी है। इनमें से कई सन्त ऐसे थे जिनके बड़ी संख्या में भक्त बने। उदाहरण के तौर पर गुरु नानक का पंजाब के लोगों पर गहरा असर पड़ा। उनके भक्तों का एक अलग पंथ बन गया जो सिक्ख धर्म कहलाया और इस पंथ को मानने वाले लोगों को सिक्ख कहा जाने लगा। इसी तरह सूफियों ने भी अकीदत और प्यार पर जोर दिया। उन्होंने सहिष्णुता और करुणा पर जोर दिया। सूफी, खासकर चिश्ती सिलसिले के सूफी राज-पाट, पार्थिव और भौतिक चीजों से अलग-थलग रहा।

उन्होंने बेहद सादी जिंदगी बिताई और आमजन के दुखों और चिंताओं में भागीदारी निभाई। नतीजतन आम लोगों, हिन्दू-मुसलमान दोनों पर उनका जबर्दस्त प्रभाव था। सूफी और भक्ति आंदोलन के बीच बहुत संपर्क रहा। दोनों ने दार्शनिक विचारों का खूब आदान-प्रदान किया। वास्तव में दोनों परंपराओं ने हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच सेतु का काम किया।



चित्र 2.3 : गुरु नानकदेव

भाषा, साहित्य, कला, वास्तुकला, संगीत और नृत्य पर भी विभिन्न परंपराओं के संश्लेषण की इस प्रक्रिया का प्रभाव पड़ा जहां फारसी और संस्कृत जैसी क्लासिकी भाषा फली-फूलीं इस काल का उल्लेखनीय विकास क्षेत्रीय भाषा का आगे बढ़ना रहा। अब हिन्दी, बंगाली, राजस्थानी, उड़िया और गुजराती जैसी अनेक क्षेत्रीय भाषाओं में परिपक्वता आई। साहित्यिक कृतियों में उनका इस्तेमाल होने लगा। तुलसीदास का रामचरित मानस, मलिक मोहम्मद जायसी का पद्मावत बंगाली में अलाल की रचना, मराठी में एकनाथ और तुका राम की रचनाएं इसी काल में लोकप्रिय हुईं।

पता लगाये कि क्या कोई भक्ति और सूफी संत आपके शहर में पास पड़ोस में रहते हैं। उनके बारे में ज्यादा जानकारी हासिल करें। आपने क्या देखा इसको 80- 100 शब्दों में लिखें।

तीन तस्वीरें भक्ति और सूफी संत की जमा करें। उनकी तथा उनके उपदेशों को जानें। उनमें क्या समानता या असमानता थी। उनको दर्शाते हुए कुछ पंक्तियां लिखें। अपने विचारों को अपने मित्रों और परिवार के सदस्यों से बात करें।

मध्यकाल में कला और वास्तुकला भी फली-फूली। मुगलों के काल में शाही कारखानों में तस्वीरें तैयार की जाने लगी। चित्रकारों को शाही खजाने से तनखाह और वजीफे मिलते थे। चित्रकारी

की मुगल शैली में ईरानी और भारतीय शैलियों को पूरी तरह आत्मसात किया गया है। यह कुछ हद तक इस कारण भी हुआ है कि इस शैली के चित्रकारों ने राजपूताना, गुजरात, मालवा इत्यादि उन परंपराओं के तत्वों को शामिल किया जिससे वे आते थे। दासवन्त, मुकुन्द और केशव प्रसिद्ध चित्रकारों में से थे। अब्दुल समद और सैयद अली जैसे ईरानी उस्तादों की निगरानी ने ईरानी-शैली का समावेश कराया। पाण्डुलिपियों वाले अलंकरण मुगल चित्रकारी की एक अन्य उत्कृष्ट उपलब्धि थी।

मध्यकालीन भारत में सांस्कृतिक जीवन का एक अन्य मजेदार पहलू हिन्द-इस्लामी वास्तुकला में उजागर होता है। इसमें भारतीय संसाधनों, विशेषज्ञता, प्रतीकों, डिजाइनों को इस्लामी, मुख्यतः ईरानी शैली में आत्मसात किया गया। महराब और गुम्बद जैसी विशेषताओं को घण्टों, स्वास्तिक, कमल और कलश जैसे हिन्दू प्रतीकों के साथ जोड़ा गया। कुतुबमीनार, अलाई दरवाजा और गियासुद्दीन तुगलक के मकबरे जैसे तुगलककालीन विभिन्न स्मारक दिल्ली सल्तनत के काल की वास्तुकला के शानदार उदाहरण हैं। मुगल काल के स्मारकों में हिन्द-इस्लामी शैली के आत्मसात करने की प्रक्रिया ज्यादा गहरी है। पांच महल, बीरबल का महल और इबादतखाना जैसे फतेहपुर सीकरी के स्मारक, दिल्ली में हुमायूँ का मकबरा, सिकन्दरा में अकबर का मकबरा, आगरा का इत्मातुद्दौला का मकबरा और बेशक ताजमहल मुगल वास्तुकला की शानदार मिसालें हैं।



चित्र 2.4 कुतुबमीनार

चित्र 2.4 : कुतुबमीनार

मध्यकालीन भारत के ज्यादातर राजाओं ने संगीत की अरब, ईरानी और मध्य एशियाई परंपराओं के साथ हुआ। नए रग रचे गए। भक्ति और सूफी परंपराओं ने भी भक्ति संगीत की नई शैली को गति दी।

इस तरह सुस्पष्ट राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन के साथ भारतीय इतिहास का मध्यकाल प्राचीन काल के बाद का एक और महत्वपूर्ण एवं शानदार दौर था।

1. कारण देकर बताये मक्का को धार्मिक प्रसिद्ध कैसे मिली?
2. 5 ऐसे चीजें बतायें जिसमें कि अरब सभ्यता का प्रभाव प्रदर्शित होता हो।
खाली स्थानों को भरे।

1. दक्षिण में—— वंश का भारत के प्रायद्वीप क्षेत्र के ज्यादातर हिस्से पर नियंत्रण था।
2. मुगलशाही व्यवस्था —— और —— प्रणाली के निर्बाध कामकाज पर आधारित थी।
3. —— एक विशेष किस्म के व्यापारी थे जो खासकर खाद्य पदार्थों का व्यापार करते थे।
4. भक्ति आंदोलन ने व्यक्तिगत —— और —— से भगवान के साथ आत्मसात होने पर जोर दिया।

आपने क्या सीखा

- मध्यकाल को एक अंधकारमय काल नहीं कहा जा सकता। क्योंकि इस दौरान विश्व के अनेक हिस्सों में जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण विकास हुआ।
- मध्यकाल में यूरोप के समाज में सर्वाधिक महत्वपूर्ण संस्था सामंतवाद थी।
- सामंती व्यवस्था में राजनीति एकाधिकार का एक क्रमिक संगठन होता था।
- आर्थिक रूप से सामंतवाद की विशेषता भूदासता और उत्पादन की मेनर प्रणाली थी।
- सामंती व्यवस्था स्थिर नहीं थी। यह खुशहाली और संकट के सिलसिला से गुजरी।
- यूरोप में दसवीं सदी से पहले के दौर में सांस्कृतिक उपलब्धियों का स्तर बहुत निम्न था।
दसवीं सदी के बाद खुशहाली के दौर के आने के बाद सांस्कृतिक जीवन में सुधार आया।
विद्या और बौद्धिक विकास फलने-फूलने लगा।
- इस्लाम एक नया धर्म था जिसे मोहम्मद ने सातवीं सदी में शुरू किया। इसके नियम आसान हैं।
- इस्लाम दुनिया के एक बड़े हिस्से में फैला।

- करीब 1500 ई. तक इस्लामी संस्कृति और समाज बहुत हद तक सर्वदेशीय और गतिशील थे। यह सांस्कृतिक और वैज्ञानिक विकास की बुलंदियों का साक्षी बना।
- तुर्कों और मुगलों के आगमन से भारत में संप्रभुता और शासन के नए विचार आए। इकता प्रणाली ज़ागीरदारी तथा मनसबदारी प्रणालियाँ मुख्य प्रशासनिक ईकाइयाँ थीं।
- भारत में मध्यकाल आर्थिक विकास का दौर था।
- मध्यकालीन भारत के सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन में विभिन्न परंपराओं का अनूठा संश्लेषण हुआ।

पाठान्त प्रश्न

1. चर्चा करें कि क्यों मध्यकाल एक उल्लेखनीय काल है जिसका अध्ययन मानव समाज के क्रम विकास को समझने के लिए जरूरी है।
2. रोमन साम्राज्य के पतन के बाद पश्चिमी यूरोप के राजनीतिक और आर्थिक जीवन में होने वाली तब्दीलियों की चर्चा करें।
3. इस्लाम की प्रमुख शिक्षाओं की चर्चा करें।
4. मध्यकालीन भारतीय अर्थव्यवस्था की मुख्य विशेषताओं की समीक्षा करें।
5. व्याख्या करें कि मध्यकालीन भारतीय संस्कृति परंपराओं के एक सामंजस्यपूर्ण संश्लेषण का प्रतिनिधित्व करती है।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

2.1

1. फीफ
2. भूदास
3. मेनर
4. डीमेन

2.2

1. सही
2. गलत
3. सही
4. गलत

2.3

1. हिजरत
2. अबु बक्र
3. इब्नसीना
4. अल राजी

2.4

1. चोल
2. जागीरदारी, मनसबदारी
3. बंजारा
4. भक्ति

3. आधुनिक विश्व - I

14 वीं सदी के बाद से यूरोप की सांस्कृतिक और बौद्धिक जीवन में कई गंभीर परिवर्तन आए। इन परिवर्तनों से आधुनिक काल में प्रवेश करने में मदद मिली। यह पुनर्जागरण था, इसने सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों में चिंतन और तर्क करने को बढ़ावा दिया तथा जीवन के हर पहलू को प्रभावित किया। अरब देशों में तर्क और वैज्ञानिक जांच की अवधि पहले ही शुरू हो चुकी थी। यूरोप के पुनर्जागरण के दौरान हुए परिवर्तनों ने सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित किया। परिवर्तन सामंती प्रणाली के विघटन के साथ शुरू हुए, आपने पिछले पाठ में विस्तार से पढ़ा होगा। इस पाठ में हम इन में से कुछ परिवर्तनों और घटनाक्रमों पर चर्चा करेंगे जिन्होंने मध्ययुगीन समाज को आधुनिक विश्व में परिवर्तित किया हम आधुनिक विश्व में 20 वीं शताब्दी तक घटित होने वाली घटनाओं का पता भी लगाएंगे।

इस पाठ को पढ़ने के बाद, आप सक्षम हो जायेंगे :

- सामंतवाद के पतन के प्रभाव के बारे में जानेंगे;
- पुर्नजागरण का अर्थ, और इसकी विशेषताओं की व्याख्या;
- सुधार और इसके प्रभाव के कारण की व्याख्या;
- विज्ञान के विकास का उल्लेख करना;
- इस काल की मुख्य वैज्ञानिक खोजों कुछ मुख्य समुद्री यात्राओं की व्याख्या करेंगे;
- यूरोप और शेष विश्व में औद्योगिक क्रांति का उल्लेख करेंगे;
- अमेरिकी क्रांति और फ्रांसीसी क्रांति के कारणों और प्रभावों की व्याख्या करेंगे;
- जर्मनी और इटली में राष्ट्रीय एकीकरण के लिए संघर्ष पर चर्चा करेंगे;
- समाजवादी विचारों और रूसी क्रांति के विकास की जांच करेंगे ।

3.1 सामंतवाद के पतन के प्रभाव

मध्यकालीन युग के दौरान, सबसे महत्वपूर्ण संस्थाओं में से सामंतवाद था, आपने इसके बारे में पिछले पाठ में विस्तार से पढ़ा है। सामंतवाद एक संस्था के रूप में कई शताब्दियों तक फलता-फूलता रहा लेकिन मध्य वर्ग के उदय के साथ इसका पतन शुरू हो गया था। शक्तिशाली राज्यों के समाजवादी स्वामियों में आपस युद्ध होने से इसका पतन हुआ। नए नगरों और शहरों के होने तथा व्यापार के पुनरुद्धार सामंतवाद का विघटन हुआ। ये नगर उत्पादन का केन्द्र थे तथा इन पर निर्वाचित प्रतिनिधियों का नियंत्रण था। इन नगरों का वातावरण और नियंत्रण सामंती प्रतिबंधों से मुक्त था। क्योंकि लोग कहीं भी आने-जाने तथा कोई भी व्यवसाय करने के लिए स्वतंत्र थे। नगरों ने कारीगरों और किसानों को आकृष्ट किया क्योंकि इन्होंने जीवन की बेहतर संभावना उपलब्ध कराई तथा सामंती शोषणों से छुटकारा दिलवाया। इन नगरों और शहरों ने कपास और गन्ना के रूप में कई फसलों के उत्पादकों को प्रोत्साहित किया। कृषक को अपने उत्पाद का नकद भुगतान मिलता था। विनिर्मित वस्तुओं को बाजार में बेचा जाता था विनिमय का माध्यम पैसा था। स्वामियों ने अपने जागीरदारों से सेवाओं के बजाय पैसा लेना शुरू कर दिया था क्योंकि विभिन्न उपभोग की वस्तुएं खरीदने के लिए उन्हें भी पैसे की आवश्यकता होती थी। इससे शक्तिशाली व्यापारी वर्ग का उदय हुआ। अब उन्होंने समाज में बेहतर रूतबा रखने की लालसा होने लगी। उन्होंने सामंतों स्वामियों की स्थिति को कमजोर करने के लिए शक्तिशाली सम्राटों को प्रारंभ कर दिया जिससे सामंती कमजोर हो गई और इससे सामंती का पतन हुआ।

नए विचारों के आगमन से नई चेतना का सृजन हुआ इसने पुनर्जागरण नामक नए आंदोलन को जन्म दिया अब हम पुनर्जागरण के बारे में पढ़ेंगे।

3.2 पुनर्जागरण

आधुनिक काल के प्रारंभ से विश्वास युग के अन्त और तर्क युग की शुरुआत हुई यह नवजागरण और सुधार आंदोलनों का साक्षी है इन आंदोलनों से लोगों के सांस्कृतिक, बौद्धिक, धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक जीवन में कई परिवर्तन आए। इस विविध में शहरीकरण, परिवहन के तीव्र साधन और, लोकतांत्रिक प्रणाली और समानता के आधार पर समान कानून को लक्षणीत किया गया है।

पुनर्जागरण का शाब्दिक अर्थ है 'पुनर्जन्म'। यह इटली में 14वीं सदी के आसपास प्रारंभ हुआ उस समय इटली छोटे राज्यों में विभाजित था। उनमें से कई शहर राज्य प्राचीन रोमन इमारतों के भग्नावशेषों पर बनाए गए थे इतालवी शहरों की भौगोलिक ने उन्हें महान व्यापार और बौद्धिक केन्द्र बना दिया था। इसके अलावा बेनिस जैसे इतालवी शहरों की स्थिति ने उन्हें व्यापार और बौद्धिक केन्द्र बना दिया। धन के साथ विश्व के चारों कोनों से व्यापारी कई महान विचार लाए। राजनीतिक और सामाजिक संगठन के नए रूप ने राजनैतिक स्वतन्त्रता तथा अध्ययन के लिए उपयुक्त वातावरण। लोगों के पास अध्ययन करने और अन्य गतिविधियों के लिए पर्याप्त समय था।

यह भी अत्यधिक आर्थिक विस्तार की अवधि थी। बुक कीपिंग, बिल का आदान प्रदान तथा सरकारी ऋण कई वाणिज्यिक और वित्तीय तकनीकें विकसित की गईं। इनसे इटली पुनर्जागरण का केन्द्र बन गया इस समय की प्रमुख घटनाओं में सम्मिलित थे शहरी जीवन के पुनरुत्थान, वाणिज्य के आधार पर निजी पूंजी बैंकिंग, राष्ट्र राज्यों के गठन, अन्वेषणों के लिए नए मार्गों और प्रदेशों और प्रदेशों और स्थानीय, भाषा साहित्य के विकास जो प्रिंटिंग प्रेस द्वारा लोकप्रिय था। यह नया व्यापारिक समाज कम पदानुक्रमित और अधिक धर्मनिरपेक्ष उद्देश्यों के प्रति अधिक जागरूक था। यह पहले के ग्रामीण, परंपरावादी समाज के अत्यधिक विपरीत था। विश्व आर्थिक प्रणाली प्रारंभ करने में साहसिक कार्यों एवं खोजकर्ताओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। कई नई वस्तु के व्यापार मार्गों की खोज के बाद अमेरिका, एशिया और अफ्रीका से कई नई वस्तुएं लाई गईं। इन वस्तुओं ने यूरोपवासियों के जीवन को समृद्ध बनाया और अधिक लाभ कमाने के लिए उत्पादन के नए तरीके विकसित करने के लिए उन्हें प्रेरित किया। परिणाम यह हुआ कि व्यापारियों उद्यमियों और बैंकों ने सहयोग किया और राजनीतिक जीवन में तथा अन्य देशों के साथ संबंधों में “पूंजी” ने महत्वपूर्ण स्थान बना लिया।

इसी अवधि में सृजित नए विचारों यथा मानवतावाद, बुद्धिवाद और जाँच की भावना से लोगों के सोच में गहरा परिवर्तन हुआ। ग्रीक और रोमन सम्राज्य की सांस्कृतिक उपलब्धियाँ नए सिरे से रुचिकर हो गईं। मनुष्य नए विद्वानों की मुख्य चिंता का विषय बन गया। वे मनुष्य की सृजनात्मक क्षमता और इस संसार में खुशी और आनंद प्राप्त करने के उनके अधिकार में विश्वास रखते थे। यह मध्यकालीन चर्च के विश्वास के विपरीत था। जो सांसारिक सुखों का विरोधी था। मनुष्य के इस सम्मान ने कला, इतिहास, भाषा, साहित्य, नीतिशास्त्र आदि में रुचि को बढ़ावा दिया। क्या आप जानते हैं कि इस समय विषयों की “मानविकी” के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया।

मानवतावाद की भावना को कला और साहित्य के क्षेत्र में भी अभिव्यक्ति मिली। पुनर्जागरण कलाकारों की सबसे बड़ी उपलब्धियाँ चित्रकला के क्षेत्र में थी। चित्रकारों ने शरीर रचना और हर मानव शरीर के अनुपात का अध्ययन किया। वे मनुष्य को यथार्थवादी फॉर्म और अनुपात में बोटिसेली और टाइटियन और मूर्तिकला के क्षेत्र में भी कलाकारों ने मुक्त खड़ी मूर्तियाँ बनाना शुरू कर दिया था। ये मूर्तियाँ अब इमारत या पृष्ठभूमि से अलग खड़ी थी और यह अलग कला थी। पुनर्जागरण के प्रथम महान मूर्तिकार डोनाटेलो थे जिन्होंने ‘डेविड’ की मूर्ति बनाई थी लोगों ने खुद को मध्यकालीन धार्मिक प्रतिबंधों से मुक्त करना शुरू कर दिया। राष्ट्रीय पहचान और अधिक मजबूत हुई और आधुनिक यूरोपीय भाषाओं इतालवी, स्पेनिश, फ्रेंच, जर्मन, अंग्रेजी आदि को साहित्य की भाषा के रूप में परिलक्षित किया गया। अब लेखक लैटिन के बजाय स्थानीय भाषाओं में कविता, नाटक, गद्य, आदि का उपयोग करने लगे। लेखकों के कार्य में देशी भाषा के उपयोग और प्रिंटिंग प्रेस के प्रारंभ होने के कारण लोगों की एक बड़ी संख्या के लिए सुलभ हुए। बाइबिल मुद्रित किया गया था और लोगों की बड़ी संख्या द्वारा पढ़ा गया आधुनिक यूरोपीय भाषाओं में



चित्र 3.1 लियोनार्डो द विंसी की
मोनालिसा

चित्र 3.1 लियोनार्डो द विंसी की मोनालिसा

तैयार किए गए अनेक कार्य में दो प्रमुख कार्य हैं डेन्टे की डिवाइन कामेडी, इरासमस, इन प्रेज ऑफ फोली मैकविली की द प्रिन्स एंड करवैनटीज डानक्योजो । पुनर्जागरण के उत्तरार्ध में यूरोप के इतिहास में दो विकास हुए पहला प्रोटेस्टेंट सुधार था । जो ईसाई धर्म में विभाजन का परिणाम दूसरे रोमन कैथोलिक चर्च के भीतर से संबंधित सुधार था आम तौर पर कैथोलिक सुधार या काउंटर सुधार के रूप में माना जाता है सुधार सामाजिक-धार्मिक और राजनीतिक आंदोलन का एक हिस्सा था जिससे आधुनिक विश्व का उत्पत्ति हुई ।

क्रियाकलाप 3.1

बुद्धिवाद, मानववाद, जांच, अवलोकन, प्रयोग और तर्क कुछ विचार थे जो पुनर्जागरण काल के दौरान आए। इनके अर्थ खोजें और इनकी उपयोगिता को आज हमारे जीवन से जोड़कर देखें।

3.3 धर्म सुधार

मध्यकालीन कैथोलिक चर्च के आगमन को अंधविश्वास, भ्रष्टाचार और धन के लालच से जुड़ा माना गया। अंधविश्वासी किसानों को चर्च द्वारा आश्वस्त किया गया कि सच्चा क्रॉस उसके पास है। लोग सच्चे क्रॉस के रूप में लकड़ी के एक टुकड़े को देखने के लिए शुल्क का भुगतान करने लगे थे क्योंकि यह माना जाता था कि पवित्र अवशेष में स्वस्थ करने की शक्ति थी। अंधविश्वास पर अधिक जोर देता था ताकि यह श्रद्धालुओं से अधिक पैसे ऐंठ सके। चर्च तक के जगह यह सब पुनर्जागरण के आने साथ बदल रहा था। पुनर्जागरण की नई भावना में कुछ भी स्वीकार नहीं किया जा सकता था। क्या आपको पता है कि यह 1517 ई. में मार्टिन लूथर नामक एक जर्मन पुजारी ने पहले रोमन कैथोलिक चर्च के अधिकारियों को चुनौती दी उसके अनुसार, बाइबिल धार्मिक अधिकार का एकमात्र स्रोत था। उनका मानना था कि चर्च पर अंध विश्वास करने के बजाय यीशु मसीह में विश्वास के माध्यम से मोक्ष-प्राप्त किया जा सकता है।

उसने चर्च की कुछ प्रथाओं का विरोध किया जैसे कि सबसे ऊँची बोली लगाने वाले को चर्च के पदों का तथा पोप स्वीकारोक्ति पत्रों का बेचा जाना। लूथर को जर्मनी के राजकुमारों का संरक्षण प्राप्त था। क्योंकि उसमें चर्च की संपत्ति जप्त करने की इच्छा थी। परंतु उसके चर्च के विरुद्ध लेख लिखने से मना करने पर, 3 जनवरी 1521 रो पोप लियो दसवे ने उसे धर्म से बाहर कर दिया।

लूथर के विचारों ने पश्चिम में प्रोटेस्टेंट धर्म सुधार की शुरुआत की और ईसाई जगत को दो भागों में बांट दिया, प्रोटेस्टेंट और रोमन कैथोलिक। उसके अनुसार ईसाईयों को मुक्ति ईसा मसीह के बताए रास्ते पर चलने से मिलती न कि पोप स्वीकारोक्ति पत्र खरीदने से। हालांकि इंग्लैंड में धर्म सुधार आंदोलन लूथर के विचारों से प्रभावित था परन्तु यह वहां के राजा हेनरी



चित्र 3.2 मार्टिन लूथर

चित्र 3.2 मार्टिन लूथर

आठवें के अपनी पत्नी कैथरीन को तलाक देने के प्रयासों से शुरू हुआ। राजा के प्रधानमंत्री थामस कार्नवैल ने संसद में दो कानून पारित करने में मदद की-यै थे अपीलों को रोकने का अधिनियम तथा संप्रभुता का कानून। इन कानूनों ने राजा को चर्च की शाही अध्यक्षता प्रदान कर दी। राजा को एक साधारण महिला अन बोलिन से विवाह करने की अनुमति मिल गई।

धर्म सुधार आंदोलन धार्मिक जगत में उलट पुलट होने का कारण सिद्ध हुआ। कैथोलिक चर्च में एक धर्म सुधार आंदोलन अपने से शुरू हुआ जिसे प्रति-धर्म सुधार कहा जाता है। इसका उद्देश्य भ्रष्टाचार को कम करने और कैथोलिक चर्च को सुधारना और सुदृढ़ करना था। इसकी शुरुआत स्पेन में हुई जहां इग्नेशियस लॉयल ने 'यीशु का समाज' की स्थापना की, जिसने पवित्रता, मिशनरी कार्य, दूसरों की मदद और ईश्वर की सेवा पर बल दिया। जो आंदोलन मार्टिन लूथर ने आरम्भ किया वह इंग्लैंड के राजा हेनरी आठवें, हुल डरिक जिंक्ली और जॉन काल्विन के प्रयासों से पूरे यूरोप में फैल गया।

(क) — ने मानव की सृजनात्मक क्षमता पर अपने विचार व्यक्त किए ।

(ख) इग्नेशियस लॉयल ने — की स्थापना की ।

2. सामंतवाद की परिभाषा दें तथा इनके कम से कम दो लक्षण बताएं ।

3. रिनैसां (पुनर्जागरण) के मुख्य विचार क्या थे?

4. मार्टिन लूथर की दो शिक्षाएं बताएं जिनसे चर्च में सुधार प्रभावित हुए ।

3.4 विज्ञान विकास

पुनर्जागरण के दौरान, विज्ञान के क्षेत्र में असाधारण उपलब्धियों की गई थी। हमने पहले से ही पढ़ा है कि पुनर्जागरण के विचारकों ने अंधविश्वास के कारणों पर अधिक जोर दिया और समझा कि ज्ञान अवलोकन और प्रयोग के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। उन्होंने परंपराओं और मान्यताओं तथा अंधविश्वास को अस्वीकार कर दिया। इससे वैज्ञानिक जांच की शुरुआत हुई जिसे लोग भुला चुके थे। पुनर्जागरण से विज्ञान के क्षेत्र में क्रान्ति आ गई।

लियोनार्डो दा विंसी जैसे कलाकारों ने शरीर रचना विज्ञान और प्रकृति को विज्ञान और कला के एक अनूठे मिश्रण के रूप में प्रस्तुत किया। माइकल सेरवाटस, एक स्पेनिश चिकित्सक ने रक्त के परिसंचरण की खोज की। विलियम हार्वे, एक अंग्रेज ने हृदय द्वारा रक्त को शुद्ध करने और नसों के माध्यम से इसके परिसंचरण को समझाया। ज्ञान के अन्य क्षेत्रों में भी शुरुआत हुई पुनर्जागरण ने वैज्ञानिकों द्वारा किए प्रयासों अवलोकन और प्रयोगों के लिए मार्ग प्रशस्त किया।

विज्ञान में पुनर्जागरण की सबसे उल्लेखनीय उपलब्धियाँ खगोल विज्ञान के क्षेत्र में हुई। क्या आपने कोपर्निकस केप्लर और गैलिलियो के बारे में सुना है? वे महान खगोलशास्त्री थे, जिन्होंने सिद्ध

किया कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर चक्कर काटती है। पुनर्जागरण से पहले, यह माना जाता था। कि सूर्य पृथ्वी के चारों ओर घूमता है। उन्होंने यह तर्क दिया कि सूर्य और ग्रहों के बीच एक कक्षीय गति में चुंबकीय आकर्षण है। आइजैक न्यूटन ने सार्वभौमिक गुरुत्व का सिद्धांत दिया। अपने द्वारा बनाई दूरबीन से गैलीलियो ने बृहस्पति के चन्द्रमाओं की खोज की, शनि के छल्ले और सूर्य को देखा। उसने कोपर्निकस की खोजों की पुष्टि की। पुनर्जागरण ने अन्य क्षेत्रों और अन्य लोगों के बारे में गोरों के मन में एक जिज्ञासा का विकास किया। अब हम पता करेंगे कि यह कैसे हुआ।

3.5 नई भूमि की खोज

जांच की भावना ने कई साहसिक लोगों को नई भूमि की खोज करने के लिए प्रोत्साहित किया नये व्यापार मार्गों की खोज ने दुनिया के इतिहास को बदल दिया। यह कहा जाता है कि भगवान, प्रतिष्ठा और सोना इन खोजों का मुख्य उद्देश्य थे। लेकिन सोना या आर्थिक जरूरत का उद्देश्य सबसे महत्वपूर्ण था। भौगोलिक खोजों से पहले, यूरोपीय दुनिया पूर्व से मसाले कपास, जवाहरात, रेशम, आदि वस्तुएं मंगाते थे जिसकी आपूर्ति के लिए उन्हें अरबी और इस्लामी प्रदेशों के बीच यात्रा करनी पड़ती थी। और यह सुविधा जनक नहीं था। ये अनिश्चितताओं से भरा था। पूर्व एशिया के लिए एक सीधे समुद्री मार्ग की खोज हुई और इसमें व्यापार की क्षमता थी। खोजकर्ताओं का एक और मकसद था जो था नए क्षेत्रों के लोगों को ईसाई धर्म में परिवर्तित करना यह उनके लिए भगवान की सेवा का एक मौका बन गया। इसके अलावा साहसी लोगों ने नई भूमि की खोज के द्वारा प्रसिद्धि मिली। कुछ तो वास्तव में बहुत प्रसिद्ध हो गए। आपने वास्को दा गामा द्वारा भारत की और कोलंबस द्वारा अमेरिका की खोज के बारे में सुना है। क्या आप जानते हैं फर्डिनांड मैगलन पहला अन्वेषक था जिसने दुनिया के चारों ओर चक्कर लगाने के अभियान का नेतृत्व किया। वारथोलोमव डियाज एक और प्रसिद्ध अन्वेषक था।

तुम्हें क्यों लगता है कि महान रोमांची यात्रा राजा और अमीर लोगों द्वारा प्रायोजित की गई थी? व्यापार और औपनिवेशीकरण में जबरदस्त वृद्धि से यूरोपीय धन वृद्धि पर एक महान प्रभाव पड़ा। एक सबसे प्रसिद्ध राजा जो यात्रा को प्रायोजित करता था पुर्तगाली था। वह था राजा हेनरी जो हेनरी नेविगटर का रूप में भी जाना जाता है। इन खोजों के लिए तकनीकी आधार कम्पास, वेधयंत्रकी, खगोलीय सारणी और नक्शे बनाने के कला के आविष्कार से हुआ। इन यात्राओं से विश्व के विभिन्न भागों में जैसे- अफ्रीका, अमेरिका और एशिया में व्यापारिक चौकी बनाने और औपनिवेशिक साम्राज्य की स्थापना के लिए मार्ग प्रशस्त हुआ। अब वाणिज्यिक रुचि अटलांटिक महासागर से भूमध्य सागर से स्थानांतरित हो गई। कई नई वस्तुएं जैसे तम्बाकू गुड़, शुतुरमुर्ग पंख, आलू आदि व्यापार में शामिल की गई। इसने अमानवीय दास व्यापार की शुरुआत की। गुलाम अफ्रीका से पकड़ कर अटलांटिक महासागर के पार और उत्तरी अमेरिका में वृक्षारोपण में काम करने के लिए बेचे जाते थे। इन व्यापार पद्धतियों और नई



चित्र 3.3 वास्को दा गामा

समुद्री मार्गों की खोज ने यूरोपीय व्यापारियों को विशाल धन जमा करने के लिए और नई मशीनों के विकास में निवेश के लिए मदद दी। यह औद्योगिक क्रांति थी जिसने उन्हें और अधिक शक्तिशाली और अमीर बना दिया।

क्रियाकलाप 3.2

दुनिया के मानचित्र पर वास्को दा गामा, फर्डिनांड मेगलन और क्रिस्टोफर कोलंबस द्वारा खोजे गए समुद्री मार्गों को अंकित करें।

3.6 औद्योगिक क्रांति

औद्योगिक क्रांति 1750 में इंग्लैंड में शुरू हुई यह संभव इसलिए हो सका क्योंकि अंग्रेज व्यापारियों ने विदेशी व्यापार के माध्यम से भारी धन इकट्ठा किया था और उसके उपनिवेश कच्चे माल की आपूर्ति के लिए सुरक्षित थे। उपनिवेश तैयार माल के लिए संभावित बाजार के रूप में देख जाते थे। इसके अलावा, इंग्लैंड में कोयला और लोहा उद्योगों को चलाने के लिए आवश्यक संसाधनों की विशाल राशि थी। इस प्रकार, पूंजीपतियों के लिए नई मशीनों के विकास में निवेश करने और अधिक लाभ कमाने के उद्देश्य से उत्पादन को गति मिली। अब मशीनों ने मनुष्य और पशुओं के उत्पादन में सुधार हुआ। पर इसने समाज को दो भागों में बांट दिया। पूंजीवादी या पूंजीपति वर्ग और मजदूर। आप अगले पाठ में औद्योगिक क्रांति के बारे में और अधिक पढ़ेंगे।

1. सही उत्तर चुनें :

(क) किसने भारत आने के समुद्री मार्ग की खोज की?

(अ) बारथोलोमेव डियाज

(ब) वास्को दा गामा

(स) कोलम्बस

(द) इनमें से कोई नहीं

(ख) इनमें से क्या खोज की यात्राओं के परिणाम नहीं था?

(अ) एशिया और अफ्रीका में उपनिवेशों की स्थापना ।

(ब) यूरोपीय वाणिज्य का विस्तार ।

(स) उपनिवेशों की समृद्धि में वृद्धि ।

(द) गुलाम व्यापार की शुरुआत ।

2. विज्ञान के क्षेत्र में पुर्नजागरण के कम से कम दो योगदान बताएं ।

3. कम से कम तीन आविष्कार बताएं जिनसे नए समुद्री मार्ग खोजने में यूरोपीयों को मदद मिली ।

4. औद्योगिक क्रांति के कारण समाज में महत्वपूर्ण परिवर्तन को पहचानें ।

3.7 क्रांतियों का युग

1848 ई. में यूरोपीय क्रांतियों से पारंपरिक अधिकार के विपक्ष में राजनीतिक उथल पुथल का दौर आया। राजनीतिक नेतृत्व और लोगों में एक बहुत मजबूत असंतोष ने राज्यों के मामलों में अधिक भागीदारी की मांग करना शुरू कर दिया। राजनीतिक जागरूकता, स्वतंत्रता के विचार, समानता और भाईचारा, प्रिंटिंग प्रेस द्वारा लोकप्रिय हो गया जो क्रांतियों में सबसे महत्वपूर्ण थे। क्रांतियाँ अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी, इटली और रूस में हुईं। ब्रिटेन में गौरवपूर्ण क्रांति के साथ एक प्रमुख बदलाव आया। संयुक्त राज्य अमेरिका, अमेरिकी युद्ध और रूस मजदूरों के आंदोलन से एक समाजवादी सरकार की स्थापना के रूप में उभरा। इन कई राज्यों ने प्रबुद्ध विचारों को प्रोत्साहित किया आजादी और राष्ट्रवाद की भावना पैदा की। अब हम इन क्रांतियों के बारे में पढ़ेंगे।

3.7.1 गौरवपूर्ण क्रांति

1688 की गौरवपूर्ण क्रांति इंग्लैंड में हुई और अन्य दुनिया के लिए प्रेरणा का एक स्रोत बनी। इसे गौरवपूर्ण क्रांति कहा जाता है। क्योंकि बिना खून-बहाए इसे सफलता प्राप्त हुई थी स्टुअर्ट राजा जेम्स द्वितीय ने अपने देशवासियों का लोकप्रिय समर्थन खो दिया था। यह उसके अपने लोगों के प्रति कठोर, रवैया के कारण हुआ था। एक महंगी स्थायी सेना का निर्माण और में रोमन कैथोलिक लोगों के रोजगार में वृद्धि, सेना और विश्वविद्यालयों ने लोगों को गुस्सा दिलाया। नाराज संसद राजा जेम्स द्वितीय को सिंहासन से हटाना चाहते थे और उसकी बेटी मैरी द्वितीय को सिंहासन पर बिठाना चाहते थे। इससे पता चलता है कि निरंकुश शासन को बदल दिया गया और एक संवैधानिक सरकार की स्थापना हुई। संसद को सम्राट बदलने की शक्ति थी।

3.7.2 आजादी के लिए अमेरिकी युद्ध

यह जानना दिलचस्प होगा कि कुछ राजनैतिक अधिकार हैं जो हमें आज मिलते हैं वो दो बहुत महत्वपूर्ण क्रांतियों की देन है जो 18वीं सदी के अन्त में हुईं। इन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई आधुनिक विश्व के निर्माण में। ये हैं अमेरिकी क्रांति और फ्रांसीसी क्रांति। इन क्रांतियों के माध्यम से, लोगों ने अपने अधिकारों के लिए लड़ना शुरू किया।

16 वीं शताब्दी के आसपास इंग्लैंड में धार्मिक उत्पीड़न की वजह से यूरोपीय अमेरिका में बसे थे। उनमें से कुछ आर्थिक अवसरों से आकर्षित थे। उनमें 13 उपनिवेश थे जो स्थानीय विधानसभाओं द्वारा अपनी समस्याओं का निपटारा करते थे। वाणिज्यवाद की ब्रिटिश आर्थिक नीति लागू थी जिसके माध्यम से ब्रिटिश अपने हित में औपनिवेशिक वाणिज्य को विनियमित करने की कोशिश करते थे और उपनिवेशों को उद्योग स्थापित करने की आज्ञा नहीं थी और उन्हें लोहा कपड़े जैसे ब्रिटिश माल खरीदने पड़ते थे। वे केवल इंग्लैंड द्वारा निर्धारित कीमतों पर चीनी, तम्बाकू, कपास, आदि का निर्यात करते थे। जिसने ब्रिटिश अमेरिकी उपनिवेशों को विरोध लिए उकसाया

18वीं सदी तक, फ्रांस के साथ और भारत में युद्ध इंग्लैंड के लिए बहुत महंगे साबित हो गए। इन युद्धों को लड़ने के लिए पैसे की जरूरत थी और उसे अमेरिकी उपनिवेशों से करों के द्वारा पूरा जाता था। 1765 में, ब्रिटिश संसद ने सरकारी दस्तावेजों कर्म बंधक समाचार पत्रों

और पर्चे की तरह सभी व्यापार लेनदेन पर स्टाम्प अधिनियम परित कर दिया। राजस्व को अमेरिका में 10,000 ब्रिटिश सैनिकों को बनाए रखने की लागत का भुगतान करने के लिए इस्तेमाल किया गया था। अधिनियमों का उपनिवेशकों द्वारा विरोध किया गया। दंगों ने औपनिवेशिक बंदरगाह शहरों को तबाह कर दिया। औपनिवेशिक विधानसभाओं ने स्टाम्प अधिनियम के खिलाफ संकल्प पारित कर दिया। ब्रिटिश संसद ने 1766 के स्टाम्प अधिनियम को निरस्त कर दिया। हालांकि, संसद ने चाय पर कर जारी रखा। 16 दिसम्बर 1773 को ईस्ट इंडिया कंपनी के तीन जहाजों पर से चाय को समुद्र में फेंक दिया। इस घटना को बोस्टन की चाय पार्टी के रूप में जाना जाता है। संसद ने बोस्टन के बंदरगाह को बंद कर दिया लेकिन अमेरिका की आजादी के लिए युद्ध की शुरुआत हो गई थी।

13 उपनिवेशों के प्रतिनिधियों ने 1774 में फिलाडेल्फिया में पहली महाद्वीप कांग्रेस की बैठक बुलाई और इंग्लैंड के राजा से अपील की, कि उनकी सहमति के बिना करों को लागू नहीं करें। राजा ने इसे विद्रोह माना और युद्ध की घोषणा कर दी। लड़ाई के अंत में 4 जुलाई 1776 में फिलाडेल्फिया की कांग्रेस ने ब्रिटेन से स्वतंत्रता और एक सहकारी संघ के गहन की घोषणा कर दी। इसमें समानता पर जोर देने के साथ पूरी दुनिया को जीवन, स्वतंत्रता और खुशी से रहने लिए प्रेरित किया। विधेयक ने भाषण, प्रेस, धर्म और कानून के तहत न्याय की स्वतंत्रता प्रदान की। अमेरिकी क्रांति एक संघर्ष था जिससे तरह अमेरिकी उपनिवेशों को ब्रिटेन से आजादी मिली और एक राष्ट्र को जन्म दिया जिसे संयुक्त राज्य अमेरिका कहा जाता है।

कल्पना किजिए कि आप एक अखबार के रिपोर्टर हैं जो बोस्टन चाय पार्टी को एक गवाह थे। आपने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकारियों, अमेरिकियों जिन्होंने इसमें भाग लिया और मुसाफिरों का साक्षात्कार करने का कार्य किया। इस कहानी पर अखबार के लेख लिखें। इसके अलावा, क्या होना चाहिए था के बारे में अपनी राय दें।

3.7.3 फ्रांसीसी क्रांति

18वीं सदी में फ्रांसीसी समाज अभी भी पूरी तरह सम्राट के पूर्ण अधिकार के साथ सामंती था। यह तीन वर्गों या सम्पदा में विभाजित किया गया था। पादरी या चर्च, पहला एस्टेट, कुलीन वर्ग दूसरा एस्टेट। पहले दो एस्टेट विलासिता और धर्म पर कई विशेषाधिकारों और देश के शासन का आनंद लेते थे। किसान आम लोग, शहर के श्रमिकों और मध्यम वर्ग के रूप में आम आदमी तीसरी एस्टेट में थे और भारी करों के बोझ तले दबे थे।

फ्रांस की आंतरिक हालातों ने क्रांति के लिए एक आदर्श मंच बनाया है। लुईस सोलवे और उनकी पत्नी के जो कि शौली के कारण सरकारी खजाना खाली हो गया और राष्ट्र दिवालिया हो गया। लुईस को तीनों एस्टेट की 1789 में एक बैठक बुलाने के लिए मजबूर किया गया। वह नए कर कानून के लिए मंजूरी हासिल करना चाहता था। तीसरे एस्टेट ने विशेषाधिकार क्राधन उन्मूलन में समानता की मांग की। उन्होंने अपने लिए एक राष्ट्रीय असेंबली बनाने की घोषणा की और सारे अधिकार सम्राट से ले लिए। एक ऐतिहासिक फ्रेंच दस्तावेज, आदमी और नागरिक अधिकार

की घोषणा को अपनाया गया। यह अमेरिकी स्वतंत्रता की घोषणा से प्रभावित था, सभी पुरुषों की समानता, लोगों संप्रभुता और स्वतंत्रता के अधिकार संपत्ति, सुरक्षा, सही शिक्षा पर जोर देते हुए, मुक्त भाषण को अपनाया सभी गरीबों की सार्वजनिक सहायता, प्रतिबंध, यातना औरत गुलामी से मुक्ति को अपनी सरकार चुनने की मान्यता और सार्वजनिक कार्यालयों में रोजगार लिए सभी नागरिकों को समानता दी गई। फ्रांसीसी क्रांतिकारी युद्धों और नेपोलियन के युद्धों से जो 1789 से शुरू हुए और 15 वर्षों तक चले फ्रांसीसी गणराज्य का गठन किया। फ्रांसीसी क्रांति ने यूरोप की मध्ययुगीन संरचनाओं का अंत किया और उदारवाद और राष्ट्रवाद के नए विचारों से फ्रांस में एक पूर्ण परिवर्तन, प्रशासन, सेना, समाज, और संस्कृति में परिवर्तन हुआ। फ्रांस नेपोलियन बोनापार्ट के तहत एक गणतंत्र बन गया फ्रांसीसी क्रांति एक मार्गदर्शक सिद्धांत स्वतंत्रता, भाईचारा समानता थे। क्रांतिकारियों कई प्रबुद्धता विचारकों वॉल्टेयर, मॉन्टेस्क्यू और रोसियो जैसे दार्शनिकों के विचार से प्रेरित थे।

आजादी के अमेरिकी युद्ध और फ्रांसीसी क्रांति ने दुनिया भर में राष्ट्रवाद की भावना को लोकप्रिय बनाया। अमेरिका से राष्ट्रवाद के विचारों ने फ्रांस, ब्रिटेन और इटली को प्रभावित किया परिणाम में 1861 की इटली ने एकीकृत राज्य के लिए क्रांति की।

क्रियाकलाप 3.4

नीचे दिए गए फ्रांस और अमेरिका के झंडे हैं। आपको क्या लगता है कि इन झंडों ने फ्रांसीसी क्रांति और आजादी के अमेरिकी युद्ध में क्या भूमिका निभाई? अलग रंग क्या दर्शाते हैं। क्या आपको पता है, भारतीय ध्वज ने स्वतंत्रता संग्राम में ऐसी ही भूमिका निभाई थी?

अमेरिकी नक्शे में सितारों की संख्या की गिनती करें। तुम्हें क्या लगता है यह किसका प्रतिनिधित्व करते हैं? अमेरिका के वर्तमान समय के ध्वज पर सितारों की संख्या की गिनती करें।



चित्र 3.4 फ्रांसीसी क्रांति के दौरान फ्रान्स का ध्वज।



चित्र 3.5 अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम का ध्वज

3.7.4 इटली का एकीकरण

18 वीं सदी में, इटली कई राज्यों का एक समूह था प्रत्येक का अपना स्वयं का सम्राट और परंपरा थी। उनमें से कुछ थे वेनेतिया, दो सिसिलाइस, पापल राज्य, सार्डिनिया, तस्कनी आदि। मध्य युग के दौरान पोप की दोनों, धार्मिक और राजनितिक मामलों में प्रभाव में वृद्धि हुई। पोप का कुछ राज्यों पर राजनीतिक प्रभुत्व स्थापित किया था जिन्हें पापल के राज्य कहते थे। जल्दी ही इटली ने अपने महत्व में वृद्धि करना शुरू कर दिया। पोप के राज्य राजनीतिक जीवन, बैंकिंग और विदेशी व्यापार का केंद्र बन गए। पुनर्जागरण के दौरान, इटली का महत्व अन्य राज्यों से जिसके बारे में आप पहले ही पढ़ चुके हैं बढ़ गया कई सालों तक फ्रांस और पवित्र रोमन साम्राज्य ने इटली के लिए युद्ध लड़े। 1789 की फ्रांसीसी क्रांति ने इटली के इतिहास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इटली के राजाओं ने खतरे को भांप कर यूरोपीय देशों से रिश्ते बनाए जो फ्रांस के विरोधी थे। बाद में फ्रांस एक गणतंत्र बन गया, गुप्त क्लब का पूरे इटली भर में गठन किया गया। 1796 से 1814 तक जब नेपोलियन बोनापार्ट यूरोपीय शक्तियों से हार गया। तो कई इतालवियों ने एक ऐसे संयुक्त इटली की संभावनाएं देखी जो विदेशी नियंत्रण से मुक्त हो।

मज्जिनी और गैरीबलदी ने गुप्त समाजों के साथ साथ कई क्रांतिकारी इतालवियों ने एक स्वतंत्र एकीकृत गणराज्य के विचार के प्रसार को जारी रखा। 1849 के बाद से, पाईडमोंट सार्डिनिया जिसका राजा विक्टर एममनूएल था ने एकीकरण में एक सक्रिय भूमिका निभाई। उनके नेतृत्व में केबोर, जो प्रधानमंत्री था ने अस्दविया से लोम्बार्डी तुस्केनी, मोडेना आदि को मुक्त करवाया। गैरीबाल्डी ने विद्रोह का नेतृत्व सिसिली और नेपल्स में किया उसने दो राज्यों का प्रभार एममनूएल को सौंप दिया उसे इटली का राजा बना दिया। बाद में, रोम और वेनेतिया इतालवी राज्यों के संघ में शामिल हो गए। इटली के एकीकरण की प्रक्रिया 1815 में वियना की कांग्रेस के साथ शुरू हुई और फ्रांसीसी प्रशिया युद्ध के साथ 1871 में समाप्त हुई।

3.7.5 जर्मनी का एकीकरण

1815 में नेपोलियन की हार के बाद, कई जर्मन एक स्वतंत्र जर्मनी चाहते थे। जर्मनी 39 छोटे राज्यों का संघ था और ऑस्ट्रिया और प्रशिया के नेतृत्व में था। ये राज्य हमेशा एक दूसरे के साथ युद्ध की स्थिति में थे, प्रशिया को राजा, कैसर विलियम प्रथम प्रधानमंत्री बिस्मार्क को प्रशिया के शासन के अधीन जर्मनी को एकजुट, करना चाहता था और ऑस्ट्रिया और फ्रांस को पूरी तरह से बाहर रखना चाहता था बिस्मार्क निडर था और उसे जर्मनी के एकीकरण की तत्काल आवश्यकता में विश्वास था यह उसने सेना के आधुनिकीकरण के साथ शुरू किया, उसने खून और आयरन की नीति के लिए जाना जाने लगा और उसने लौह चांसलर की उपनाम अर्जित किया।



चित्र 3.6 ओटो वोन बिस्मार्क

सेना में सुधार के साथ, बिस्मार्क ने स्वेलिबिग होलस्टेन की जर्मन आबादी को उसके डेनमार्क शासक के खिलाफ विद्रोह करने के लिए प्रोत्साहित किया। 1864 में, बिस्मार्क ने ऑस्ट्रिया के साथ डेनमार्क के खिलाफ हाथ मिलाया। बिस्मार्क का अगला लक्ष्य था ऑस्ट्रिया। ऑस्ट्रिया को पराजित कर उत्तर जर्मन कॉन्फेडरेशन का गठन किया। बिस्मार्क ने इटली को वेनिस के प्रान्त का वादा किया और उसे युद्ध से बाहर रखा। ऑस्ट्रिया का इटली से नियंत्रण खत्म कर दिया उसने फ्रांस के नेपोलियन तृतीय को क्षेत्रीय मुआवजा देने का वादा किया और उसे युद्ध के बाहर रखा। उसे पहले से ही रूसी नियंत्रित पोलैंड में विद्रोह दबाने के बदले रूस का समर्थन हासिल था।

प्रशिया के जर्मनी में प्रभुत्व के लिए अब केवल दो बाधा थी, दक्षिणी जर्मनी के चार छोटे जर्मन राज्य और फ्रांस के नेपोलियन तृतीय की अस्वीकृति। लेकिन दोनों देशों के बीच असहमति ने फ्रांस को प्रशिया से युद्ध के लिए उकसाया। फ्रांको-प्रशिया युद्ध काफी छोटा था। प्रशिया ने 1871 में फ्रांस पर आक्रमण किया और हराया। नेपोलियन को सिंहासन त्यागने और फ्रांस के अलसास और लोरेन देने के लिए मजबूर किया गया। शेष जर्मन राज्यों पर ऑस्ट्रिया को छोड़कर कब्जा कर लिया, और वे जर्मनी के साथ शामिल हो गए। जर्मनी का एकीकरण कैसर विलियम के द्वारा पूरा किया गया। जल्द ही जर्मनी यूरोप में अग्रणी बन गया और उसने अपने आर्थिक हित को आगे बढ़ाया दुनिया में जर्मन प्रभाव बढ़ाने के लिए यह एक औपनिवेशिक साम्राज्य के रूप में उभरा।

3.7.6 समाजवादी आंदोलन और रूसी क्रांति

औद्योगिक क्रांति ने एक असमान समाज की स्थापना की। एक ओर गरीब, शोषित और बिना किसी अधिकार के लोग थे, और दूसरे तरफ पूंजीपतियों सभी विशेषाधिकारों का अनंद उठाते थे। इसी समय कुछ लोगों सोचना शुरू किया कि समाज में सामाजिक और आर्थिक संदर्भ में समानता होनी चाहिए। समानता, भाषण की स्वतंत्रता और लोकतंत्र के विचारों ने इस संबंध में प्रोत्साहन दिया। समाजवाद के विचार जो समान समाज की स्थापना की कोशिश करते हैं ने अपनी जड़ें जमानी शुरू की। समाजवाद के सबसे ताकतवर और प्रभावशाली विचार कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एंगेल्स के द्वारा दिए गये। अपनी पुस्तक दास कैपिटल में, मार्क्स ने कहा सभी समाजों का इतिहास वर्ग संघर्ष का उदाहरण है। पूंजीपति श्रमिकों के वर्ग संघर्ष करने की कोशिश करते हैं। उसने भविष्यवाणी की कि वर्ग संघर्ष पूंजीवाद के अंत के साथ सफल हो सकता है और वह समाजवाद के आने से होगा।

इसका पहला व्यावहारिक उदाहरण रूसी क्रांति है जिससे दुनिया की पहली समाजवादी सरकार की स्थापना हुई। रूस औद्योगिक रूप से पिछड़ा था और एक कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था पर आधारित था। जार एक निरंकुश और दमनकारी शासक था, इसलिए मजदूरों और किसानों को बहुत मुश्किल का सामना करना पड़ा। 1905 की क्रांति ने ड्यूमा के गठन के साथ एक संवैधानिक राजशाही के गठन का नेतृत्व किया। 1905 की क्रांति के बाद भी नागरिक अधिकार और लोकतांत्रिक प्रतिनिधित्व सीमित था और इसलिए अशांति जारी रही।

1917 में, रूस में एक और क्रांति हुई। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि वह रूसी मजदूरों और किसानों और रूस में रहने वाले गैर रूसी लोगों की हालत जार निकोलस द्वितीय के निरंकुश शासन के अधीन बुरी थी। वे काफी दुखी थे। अमानवीय काम की परिस्थितियों और करों की विशाल राशि के साथ साथ उनका शोषण किया जा रहा था इसलिए लोग उसके खिलाफ उठे। लोगों को किसी राजनीतिक अधिकारों की मनाही थी। और रूस ने अपनी साम्राज्यवादी इच्छाओं के प्रथम विश्व युद्ध में भी प्रवेश कर लिया था। लेकिन ऐसा करना अनुचित था रूसी सैनिकों हजारों की संख्या में प्रथम विश्व युद्ध में मारे गए थे। वे बीमार थे और बिना गर्म वर्दी या हथियारों से लैस थे साइबेरिया की ठंडे रेगिस्तान में लड़ने के लिए। कई कुशल श्रमिकों को सेना में भर्ती किया गया। और उनको मौत के लिए युद्ध में लड़ने के लिए मजबूर किया गया। कुलीन वर्ग भी जार निकोलस द्वितीय के निरंकुश तरीके के कारण असंतुष्ट थे। अकाल से देश में स्थिति बिगड़ गई। श्रमिकों ने अदालतों, जेलों और कार्यालय परिसर पर हमला किया। समाज के सभी वर्गों के बीच व्यापक असंतोष था। सेना में गोला बारूद का अभाव था। शहरों में भोजन का अभाव था जबकि किसानों को अपनी उपज के उचित दाम नहीं मिल रहे थे। इस सरकार ने मुद्रास्फीति के कारक रूबल नोटों को लाखों में छपा। स्थिति जार के हाथ से फिसल गई।



चित्र 3.7 : 18 जून 1917 पेट्रोग्राद में लोगों द्वारा प्रदर्शन

चित्र 3.7: 18 जून 1917 पेट्रोग्राद में लोगों द्वारा प्रदर्शन

यह स्थिति मार्क्स और टॉल्स्टॉय के लेखनों से और बिगड़ गई इसने लोगों विशेष रूप से श्रमिकों को प्रभावित किया, और उनकी राजनीतिक जागृति के कारण बने। सोवियत संघ की श्रमिकों की परिषद के गहन को फरवरी 1917 में जार द्वारा अपदस्थ कर दिया गया। और एक अस्थायी सरकार मैनशेविक रूसी साम्यवादी पार्टी के नियंत्रण के तहत स्थापित की गई लेकिन सरकार लोगों की मांगों को पूरा करने में विफल रही है। एक अन्य पार्टी बोलशेविक ने लेनिन की अध्यक्षता में सोवियत संघ का आयोजन किया और अक्टूबर 1917 में सरकार की जगह ले ली। यह अक्टूबर क्रांति रूसी क्रांति का अंतिम चरण था, इसने जार के शासन को समाप्त कर दिया और सोवियत संघ का गठन हुआ जिसने एक नई विश्व व्यवस्था का नेतृत्व किया।

अगले पाठ में आप औद्योगीकरण साम्राज्यवाद, और विश्व युद्धों के बारे में अधिक पढ़ेंगे। आप समझेंगे की कैसे औद्योगिक क्रांति ने दुनिया का चेहरा बदल दिया और लोगों के जीवन में जबरदस्त बदलाव आया। आप दुनिया के गैर औद्योगिक देशों और उनके संघर्ष के बारे में पढ़ेंगे जिससे विश्व को भयानक युद्धों का सामना करना पड़े।

1. सही जवाब चुनें:

क) अमेरिका को कितने उपनिवेशों में विभाजित किया गया था?

अ) 13

ब) 14

स) 15

द) 16

ख) फ्रांस के तीसरे एस्टेट में शामिल थे

अ) अभिजात

ब) पादरी

स) आम लोग

द) राजशाही

ग) जर्मन एकीकरण का नेतृत्व किसने किया

अ) कैवर

ब) मैजिनी

स) विस्मार्क

द) गैरीबाल्डी

2. “1688 की गौरवपूर्ण क्रांति विश्व के लिए प्रेरणा का एक स्रोत थी” । 30 शब्दों में सिद्ध कीजिए ।

3. आजादी के अमेरिकी युद्ध और फ्रांसीसी क्रांति के बीच कम से कम दो समानताएं लिखिए ।

4. रूसी क्रांति समाजवाद की विचारधारा से प्रेरित थी । संक्षेप में व्याख्या करें ।

आपने क्या सीखा

- मध्यकाल में सामंती क्रम टूटने के परिणामस्वरूप कस्बों, शहरों, वाणिज्यिक कृषि और व्यापारी वर्ग की उत्पत्ति हुई ।
- पुनर्जागरण या पुनर्जन्म यूरोप में 14 वीं के मध्य के आसपास शास्त्रीय ग्रीक और रोमन सभ्यताओं की सांस्कृतिक उपलब्धियों में एक नए सिरे से रुचि के साथ शुरू हुआ । इसने लोगों के सोचने के तरीके में बदलाव किया ।
- मानवतावाद के विचार ने मनुष्य की सृजनात्मक क्षमता पर जोर दिया और मनुष्य मानवतावादियों के अध्ययन का विषय बन गया ।

- धर्म सुधार चर्च की प्रथाओं पर सवाल का एक प्रयास था। यह जर्मनी में मार्टिन लूथर द्वारा शुरू किया गया। शीघ्र ही यह कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट में ईसाई दुनिया के विभाजन का कारण बना।
- पुनर्जागरण की महत्वपूर्ण उपलब्धियों में से एक था समझदारी और वैज्ञानिक दृष्टिकोण और आधुनिक विज्ञान का विकास। कोपर्निकस, केपलर, गैलीलियो और न्यूटन इस क्षेत्र में उनके योगदान के लिए याद किया जाता।
- पुनर्जागरण अन्वेषण की और भूमि की खोज की चाहने यात्राओं को नेतृत्व प्रदान किया इन यात्रा का दुनिया के एक बड़े हिस्से पर प्रभाव पड़ा।
- औद्योगिक क्रांति 1750 के आसपास से इंग्लैंड में शुरू हुई। औद्योगिक क्रांति के आने से औद्योगिक उत्पादन की दर में कई गुना वृद्धि हुई इसने औद्योगिक श्रमिक सर्वहारा वर्ग बनाया जिसका बुरी तरह से पूंजीपति द्वारा शोषण किया जाता था।
- 1776 की अमेरिकी क्रांति ने समानता और स्वतंत्रता के अपने विचारों और लोगों के अधिकारों के लिए पूरी दुनिया को प्रेरित किया।
- फ्रांसीसी क्रांति मोनटेस्क्यू और वाल्टेयर जैसे दार्शनिकों के विचारों से प्रेरित थी। इसका स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे के विचारों के साथ आधुनिक दुनिया पर एक गहरा प्रभाव पड़ा।
- राष्ट्रवाद की भावना में वृद्धि ने जर्मनी और इटली के एकीकरण के लिए आंदोलनों का नेतृत्व किया।
- नए उद्योग कामकाजी वर्ग की समस्याओं और चिंताओं समाजवाद जन्म दिया। रूस की क्रांति विकास ऐसी चेतना का एक परिणाम थी और इसी ने दुनिया में पहली समाजवादी में सरकार स्थापना की।

1. शहरों की वृद्धि और व्यापार के उद्भव ने सामंती प्रथा का किस प्रकार पतन किया?
2. आप क्यों सोचते हैं कि पुनर्जागरण सोच ने अस्तित्व और विचारों के पुराने तरीकों को प्रभावित किया? लगभग 100 शब्दों में लिखें ।
3. धर्म सुधार ने किस प्रकार यूरोप और दुनिया पर प्रभावित किया ।
4. नई भूमि की खोजों ने कैसे आधुनिक दुनिया की अर्थव्यवस्था और समाज को बदलता है ।
5. अमेरिकी स्वतंत्रता की घोषणा में दिए गए मुख्य विचारों को लिखें ।
6. फ्रांसीसी क्रांति के किन विचारों ने विश्व पर प्रभाव डाला?
7. जर्मन और इटालीय नेताओं द्वारा इस्तेमाल की गई एकीकरण की रणनीतियों पर चर्चा करें ।
8. औद्योगिक श्रमिकों की उस स्थिति का वर्णन करें जिसने क्रांति को प्रभावित किया ।

पाठगत प्रश्न के उत्तर

3.1

1. क) पुनर्जागरण के विद्वान

ख) सोसाइटी ऑफ जीसस

2. “सामंतवाद एक प्रणाली है जिसमें लोगों को उनके श्रम के बदले में लार्ड के द्वारा भूमि और संरक्षण दिया जाता था” इसके दो लक्षण थे ।

क) कामगार अपने लार्ड के लिए कार्य करते और युद्ध लड़ते ।

ख) राजा सबसे शक्तिशाली सामंती प्रमुख था ।

3. मानवतावाद बुद्धिवाद, और जांच की भावना ।

4. क) मार्टिन लूथर ने यीशु मसीह पर विश्वास के माध्यम से मुक्ति के लिए वकालत की न कि चर्च पर अंधे विश्वास से ।

ख) बाइबिल धार्मिक अधिकार का एकमात्र स्रोत था ।

3.2

1. क) (ब)

ख) (स)

2. क) कारण पर अंधविश्वास के मुकाबले अधिक बल

ख) वैज्ञानिक जांच, अवलोकन और प्रयोग पर आधारित है ।

3. कम्पास, एस्ट्रॉलैब, और नक्शा बनाने की कला ।

4. समाज असमान बन गया और इसने लोगों को दो समूहों में विभाजित किया पूंजीवादी या पूंजीपति वर्ग और कार्यकर्ता या सर्वहारा वर्ग ।

3.3

1. क) (अ), 13

ख) आम लोग

ग) स) बिस्मार्क

2. गौरवपूर्ण क्रांति दुनिया के लिए प्रेरणा का एक स्रोत थी इसने यह साबित कर दिया क्योंकि संसद जेम्स द्वितीय के निरंकुश शासन को बदलने में सक्षम हुई बिना खून बहाए। इसने सरकार को संवैधानिक रूप दिया।

3. क) दोनों क्रांतियों ने नागरिकों के अधिकारों पर जोर दिया और शोषण के खिलाफ बात की।

ख) दोनों ने दुनिया भर में राष्ट्रवाद की भावना को लोकप्रिय बनाया।

4. समानता, स्वतंत्रता, भाषण और लोकतंत्र के विचार और मार्क्स के लेखन के साथ साथ फ्रांसीसी क्रांति और पुनर्जागरण ने समाजवाद के विचार को मजबूत बनाने में मदद की। इसने एक समान समाज को जन्म देने और राज्य के हाथ में उत्पादन के साधनों के स्वामित्व के नियंत्रण की वकालत की। इसने लोगों को प्रभावित किया और विशेष रूप से श्रमिकों को और रूसी क्रांति के लिए मार्ग प्रशस्त किया।

पिछले पाठ में, आपने पुनर्जागरण के दौरान विकास के बारे में पढ़ा। जिससे यूरोपीय समाज में कई परिवर्तन हुए। विज्ञान के क्षेत्र में असाधारण उपलब्धियां हासिल की गईं। लोगों ने अंधविश्वास और परंपराओं को समाप्त कर दिया और अवलोकन और प्रयोगों पर अधिक जोर दिया। मुद्रण प्रेस के आने से बंधुत्व, समानता स्वतंत्रता इत्यादि जैसे मूल्य और विचारों में राजनीतिक जागरूकता आई। राजनीतिक स्थिति ने यूरोप में विश्व के बहुत से देशों के लिए नए समुद्रीमार्ग खोजने के जोखिम उठाने की स्थिति पैदा की। मिशनरियों ने ईसाई धर्म के नए क्षेत्रों में फैलाने का साहायिक कार्य किया और व्यापारी वस्तुओं को लेने के लिए विश्व के विभिन्न हिस्सों में पहुंचे। इंग्लैण्ड में प्रौद्योगिकीय परिवर्तनों के लिए यह सही समय था जिनसे औद्योगिक क्रांति हुई तथा विशेषरूप से कामगार वर्ग के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए। अब हमें एशिया और अफ्रीका में औद्योगिक क्रांति, उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद के प्रभावों के बारे में पढ़ना है। साथ ही इस अध्याय में दो विश्व युद्धों और संयुक्त राष्ट्र संघ के गठन के विषय में पढ़ना है। दोनों विश्व युद्धों और संयुक्त राष्ट्र संघ के गठन के बारे में इस अध्याय में पढ़ेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप सक्षम हों जायेंगे :

- औद्योगिक क्रांति का वर्णन;
- औद्योगिक क्रांति के द्वारा आये प्रौद्योगिकीय और नवीन परिवर्तनों पर चर्चा;
- औद्योगिक क्रांति के समाज पर प्रभाव का आकलन;
- उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद के उदय के उत्तरदायी कारकों की पहचान;
- एशिया और अफ्रीका में साम्राज्यवाद के विकास के विभिन्न चरणों पर चर्चा;
- उन घटनाओं की चिन्हित करें जिनसे दो विश्वयुद्ध हुए;
- संयुक्त राष्ट्र संगठन के उद्देश्यों की सूची ।

4.1 औद्योगिक क्रांति

18वीं सदी में औद्योगिक क्रांति हुई। इससे सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन हुए। यह बदलाव एक स्थायी कृषि और व्यापारिक समाज के आधुनिक औद्योगिक समाज बनने की चिह्नित करता है। ऐतिहासिक तौर पर 1750 से 1850 की अवधि ब्रिटेन के इतिहास के संदर्भ में है। सामाजिक और आर्थिक संचे में आये नाटकीय परिवर्तनों से इनका स्थान आविष्कार के रूप में जगह आविष्कारों और नई तकनीकी द्वारा मशीनों के तैयार बड़े-पैमाने के उत्पादन की फैक्टरी व्यवस्था और वृहत आर्थिक विशिष्टता ने ले लिया। जो जनसंख्या पहले कृषि में कार्यरत थी अब शहरी कारखानों की ओर बढ़ने लगी। क्या आप जानते हैं कि ऐसा क्यों हुआ? पहले के व्यापारी परिवारों को कच्चा माल देते और उनसे तैयार उत्पादन एकत्र करते थे। इस व्यवस्था से बाजार की बढ़ती मांगों को लम्बे समय तक पूरा नहीं किया जा सकता था। इसलिए 18वीं सदी के अंत तक, अमीर व्यापारियों के द्वारा कारखानों की स्थापना की गई। उन्होंने नई मशीनें लगाई, कच्चा माल से और निश्चित वेतन पर काम करने वाले श्रमिकों मशीनों में बनी वस्तुएं बनवाई। इस प्रकार कारखाना प्रणाली का जन्म हुआ।



चित्र 4.1 शुरुआती स्पिनिंग मशीन

चित्र 4.1 शुरुआती स्पिनिंग मशीन

औद्योगिक क्रांति की शुरुआत ब्रिटेन में भाप की शक्ति के उपयोग से शुरू हुई। वह 1769 में जेम्स वाट के भाप इंजन के आविष्कार के बाद संभव हुआ। 1733 में जॉन केयस ने उड़ती पूरी का आविष्कार किया जिससे कपड़े बुनने की प्रक्रिया को आसान कर दिया और उत्पादन चार गुणा बढ़ा दिया। जेम्स हर्ग्रीव्स ने एक हाथ संचालित चरखा, स्पिनिंग जेनी का आविष्कार किया, इस स्पिनिंग जेनी (कताई चरखे) से एक बार में ही कई गुणा धागे बने लगे। कताई चरखा स्पिनिंग जेनी के आविष्कार के बाद, सती वस्त्र इस अवधि का प्रमुख उद्योग बन गया है। कोयले और लोहे की बड़ी मात्रा में उपस्थित ब्रिटेन के तेजी से औद्योगिक विकास में एक निर्णायक कारक साबित हुआ। नहरों और सड़कों के निर्माण, इसी तरह से रेल और जहाज के आगमन थे, निर्मित वस्तुओं के लिए बाजारों को फैलाया। पेट्रोल इंजन और बिजली के साथ विकास का नया काल आया। इनके पास वे सभी संसाधन थे जो उसे एक औद्योगिक शक्ति बना सकते थे। औद्योगिक क्रांति का असर दुनिया भर में महसूस किया गया। 1850 से, क्रांति ब्रिटिश जिंदगी में एक प्रमुख कारक बनने उद्योगों के साथ पूरा किया गया था। 1830 के बाद में फ्रांस के बाद 1850 जर्मनी

और गृह युद्ध के अमेरिकी में बाद औद्योगिक शुरू हो गया। हम आगे पढ़ेंगे कि कैसे औद्योगीकरण हासिल हुआ।

प्रमुख आविष्कार और सुधारों ने इंग्लैंड में कृषि को बढ़ावा दिया। महत्वपूर्ण परिवर्तनों नवाचारों जेथ्रो टुल बीज रोपण ड्रिल से बीजों के समान अंतराल और गहराई पर बिना बर्बाद किये बीज बोने में कृषि में अपनी जगह बना ली है। 1760 से 1830 के बीच, ब्रिटिश संसद ने लगभग 1000 संलग्नक अधिनियमों के द्वारा भूमि को जो पहले उस जिस समुदाय की थी उनको बड़े क्षेत्रों से जोड़ दिया गया। हालांकि इन सब से लिए कृषि उत्पादन बढ़ाने में मदद मिली। लेकिन उसी समय इसने भूमिहीन लोगों की एक बड़ी संख्या प्रदान की। अब केवल कुछ ही लोगों की खेतों पर काम करने की जरूरत थी। इसलिए की एक बड़ी संख्या ने लोगों रोजगार के लिए शहरों की ओर पलायन शुरू कर दिया। इसने कारखानों में काम करने के लिए सस्ते और अधिक मजदूर प्रदान किये।

इंग्लैंड में अनुकूल राजनीतिक परिस्थितियों ने भी औद्योगिक क्रांति के विकास में मदद की। व्यापारिक प्रतिबंध हटाने जैसे औक्ट/अधिनियमों और सामूहिक बाजार व्यापारियों के लिए अनुदान था। इंग्लैंड मुख्य रूप से अपने परिवहन में विकास के कारण विदेशी बाजारों पर कब्जा करने में सक्षम था। कई यूरोपीय देशों ने अब वाणिज्यवाद की नीति का पालन शुरू कर दिया था। इस नीति के तहत उद्योगों और व्यापार में सरकारी नियंत्रण प्रयोग किया गया था। यह सिद्धांत है इस पर आधारित है कि राष्ट्रीय शक्ति अधिक निर्यात और कम आयात की ओर संकेत देता है। यह सिद्धांत इस पर भी विश्वास रखता है कि एक राष्ट्र की सम्पत्ति का स्वामित्व उसके सोने और चांदी पर निर्भर करता है तथा सरकार का व्यापार में हस्तक्षेप सीमित होना चाहिए।

वे क्या कारक थे जिन्होंने इंग्लैंड को औद्योगिक क्रांति वाला पहला देश बनाना संभव किया? इंग्लैंड के अन्य देशों से अधिक भौगोलिक लाभ का भरपूर उपयोग किया। सुरक्षित स्थान के साथ-साथ यह द्वीप समुद्रतट के नजदीक है। परन्तु इसने यूरोप के अन्य देशों से अलग होकर निर्बाध प्रगति की है। जलमार्गों जैसे नहरों, नदियों और समुद्र ने इंग्लैंड को बिना कर और रुकावट के विशाल मुक्त व्यापार क्षेत्र प्रदान किया। इन सभी लाभों ने इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति के लिए उचित स्थिति तैयार की।

4.2 औद्योगिक क्रांति के दौरान हुए नवीन और प्रौद्योगिक परिवर्तन

कई नवीन आविष्कार और प्रौद्योगिकीय परिवर्तनों के इस अवधि के दौरान जगह ले ली। इसने औद्योगिक देशों को और अधिक शक्तिशाली और कुशल बनाने में मदद की। अब उत्पादन बड़ी मात्रा में, सस्ता और बहुत तेजी से किया जा सकता था। इन आविष्कारों का कपड़ा और परिवहन उद्योगों पर बहुत प्रभाव पड़ा जिनके विषय में आप पढ़ने जा रहे हैं।

4.2.1 वस्त्र उद्योग

कपड़ा उद्योग में तकनीकी प्रगति ने लोहा और इस्पात उत्पादन में आविष्कारों की एक श्रृंखला शुरू कर दी। अन्य देशों ने इंग्लैंड के उस उदाहरण से प्रेरणा ली जिसमें इंग्लैंड से निर्मित वस्तुओं

की दुनिया के बाजार में बाढ़ आ गई। ब्रिटेन ने अपने हितों की रक्षा के लिए एक कानून पारित किया जिसमें कपड़ा मजदूरों को दूसरे देशों की यात्रा करने और औद्योगिक तकनीकी की जानकारी बाहर न खोलने पर प्रतिबंध लगा दिया। परन्तु 1789 में, सैमुएल स्लेटर इंग्लैंड से बाहर निकल कर अमेरिका पहुंचा। वह अपने साथ ब्रिटिश कपड़ा उद्योग का ज्ञान ले गया जिससे अमेरिका में औद्योगिक क्रांति प्रारंभ हुई। अमेरिका में कपास वृक्षारोपण के लिए विशाल क्षेत्रों को दासों की बढ़ती भाग के तहत लाया गया। फ्रांस और जर्मनी में औद्योगिक क्रांति समान घटनाओं से शुरू हुई।

क्या आप जानते हैं कि आर्क राइट कारखाने प्रणाली का पिता कहा जाता था? उसने पहला कारखाना मुख्य रूप से घरेलू मशीनों से तैयार किया, जहां काम के घंटे तय थे और लोगों का वास्तव में अनुबंध के आधार पर रखा गया था। 1779 में, शमूएल क्रॉम्पटन ने स्पिनिंग म्यूल का आविष्कार किया जबकि एडमंड कार्टराइट ने पहले पानी संचालित करघे का आविष्कार किया।

अपने पड़ोस के किसी हथ-करघा केंद्र में जाएं अथवा बुनकर परिवार से मिलें। वे किस प्रकार का कार्य करते हैं इस बारे में पता लगाओ। क्या वहां पर पुरुषों और महिलाओं में श्रम संबंधी भेद है। वे किस प्रकार की प्रौद्योगिकी का प्रयोग करते हैं। उन्हें किन-किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है? क्या वे बच्चों को काम पर रखते हैं अथवा उनके बच्चे उनके काम में सहायता करते हैं? अपने निष्कर्षों पर रिपोर्ट लिखो।

नवोन्मत्त और प्रौद्योगिकीय परिवर्तनों से निर्माण, परिवहन और संचार उद्योगों तथा इनसे निकट संबंध रखने वाले रसायन, इलेक्ट्रिकल, पेट्रोलियम और स्टील उद्योगों में प्रगति की है। व्यापार मार्गों की खोज से न सिर्फ औद्योगिक क्रांति को बल मिला बल्कि इनसे कच्चे माल नए बाजारों और सस्ते कारीगरों हेतु उद्योगों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अपने साम्राज्यों का विस्तार करने हेतु उपनिवेशों और साम्राज्यवादी ताकतों में प्रतिस्पर्धा हुई।

साम्राज्यवादी विस्तारों से सर्वोच्चता हेतु संघर्ष और द्वितीय विश्व युद्ध हुआ। उपनिवेशों का शोषण किया गया। उनके परम्परागत सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक प्रणालियों को समाप्त कर दिया गया। उन्होंने अपने खुद के राष्ट्रों की स्थापना करने और विदेशी शासन का विरोध करना प्रारंभ कर दिया।

4.2.2 भाप का इंजन

औद्योगिक क्रांति की एक और बड़ी उपलब्धि भाप की शक्ति विकास और प्रयोग था। पहले के उपकरणों का सुधार किया गया और मशीनों के विकसित रूप में उद्योगों की संख्या को बढ़ाया गया था। इसलिए उत्पादन के लिए अत्यधिक शक्ति की जरूरत थी। 1705 में, थॉमस न्यूकॉमन कोयला खानों से पानी निकालने के लिए एक इंजन का निर्माण किया। 1761 में, जेम्स वाट डिजाइन ने न्यूकॉमन के इंजन के डिजाइन और दक्षता में चौगुना सुधार किया। उसने भाप और कारण

निर्वात गाढ़ा करने के लिए ठंडे पानी की एक जेट के साथ एक कक्ष की शुरुआत की। यह भी एक दूसरे से प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण की अवधि थी। वाट ने जॉन विल्किनसन के डिरल के बंदूक का इस्तेमाल करने के लिए अपने इंजन के लिए बड़े सिलेंडर बोर किया। भाप इंजन में जल्द ही पहले लोकोमोटिव कोयला इंजन की जगह ले ली। इससे रेलवे लाइनों की मांग में वृद्धि हुई। प्रौद्योगिकी ने भाप इंजन को हल्का किया। जिससे अन्य उद्योगों इसकी मांग बढ़ी। अब नदियों या किसी भी झीलों के साथ कारखानों का लगाने की जरूरत नहीं थी।

4.2.3 कोयला और लौह

भाप इंजन ने कोयला और लोहे के साथ आधुनिक उद्योगों की नींव रखी। उनका यह मानना था कि जिन लोगों की मौत की इच्छा हो वही खान में काम कर सकते थे। कोयला क्षैतिज सुरंगों के साथ टोकरी में ले जाया गया था और फिर सीधा घसीट कर सतह तक लाया जाता था। खानों से कोयले का ढकेलना जानवर, आदमी, औरत और बच्चों ताकत पर पूरी तरह से निर्भर था। कोयला खानों में काम करने की स्थिति खतरनाक थी। दुर्भाग्य इस काम के लिए बच्चों को उनके छोटे आकार की वजह से पसंद किया जाता था।

भाप शक्ति के उपयोग में वृद्धि के कारण कोयले की मांग बढ़ने लगी। कोयला खानों में कई सुधार किए गए जैसे सुरंगों को हवादार बनाया गया, विस्फोट के लिए बारूद का इस्तेमाल किया गया। लेकिन कोयला खनिक कई तरह के खतरों और स्वास्थ्य समस्याओं और फेफड़ों की बीमारी से पीड़ित थे।

लोहे उद्योग में इस समय के दौरान महत्वपूर्ण सुधार किए गए। 1709 में, इब्राहीम डर्बी कोक के साथ ढलवां लोहे का उत्पादन किया। इससे पहले ढलवा लोहा लकड़ी के कोयला से प्राप्त किया जाता था जिससे कि तेजी से इंग्लैंड के जंगलों में लकड़ी की कमी हुई। 1784 में, हेनरी कर्ट जो एक आयरन मास्टर थे उन्होंने एक कम भंगुर लोहे के उत्पादन के लिए एक प्रक्रिया विकसित की है। यह लोहे लवनहीज बुलाया गया था। यह औद्योगिक प्रक्रियाओं में एक बहुत ही उपयोगी धातु साबित हुई। 1774 में, जॉन विल्किनसन ने एक डिलिंग मशीन का आविष्कार किया है जिससे सटीकता के साथ छेद किया जा सकता था। 1788 और 1806 के बीच, लोहे का उत्पादन में कई गुना वृद्धि हुई है और लोहे का उपयोग कृषि मशीनरी, हार्डवेयर, जाहज निर्माण, आदि में फैल गया।

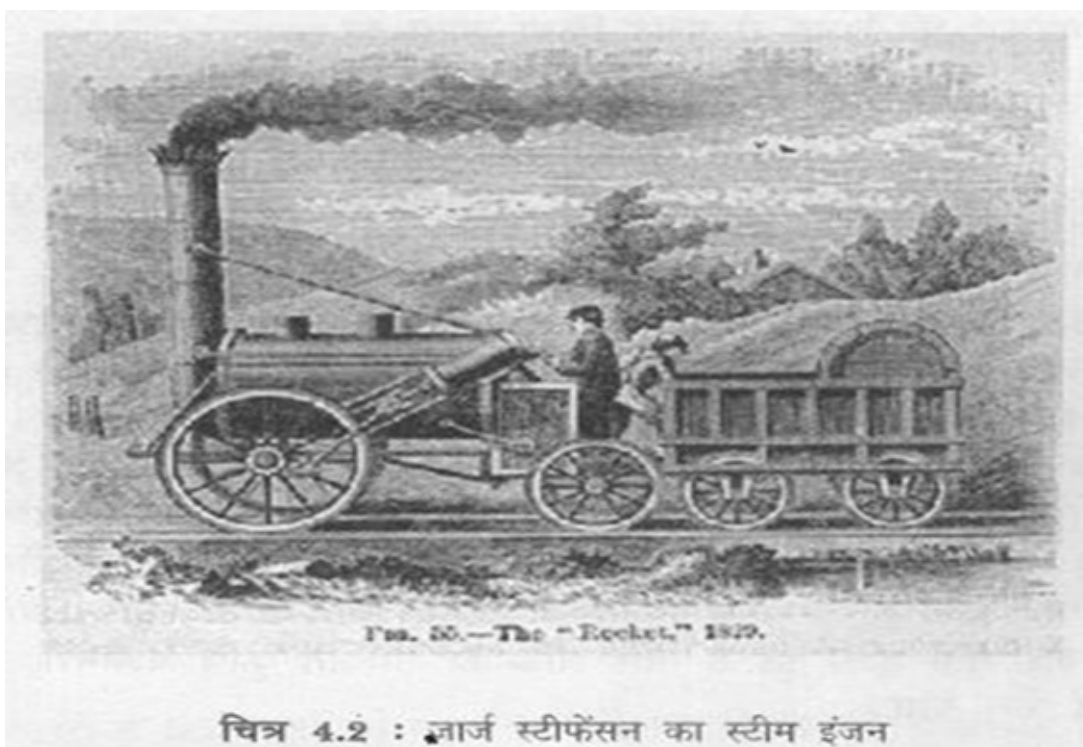
लोहा और कपड़ा उद्योग के विकास में यह आवश्यक था कि सस्ती वस्तुएं और उनकी तेजी से ढुलाई के लिए बेहतर परिवहन सुविधाओं का आविष्कार किया जाये। घरेलू और विदेशी बाजारों की जरूरतों को पूरा करने के लिए ऐसा जल्द से जल्द करना आवश्यक था।

4.2.4. परिवहन और संचार के साधन

परिवहन और संचार के साधनों में सुधारने औद्योगिक क्रांति का बहुत प्रोत्साहित किया। कच्चे माल तैयार उत्पादों को, भोजन और लोगों को परिवहन की एक विश्वसनीय प्रणाली की जरूरत थी। 1700 में पुल और सड़क निर्माण में सुधार शुरू में किए गए थे। वे उनके गंतव्यों परिवहनों से कच्चे और कारखानों में तैयार माल को अपने गंतव्य तक पहुंचाने में मदद करते थे। 1814 में, जॉर्ज स्टीवेंसन पहले भाप लोकोमोटिव इंजन का निर्माण किया जो रेलवे ट्रैक पर चला। भाप

इंजन और रेलवे पटरियों से जल्दी इंग्लैंड में माल लाने ले जाने के लिए नहर परिवहन को समर्थन मिला। क्या आप जानते हैं कि डार्लिंगटन से स्टॉकटन के लिए पहली रेलवे लोकोमोटिव कर्षण का उपयोग करने के लिए और यात्रियों के रूप में माल ले जाने के रूप में अच्छी तरह से लाइन वर्ष 1825 में था?

मध्य 19वीं शताब्दी के दौरान लकड़ी चालित जहाज की जगह भाप चालित ने जहाज ले लिया। इसके तुरंत बाद लोहा जहाज समुद्र के पार यात्रा के लिए इस्तेमाल किया गया था। यद्यपि औद्योगिक क्रांति के पहले चरण में भाप पर निर्भर करता है, तो दूसरे चरण में बिजली पर निर्भर था। क्या आप जानते हैं माइकल फैराडे ने पहली इलेक्ट्रिक मोटर की खोज करने का गौरव प्राप्त था? बिजली अब व्यावसायिक रूप से उपलब्ध हो गयी और कारखानों को चलाने के लिए इस्तेमाल किया जाने लगा था। परिवहन, व्यापारिक लेनदेन और संचार के तेजी से मतलब है, सैनिक इकाइयों, कालोनियों, देशों, और यहां तक कि आम लोगों के बीच तेजी संपर्क बढ़ना। टेलीग्राफ और टेलीफोन के आविष्कार ने दुनिया में कहीं भी तुरंत संवाद संभव बनाया है।



चित्र 4.2 : जार्ज स्टीफेंसन का स्टीम इंजन

चित्र 4.2 जार्ज स्टीफेंसन का स्टीम इंजन

4.3 औद्योगिक क्रांति के प्रभाव

औद्योगिक क्रांति ने शहरी जनता के आंदोलन को प्रोत्साहित किया। जिसने एक शहरी समाज को जन्म दिया। श्रमिकों अब कार्यशालाओं या कारखानों के करीब रहते थे। जहां वे रोजगार के अवसर प्राप्त मिलते थे। लेकिन कारखानों में काम करने की स्थिति दयनीय आवास, स्वच्छता और स्वास्थ्य की स्थिति के साथ दुखी थे। कारखाने के मालिकों सिर्फ एक ही मकसद था लाभ कमाने बनाने के लिए बनाया गया था। इसलिए वह श्रमिकों को लंबे समय तक के लिए कम मजदूरी पर काम करने के लिए मजबूर करते कभी-कभी 12 से 14 घंटे। महिला और बच्चे को बहुत कम मजदूरी का भुगतान किया जाता था। कारखानों में खराब हवादार, शोर, गंदा, नम और अंधेरे थे। क्या आपको लगता है कि लंबे समय के लिए इस स्थिति को जारी रखा जा सकता

था? धीरे-धीरे श्रमिकों ने अपनी ताकत का एहसास शुरू किया। ट्रेड यूनियनों ने दबाव बनाया। एक आंदोलन कारखाने प्रणाली के अन्याय से श्रमिकों को बचाने के लिए शुरू किया। कई कानून काम करने और रहने की स्थिति को सुधारने के लिए किए तैयार गए थे। इसके बारे में और अधिक आप अगले भाग में पढ़ेंगे।

अपने चारों ओर अपने परिवार में अथवा पड़ोस अथवा दुकान अथवा बाजार में देखो। क्या आपने 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों को काम पर रखते हुए और उन्हें शिक्षा के अधिकार से वंचित देखा है? उन्हें शिक्षा देने के लिए क्या किया जाना चाहिए। इसको एक विचार दो और उनकी सहायता करने के तरीके ढूँढने की कोशिश करो।

उत्पादन में अत्यधिक वृद्धि हुई जिसके परिणाम स्वरूप वस्तुओं की कीमत में कमी आई। मानव श्रम का स्थान मशीनों ने ले लिया और उत्पादन की स्वदेशी प्रणाली समाप्त हो गई। कृषि उत्पादन में वृद्धि और खाद्य कीमतों में कमी आई। फैक्ट्रियों और मशीनों के स्वामित्व से धन के नए स्रोतों का उद्गम हुआ। लोगों के इस नए समूह को पूंजीवादियों के रूप में जाना गया। इन्होंने अधिक आए वाले क्षेत्रों से आवश्यकता वाले क्षेत्रों में पूंजी के वितरण हेतु बैंकिंग प्रणाली प्रारंभ की 1700 के प्रारंभ में सुनार, व्यापारी और विनिर्माताओं द्वारा पहला निजी बैंक खोला गया। शीघ्र ही औद्योगिक क्रांति अन्य देशों में भी फैल गई। व्यापार मार्गों की खोज ने कच्चे माल, नए बाजारों और सस्ते कारीगरों की आवश्यकता को पूरा करने के लिए अपने साम्राज्यों का विस्तार करने हेतु निवेश और साम्राज्यवादी ताकतों में प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा मिला। इसने यूरोप के देशों प्रतिद्वंद्विता विशेष रूप से इंग्लैंड और फ्रांस के बीच अनिवेशों की दौड़ प्रारंभ कर दी।

बाद में इस दौड़ में इटली, जर्मनी और अन्य देश भी शामिल हो गए। इन साम्राज्यवादी विस्तारों से सर्वोच्चता के लिए संघर्ष और दो विश्व युद्ध हुए जिनके बारे में आप इस पाठ में आगे पढ़ेंगे। इन्होंने उपनिवेशों का शोषण किया और इनकी परंपरागत, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक प्रणालियां समाप्त कर दी। इन उपनिवेशों ने विदेशी शासनों का विरोध करना और अपने स्वतंत्रता हेतु लड़ाई प्रारंभ कर दी।

1. शोषण और गंदी बस्तियां उद्योगों का परिणाम थी। इस समस्या को हल करने के लिए दो समाधानों का सुझाव दीजिए।
2. क्या आप सहमत हैं कि औद्योगीकरण ने लोगों के उच्च जीवन स्तर को जन्म दिया है? अपने जवाब के समर्थन में दो कारण दीजिए।
3. परिवार प्रणाली में हुए दो परिवर्तनों की सूची लिखो जब लोगों को शहरों में ले जाया गया।
4. ब्रिटिश उद्योगों ने महिलाओं और बच्चों के रोजगार के लिए क्यों प्रोत्साहित किया?

आपने पिछले भाग में औद्योगिक क्रांति के बारे में पढ़ा कि यह कैसे पश्चिमी देशों में फैली थी। 19वीं सदी की समाप्ति तक अधिकांश देशों में यूरोपीय देशों में औद्योगिक क्रांति हो गयी। इन देशों में कच्चे माल और तैयार माल को बेचने के लिए एक बाजार की निरंतर आपूर्ति की जरूरत थी। इसलिए उन्होंने उन क्षेत्रों पर अपने नियंत्रण का विस्तार करना शुरू कर दिया जहां अभी औद्योगिकरण नहीं शुरू हुआ। पूंजीपतियों को अब अपनी अधिशेष पूंजी निवेश के लिए नये स्थानों और नए उद्योगों की आवश्यकता थी क्योंकि उनके अपने देश व उनके पड़ोसी इलाकों से उनकी जरूरतें पूरी नहीं हो सकती थी। या किसी दूसरे देश की राजनीतिक और आर्थिक जीवन पर नियंत्रण और शासन की विस्तार देने की इस प्रक्रिया को साम्राज्यवाद के रूप में जाना जाता है। यह सैन्य या अन्य साधनों के माध्यम से किया जा सकता है। उपनिवेशवाद का अर्थ है कालोनियों पर कब्जा और उन्हें अपने विजय अधीन करना चाहे युद्ध द्वारा या अन्य किसी साधन से। कच्चे माल, बाजार और पूंजी के निवेश के लिए जो साम्राज्यवादी देशों के अपने देश से बाहर भूमि को जीत के लिए प्रेरित करने के लिए नए स्थानों की जरूरत थी। साम्राज्यवाद की मुख्य विशेषता सैन्य विजय, राजनीतिक शासन के माध्यम से एक साम्राज्यवादी राष्ट्र द्वारा या किसी अन्य विधि द्वारा कालोनियों के आर्थिक प्रभुत्व पर अधिकार कर ले। उपनिवेश से धन और संसाधन का साम्राज्यवादी देशों के लिए निष्कासन हुआ। कालोनियों के हित साम्राज्यवादी देश के हितों के अधीन थे। वह देश जो दूसरी भूमि के लिए युद्ध लड़ता वह देश साम्राज्यवादी देश कहलाता और जिस देश के लिए संघर्ष होता वह उपनिवेश कहलाता था। 19वीं सदी के अंत तक एशिया और अफ्रीका के लगभग सभी देशों के एक या अन्य यूरोपीय देशों के नियंत्रण में थे।

आप क्यों सोचते हैं कि इन औद्योगिक देशों ने एशिया और अफ्रीका को अपने प्रभुत्व का विस्तार करने के लिए चुना था? यह था क्योंकि ये देश संसाधनों से समृद्ध थे लेकिन राजनीतिक और सैन्य रूप से कमजोर और औद्योगिक दृष्टि से पिछड़े थे। दुर्भाग्य से, वे बहुत दूर और दूरी पर थे। बिना अच्छे संचार साधन के, कोई भी देश उन से लाभ लेने में असक्षम होगा। साम्राज्यवाद का विकास परिवहन और संचार के विकास के साथ संभव था। अच्छी सड़कें, जहाजरानी, रेलवे और नहरे अपने देशों में और उपनिवेशों में औद्योगिक देशों द्वारा बनाया गया था। उपनिवेशों से वस्तुओं को लाना ले जाना इन देशों के लिए आसान बना दिया था। सैनिकों को भी आसानी से उपनिवेशों के लिए भेजा जा सकता था। टेलीग्राफ और टेलीफोन के विकास के साथ, संदेश आसानी से भेजे जा सकते थे। अब लगभग हर देश साम्राज्यवादी देशों की पहुंच के भीतर आ गये थे।

चरम राष्ट्रवाद साम्राज्यवाद के विस्तार में एक प्रमुख शक्ति बन गया था। प्रतिष्ठा, गौरव और महिमा के लिए, इटली और जर्मनी जैसे कुछ देशों ने दूसरों की भूमि पर विजय प्राप्त की। इस समय तक, यूरोपीय में नस्लीय श्रेष्ठता की भावना विकसित की थी। एशिया और अफ्रीका के लोगों को पिछड़े के रूप में माना जाता था। उनके मुताबिक, यह सफेद आदमी पर है कि वह पिछड़े लोगों को सभ्य बनाये। इन देशों की जीत इनमें ईसाई धर्म फैलाना और इनमें आत्मज्ञान लाना अपना कर्तव्य समझते थे। इस भावना ने इन भूमि की विजय के लिए एक नैतिक औचित्य प्रदान किया।

यह मुश्किल नहीं था कि साहसी और खोजकर्ता के रूप में विजय भूमि के लिए गोरों के बीच एक इच्छा को उकसाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। दूरदराज क्षेत्रों में खोजी भूमि के धन और संसाधनों के विषय में मूल्यवान जानकारी का वे वापस आकर वर्णन करते थे। क्या आप किरस्टोफर कोलम्बस, वास्को दा गामा और फर्डिनांड मैगलन जैसे कई खोजकर्ता के पढ़े हुए नाम याद हैं?

4.4.1 अफ्रीका में साम्राज्यवाद

क्या आप जानते हैं कि एक समय था जब अफ्रीका को एक अंधकार महाद्वीप के रूप में जाना जाता था? बहुत कम जानकारी इस महाद्वीप के बारे में उपलब्ध थी। मिशनरियों और खोजकर्ता अंदरूनी भाग में जाने वाले पहले व्यक्ति थे। यहां इन्होंने हाथीदांत, सोना, हीरा, लकड़ी और उन लोगों की जिन्हें गुलाम बनाया जा सकता था। अफ्रीका की भी कमजोर राजनीतिक प्रणाली, एक पिछड़ी अर्थव्यवस्था और समाज के साथ-साथ कमजोर सेनाएं थीं। यूरोपीय देशों के बीच एक प्रतियोगिता शुरू हो गई शक्ति और प्रतिष्ठा को बढ़ाने के साथ ही कच्चे माल और उनके विनिर्मित वस्तुओं के लिए बाजार प्राप्त करने की। दूसरी ओर यूरोपीयों के पास तकनीकी रूप से उन्नत हथियार थे जिससे उन्हें अपने विजय अभियानों में मदद मिली। 1875 तक, अफ्रीका में यूरोपीय अधिपत्य तटों के पास व्यापारिक और वाणिज्यिक केंद्रों और कुछ छोटी बस्तियों तक सीमित था। लेकिन 1880 और 1910 के बीच, पूरे अफ्रीका का गोरों के बीच में विभाजित किया गया था। अफ्रीका और उसके लोगों से संबंधित सभी महत्वपूर्ण निर्णय लंदन, पेरिस, लिस्बन और अन्य यूरोपीय राजधानियों के सम्मेलनों की मेज पर अगले 50 वर्षों तक लिया गया।

क्या आप जानते हैं

फ्रांस ने अफ्रीका के अधिकतम उपनिवेशों संख्या 'पर शासन किया, जबकि ब्रिटेन ने लोगों की बड़ी संख्या पर शासन?

फ्रांस ने उत्तर और पश्चिम अफ्रीका में एक विशाल साम्राज्य का अधिग्रहण किया। अल्जीरिया, ट्यूनीशिया, मोरक्को, आइवरी कोस्ट, डहोमी पश्चिम अफ्रीका में माली और अन्य क्षेत्रों के फ्रांसीसी शासन के अधीन आये। ब्रिटेन ने गाम्बिया, सिएरा लियोन, गोल्ड कोस्ट, नाइजीरिया, दक्षिण अफ्रीका, रोडेशिया युगांडा, केन्या, मिस्र, सूडान, इरिट्रिया, सोमालीलैंड का कुछ हिस्सों और लीबिया पर शासन किया। जर्मनी के दक्षिण पश्चिम तनजानिया टोगोलैण्ड और कैमरून पर शासन किया। जब तक विश्व युद्ध में जर्मन न हारा। प्रथम विश्व युद्ध 1914 के शुरू में केवल दो स्वतंत्र देशों अफ्रीका लाइबेरिया और इथियोपिया ही शेष बचे थे। लेकिन इथियोपिया इटली द्वारा 1935 में लिया गया था।

साम्राज्यवाद के बारे में एक दिलचस्प विशेषता अफ्रीका में गुलाम व्यापार था। यूरोपीय लोगों ने अफ्रीका से दास को आयात करके अमेरिका के अपने उपनिवेशों में बागानों पर काम करवाना

शुरू कर दिया । पुर्तगाल की राजधानी लिस्वन में एक नियमित रूप से गुलाम बाजार था । 1500 और 1800 के बीच लगभग 15 लाख अफ्रीकी कब्जे में लिये गये और दास के रूप में बेचे गये ।

एक व्यक्ति के साथ उसके/उसकी रंग, वंश, वर्ग, जाति अथवा क्षेत्र के आधार पर भेद भाव और तिरस्कार किया जाता था। हमारे साथ इस तरह की भारत और विदेश दोनों में मौखिक और शारीरिक दुर्व्यवहार की घटनाएं होती रहती थी। क्या आप समझते हैं जब हम ऐसे कार्यों में भाग लेते हैं तब हम संवेदनशीलता और परिपक्वता से कार्य कर रहे होते हैं? अन्य लोग कैसा महसूस करेंगे? बताएं इसे रोकने के लिए आप क्या कदम उठा सकते हैं।

4.4.2. एशिया में सम्राज्यवाद

अफ्रीका की तरह ही एशिया में भी यूरोपीय लोगों ने उपनिवेश बनाने शुरू कर दिये थे। ब्रिटिश और फ्रांस जैसे समृद्ध देशों ने पुर्तगाल और हॉलैंड की तरह नहीं व्यापार नहीं किया। जिन्हें अंततः भारत से बाहर फेंक दिया गया। जल्द ही अंग्रेजी और फ्रेंच कंपनियों ने यहां बस्तियां बनायीं। 1763 में, ब्रिटिश ने भारत से फ्रेंच प्रभाव कम किया और यहां अपने नियंत्रण की स्थापना की। अगले पाठ में भारत में ब्रिटिश शासन के बारे में और अधिक पढ़ सकते हो। जापान और चीन जैसे देशों ने अपने पारंपरिक तरीके में उनके विश्वास की वजह से पश्चिमी संस्कृति और जीवन के तरीके को स्वीकार करने से इनकार कर दिया। बक्सर विद्रोह और अफीम युद्ध ने औद्योगिक देशों को चीन में शामिल करने के शक्ति दे दी। धीरे-धीरे उन्होंने औद्योगीकरण और पश्चिमी प्रभाव को स्वीकार किया। हम ने पढ़ा कि यह कैसे हुआ।

4.4.3 चीन

चीनी माल की यूरोपीय देशों में अधिक मांग थी, लेकिन चीन में यूरोपीय सामान के लिए कोई मांग नहीं थी। यह एक तरफा व्यापार यूरोपीय व्यापारियों के लिए लाभदायक नहीं था इसलिए उन्होंने चीन को अफीम की तस्करी शुरू करके चीनी युवाओं और चीनी माल के विनिमय को नष्ट कर दिया। इससे चीन और ब्रिटेन के बीच प्रथम अफीम युद्ध में चीन आसानी से हार गया था और ब्रिटिश खुद के लिए कई रियायतें प्राप्त करने में सफल हुआ। वह चीन के सभी पांच बंदरगाहों को ब्रिटिश व्यापारियों के लिए खुलवाने में सफल रहे। चीनी सरकार विदेशी माल पर किसी भी तरह का टैरिफ लागू नहीं कर सकती थी। वे चीनी अदालतों में ब्रिटिश विषयों के खिलाफ किसी भी तरह का परीक्षण नहीं ले सकते थे। हांगकांग का द्वीप ब्रिटेन को सौंप दिया गया।

दूसरा अफीम युद्ध के ब्रिटिश: ध्वज के अपमान के खिलाफ बदला और एक फ्रांसीसी मिशनरी की हत्या के लिए लड़ा गया था। चीन दो यूरोपीय शक्तियों से हार गया था और अतिरिक्त क्षेत्रीय अधिकार देने के लिए मजबूर किया गया था।

बक्सर विद्रोह ईसाई मिशनरियों और प्रभाव के क्षेत्रों में चीन के विभाजन के बाद चीन के शोषण के खिलाफ एक संगठित आतंक था। चीनी युवाओं को अपनी मुट्ठी के साथ विदेशी नागरिकों अत्याचार भी सहन करने पड़ रहे थे। उन्हें शाही अदालत के गुप्त समर्थन प्राप्त था।

4.4.4 जापान

1868 में शुरू हुए मीजी पुनसंस्थापन 'प्रबुद्ध नियम' ने जापान को एक बंद सामंती समाज से बदल कर पहले औद्योगिक राष्ट्र के जापान के रूप में बदला। उसके खुद के प्राकृतिक संसाधन थोड़े थे। इसलिए उसे दोनों विदेशी बाजारों और कच्चे माल के स्रोतों की जरूरत थी।

1871 में, जापानी नेताओं के एक समूह ने यूरोप और अमेरिका का दौरा किया। जापानी राज्य बनने के बाद उसने औद्योगीकरण की नीति बनाई। 1877 में, जापान में बैंक स्थापित किया गया था। कई इस्पात और कपड़ा कारखानों की स्थापना की गई, शिक्षा को लोकप्रिय किया गया और जापानी छात्रों का अध्ययन करने के लिए पश्चिम में भेजा गया था। वर्ष 1905 से, देश को समृद्ध, सैन्य मजबूत बनाने के नारे के तहत जापान एक अविजित औद्योगिक और सैन्य राष्ट्र के रूप में उभरा। वह दक्षिण के सखालिन, कोरिया, मंचूरिया, भारत-चीन, म्यांमार, मलाया, सिंगापुर, इंडोनेशिया और फिलीपींस को जीतने में सफल रहा था।

4.4.5 दक्षिण और दक्षिण - पूर्व एशिया में साम्राज्यवाद

दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशिया में नेपाल, बर्मा, श्रीलंका, मलाया, इंडोनेशिया, भारत और चीन, थाईलैंड, भारत और फिलीपींस शामिल हैं। नए साम्राज्यवाद से उदय से पहले भी, इन देशों में से कई पर पहले से ही गोरों का प्रभुत्व रहा। श्रीलंका पर पुर्तगालियों ने कब्जा कर लिया था तो डच और ब्रिटिश के द्वारा उत्तरार्द्ध पर। इंग्लैंड में चाय और रबड़, बागान, का परिचय हुआ जो श्रीलंका में निर्यात के 7/8 रूप में शुरू किया गया।

दक्षिण पूर्व एशिया के अन्य देशों को भी साम्राज्यवाद का सामना करना पड़ा। फ्रांसीसी सैनिकों का वियतनाम पर हमले का दावा था कि वे भारत-चीन के ईसाइयों की रक्षा कर रहे थे। धीरे-धीरे वियतनाम, लाओस, कंबोडिया को फ्रेंच औपनिवेशिक साम्राज्य के साथ जोड़ा गया था। ब्रिटिश ने म्यांमार और सिंगापुर मलाया राज्यों पर नियंत्रण पाने के लिए उन्हें बंदरगाह से जोड़ा।

क्या आप जानते हैं

थाईलैंड या सियाम एक स्वतंत्र राज्य बना रहा है भले ही यह भारत-चीन में फ्रांसिसि विजय और म्यांमार में ब्रिटिश के बीच संधि थी।

4.5 साम्राज्यवाद के प्रभाव

साम्राज्यवाद ने एशिया और अफ्रीका के इतिहास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने एशिया और अफ्रीका के देशों के धन और कच्चे माल व अपने औद्योगिक माल की बिक्री के लिए इनके बाजारों का बहुत फायदा उठाया। इन कालोनियों की अर्थव्यवस्था को नष्ट किया। नस्लीय भेदभाव

की उनकी नीति ने लोगों को अपने स्वयं के रूप में पूरी तरह से उनके आत्मविश्वास सम्मान को खो दिया। आप भारत पर अगले कुछ सबक में इसके बारे में और अधिक पढ़ा होगा।

4.5.1 साम्राज्यवाद का सकारात्मक प्रभाव

साम्राज्यवादी शासन का उपनिवेशों पर कुछ सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। जैसे रेलवे लाइनों, नहरों, टेलीग्राफ और टेलीफोन की तरह परिवहन और संचार की शुरुआत की। इसने राजनैतिक चेतना और राज्यों में राष्ट्रवाद की भावना का विकास करने के लिए नेतृत्व किया। आधुनिक शिक्षा और विज्ञान को विकसित करने के बाद वे अपनी स्वतंत्रता प्राप्त करने में सफल हुए।

20वीं सदी में मानव इतिहास में किसी अन्य अवधि की तुलना में अधिक वैज्ञानिक खोजों और आविष्कारों को देखा गया, यह भाप चालित जहाजों के साथ शुरू हुआ, अंतरिक्ष में मानव यात्रा, चांद पर उतरने और पाठ्यक्रम के कंप्यूटर के नेटवर्क के साथ समाप्त हो गया। दुनिया त्वरित संचार और तेजी से परिवहन के साथ सिकुड़ गया।

दुर्भाग्य से पूरी दुनिया को साम्राज्यवादी प्रतिद्वंद्विता और आर्थिक उद्देश्य ने प्रभावित किया। इसने यूरोपीय देशों के बीच तनाव, दो विश्व युद्धों में अमेरिका और जापान को उलझाया।

1. साम्राज्यवाद कालोनियों पर एक विनाशकारी प्रभाव पड़ा है।
2. उपनिवेशों के स्वदेशी उद्योग (परंपरागत) बर्बाद हो गए थे।
3. उपनिवेशों के प्राकृतिक संसाधनों का बेरहमी से शोषण।
4. सभी उपनिवेशों की कृषि व्यवस्था को गंभीर रूप से विकृत किया गया था।
5. चीन का प्रभाव के क्षेत्रों में विभाजित किया गया था और अंतरराष्ट्रीय व्यापार के लिए खोल दिया।
6. अफ्रीका, लाइबेरिया और इथियोपिया को छोड़कर शेष की पूरे यूरोपीय देशों के बीच विभाजित किया गया था।
7. अफ्रीकियों का बड़ी संख्या में दास के रूप में बेचा जा रहा था।
8. दक्षिण अफ्रीका में सफेद समुदाय ने त्वचा के आधार पर बीमार अश्वेतों का इलाज किया। इसे नस्लीय भेदभाव या रंगभेद कहा जाता है।

भारत में अंग्रेज व्यापारियों के रूप में आये थे। लेकिन शासक बन गये। उन्होंने हमारी समृद्ध अर्थव्यवस्था को नष्ट कर दिया। भारत जो कपड़ा का एक निर्यातक था तैयार कच्चे माल और माल के निर्यातक का एक खरीदार बन गया। इसके अलावा, भारी कराधान ने जनता की गरीबी का नेतृत्व किया।

पाठगत प्रश्न 4.2

1. साम्राज्यवाद को परिभाषित करें ।
2. साम्राज्यवाद के प्रसार से हुए परिवहन विकास के दो लाभों का उल्लेख करें ।

4.6 प्रथम विश्व युद्ध

औद्योगीकरण, उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद ने एशिया और अफ्रीका में उपनिवेशों की उनकी संपत्ति पर यूरोपीय देशों के बीच तीव्र प्रतिद्वंद्विता शुरू की। यह प्रतियोगिता 19वीं सदी के अंत तक और अधिक तीव्र हो गयी जब उपनिवेश एशिया और अफ्रीका में न उपलब्ध थे। समझौता आपसी अविश्वास और दुश्मनी के कारण संभव नहीं था और 1914 में, यूरोप में जल्द ही पूरी दुनिया से घिरा एक युद्ध हुआ। इसमें दुनिया के सभी प्रमुख देशों और उनके उपनिवेशों को शामिल किया गया। इस युद्ध की वजह से नुकसान की इतिहास में कोई मिसाल न थी। इतिहास में पहली बार के लिए युद्धरत राज्यों के सभी संसाधन जुटाए गए थे। इसमें उनकी सेना, नौसेना और वायु सेना को शामिल किया गया। नागरिक आबादी को अंधाधुंध बमबारी की वजह से जबरदस्त संख्या में दुर्घटना का सामना करना पड़ा। यह युद्ध पहली बार दुनिया के एक बहुत बड़े भाग पर फैल गया था, इस विश्व युद्ध को दुनिया के इतिहास में एक मोड़ के रूप में जाना जाता है। यह एक अचानक घटी घटना नहीं थी बल्कि सेना के विकास और 1914 से पहले से चल रहे विस्तार की चरम सीमा थी।

4.6.1 प्रथम विश्व युद्ध के कारण

इंग्लैंड, फ्रांस जर्मनी और दूसरी की तरह विभिन्न देशों के बीच प्रतिद्वंद्विता साम्राज्यवादी युद्ध का एक प्रमुख कारण थे। इससे पहले युद्ध टल गया क्योंकि अधिक उपनिवेशों के अधिग्रहण की संभावनाओं अभी भी वहां थी। लेकिन अब स्थिति बदल गई थी। अधिकांश एशिया और अफ्रीका को पहले से ही विभाजित किया जा चुका था और आगे विस्तार की संभावनाओं वहां नहीं थीं। अब केवल साम्राज्यवादी देशों के उपनिवेशों पर कब्जा करना ही संभव था। उपनिवेशों के इस बंटवारे ने युद्धों को संभव बनाया। 19वीं सदी के आखिरी तिमाही में, जर्मनी ने जबरदस्त आर्थिक और औद्योगिक प्रगति कर ली थी और इंग्लैंड और फ्रांस का औद्योगिक उत्पादन में काफी पीछे छोड़ दिया था। उसे भी ब्रिटेन की तरह आर्थिक जरूरतों को पूरा करने के लिए उपनिवेशों की आवश्यकता थी। साम्राज्यवादी दौड़ में, जर्मनी इंग्लैंड के मुख्य प्रतिद्वंद्वी बन गया। ब्रिटिश के नौसेना वर्चस्व को भी चुनौती दी गई थी जब जर्मनी का सबसे बड़ा युद्धपोत का निर्माण कर उस को कील लहर से उत्तरी सागर और बाल्टिक सागर अंग्रेजी तट रेखा से जोड़ा गया था। जर्मनी में भी एक रेलवे लाइन बगदाद के साथ बर्लिन को जोड़ने की रेखा है। जिससे आसान करने के लिए जर्मनी के सैनिकों या पूर्व के लिए आपूर्तिकर्ताओं को भेजना आसान बनाने का निर्माण किया। लेकिन इसे वहां ब्रिटिश उपनिवेशों के लिए एक खतरा समझा गया।

जर्मनी की जापान और यूरोप की अन्य सभी प्रमुख शक्तियों की तरह ही अपनी साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षा थी। इटली अपने एकीकरण के बाद उत्तरी अफ्रीका में त्रिपोली, जो तुर्क साम्राज्य के अधीन था चाहता था। फ्रांस मोरक्को को अफ्रीका में अपनी विजय से जोड़ना चाहता था जबकि रूप ईरान में अपनी महत्वाकांक्षा रखता था। जापान के सुदूर पूर्व में उसकी महत्वाकांक्षा थी जहां वह 1905 के रूप - जापानी युद्ध के बाद उसके प्रभाव का विस्तार करने में सक्षम था। ऑस्ट्रिया, आटोमन साम्राज्य में उसकी महत्वाकांक्षा थी, जबकि अमेरिका संयुक्त राज्य अमेरिका एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में उभर रहा था। उसकी मुख्य दिलचस्पी के लिए व्यापार की

स्वतंत्रता की रक्षा के रूप में थी इसलिए वह एक तेज गति से बढ़ रहा था। किसी भी महान शक्ति के प्रभाव के विस्तार विश्व शांति के लिए एक बड़ा खतरा साबित हो सकता था।

4.6.2 गठबंधन की प्रक्रिया

अधिक कालोनियों के लिए विरोध और टकराव ने साम्राज्यवादी शक्तियों का सहयोगी दलों के लिए देखने के लिए प्रेरित किया। 1882 में, जर्मनी आस्ट्रिया, इटली ने ट्रिपल एलायंस पर अपनी विरोधी शक्तियों के खिलाफ आपसी सैन्य सहायता की संधि पर हस्ताक्षर किया। इंग्लैंड, रूस और फ्रांस ने 1907 में ट्रिपल अंततः पर हस्ताक्षर किए। दो परस्पर शत्रुतापूर्ण विरोधी समूहों के उद्भव और यूरोपीय शक्तियों के बीच तनाव और संघर्ष ने यूरोप को दो गुटों में विभाजित कर दिया। इन देशों में एक दूसरे से घातक हथियार रखने की चाह ने हथियारों के उत्पादन की दौड़ का नेतृत्व किया। आपसी नफरत और संदेह ने शांति के वातावरण समाप्त किया। इस बात का स्पष्ट प्रचार किया गया कि अगर युद्ध हुआ तो पूरा यूरोप युद्ध में डूब जाएगा।

4.6.3 पान स्लाव आंदोलन और बाल्कन राजनीति

पूर्वी यूरोप के बाल्कन क्षेत्र में ग्रीस, रोमानिया, बुल्गारिया, सर्बिया, मोंटेनेग्रो और कई अन्य छोटे राज्य शामिल थे। मूलतः ये राज्य तुर्क सम्राट या तुर्की के शासक के नियंत्रण के अधीन थे। 20वीं सदी की शुरुआत से, तुर्क साम्राज्य में गिरावट शुरू हुई। आस्ट्रिया और रूस समेत कई यूरोपीय शक्तियां इस क्षेत्र में पैर जमाने के लिए पहुंची। बात तब और जटिल बनी जब इन राज्यों के अधिकांश में लोगों में राष्ट्रवाद का पुनरुत्थान हुआ। इन्हें स्लाव कहा जाता था। वे पूर्वी यूरोपीय देशों के कई राज्यों में बिखरे हुए थे। इन्होंने एक राष्ट्रीय आंदोलन शुरू कर दिया और इसको पान स्लाव आन्दोलन कहा जाता है। उनकी मुख्य मांग सर्बिया, क्योंकि सर्बिया जनसंख्या के तहत एक स्लाव राज्य था। सर्बिया का रूस द्वारा समर्थन किया गया था, जबकि आस्ट्रिया ने सर्बिया और उनके राष्ट्रीय आंदोलन का विरोध किया। इससे रूस और आस्ट्रिया के बीच प्रतिद्वंद्विता में हुई। आस्ट्रिया मजबूत सर्बियाई राज्य है जो अपने विस्तार की महत्वाकांक्षा में बाधा नहीं चाहता था। 1908 में, आस्ट्रिया ने दो स्लाव राज्यों बोस्निया और हर्जेगोविना पर कब्जा कर लिया जो सर्बिया और आस्ट्रिया के बीच दुश्मनी का कारण बना। 1912 और 1914 के बीच, चार बाल्कन राज्यों ने स्वतंत्रता के लिए से तुर्क सम्राट के खिलाफ युद्ध लड़े। तुर्की हार गया। और यूरोप में उसकी संपत्ति समाप्त हो गई। आस्ट्रिया ने जल्दी से सर्बियाई ग्रेटर सर्बिया की महत्वाकांक्षा के खिलाफ अल्बानिया के एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना की। दुश्मनी में एक तरफ सर्बिया और रूस थे तो दूसरे तरफ आस्ट्रिया था।

जैसा कि आप 1914 के द्वारा देख सकते हैं, यूरोप में माहौल विस्फोटक था। इस पृष्ठभूमि के खिलाफ फ्रांसिस फर्डिनांड, आस्ट्रिया के सिंहासन के लिए वारिस, एक राज्य की यात्रा पर सारायेवो, बोस्निया की राजधानी के लिए गये। वह अपनी कार से नीचे उतर रहे थे कि एक सर्बियाई युवा के द्वारा 28 जून 1914 को उनकी हत्या कर दी गई। आर्थड्यूक फ्रांसिस फर्डिनेंड की हत्या युद्ध का तत्कालिक कारण बन गयी। आस्ट्रिया ने सर्बिया को अपने राजकुमार की हत्या के लिए जिम्मेदार ठहराया और उसे विभिन्न शर्तों के साथ एक अंतिम चेतावनी दी। रूसी मदद

का आश्वासन दिया है, सर्बिया ने अल्टीमेटम स्वीकार करने से इनकार कर दिया और सीमा पर अपने सैनिकों को जुटाने शुरू कर दिया । 28 जुलाई 1914, ऑस्ट्रिया ने सर्बिया पर युद्ध की घोषणा की । 1 अगस्त 1914, जर्मनी ने रूस पर युद्ध की घोषणा की । 3 अगस्त 1914 में, जर्मनी ने फ्रांस पर युद्ध की घोषणा की । जर्मन सैनिकों ने बेल्जियम में प्रवेश किया, इंग्लैंड ने जर्मनी पर युद्ध की घोषणा अगस्त 1914 में की । इस प्रकार यूरोप में एक छोटी सी घटना में सभी देशों के शामिल होने से युद्ध ने जल्द ही विश्व युद्ध का आकार ले लिया ।

1. किन देशों ने ट्रिपल एलायंस का गठन किया?
2. बाल्कन युद्ध किन देशों के बीच लड़े गए?

4.6.4 प्रथम विश्व युद्ध की कार्य विधि (1914-1918)

9 अगस्त 1914 में जो विश्व युद्ध शुरू हुआ नवंबर 1918 तक जारी रहा। इस अवधि के दौरान कई महत्वपूर्ण लड़ाईयां लड़ी गयीं जैसे 1914 मार्ने की लड़ाई, 1916 में वेर्ड की लड़ाई सोमे की लड़ाई, जूटलैंड की लड़ाई।

1917 वर्ष दो महत्वपूर्ण घटनाओं को देखा गया। इस युद्ध में संयुक्त राज्य अमेरिका की प्रविष्टि थी। दूसरी नवंबर में रूस का इस युद्ध से अलग होना। 1915 में, एक ब्रिटिश यात्री जहाज लूसिपनिया के जर्मन की यू बोट की डूबा दिया जिसमें 128 अमेरिकी-नागरिक यात्रा कर रहे थे। उनकी हत्या हो गयी थी। अमेरिकी सीनेट ने इसे बहुत गंभीरता से लिया। एक शक्तिशाली राष्ट्र बनने के अलावा, जर्मनी अमेरिकी सर्वोच्चता के लिए खतरा पैदा कर सकता है। इसके अलावा संयुक्त राज्य अमेरिका हथियार और गोला बारूद का एक प्रमुख आपूर्तिकर्ता बनता जा रहा था। युद्ध की निरंतरता के कारण अमेरिका के आर्थिक लाभ में वृद्धि हुई। इन सब को ध्यान में रखते हुए, उसने युद्ध में शामिल होने का फैसला किया।

दूसरी बड़ी घटना रूस का युद्ध से अलग होना था। क्या आप को रूस की 1917 की अक्टूबर क्रांति के बारे में पढ़ा याद है? क्रांतिकारियों की मुख्य मांगों में से एक शांति थी। तो तुरंत लेनिन के नेतृत्व में क्रांति के बाद, रूस युद्ध से अलग हो गया और 1918 में जर्मनी के साथ एक शांति संधि पर हस्ताक्षर किए।

जुलाई 1918 से जर्मनी पतन शुरू हुआ। बुल्गारिया और तुर्की ने सितंबर और अक्टूबर में क्रमशः आत्मसमर्पण कर दिया। 3 नवंबर 1918 में, ऑस्ट्रिया के सम्राट ने ऑस्ट्रिया में व्यापक असंतोष के कारण आत्मसमर्पण कर दिया। जर्मन लोगों द्वारा इसी तरह के विद्रोहों करने के बाद, जर्मन सम्राट विल्हेम द्वितीय हॉलैंड भाग गये और जर्मनी एक गणराज्य घोषित किया गया। नई सरकार पर 11 नवंबर 1918, विश्व युद्ध के अंत के लिए एक युद्धविराम पर हस्ताक्षर किए।

युद्ध के दौरान, मशीनगन, जहर गैस, तरल आग, पनडुब्बी और टैंक के रूप में कई नए हथियारों का इस्तेमाल किया गया। नई रणनीतियों और सैन्य तकनीक दोनों पक्षों द्वारा प्रयोग किया गया।

इंग्लैंड ने नौसेना और आर्थिक नाकेबंदी, टैंकों और हवाई हमलों का इस्तेमाल किया। फ्रांसिसियों ने युद्ध में गहरी इस्तेमाल रणनीति का और जर्मनी यूं नाव और पनडुब्बियों का समुद्र में जहाज डूबने के लिए इस्तेमाल किया।

4.6.5 प्रथम विश्व युद्ध के तात्कालिक परिणाम

प्रथम विश्व युद्ध के दुनिया की सबसे विनाशकारी और भयावह घटनाओं के रूप में देखा जाता है। निर्दोष नागरिकों सहित एक लाख लोगों को उनके जीवन से हाथ धोना पड़ा। अधिकांश यूरोपीय देशों में बड़े पैमाने पर संपत्ति का नुकसान हुआ। कुल खर्च 180 अरब डॉलर के चौंका देने वाले आंकड़े का अनुमान लगाया गया था। जिसके परिणामस्वरूप अधिकांश देशों की अर्थव्यवस्था टूटने लगी और चारों तरफ सामाजिक तनाव, बेरोजगारी और गरीबी फैल गई।

जनवरी से जून 1919 के बीच, मित्र देश की शक्तियाँ, वरसाई के महल में सम्मेलन में मिले थे जिसमें पेरिस को पराजित शक्तियों का भविष्य तय करना था। हालांकि लगभग 27 देशों के प्रतिनिधियों ने सम्मेलन में भाग लिया, निर्णय ब्रिटेन, फ्रांस और संयुक्त राज्य अमेरिका के राज्यों के प्रमुखों द्वारा लिया गया। रूस को बाहर रखा गया था और पराजित शक्तियों को इसमें भाग लेने के अनुमति नहीं थी। मित्र राष्ट्रों ने पराजित शक्तियों के साथ विभिन्न संधियों पर हस्ताक्षर किए। उनमें से सबसे महत्वपूर्ण वर्साय की संधि पर जर्मनी के साथ हस्ताक्षर किए, ऑस्ट्रिया के साथ सेंट जर्मेन की संधि और तुर्की में साथ कार्य करने की संधि थी। वर्साय की संधि से जर्मनी, राजनीतिक, आर्थिक और सैन्य रूप से बिखर गया। जर्मनी को आक्रामकर्ता का दोषी ठहराया गया था और युद्ध के लिए मुआवजे के रूप में पैसे की एक बड़ी राशि का भुगतान करने के लिए कहा। अल्सेस और लारेन को फ्रांस में 1871 में मिला लिया गया था। राइनलैंड, फ्रांस और जर्मनी के बीच का गैरसैन्यकरण किया हुआ और मित्र देशों की शक्तियों के नियंत्रण के अंतर्गत लाया गया था। कोयला समृद्ध सार घाटी 15 साल के लिए फ्रांस को दे दिया गया था। जर्मन सेना को भंग किया गया था। जहाजों को डूबा दिया गया और केवल 100,000 सैनिकों को प्रतिबंधित किया गया था। जर्मनी को उसके सभी उपनिवेशों से वंचित किया गया था। यूरोप में उसके बहुत से प्रदेशों को बेल्जियम और पोलैंड को दे दिए गए।

सेंट जर्मेन की संधि में ऑस्ट्रिया से हंगरी को अलग किया गया और हंगरी को एक स्वतंत्र राज्य बनाया गया था। ऑस्ट्रिया से हंगरी को स्वतंत्रता इसलिए प्रदान की थी कि उसे अपने प्रदेशों के हिस्से चेकोस्लावाकिया, रोमानिया और यूगोस्लाविया को देने के लिए बाध्य किया गया। सेवर्स की संधि ने तुर्क साम्राज्य का पतन कर दिया। इसके कुछ राज्यों के जनादेश के रूप में मित्र देशों के अधिकार में दिया गया। उदाहरण के लिए, फिलिस्तीन और मेसोमोटामिया फ्रांस ब्रिटेन और सीरिया को दिया गया। मित्र देश इन देशों को तब तक देखेंगे जब तक वे आत्मनिर्भर नहीं बन जाते।

युद्ध और शांति संधियों ने दुनिया के विशेष रूप से यूरोप के राजनीतिक नक्शे के बदल दिया। रूस में अक्टूबर क्रांति के बाद रोमानिया की सत्तारूढ़ राजवंश को परास्त किया गया था। युद्ध के अंत के द्वारा, जर्मनी और ऑस्ट्रिया की होलजोलर राजवंश हैप्सबर्ग राजवंश को हटा दिया गया और गणराज्य सरकार को स्थापित किया गया था। 1922 में एक क्रांति के बाद तुर्की में

भी राजशाही समाप्त कर दिया गया था। पराजित शक्तियों के लिए गए प्रदेशों से दो नए राज्यों चेकोस्लावाकिया और यूगोस्लाविया को बनाया गया। हंगरी एक स्वतंत्र राज्य के रूप में उभरा। एस्टोनिया, लिथुआनिया, लातविया और फिनलैंड स्वतंत्र राज्य के रूप में उभरे। रूमानिया और पोलैंड के राज्यों के आकार बढ़ा दिए गए। इसने यूरोप के अधिकांश राज्यों की सीमाओं में बदलाव कर दिया गया।

यह स्पष्ट था कि पराजित शक्तियों के साथ किए गए शांति समझौते असमान और जबरदस्ती पराजित शक्तियों पर थोपे गए समझौते थे। वे बिना विचार-विमर्श के हुए थे। युद्ध के अंत में यूरोपीय वर्चस्व के अंत को और सोवियत संघ और संयुक्त राज्य अमेरिका की प्रमुख शक्तियों के रूप में उद्भव को देखा। इसी अवधि में एशिया और अफ्रीका के देशों में भी राष्ट्रीय आंदोलन को मजबूत बनाते देखा गया। इससे पहले भी नवंबर 1918 में युद्ध समाप्त होता, अमेरिकी राष्ट्रपति वुड्रो विल्सन ने एक शांति कार्यक्रम प्रस्तावित किया जिसे विल्सन के चौदह सूत्रों के रूप में जाना जाता था। इसकी सबसे महत्वपूर्ण बात दुनिया में शांति और सुरक्षा बनाए रखना था। इस प्रस्ताव के आधार पर, लीग ऑफ नेशंस 1920 में स्थापित किया गया था।

4.6.6 लीग ऑफ

1920 में स्थापित प्रथम अंतर्राष्ट्रीय लीग संगठन जिसका मुख्य कार्यालय जिनेवा में रखा गया था। इसका मुख्य उद्देश्य दुनिया में शांति और सुरक्षा बनाए रखना, भविष्य के युद्ध को रोकने अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने अंतरराष्ट्रीय विवादों को शांतिपूर्ण ढंग से निपटाने और सदस्य देशों में श्रमिकों की स्थिति में सुधार करना था। लेकिन दुर्भाग्य से, लीग के लिए जिसके लिए यह स्थापित किया गया युद्ध और संघर्ष को रोकने में विफल रहा। जब जापान ने 1936 में मंचूरिया पर हमला किया और 1935 में इटली ने इथियोपिया पर हमला, लीग कुछ नहीं कर सका।

“पृथ्वी प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकता पूर्ण करने के लिए देती है परंतु प्रत्येक मनुष्य की लालसा के लिए नहीं” महात्मा गांधी । क्या आप समझते हैं कि इस उद्धरण में सच्चाई है? उदाहरणों की सहायता से उचित सिद्ध करो ।

निम्न सवालों का जवाब :

1. लीग ऑफ नेशंस के मुख्यालय कहां स्थित था?
2. लीग ऑफ नेशंस कब और किसके प्रस्ताव पर बनाई गई?

4.7 दो विश्व युद्धों के बीच दुनिया

दो विश्व युद्धों के बीच बीस साल की अवधि में महत्वपूर्ण परिवर्तन अनुभव किया गया। एक तरफ सकारात्मक परिवर्तन जैसे राष्ट्रीय चेतना का विकास एशिया और अफ्रीका के देशों और सोवियत संघ में तथा अन्य देशों में समाजवादी आंदोलन लोकप्रिय हुआ। दूसरी तरफ दुनिया के कई देशों में विशेष रूप से यूरोप के इटली और जर्मनी देशों में तानाशाही सबसे बुरा रूप गया। इसी समय अमेरिका में 1929 में महामंदी देखी गई जिसने दुनिया के लगभग हर हिस्से को प्रभावित किया।

4.7.1 फासीवाद और नाजीवाद के विकास के कारण

युद्ध के बाद, यूरोप में बड़ी संख्या में राजनीतिक आंदोलनों पैदा हुए जिन्हें फासिस्म नाम दिया गया था। जिसका मुख्य उद्देश्य तानाशाही की स्थापना करना था। इन्हें शासकों व उच्च वर्ग के अभिजात और पूंजीपतियों द्वारा समर्थन प्राप्त था। क्योंकि उसने उन्हें समाजवाद के खतरे से बचाने के लिए वादा किया था। उन्होंने हत्या और आतंकवाद का एक व्यवस्थित अभियान चलाया उसे रोकने में सरकार ने कम रुचि दिखाई।

मुसोलिनी द्वारा इटली में शुरू की गई तानाशाही को फासीवाद के रूप में देखा जाता है। फासीवाद एक लैटिन शब्द है प्राचीन रोम में जिसका अर्थ सत्ता के अधिकार या सत्ता प्रतीक था। 1922 में, मुसोलिनी इटली के राजा के समर्थन के साथ सत्ता में आया और 1925 से 1943 तक तानाशाह की तरह शासन किया। मुसोलिनी ने सभी राजनीतिक दलों पर प्रतिबंध लगा दिया और कुछ शुरू किए लोग का समर्थन प्राप्त करने के लिए विजयी शक्तियां का अहंकार, युद्ध के बाद की समस्याओं से निपटने के लिए मौजूदा सरकारों की अक्षमता फासीवाद की जांच करने में राष्ट्र और लोकतांत्रिक ताकतें विफल रही, लोग की लाचारी ने तानाशाही की वृद्धि को संभव बनाया है।

फासीवाद को जर्मन में नाजीवाद के रूप में जाना जाता है। यह एडॉल्फ हिटलर द्वारा स्थापित किया गया था। उसने युद्ध के बाद बस्तियों को वापस लेने और जर्मनी शक्ति और महिमा को बहाल करने का वादा किया। जर्मनी में एक महान राष्ट्र के पुनर्निर्माण की उसकी दृष्टि ने कई जर्मनियों को उसके साथ शामिल होने के लिए प्रेरित किया। उसके इस कार्य ने लोगों को प्रथम विश्व युद्ध के घावों पर मल्हम का काम किया बहुत लोगों ने उसको इसलिए समर्थन दिया क्योंकि उसने उनसे आर्थिक गिरावट को दूर करने का वादा किया था। नाजियों की सफलता न केवल जर्मन लोगों के लिए बल्कि यूरोप और पूरी दुनिया के कई अन्य भागों के लिए विनाशकारी साबित हुई। इसने हंगरी, रूमानिया, पुर्तगाल और स्पेन में स्थापित तानाशाही का नेतृत्व किया। बहुत से देशों में बन रही लोकतांत्रिक विरोध सरकार के विकास ने द्वितीय विश्वयुद्ध का नेतृत्व किया।

4.7.2 विश्व के अन्य भागों में विकास

इंग्लैंड और फ्रांस को गंभीर आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा अभावों और बेरोजगारी के बावजूद वे अपने लोकतांत्रिक सरकारों के साथ चलते रहे। इंग्लैंड में मजदूर हड़ताल व कई और तरह की समस्याओं के रहते इन्हें 1931 में सांझी सरकार बनानी पड़ी। लेबर, लिबरल, व

कंजरर्वेटिव दल के सहयोग से हल करने की कोशिश की गई। 1936 में वामपंथी पार्टियों को मिलाकर एक लोकप्रिय सरकार फ्रांस में बनाई गई।

सोवियत संघ दुनिया के पहले समाजवादी देश के रूप में उभरा। नई सरकार के तहत समाजवादी सिद्धांतों को अर्थव्यवस्था में कार्याविरत किया गया। और केवल यही एक देश था जो महामंदी से प्रभावित नहीं हुआ। जबकि 1929 में सभी पश्चिमी पूंजीवादी देशों को आर्थिक मंदी का सामना करना पड़ा।

हालांकि संयुक्त राज्य अमेरिका ने प्रथम विश्व युद्ध में भाग लिया, लेकिन इसको कुछ खास हानि नहीं हुई। औद्योगिक समृद्धि, राजनीतिक स्थिरता और आर्थिक विकास ने इसे एक सुपर पावर बना दिया। हालांकि, वह 1929 अत्यधिक उत्पादन के कारण इसे सबसे खराब आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा। वस्तुओं की कीमतों, शेयर की कीमतों में गिरावट आ गई। बैंकों को बंद कर दिया और लोगों को उनके आजीव बचत को खाना पड़ा। ऋण जिसे संयुक्त राज्य अमेरिका यूरोपीय देशों से विश्व युद्ध के बाद वापस लेना था। लेकिन यूरोपीय देशों में भी आर्थिक हूँ अस्थिरता आई हुई थी। फ्रैंकलिन रूजवेल्ट के नेतृत्व में अमेरिका में जब नई सरकार सत्ता में आई तो इसने-न्यू डील नामक आर्थिक पुनर्निर्माण का कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इसके तहत कई जनकल्याण के कार्य प्रारंभ किए गए थे जैसे नए रोजगार के अवसर, किसानों को सहयोग आदि।

केवल जपान ही एशिया का एक ऐसा देश था जो एक साम्राज्यवादी देश के रूप में उभरा। इसने रूस को 1905 में हरा दिया था। इसके बारे में आप पढ़ चुके हैं। विश्व युद्ध के बीच में जापान एक सैन्य शक्ति बन गया था, तथा इसने फासीवाद का समर्थन किया था। एंटीकीमेटेन समझौते पर भी इटली व जर्मनी के साथ हस्ताक्षर किये ताकि साम्यवाद का प्रसार रोका जा सके।

पाठगत प्रश्न 4.5

1. उन दो देशों के नाम लिखिए जहां 1920 के बाद तानाशाही सरकारें बनीं?
2. फ्रैंकलिन रूजवेल्ट द्वारा शुरू किए गए आर्थिक सुधार वसूली के कार्यक्रम का क्या नाम है?

4.8 द्वितीय विश्व युद्ध

हम लीग ऑफ नेशन्स के बारे में पढ़ चुके हैं कि किस प्रकार यह अपने संगठन के 20 वर्षों के बाद भी अपने उद्देश्य को पाने विफल रहा जबकि इसका गठन भविष्य में होने वाले युद्धों को रोकने के लिए किया गया था। युद्ध की परिस्थितियां बनने के बाद 3 सितंबर 1939 में द्वितीय विश्वयुद्ध प्रारंभ हो गया। यह युद्ध कैसे प्रारंभ हुआ? आइये इसके कारणों का परीक्षण करें।

4.8.1 द्वितीय विश्व युद्ध के कारण

द्वितीय विश्व युद्ध से पहले यूरोप में शुरू हुए युद्धों ने ही एक विश्व युद्ध का रूप धारण कर लिया था। फासीवादी देशों ने विश्व को दोबारा से साम्राज्यवादी लाभ के लिए विभाजित करना चाहा जिससे विभिन्न देशों के बीच संघर्ष पनपा।

जर्मनी वर्साय सन्धि के द्वारा राजनीतिक, सैन्य और आर्थिक दृष्टि से पूर्णतया बिखर गया। उसने बदला लेने की मांग की और मित्र देशों से शक्ति के एक परीक्षण के लिए तैयार था। इटली की स्थिति भी बेहतर नहीं थी। हालांकि इटली साम्राज्य लाभ की उम्मीद के साथ प्रथम विश्व युद्ध के दौरान मित्र देशों की शक्तियों में शामिल हुआ था, परन्तु युद्ध के बाद उसे कोई भी उपनिवेश हासिल नहीं हो सका। उसने युद्ध के दौरान लगभग 600- 1000 लोगों को खो दिया। दोनों फासिस्ट और नाजी दलों ने अपने लोगों से वादा किया था कि वे युद्ध के माध्यम से अपने देश का खोया गौरव वापस लाएंगे। उन्होंने विजय अभियान के माध्यम से विस्तार की आक्रामक नीति का पालन शुरू कर दिया। जर्मनी के राइनलैंड पर 1936 में 1938 में ऑस्ट्रिया पर कब्जा कर लिया। और चेकोस्लोवाकिया को 1938 में जीत लिया, जबकि इटली ने थियोपिया पर हमला किया। इससे यूरोपीय देशों के बीच सामाजिक तनाव और संघर्ष पैदा हुआ।

आप जापान का एक सैन्य शक्ति के रूप में उभरना व फासीस्ट शक्तियों को समर्थन देने की बात पढ़ चुके हैं। रोम - बर्लिन - टोक्यो की धूरी पर हस्ताक्षर कर तीनों शक्तियों परस्पर एक दूसरे के समर्थन प्रतिबद्ध हो गए। जापान को स्वतंत्र छोड़ दिया गया एशिया और प्रशांत के क्षेत्र में नियंत्रण करने के लिए जबकि जर्मनी और इटली को यूरोप में मनमानी करने की अनुमति मिल गई।

सोवियत संघ की सफलता ने पश्चिमी शक्तियों को चौकन्ना कर दिया। पूंजीवादी देश होने के कारण वे अपने देशों में साम्यवाद के प्रसार को रोकना चाहते थे। इटली और जर्मनी, जो कम्युनिस्ट विरोधी थे। इसलिए इन्होंने इनके प्रति एक सुव्यवस्थित अनुग्रह नीति अपनाई। इस नीति को तुष्टीकरण नीति के रूप में देखा जाता है। प्रथम विश्व युद्ध के बाद जर्मन सेना को 100,000 सैनिकों पर प्रतिबंधित किया गया था। जर्मनी ने बिना पश्चिम शक्तियों के सुरक्षा के अपने सैनिकों की संख्या 800,000 कर ली। यहां तक कि जब हिटलर ने वर्साय की संधि का परित्याग किया और राइनलैंड और ऑस्ट्रिया पर कब्जा कर लिया, तब भी पश्चिमी शक्तियों मूक दर्शक बने रहे। 1937 में, जनता की लोकप्रिय निर्वाचित सरकार और जनरल फ्रेंको, फासिस्ट नेता के बीच स्पेन में युद्ध शुरू हुआ। स्पेन में लोकतांत्रिक दंग से निर्वाचित सरकार को अपदस्थ करने के लिए हिटलर के हथियार और गोला बारूद से सहायता की पुर्ति करने के लिए सोवियत संघ ने जनरल फ्रेंको के खिलाफ सामूहिक कार्रवाई के लिए इंग्लैंड से अपील की। जब मौजूदा सरकार इंग्लैंड और फ्रांस की सरकारों ने कोई भी कार्रवाई नहीं की। यह तुष्टीकरण नीति अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंच गया जब अगस्त 1938 में हिटलर म्यूनिख के लिए ब्रिटेन और फ्रांस के प्रधानमंत्री ने आमंत्रित किया। म्यूनिख संधि उनके द्वारा 1938 में हस्ताक्षर किए गए थे। जर्मनी को सुदेतनलैंड व चेकोस्लोवाकिया के उत्तरी भाग पर कब्जा करने की अनुमति मिल गई। बाद में पूरे चेकोस्लोवाकिया पर कब्जा कर लिया गया था। तुष्टीकरण की नीति फासीवादी शक्तियों को मजबूत किया।

अब यह स्पष्ट है कि ब्रिटेन और फ्रांस जर्मनी और इटली सोवियत संघ के खिलाफ कार्रवाई करना चाहते थे। इन योजनाओं पर रोकने के लिए सोवियत संघ द्वारा जर्मनी के साथ जो दोनों एक दूसरे पर हमला नहीं करने के एक समझौता पर हस्ताक्षर किए। इस तरह सोवियत संघ को कुछ समय मिल गया कि वह भविष्य की तैयारी कर ले तथा जर्मनी को सोवियत संघ को तटस्थ करने में सफलता मिल गई।

द्वितीय विश्व युद्ध दृश्य तब शुरू हुआ जब जर्मनी ने 1 सितंबर 1939 की पोलैंड पर हमला कर दिया और ब्रिटेन ने जर्मनी से 3 सितंबर 1939 को युद्ध की घोषणा की।

सितंबर 1945 में युद्ध का अंत हो गया। यह मानव इतिहास में सबसे विनाशकारी युद्ध था। इससे जान-माल और संसाधनों की अभूतपूर्व क्षति हुई। बड़े शहरों के सुंदर भवन मिट्टी में मिल गये। हजारों लोगों के अपने घरों से बेघर होना पड़ा। जर्मन यहूदियों को मार दिया गया था फिर उन्हें यत्राणा शिविरों में भेज दिया गया। जापानी शहरों हिरोशिमा और नागासाकी पर अमरीका द्वारा परमाणु बम गिराए जाने से दोनों शहर अपनी जनता के साथ नष्ट हो गई। परमाणु प्रलय का खतरा युद्ध के प्रमुख परिणामों में से एक था। जर्मनी को 4 क्षेत्रों में विभाजित कर के प्रत्येक को विजयी शक्तियों के नियंत्रण किया गया था। नाजी पार्टी पर प्रतिबंध लगा दिया गया था और जर्मन सेना को भंग कर दिया गया था। जापान अमेरिका के निगरानी के अंतर्गत रखा गया था। 1949 में, जब राजतंत्र को फिर से स्थापित किया गया था, अमेरिकी सेना को हटा दिया गया।

साम्राज्यवाद के कमजोर होने के साथ-साथ और संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ सुपर शक्तियों के रूप में उभरे। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विश्व दो शक्ति गुटों में बंट गया। साम्यवादी गुट सोवियत संघ के नेतृत्व में तथा पश्चिमी गुट अमेरिका के नेतृत्व में। इन दो गुटों में तनाव व शस्त्रहीन संघर्ष के विकास को शीत युद्ध कहते हैं। जो दोनों देशों के बीच लम्बे समय तक चलता रहा।

युद्ध के एक प्रमुख प्रभाव संयुक्त राष्ट्र संगठन (संयुक्त राष्ट्र संघ) की स्थापना था जिसके बारे में आप अगले भाग में पढ़ेंगे। दुनिया में तब से कई बदलाव हुए। इसका राजनीतिक नक्शा बदल गया। एशिया और अफ्रीका के जो देश औपनिवेशिक शासन के अधीन थे अब स्वतंत्र हो गए थे। अब वे दुनिया में एक प्रमुख शक्ति के रूप में हैं।

इस विश्व में विध्वंसक विश्व युद्ध होते रहे हैं और यह आज तक संघर्षों का साक्षी रहा है। कम से कम ऐसी 5 समस्याओं की सूची बनाओ जो विश्वशांति के आड़े आती हैं। इन मामलों को सुलझाने के तरीके बताओ और आप एक व्यक्ति के रूप में विश्व को रहने के लिए बेहतर बनाने के लिए कैसे योगदान दे सकते हैं।

4.9 संयुक्त राष्ट्र संगठन की स्थापना

युद्ध की विध्वंसता ने दुनिया के नेताओं को शांति के लिए एक अंतरराष्ट्रीय संगठन की जरूरत का एहसास कराया। ब्रिटिश प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल, सोवियत नेता स्टालिन और अमेरिकी राष्ट्रपति रूजवेल्ट के रूप में विश्व के नेताओं के विभिन्न सम्मेलनों में इस संगठन के गठन के बारे में फैसला करने के लिए मुलाकात की। अंत में, 24 अक्टूबर 1945 को सेन फ्रांसिस्को में एक सम्मेलन में संयुक्त राष्ट्र चार्टर के 50 देशों के सदस्यों द्वारा अपना लिया गया और संयुक्त

राष्ट्र संगठन (संयुक्त राष्ट्र संघ) की स्थापना हुई तब से दुनिया भर के सभी देश 24 अक्टूबर को संयुक्त राष्ट्र दिवस के रूप में हर साल मनाते हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ सभी राष्ट्रों की संप्रभुता और समानता के सिद्धांत पर आधारित है। संयुक्त राष्ट्र संघ के मुख्य उद्देश्य दुनिया में शांति और सुरक्षा बनाए रखने के लिए, भविष्य के युद्ध को रोकने के लिए, अंतरराष्ट्रीय विवादों को शांतिपूर्ण ढंग से हल करने के लिए और अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देना हैं।

क्या आप जानते हैं

संयुक्त राष्ट्र संघ का ध्वज एक परिपत्र दुनिया के नक्शे, के रूप में उत्तरी ध्रुव से देखा, एक हल्के नीले रंग की पृष्ठभूमि पर केंद्रित सफेद में जैतून शाखाओं की एक माला से घिरा हुआ है की सरकारी प्रतीक होते हैं।

4.9.1 संयुक्त राष्ट्र संघ की उद्देश्य

प्रथम विश्व युद्ध के बाद स्थापित किये गये राष्ट्र संघ की तरह ही संयुक्त राष्ट्र भी अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखने के एक प्रमुख उद्देश्य से स्थापित किया गया था। इसका भी समानता के आधार पर देशों के बीच मैत्रीपूर्ण संबंधों के विकास, और आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और मानवीय समस्याओं को सुलझाने में अंतरराष्ट्रीय सहयोग प्राप्त करना था। दुनिया के लोगों के लिए मानव अधिकार और मौलिक स्वतंत्रता को बढ़ावा देना। संयुक्त राष्ट्र के उद्देश्य में से एक था। यह भी संयुक्त राष्ट्र के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए विभिन्न देशों के विभिन्न उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए विभिन्न गतिविधियों में तालमेल करने के लिए राष्ट्रसंघ ने एक आम मंच के रूप में कार्य किया।

1. दो जापानी शहरों के नाम बताइये जहां द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान परमाणु बम गिराए गए?
2. कब और कहां संयुक्त राष्ट्र को औपचारिक रूप से गठित किया गया?

आपने क्या सीखा

- उपनिवेशवाद की नई लहर को नए साम्राज्यवाद के रूप में जाना जाता है उपनिवेशवाद 19वीं सदी की अंतिम चरण में शुरू हुआ।
- इस औपनिवेशिक विस्तार के पीछे मुख्य कारक थे। औद्योगिक क्रांति के द्वारा बनाई गई जरूरतें, परिवहन और संचार का विकास, शक्ति अर्जित करने की इच्छा, उग्र राष्ट्रवाद श्वेतों का अश्वेतों को सभ्य बनाने की इच्छा।
- यूरोपीय देशों के बीच तीव्र साम्राज्यवादी होड़ और सैन्य गठबंधनों के निर्माण का परिणाम 1914 में प्रथम विश्व युद्ध भड़क उठने के रूप में सामने आया।
- इस युद्ध के मुख्य परिणाम इस प्रकार थे: वर्साय की सन्धि के रूप में जर्मनी के साथ कठोरता एवं अपमान जनक व्यवहार, पराजित शक्तियों से उनके उपनिवेशों का छीना जाना, यूरोप में महत्वपूर्ण क्षेत्रीय परिवर्तन, ऑटोमन साम्राज्य का बिखरना, हंगरी की स्वतंत्रता और संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना था।
- 1919 से 1939 के बीच इटली में मूसोलिनी के नेतृत्व में फासीवाद और जर्मनी में नाजीवाद का उभरना जिन्होंने लोकतंत्र, स्वतंत्रता, समाजवाद और साम्यवाद का दमन किया।
- पश्चिमी शक्तियों की तुष्टीकरण की नीति के अंत ने द्वितीय विश्व युद्ध के फैलने का नेतृत्व किया।
- द्वितीय विश्व युद्ध के परिणामों में संयुक्त राष्ट्र की संरचना, जर्मनी का विभाजन, साम्राज्यवादी शक्तियों का कमजोर पड़ना। एशिया और अफ्रीका में स्वतंत्र राज्यों के उद्भव प्रमुख थे।
- युद्ध के बाद की परिस्थितियों में संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ के रूप में दो महाशक्तियां उभर कर आई और दो सैन्य गुटों के बीच तीव्र शीत युद्ध की शुरुआत हुई।
- नव स्वतंत्र राष्ट्रों सहित भारत ने निर्गुट आंदोलन शुरू किया और दुनिया में शांति और सद्भाव के लिए इन देशों ने किसी के साथ गठबंधन नहीं करने का फैसला किया।

पाठान्त प्रश्न

1. भारत पर साम्राज्यवाद के किन्हीं भी दो प्रभाव का उल्लेख कीजिए ।
2. इंग्लैंड और जर्मनी के बीच प्रतिस्पर्धा के कोई दो कारण लिखिए जिससे प्रथम विश्व युद्ध शुरू हुआ ।
3. प्रथम विश्व युद्ध के परिणामों की जांच कीजिए ।
4. पश्चिमी शक्तियों ने इटली और जर्मनी के साथ तुष्टीकरण की नीति का पालन किया?
5. इटली और जर्मनी में फासिज्म में उदय के कारणों की जांच कीजिए ।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

4.1

1. अच्छे घर, सफाई कचरे का पुनः चक्रण
2. सुख सुविधाओं में बढ़ोतरी; पदार्थ की बहुलता
3. संयुक्त परिवार का टूटना व्यक्तिगत का प्रोत्साहन
4. कम मजदूरी में उपलब्ध

4.2

1. साम्राज्यवादी प्रवृत्ति भूमि या बाहर क्षेत्र के अधिग्रहण का एक इच्छा के लिए संदर्भित करता है ।
2. कच्चे माल और तैयार माल का साम्राज्यवादी देश उपनिवेशों से लाया और ले जाया जा सकता था ।

4.3

1. ऑस्ट्रिया, जर्मनी, इटली त्रिगुट अन्य गठबंधन ट्रिपल अंततः था ।
2. चार वाल्कन राज्य ऑस्ट्रिया और तुर्की के बीच ।

4.4

1. जिनेवा
2. राष्ट्रपति वूड्रो विल्सन

4.5

1. जर्मनी और इटली
2. न्यूडील

4.6

1. क) हिरोशिमा
ख) नागासाकी
2. संयुक्त राष्ट्र के औपचारिक रूप से 24 अक्टूबर 1945 को संयुक्त राज्य अमेरिका में सैन फ्रांसिस्को सम्मेलन में यथावत गठित किया गया था ।

5. भारत पर ब्रिटिश शासन का प्रभाव : आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक (1757-1857)

18वीं सदी में संसार में एक बड़ी संख्या में महत्वपूर्ण घटनाएँ घटीं। एक ऐसी ही घटना औद्योगिक क्रांति है जो इंग्लैंड में हुई। वह धीरे-धीरे यूरोप के अन्य देशों में भी फैल गई। आपने इंग्लैंड की औद्योगिक क्रांति के बारे में तथा समुद्र और व्यापार मार्गों की खोज के बारे में पढ़ा होगा। 1498 में वास्को दी गामा नामक एक पुर्तगाली ने भारत आने का समुद्री मार्ग खोजा। परिणाम स्वरूप अंग्रेज, फ्रेंच, पुर्तगाली और डच व्यापार के लिए भारत आये। इन्होंने इसे मिशनरी गतिविधियों को भारत में फैलाने के लिए भी इस्तेमाल किया। क्या आप जानते हैं कि भारतीय इतिहास में आधुनिक काल की शुरुआत भारत से इन यूरोपीय शक्तियों के आने से हुई। आप इस पाठ में ब्रिटिश लोगों के भारत में आने और उसके आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में पड़े प्रभाव के बारे में भी पढ़ेंगे।

उद्देश्य

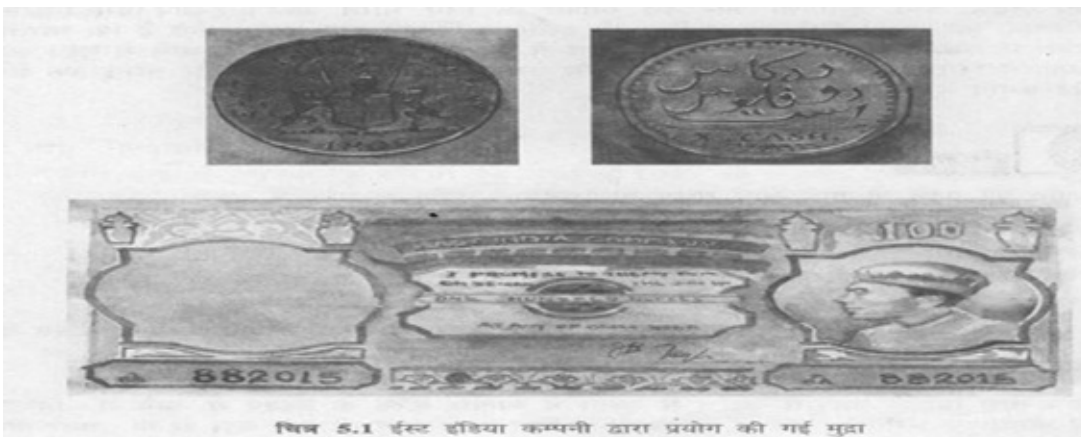
इस पाठ को पढ़ने के बाद आप सक्षम हो जायेंगे:

- ब्रिटिश लोगों के भारत में आने के कारणों पर चर्चा करने में;
- अंग्रेजों द्वारा भारत को उपनिवेश बनाने के विभिन्न तरीकों को पहचानने में;
- ब्रिटिश शासन के दौरान पड़े आर्थिक प्रभावों का अध्ययन करने में;
- भारतीय समाज और संस्कृति पर ब्रिटिश प्रभाव का वर्णन करने में; और
- 1857 के विद्रोह से पहले उनके शासन के तहत विरोध आंदोलनों के कारण को पहचानने में।

5.1 ब्रिटिश के भारत आने के कारण

यूरोपीय तथा ब्रिटिश व्यापारों आरंभ में भारत में व्यापार करने के उद्देश्य से आये थे। ब्रिटिश हुई औद्योगिक क्रांति ने वहाँ के कारखानों के लिए कच्चे माल की मांग बढ़ा दी थी। साथ-साथ

वे अपना तैयार माल भी भारतीय बाजारों में बेचना चाहते थे। भारत ने ब्रिटेन की सभी जरूरतों को पूरा करने के लिए उसे एक ऐसा ही आधार उपलब्ध करवाया। 18वीं सदी में भारत में भी आंतरिक सत्ता के लिए संघर्ष की स्थिति थी और मुगल साम्राज्य की शक्ति भी कम ही रही थी। अतः ब्रिटिश अधिकारियों के पास भारतीय क्षेत्र पर अपनी पकड़ स्थापित करने का अवसर था। उन्होंने कई युद्धों के माध्यम से, थोपी हुई संधियों से, अनुबन्धों से और पूरे देश में विभिन्न क्षेत्रीय शक्तियों के साथ गठजोड़ किया। अपनी नई प्रशासनिक और आर्थिक नीतियों की मदद से सम्पूर्ण देश पर अपना नियन्त्रण दृढ़ बनाया। उनकी भू-राजस्व नीतियों ने किसानों और उनसे राजस्व में बड़ी रकम प्राप्त की। उन्होंने कृषि की विभिन्न फसलों के व्यवसायीकरण पर बल दिया तथा ब्रिटेन के उद्योगों के लिए कच्चा माल की आपूर्ति सुनिश्चित की। मजबूत राजनीतिक नियंत्रण के साथ ब्रिटिश भारत में व्यापार पर एकाधिकार करने में सक्षम हो गए। उन्होंने अपने विदेशी प्रतिद्वंद्वियों को व्यापार में हरा दिया और उनका कोई प्रतिद्विन्दी नहीं रहा। उन्होंने सभी प्रकार के कच्चा माल की बिक्री पर एकाधिकार कर लिया और उसे कम कीमत पर खरीदा जबकि भारतीय बुनकर इसे अत्यधिक मूल्य पर खरीदते थे। अपने स्वयं के उद्योग की रक्षा के लिए ब्रिटेन ने भारतीय माल पर भारी आयात कर लगाया। देश में परिवहन और संचार प्रणाली को सुधारने के लिए विभिन्न निर्देश दिए गए ताकि खेतों से बंदरगाहों तक कच्चा माल और बंदरगाहों से बाजारों तक तैयार माल की आवाजाही आसान हो सके। साथ-साथ अंग्रेजी शिक्षा की भी शुरुआत की गई जो शिक्षित भारतीयों का एक ऐसा वर्ग तैयार करे जो अंग्रेजों को देश पर शासन करने और अपनी राजनीतिक सत्ता सुदृढ़ करने में मदद करे। इन सभी उपायों ने अंग्रेजों को भारत में अपना शासन स्थापित करने, इसे सुदृढ़ करने और जारी रखने में मदद की।



चित्र 5.1 ईस्ट इंडिया कम्पनी द्वारा प्रयोग की गई मुद्रा

चित्र 5.1 ईस्ट इंडिया कम्पनी द्वारा प्रयोग की गई मुद्रा

5.2 भारत में उपनिवेशीकरण के तरीके

यूरोप के नक्शे को देखो; आपको उस पर कई बड़े और छोटे राज्य मिल जाएंगे, जब यूरोप में औद्योगिक क्रांति शुरू हुई इन छोटे राज्यों के पास अपने उद्योगों के लिए कच्चा माल और तैयार माल के लिए बाजार नहीं था। अब इन देशों ने एशिया और अफ्रीका में बाजार को तलाश करना शुरू कर दिया। इंग्लैंड भारत के साथ व्यापार नियंत्रित करने में सफल रहा और 1600 में ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना की। इस कंपनी को ब्रिटिश सरकार द्वारा समर्थन मिला। इसकी मदद से इंग्लैंड भारतीय उपमहाद्वीप में अपनी क्षेत्रीय सीमाओं का विस्तार करने में सफल हो गया। पहली फैक्ट्री 1613 में सूरत में स्थापित की गई 1615 में सर थामस रो को मुगल सम्राट जहांगीर से आगरा, अहमदाबाद तथा भड़ुच में फैक्ट्री खोलने की अनुमति मिल गई। उनकी महत्वपूर्ण बस्ती दक्षिणी तट पर मदरास थी, जहां उन्होंने एक किले बंद फैक्ट्री का निर्माण किया जो सेंट जॉर्ज किला कहा जाता है। कंपनी ने यह पहली मालिकाना जीत प्राप्त की थी। भारत की धरती पर धीरे-धीरे कंपनी अपने व्यापार का विस्तार करने लगी। उस समय तक कंपनी भारत में अच्छी तरह से स्थापित हो गई और वह भारत से अन्य प्रतिद्वंद्वी यूरोपीय शक्तियों का उन्मूलन करने में सफल रही। अब उन्होंने शासकों के राजनीतिक मामलों में भी हस्तक्षेप शुरू कर दिया।



चित्र 5.2 आज के यूरोप का मानचित्र

क्या आप जानते हैं

1696 में कंपनी ने बंगाल में तीन गांवों को एक शहर में विकसित किया और इसे कोलकाता नाम दिया। उन्होंने इस शहर के चारों ओर एक किले का निर्माण किया जो फोर्ट विलियम के नाम से जाना जाता है।

19वीं शताब्दी के भारत के नक्शे को देखो; आपने क्या देखा? आप कई बड़े तथा छोटे स्वतंत्र राज्यों को देखेंगे। इन राज्यों के अपने स्वयं के शासक, अर्थव्यवस्था, भाषा और संस्कृति थी। इन राज्यों में लगातार एक दूसरे के साथ युद्ध होते रहते थे। यह आश्चर्य की बात नहीं है कि वे यूरोपीय शक्तियों के विशेष रूप से ब्रिटिश के लिए एक आसान शिकार बन गए। वह प्लासी (1757) और बक्सर (1764) की लड़ाई थी। जहाँ अंग्रेजों को भारत में शासन स्थापित करने में सफलता प्राप्त हुई। इन लड़ाइयों के माध्यम से ब्रिटिश राजनीतिक सत्ता के एक लंबे युग की शुरुआत हुई। प्लासी की लड़ाई बंगाल में अंग्रेजों ने जीती थी उन्होंने मीरजाफर को बंगाल का नवाब बना दिया और बदले में एक विशाल राशि तथा 24 परगना के क्षेत्र प्राप्त किए। लेकिन मीरजाफर उन्हें

और अधिक भुगतान करने में सक्षम नहीं था। इसके परिणामस्वरूप मीर कासिम जो एक मजबूत शासक था उसे नबाव बना दिया। मीर कासिम अधिक पैसा या नियंत्रण के लिए अंग्रेजों की मांगों को पूरा करने के लिए तैयार नहीं था, अतः उसे हटा दिया और मीरजाफर को पुनः नबाव बनाया दिया गया। मीर कासिम ने अवध के नवाब, शिराज-उद् दौला और मुगल



चित्र 5.3 19वीं सदी के भारत का मानचित्र

बादशाह आलम द्वितीय के साथ मिलकर अंग्रेजों के खिलाफ 22 अक्टूबर 1764 में बक्सर नामक जगह पर लड़ाई लड़ी उसकी हार निर्णयात्मक रही।

यद्यपि अंग्रेजों ने सफलतापूर्वक बंगाल पर नियंत्रण प्राप्त किया, फिर भी सम्पूर्ण भारत में ब्रिटिश शासन स्थापित करना एक सरल काम नहीं था। बड़ी संख्या में क्षेत्रीय शक्तियों ने अंग्रेजों के सीमा विस्तार के प्रयासों का विरोध करने की कोशिश की। अब हम विभिन्न भारतीय राज्यों के विरुद्ध अंग्रेजों द्वारा किए गए युद्धों के बारे में पढ़ेंगे।

(i) आंग्ल-मैसूर युद्ध

हैदरअली और उसके पुत्र टीपू सुल्तान के सक्षम नेतृत्व में मैसूर एक शक्तिशाली राज्य के रूप में 18वीं सदी के उत्तरार्ध में उभरा। अंग्रेजों और मैसूर के बीच चार युद्ध हुए और अंत में चौथे आंग्ल-मैसूर युद्ध 1799 में वीरतापूर्ण हार और टीपू सुल्तान की मृत्यु से मैसूर और अंग्रेजों के बीच संघर्ष का एक गौरवशाली अध्याय समाप्त हो गया। कनारा, कोयम्बटूर और श्रीरंगापटनम जैसे बड़े बंदरगाह अंग्रेजों द्वारा सुरक्षित अधिकार में ले लिए गए।



चित्र 5.4 टीपू सुल्तान

चित्र 5.4 टीपू सुल्तान

(ii) एंग्लो-मराठा युद्ध

अठारहवीं सदी के उत्तरार्ध में मराठे पश्चिमी और मध्य भारत में एक और दुर्जेय शक्ति बन गए थे। लेकिन आपस में सत्ता के लिए संघर्ष के कारण अंग्रेजों को उनके आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करने का अवसर मिला। सहायक संधि (जिसके बारे में आप 5.2.1 में पढ़ेंगे) अंग्रेजों और मराठों के बीच कई युद्धों का कारण बनी।

तीसरा एंग्लो-मराठा युद्ध (1817-1819) उन दोनों के बीच अन्तिम युद्ध था। अंग्रेजों ने पेशवा को हराकर गद्दी और उसके सभी प्रदेशों पर कब्जा कर लिया। पेशवा की पेंशन बन्द कर दी और उसे उत्तर प्रदेश में कानपुर के निकट बिठूर भेज दिया।

(iii) आंग्ल सिख युद्ध

उत्तर-पश्चिम भारत में, सक्षम नेता महाराजा रणजीत सिंह (1792-1839) को नेतृत्व में सिख एक प्रभावी राजनीतिक और सैन्य शक्ति बन ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध एक खतेरे के रूप में उभरे।

अतः ब्रिटिश सिखों को नियंत्रण करना चाहते थे। रंजीत सिंह की 1839 में मृत्यु के बाद, पंजाब में अराजकता फैल गई। अंग्रेजों ने इस का लाभ लिया और प्रथम आंग्ल-सिख (1845) युद्ध छेड़ दिया जो सिखों की हार के साथ समाप्त हो गया। द्वितीय आंग्ल-सिख (1849) युद्ध में, अंग्रेजों ने सिखों को गुजरात (चिनाव नदी के पास के शहर) की लड़ाई में हरा दिया। सिखों के प्रमुख ने आत्मसमर्पण कर दिया और पंजाब पर डलहौजी द्वारा कब्जा कर लिया गया। महाराजा रंजीत सिंह के पुत्र महाराजा दलीप सिंह को पेंशन देकर इंग्लैंड भेज दिया गया।



चित्र 5.5 महाराजा रंजीत सिंह

चित्र 5.5 महाराजा रंजीत सिंह

5.2.1 अन्य विजय अधिग्रहण और अनुबंधों की प्रणाली

1761 में मराठों के विरुद्ध पानीपत की तीसरी लड़ाई पहले से ही भारत में अंग्रेजों की सफलता के लिए मंच प्रदान कर चुकी थी जल्द ही कई और अधिक देशी राज्य ब्रिटिश नियंत्रण के अंतर्गत आ गए। यह सब एक प्रणाली द्वारा किया गया जिसे विलय की नीति और सहायक संधि कहा जाता है इसके द्वारा स्वतंत्र राज्यों को एक बड़ी संख्या में ब्रिटिश साम्राज्य को कब्जे में लिया गया। कहा गया है कि ये राज्य ब्रिटिश संरक्षण का आनन्द ले रहे थे लेकिन उनके शासक सिंहासन के लिए एक प्राकृतिक वारिस छोड़े बिना मर गए, उनके गोद लिए बेटे की संपत्ति या पेंशन अंग्रेजों ने ज्यादा समय तक नहीं दी इस तरह डलहौजी ने सतारा मराठा राज्य (1848), सबलपुर (1850) उदयपुर (1852), नागपुर (1853), झांसी (1854) और अवध (1856) पर कब्जा कर लिया। सहायक संधि में जो भारतीय राज्य अंग्रेजों के अधीन थे उनकी सेनाओं को निलंबित कर दिया गया और उन्हें ब्रिटिश सैनिकों का बनाये रखने के लिए मजबूर किया। उनके विदेशी कार्य पर अपना नियंत्रण दिया और उनके किसी भी प्रयोजन आर्थिक या राजनीति के लिए अन्य विदेशी राज्यों के साथ गठजोड़ करने का अधिकार छीन लिया गया। बदले में उन्हें अपने प्रतिद्वंद्वियों से अंग्रेजों द्वारा संरक्षण दिया गया।

अधिग्रहण की नीति ने न केवल भारतीय शासकों को भी प्रभावित किया बल्कि परंपरागत विद्वानों और पुरोहित वर्ग जो शासकों, मुखियों, अमीरों और जमींदारों पर निर्भर थे से अपना संरक्षण खो दिया और इस प्रकार वे निर्धन हो गए।

19वीं शताब्दी के मध्य तक कोई भी भारतीय शक्ति अंग्रेजों का विरोध या उन्हें चुनौती देने लायक नहीं रही। असम, अराकान उत्तर-पूर्वी क्षेत्र, नेपाल और वर्मा के कुछ भागों पर (1818 से 1826) से पहले ही कब्जा कर लिया गया। अंग्रेजों ने 1843 में सिंध पर कब्जा कर लिया।



चित्र 5.6 झांसी की रानी लक्ष्मीबाई

चित्र 5.6 झांसी की रानी लक्ष्मीबाई

कल्पना कीजिए कि आप 15 वर्ष के हैं और 19वीं सदी के भारत की रियासत के शासक के भतीजे और भतीजी हैं। आपके चाचा की अपनी खुद की कोई भी औलाद नहीं है और वे आप को सिंहासन का वारिस बना रहे हैं। यदि आपके अपने राज्य में अंग्रेजों की विजय की नीति का सिद्धांत अगर लगाया जाए तो आप क्या कदम उठाएंगे अगर आपके चाचा के बाद आपको वे उत्तराधिकारी बनने की अनुमति नहीं दे तो?

1. सही उत्तर पर निशान लगाएँ:-

(क) भारत में ब्रिटिश इस रूप में आये थे?

(i) विजेता

(ii) यात्री

(iii) आक्रमणकारी

(iv) व्यापारी

(ख) मीर जाफर नवाब थे?

(i) मैसूर

(ii) पंजाब के

(iii) बंगाल के

(iv) चीन के

2. ब्रिटिश भारत क्यों आए? कम से कम दो कारण दीजिए?

3. अंग्रेजों ने देशी राज्यों के अधिग्रहण के लिए कौन से दो मुख्य तरीके अपनाए?

5.3 आर्थिक प्रभाव

औद्योगिक क्रांति ने अंग्रेजी व्यापारियों की प्रशिया, अफ्रीका और अमेरिका के देशों से प्रचुर मात्रा में पूंजी इकट्ठा करने में मदद की थी। अब वे इस धन का उपयोग उद्योग लगाने व भारत में व्यापार करने में लगाना चाहते थे। आज जो हम वस्तुओं का मशीनों से बड़ी मात्रा में उत्पादन देखते हैं, की शुरुआत औद्योगिक क्रांति के माध्यम से शुरू हुई थी, जो 18वीं सदी के अंत में और 19वीं सदी के आरंभ में इंग्लैंड में हुई। इससे तैयार माल के उत्पादन में व्यापक बढ़ोतरी हुई। ईस्ट इंडिया कंपनी को औद्योगिक और वित्तीय आधार फैलाने में मदद मिली। इस समय इंग्लैंड में उत्पादकों का एक ऐसा वर्ग था जो व्यापार की तुलना में वस्तुओं के उत्पादन से अधिक कमाता था। यह वर्ग भारत से कच्चे माल के आयात तथा तैयार माल के भारत निर्यात में अधिक रुचि रखता था। 1793 तथा 1813 के मध्य ब्रिटिश निर्माताओं ने कम्पनी के विरुद्ध एक अभियान चलाया जिससे उसका व्यापार पर से एकाधिकार समाप्त हो जाए। परिणामस्वरूप उन्होंने भारतीय व्यापार पर ईस्ट इंडिया कम्पनी के एकाधिकार का उन्मूलन करने में सफलता प्राप्त कर ली। इससे भारत औद्योगिक इंग्लैंड का आर्थिक उपनिवेश बन गया। आइए अब हम भारतीय उद्योग एवं व्यापार पर पड़े प्रभाव के विषय में ज्यादा पढ़ें।

5.3.1 वस्त्र उद्योग और व्यापार

पहले भारतीय हथकरघा उत्पादों का यूरोप में एक बड़ा बाजार था। भारतीय वस्त्र जैसे रेशम, कपास, लिनन और ऊनी माल के लिए पहले से ही एशिया और अफ्रीका में बाजार था। इंग्लैंड में औद्योगिकरण के आने के साथ वहां वस्त्र उद्योग महत्वपूर्ण बन गया। अब ब्रिटेन और भारत के बीच कपड़ा व्यापार की दिशा पलट गई। भारतीय बाजार में अंग्रेजी कारखानों से मशीन के बने कपड़े बड़े पैमाने पर आयात होने लगे। इंग्लैंड में मशीनों से निर्मित उत्पादों का बड़ी मात्रा में आयात भारत के उद्योगों के लिए खतरा बन गया क्योंकि ब्रिटिश माल को सस्ती कीमत पर बेचा जाता।

अंग्रेज भारत में अपने उत्पाद कम मूल्यों पर बेचने में सफल रहे क्योंकि विदेशी वस्तुओं का भारत में बिना कोई शुल्क दिये आने दिया जाता था। वहीं दूसरी ओर भारतीय हस्तशिल्प पर भारी कर लगाए जाते थे, जब उन्हें निर्यात किया जाता था। इसके अतिरिक्त उद्योगपतियों के दबाव में ब्रिटिश सरकार ने एक सुरक्षात्मक टैरिफ भारतीय वस्त्रों पर लगाया। इसके कारण कुछ वर्षों के भीतर ही भारत कच्चे कपास और कपड़े का आयातक बन गया।

इस बदलाव का भारतीय हथकरघा और बुनाई उद्योग पर बड़ा प्रभाव हुआ जो उसके पतन का कारण बना। इसने बुनकरों के एक बड़े समुदाय को बेरोजगार बनाया। वे शहर छोड़कर चले गए और खेतिहर मजदूरों के रूप में गांव में भूमि पर काम करने लगे इसने ग्रामीण अर्थव्यवस्था और

आजीविका पर दबाव बढ़ा दिया। इस प्रक्रिया में भारतीय हथकरघा उद्योग को आसमान परतियोगिता का सामना करना पड़ा बाद में इसे भारतीय राष्ट्रवादी नेताओं ने अनऔद्योगीकरण के रूप में करार दिया।

क्या आप जानते हैं

ड्यूटी खरीदे या बेचे जाने वाले माल पर जो 'कर' सरकार को अदा किया जाता है, ड्यूटी कहते हैं। टैक्स सरकार द्वारा आय, सम्पत्ति और बिक्री पर लगाया गया कर।

आयात कर या शुल्क अंकित होता है जो आयात या निर्यात पर लगाया जाता है।

अंग्रेजों का मुख्य उद्देश्य भारत को ब्रिटिश माल के उपभोक्ता रूप में बदलना था। इसके परिणामस्वरूप भारतीय कपड़ा, धातु का काम, कांच, कागज आदि उद्योग खत्म हो गए। 1813 तक भारतीय हस्तशिल्प ने अपने विदेशी तथा घरेलू बाजार को खो दिया। भारतीय माल ब्रिटिश कारखानों में निर्मित उत्पादों के साथ प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकता था, जो मशीनों के द्वारा बनाया जाता था। ब्रिटेन ने एकाधिकार करके युद्ध और औपनिवेशीकरण के माध्यम से बाजार पर कब्जा कर लिया। वे भारतीय शासकों, व्यापारियों, जमींदार और यहाँ तक की आम लोगों से रुपया उगाहने लगे। यह स्पष्ट था कि अंग्रेजों की आर्थिक नीतियाँ ईस्ट इंडिया कंपनी और बाद में ब्रिटिश साम्राज्य के हितों के लिए थी।

बहरीयार गरेरिया खानबदोश की केस स्टडी

“बिहार गया जिले में भेड़ के 75 परिवारों के समुदाय ने धन की कमी के कारण कंबल बुनना बंद कर दिया” ऐसा संडे ट्रिब्यून स्पेक्ट्रम नामक अखबार में 11 मार्च 2012 को छपा।

एक बुनकर कहते हैं, “हम बाजार में बेचे जा रहे कम्बलों के साथ प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकते।” एक अन्य का कहना है, “हम गांवों में अपने उत्पादों को बेचने के लिए मजबूर हैं क्योंकि शहरी बाजार तक हमारी पहुंच नहीं है।”

ब्रिटिश भारत के दौरान और वर्तमान भारत में बुनकरों की स्थिति की तुलना करें। यह एक जैसी है या अलग? आप इस स्थिति में सुधार के लिए क्या सुझाव देना चाहोगे?

5.3.2 भूमि राजस्व नीति और भूमि निपटान

प्राचीन काल से लोगों के लिए आजीविका का मुख्य स्रोत कृषि था इसलिए सारे संसार में ‘भूमि कर’ सभी सम्राटों के लिए राजस्व का मुख्य स्रोत था। 18वीं सदी में भारतीय लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि था। ब्रिटिश शासन के दौरान भूमि राजस्व बढ़ता गया। इसके लिए कई कारण थे। शुरू में ब्रिटिश भारत के साथ व्यापार करने के लिए आये थे। धीरे-धीरे वे भारत के विशाल क्षेत्र को जीत लेना चाहते थे जिसके लिए उन्हें धन की बहुत जरूरत थी। उन्हें व्यापार एवं कंपनी की परियोजनाओं तथा प्रशासन को चलाने के लिए रुपयों की जरूरत थी। ब्रिटिश भू-राजस्व व्यवस्था किसानों के कठिनाईयों का कारण बने। वे अपनी नीतियों और युद्ध अभियानों के लिए किसानों से धन निकलवाते थे। प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष तरीका से भी राजस्व इकट्ठा किया जाता था। इससे प्रभावित लोग अपनी दैनिक जरूरतों को भी पूरा नहीं कर सकते थे क्योंकि उन्हें जमीन मालिकों और उनके लगान अधिकारियों को लगान कर देना पड़ता था। स्थानीय प्रशासन ग्रामीण गरीबों को राहत और प्राकृतिक न्याय प्रदान करने में विफल रहा।

लार्ड कोर्नवालिस ने 1793, में बंगाल और बिहार में स्थायी बंदोबस्त की शुरुआत की। इसमें जमींदारों को सरकारी खजाने में पैसे की एक निश्चित राशि जमा करनी थी। बदले में वे भूमि के वंशानुगत मालिकों के रूप में पहचाने गये। इससे जमींदार भूमि का मालिक बन गया। उसे राजस्व को निश्चित समय की अवधि में कम्पनी को भुगतान करना होता था। जिससे ब्रिटिश आर्थिक रूप से सुरक्षित बन गए। अब वे जानते थे कि राज्य में कितना राजस्व आ रहा था। जमींदार को भी पता था कि कितना राजस्व भुगतान किया जाना था। स्वयं के लिए अधिशेष राजस्व प्राप्त करने के लिए किसानों से उत्पादन बढ़ाने के लिए कहा। परन्तु, अगर जमींदार निश्चित समय पर राजस्व को भुगतान करने में विफल होता तो उसे जमीन को दूसरे जमींदार को बेच दिया जाता था। इससे अंग्रेजों को लाभ हुआ। लाभ के रूप में जमींदारों का एक नया वर्ग उभरा जो उनके राजनीति सहयोगी बन गया। वे जरूरत के समय में ब्रिटिश को समर्थन देते और उनके और किसानों के बीच एक (बफर) मध्यस्थ का काम करते। वास्तव में इस वर्ग ने स्वतंत्रता आंदोलन के खिलाफ अंग्रेजों की मदद की।

1822 में अंग्रेजों ने उत्तर-पश्चिमी प्रांत, पंजाब, गंगा घाटी और मध्य भारत के कुछ हिस्सों में महलबारी बंदोबस्त शुरू किया। इस के आधार एक महल या संपत्ति का उत्पाद होता था - जो शायद एक गाँव या गाँवों के एक समूह के बराबर होता था। महल के सभी मालिक संयुक्त रूप से सरकार द्वारा मूल्यांकन राजस्व की राशि के भुगतान के लिए जिम्मेदार थे। दुर्भाग्य से यह किसानों के लिए लाभकारी नहीं था क्योंकि राजस्व की मांग बहुत अधिक थी।

रैयतवारी बंदोबस्त 19वीं सदी के शुरुआत में बम्बई और मद्रास प्रेसीडेंसी के कई भागों में शुरू किया गया था। यहां भू-राजस्व रैयत या किसानों पर सीधे लगाया गया था, किसान स्वयं वास्तव में

जमीन पर काम करता था। और जमीन के मालिक के रूप में पहचाना गया वह राजस्व का भुगतान करने में सक्षम था। लेकिन उच्च राजस्व की मांग के कारण उसका शोषण जारी रहा।

5.3.3 कृषि का व्यवसायीकरण

भारत में ब्रिटिश नीतियों का एक अन्य प्रमुख आर्थिक प्रभाव चाय, कॉफी, इंडिगो, अफीम, कपास, जूट, गन्ना एवं तिलहन जैसी वाणिज्यिक फसलों के परिचय से पड़ा। विभिन्न वाणिज्यिक फसलों को विभिन्न प्रकार के अलग उद्देश्यों के साथ प्रस्तुत किया गया। भारतीय अफीम को चीनी, चाय

व्यापार संतुलन के लिए इस्तेमाल किया गया। जो बाद में ब्रिटेन के पक्ष में हो गया। अफीम का बाजार सख्ती से अंग्रेज व्यापारियों द्वारा नियंत्रित किया गया जिसमें भारतीय उत्पादकों के लिए लाभ की ज्यादा गुंजाइश नहीं छोड़ी। भारतीयों को नील उत्पादन करने और इसे अंग्रेजों की तय शर्तों पर बेचने के लिए मजबूर किया गया। नील को इंग्लैण्ड भेज दिया जाता था और ब्रिटिश कपड़े की रंगाई के रूप में इस्तेमाल किया। सभी किसानों को नील को अपनी जमीन के 3/20 भाग पर उगाने के लिए मजबूर किया गया दुर्भाग्य से नील की खेती कुछ वर्षों के लिए भूमि को बंजर बना देती थी। इससे किसान इसे उगाना नहीं चाहते थे। चाय बागानों का स्वामित्व अक्सर बदल जाता था। इन बागानों पर मजदूर कठिनाइयों के अंदर काम करते थे।

कृषि के व्यवसायीकरण और स्वामित्व के हस्तांतरण की गति से देश में भूमिहीन मजदूरों की संख्या बढ़ गई। इससे एक बड़ी संख्या में सौदागर, व्यापारियों और दलालों ने इस स्थिति में किसानों का शोषण किया। किसान अब फसल कटाई के दौरान अपनी खेती को बेचने के लिए उनपर निर्भर थे क्योंकि किसानों अब वाणिज्यिक फसल उगाते थे। जिससे खाद्यान्न उत्पादन नीचे चला गया। अतः कम अनाज से अकाल की स्थिति बन गई। इसके बारे में विस्तार से आप आने वाले अध्याय में पढ़ेंगे। हमारे देश से धन की भारी राशि विभिन्न आर्थिक नीतियों की वजह से ब्रिटेन भेजी गई। अतिरिक्त वित्तीय बोझ सैन्य और नागरिक कर्मचारियों के वेतन, पेंशन और प्रशिक्षण पर अंग्रेजों द्वारा नियोजित व्यय करने के कारण भारत पर डाला जाने लगा। यदि इस धन को भारत में निवेश किया जाता तो देश की अर्थव्यवस्था में काफी सुधार आ सकता था। अंग्रेजों द्वारा लागू आर्थिक नीतियों ने भारतीय समाज की सामाजिक संरचना बदल दी।

5.3.4 धन उधार देने वाले नए वर्ग का उदय

राजस्व की समयावधि और अत्यधिक मांग ने किसानों का साहूकारों से ऋण लेने के लिए मजबूर किया। ये साहूकार अक्सर उच्च ब्याज लेकर किसानों का शोषण करते थे। अक्सर लेखांकन में जाली हस्ताक्षर और अंगूठे के छापों आदि अनुचित साधनों का प्रयोग करते थे। अंग्रेजों की नई कानून प्रणाली और नीति केवल साहूकारों या स्थानीय व्यापारियों या जमींदारों की सहायता करती थी। ज्यादातर मामलों में किसान पूर्ण ब्याज के साथ ऋण का भुगतान करने में विफल रहते थे। इस प्रकार धीरे-धीरे पैसा उधार देने वालों के हाथ से उनकी भूमि चली गई।

5.3.5 नये मध्य वर्ग का उदय

भारत में ब्रिटिश शासन का एक प्रमुख प्रभाव यह पड़ा कि एक नए मध्यम वर्ग का उदय हुआ। ब्रिटिश व्यावसायिक हितों की वृद्धि के साथ कुछ भारतीय लोगों को काम के छोटे-छोटे नए अवसर मिले। उन्होंने ज्यादातर एजेंटों और मध्यस्थों के रूप में ब्रिटिश व्यापारियों के लिए काम किया और बहुत धन कमाया। एक नया अभिजात वर्ग जो स्थायी बंदोबस्त की शुरुआत के बाद अस्तित्व में आया उसने भी अपना एक नया वर्ग बना लिया, पुराने जमींदारों ने अपनी भूमि पर स्वामित्व खो दिया और उनकी भूमि को कई मामलों में जमीन मालिकों के एक नये वर्ग के द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया गया। इन लोगों में से कुछ ने अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त की और उनका एक नया अभिजात वर्ग बन गया। ब्रिटिश सत्ता के प्रसार के साथ रोजगार के नये अवसर आए। भारतीय समाज

में नयी कानूनी अदालतों, सरकारी अधिकारी और वाणिज्यिक एजेंसियों की शुरुआत हुई। अंग्रेजी शिक्षित लोगों को स्वाभाविक रूप से अपनी उपनिवेशिक शासकों से आवश्यक संरक्षण मिला। इस प्रकार अंग्रेजों ने भूस्वामियों के अलावा एक नया पेशेवर और सेवा करने वाला मध्यम वर्ग भी बनाया।

5.3.6 परिवहन और संचार

उस समय भारत में परिवहन का साधन बैलगाड़ी, ऊँट, और पीठ पर सामान ढोने वाले अन्य जानवर ही थे। दूसरी तरफ इंग्लैण्ड को रेलवे की जरूरत थी जो निर्यात बंदरगाहों के साथ उत्पादक क्षेत्रों को जोड़ सके और ब्रिटिश सामान को देश के विभिन्न भागों तक पहुंचा सके। आज आप जो विशाल रेलवे का नेटवर्क देख रहे हैं वो अंग्रेजों द्वारा बनाया गया है। ब्रिटिश बैंकों और निवेशकों ने अपनी पूंजी रेलवे के निर्माण में लगाई। ब्रिटिश पूंजीपतियों को दो महत्वपूर्ण तरीके से लाभ हुआ। पहला व्यापार की वस्तुओं में, व्यापार करना बहुत आसान हो गया और बंदरगाहों के साथ आंतरिक बाजार को जोड़ना भी लाभदायक रहा। दूसरे, रेल इंजन, डिब्बे और रेल लाईनों के निर्माण के लिए पूंजी ब्रिटेन से आयी। ब्रिटेन पूंजीपतियों को रेलवे में निवेश से सरकार द्वारा 5 प्रतिशत की न्यूनतम लाभ की गारण्टी मिली। इन कंपनियों को 90 साल के पट्टे के साथ भूमि दी गई।

हालांकि रेलवे ब्रिटिश व्यापार के लाभ के लिए बनाई गई थी परन्तु रेलवे ने देश को राष्ट्रीय जागरण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हालांकि ब्रिटिश ने कभी सोचा नहीं था कि व्यापक परिवहन नेटवर्क और बेहतर शिक्षा लोगों और विचारों को आपस में जोड़ेगी।

ब्रिटिश शासन के दौरान भारत ने स्वतंत्रता के विचारों, समानता, मानव अधिकार, विज्ञान और तकनीकी पश्चिम से लिया। आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में तेजी हुई। अब हम आधुनिक विचार के भारतीय समाज पर प्रभाव के बारे में पढ़ेंगे।

क्या आप जानते हैं

सबसे पहली रेलवे लाइन रेड हिल में रेल रोड लाइन मदरास में थी। इसे 1837 में ग्रेनाइट पत्थर को ले जाने के लिए खोला गया। जबकि 1853 में बम्बई से ठाणे के लिए यात्री सवारी गाड़ी इसी वर्ष में डलहौजी ने भारत में कलकत्ता से आगरा के लिए तार लाइन तथा डाक सेवा आरम्भ की।

1. सही या गलत बताएँ और अपनी राय को साबित करें :

(क) विदेशी माल का ड्यूटी मुक्त प्रवेश, भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए अच्छा था ।

(ख) अंग्रेजों को सभी भूमि बंदोबस्तों से लाभ मिला ।

(ग) नील, चावल, गेहूँ चाय और अफीम पांच प्रमुख वाणिज्यिक फसलें थी जो अंग्रेजों ने शुरू की ।

(घ) धन-उधार देने वालों का एक नया वर्ग बन गया था ।

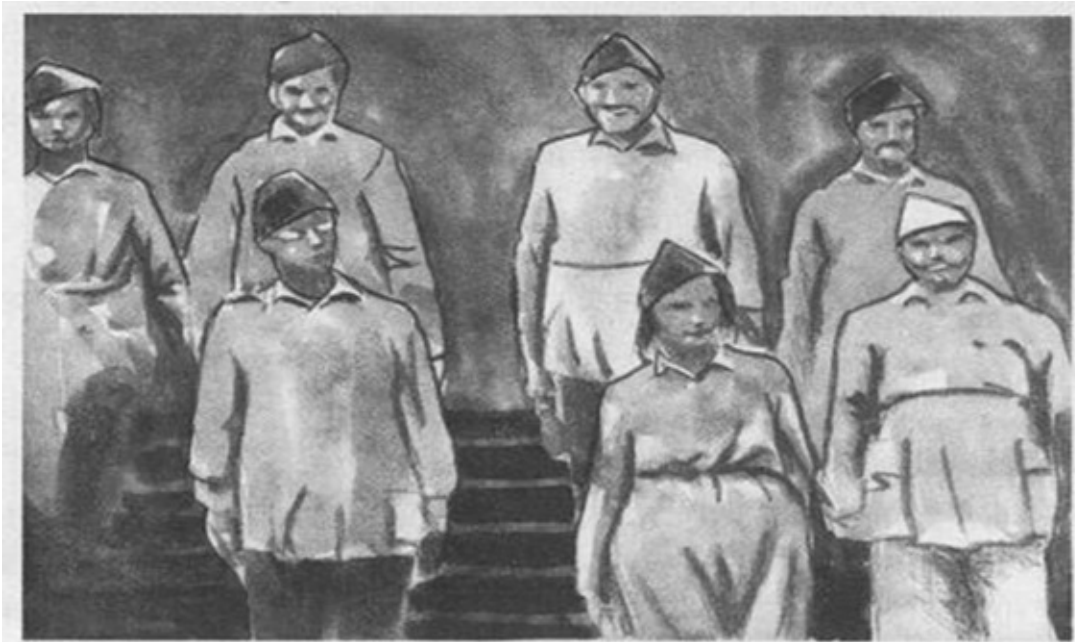
2. अंग्रेजों द्वारा रेलवे के एक व्यापक नेटवर्क का भारत में किन दो कारणों से निर्माण किया गया ।

भारत में अंग्रेजों के आने से समाज में कई परिवर्तन हुए। 19वीं सदी में शुरू हत्या, बाल-विवाह, सती, बहू-विवाह जैसी सामाजिक कुप्रथाओं और कठोर जाति व्यवस्था प्रचलित थी। ये प्रथाएँ मानव की गरिमा और मूल्यों के विरुद्ध थी। जीवन के सभी स्तरों पर महिलाओं से भेदभाव किया जाता था और वे समाज का वंचित वर्ग मानी जाती थी। उनकी अपनी स्थिति में कोई सुधार के अवसर नहीं दिए गए थे। ऊँची जातियों के ब्राह्मण पुरुषों तक ही शिक्षा सीमित रह गई थी। ब्राह्मण वेदों का उपयोग करते थे जो संस्कृत में लिखे गये थे। पुरोहित महंगे अनुष्ठान बलिदान और जन्म या मृत्यु के बाद की रीतियों को करवाते रहते थे।

जब ब्रिटिश भारत आए तो वे स्वतंत्रता, समानता आजादी और मानव अधिकार जैसे विचार के रूप में नए विचार यूरोप के पुनर्जागरण, सुधार आंदोलनों और विभिन्न क्रांतियों से यहां लाए। इन विचारों ने हमारे समाज के कुछ वर्गों के लोगों से कुछ करने के लिए अपील की और देश के विभिन्न भागों में कई सुधार आंदोलनों का नेतृत्व किया। इन आंदोलनों में सबसे आगे दूरदर्शी भारतीयों में राजाराम मोहनराय, सर सैयद अहमद खान, अरूणा आसफ अली और पंडिता रमबाई थे इन आंदोलनों से सामाजिक एकता आई और स्वतंत्रता, समानता की दिशा में प्रयास किए। कई कानूनी उपाय महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए शुरू किए गए। उदाहरण के लिए लार्ड बैटिक ने 1829 में सती प्रथा पर प्रतिबंध लगाया। गवर्नर जनरल ने 1856 में विधवा पुनर्विवाह कानून पारित किया गया। एक कानून 1872 में पारित किया जिसमें अंतर-जाति और अंतर-साम्प्रदायिक विवाह को सहमति दी। 1929 में शारदा अधिनियम को पास करके बाल-विवाह पर रोक लगायी। एक अधिनियम पारित किया गया कि 14 वर्ष से नीचे आयु की लड़की और 18 वर्ष से कम आयु के लड़के की शादी अवैध मानी जाएगी। सभी आंदोलनों ने जाति व्यवस्था और विशेष रूप से अस्पृश्यता की प्रथा की आलोचना की।

समाज सुधारकों के इन प्रयासों का प्रभाव समाज सुधार और धार्मिक संगठनों में तथा राष्ट्रीय आंदोलन में स्पष्ट देखा जा सकता है। महिलाओं को बेहतर शिक्षा, व्यवसाय और सार्वजनिक

रोजगार के अवसर भी मिलने लगे थे। इंडियन नेशनल आर्मी (आईएनए) की कैप्टन लक्ष्मी सहगल, सरोजिनी नायडू एनी बेसेंट, अरूणा आसफ अली और कई अन्य महिलाओं की स्वतंत्रता संग्राम में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका रही।



चित्र 5.7 कैप्टन लक्ष्मी सहगल, माध्यम, सामने पंक्ति में) और अन्य आईएनए अधिकारी नेताजी सुभाष चंद्र बोस (बाएं, आगे की पंक्ति में)

चित्र 5.7 कैप्टन लक्ष्मी सहगल, माध्यम, सामने पंक्ति में) और अन्य आईएनए अधिकारी नेताजी सुभाष चंद्र बोस (बाएं, आगे की पंक्ति में)

5.4. 1 सामाजिक और सांस्कृतिक नीति

ब्रिटिश विशाल लाभ कमाने की नीयत से भारत आये थे। इसका अर्थ है कि बहुत सस्ती दरों पर कच्चे माल को खरीद कर और तैयार माल की बिक्री अधिक कीमतों पर करके लाभ कमाना। ब्रिटिश भारतीयों को शिक्षित और अपनी वस्तुओं के उपभोग के लिए पर्याप्त आधुनिक बनाना चाहते थे। एक सीमा तक कि वे ब्रिटिश हितों के लिए हानिकारक साबित नहीं हों कुछ अंग्रेजों का मानना था कि पश्चिमी विचार आधुनिक और बेहतर थे, जबकि भारतीय विचार पुराने और निम्नतर थे। वास्तव में यह सच नहीं है। भारत के पास पारम्परिक ज्ञान था जो आज भी प्रासंगिक है। इस समय इंग्लैंड में रेडिकल्स का एक समूह था जो भारतीयों की दिशा में एक मानवतावादी विचारधारा रखते थे। वे चाहते थे कि भारत आधुनिक विज्ञान की प्रगतिशील दुनिया का एक भाग बने। लेकिन ब्रिटिश सरकार भारत को तेजी से आधुनिकीकरण के प्रति से सतर्क हो गई। अंग्रेजों ने यह जान लिया था कि अगर धार्मिक विश्वासों और सामाजिक रिवाजों में ज्यादा हस्तक्षेप किया गया तो लोग प्रतिक्रिया करेंगे। वे भारत में अपने शासन को स्थायी बनाना चाहते थे और लोगों के बीच कोई भी प्रतिक्रिया नहीं चाहते थे। इसलिए यद्यपि अंग्रेज सुधारों की बात करते थे, पर वास्तव में उन्होंने आधे-अधूरे मन से कुछ कदम उठाए।

5.4.2 शिक्षा नीति

ब्रिटिश ने भारत में अंग्रेजी भाषा शुरू करने में गहरी रूचि ली। ऐसा करने के लिए उनके पास कई कारण थे। अंग्रेजी भाषा में भारतीयों को शिक्षित करना उनकी रणनीति का एक हिस्सा था। भारतीयों को क्लर्क के रूप में कम मजदूरी पर काम करने के लिए तैयार किया गया जबकि उसी काम

के लिए ब्रिटिश बहुत अधिक वेतन की मांग करते थे। इससे प्रशासन पर व्यय का भार कम पड़ा। उन्होंने भारतीयों का एक ऐसा वर्ग बनाया जो उनके प्रति वफादार थे और दूसरे भारतीयों से सम्बन्ध नहीं रखते थे। इस वर्ग के भारतीयों को ब्रिटिश विचारधारा और संस्कृति की प्रशंसा करना सिखाया। इसके अलावा, वे ब्रिटिश माल के लिए बाजार को बढ़ाने में मदद करेंगे। उन्होंने देश में राजनीतिक अधिकार को मजबूत बनाने के लिए शिक्षा का उपयोग एक साधन के रूप में किया। ऐसा मान लिया है कि कुछ शिक्षित भारतीय जनता में अंग्रेजी संस्कृति फैलाकर और वे शिक्षित भारतीयों के इस वर्ग के माध्यम से शासन करने में सक्षम होंगे। ब्रिटिश केवल उन भारतीयों को नौकरियां देते थे जो अंग्रेजी जानते थे और वे भारतीयों को अंग्रेजी शिक्षा के लिए मजबूर करते थे। इससे शिक्षा जल्द ही अमीरों तथा शहरों में रहने वालों का एकाधिकार बन गयी।

ब्रिटिश संसद ने 1813 में चार्टर अधिनियम जारी किया गया जिसके द्वारा कि भारत में पश्चिमी विज्ञान को बढ़ावा देने के लिए एक लाख रुपये की राशि खर्च की जाएगी। लेकिन जल्द ही विवाद हो गया कुछ लोग केवल पश्चिमी विचारों की वकालत पर खर्च चाहते थे। वहां दूसरों ने परंपरागत भारतीय शिक्षा पर अधिक जोर दिया। कुछ लोगों ने शिक्षा के माध्यम के रूप में (क्षेत्रीय भाषाओं) का उपयोग करने की सिफारिश की, जबकि दूसरे अंग्रेजी के पक्ष में थे। इस भ्रम में लोग अंग्रेजी को एक माध्यम और अध्ययन के लिए एक विषय के रूप में अलग समझने में विफल रहे। पश्चिमी विचारों और साहित्य का शिक्षण केवल अंग्रेजी भाषा के माध्यम से करवाने का निर्णय लिया गया। इस दिशा में बुडस डिस्पैच 1854 ने अन्य निर्देश जारी किये। इसने भारत सरकार से कहा कि जनता की शिक्षा के लिए उसको जिम्मेदारी लेनी होगी। बुडस डिस्पैच के निर्देश के कारण कलकत्ता, मद्रास और बंबई में 1857 में विश्वविद्यालय और सभी प्रांतों में शिक्षा विभाग स्थापित किए गए। प्राथमिक विद्यालयों की बजाय कुछ अंग्रेजी स्कूलों और कॉलेजों को खोला गया। उन्होंने आम जनता की शिक्षा पर ध्यान नहीं दिया। लेकिन वास्तविकता में, यह सब भारतीय लोगों की जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं था।

हालांकि अंग्रेजों को आधे-अधूरे मन से भारत में शिक्षा नीति, अंग्रेजी भाषा का पालन और पश्चिमी विचारों को मानना पड़ा जिसका समाज पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा। कई सुधारक जैसे राजा राम मोहन राय, ईश्वर चन्द विद्यासागर, स्वामी दयानंद सरस्वती, सर सैयद अहमद खान और स्वामी विवेकानंद ने उदारवाद और लोकतंत्र के पश्चिमी विचारों को माना तथा उस समय के गैर-मानवी सामाजिक और धार्मिक प्रथाओं को सुधारने का प्रयत्न किया। हालांकि शिक्षा आम जनता तक नहीं पहुंची लेकिन साम्राज्यवाद विरोधी, राष्ट्रवाद, सामाजिक और आर्थिक समानता के विचारों ने अपनी जड़े राजनैतिक दलों, वाद-विवाद सार्वजनिक मंच और प्रेस के माध्यम से लोगों में जमा ली। अंग्रेजी भाषा और पश्चिमी शिक्षा के प्रसार ने भारतीयों को आधुनिक तर्कसंगत, लोकतांत्रिक, उदार और देशभक्ति के दृष्टिकोण को अपनाने में सहायता की। उन्होंने ज्ञान के नए क्षेत्र जैसे

विज्ञान, मानविकी और साहित्यिक को अपनाया। भारत में शिक्षित लोगों की अंग्रेजी भाषा (लिंगुआ फ़रांका) प्रिय भाषा बन गई। इससे भारतीयों को इंग्लैंड में अध्ययन का अवसर मिला और वहां लोगों ने लोकतांत्रिक संस्थाओं की कार्यप्रणाली को पढ़ा। वहां भारतीयों ने जॉन लोके, रसकिन मिल, रूसो और कई दूसरे अनेक लेखकों के स्वतंत्रता, समानता, भाईचारा, मानवअधिकार और स्वशासन के विचारों को पढ़ा। फ़्रांसीसी और अमेरिकी क्रांतियों और इटली और जर्मनी के एकीकरण से अपने को मजबूत बनाया और विचारों की प्रशंसा की। उन्हें केवर, गैरीबन्दी और माजीनी पसन्द आए। वे सब भारत के लिए इन आदर्शों से प्रेरणा लेने लगे।

मैक्स म्यूलर और एनी बेसेंट जैसे पश्चिमी विचारकों ने विरासत और संस्कृति में गर्व की भावना को बढ़ाने के लिए भारतीय जन-भाषा और साहित्यिक के लिए प्रोत्साहित किया। यह भारतीयों को भारत के सांस्कृतिक अतीत को पुनर्जीवित करने के लिए योग्य बनाना चाहते थे। इसके अतिरिक्त विचारों में राजनीति जागृति और विचारों के आदान-प्रदान करने में प्रेस की महत्वपूर्ण भूमिका उल्लेखनीय है। समाचार पत्र तथा पत्रिकाओं ने लोगों को अपने विचारों और समस्याओं को कहने का अवसर दिया। इसी तरह उपन्यास, नाटक, लघु कहानी, कविता, गीत, नृत्य, थिएटर, कला और सिनेमा आदि को औपनिवेशिक शासन के प्रति विरोध व्यक्त करने के लिए प्रयोग किया गया। ये लोगों की भाषा में उनके दैनिक जीवन के सुख और दुख का वर्णन करते थे। समाचार पत्र और पत्रिकाओं के साथ-साथ वे आत्मविश्वास, आत्म सम्मान, जागरूकता और देशभक्ति की भावनाओं को बढ़ावा दे रहे थे। जिससे राष्ट्रीय चेतना की एक भावना विकसित हुई।

क्या आप जानते हैं

इंडियन पीपुल्स थिएटर एसोसिएशन (इप्टा) 1943 में स्थापित किया गया। इसने संगीत को एक अभिन्न हथियार की तरह असहमति और प्रतिरोध व्यक्त करने के लिए प्रयोग किया। इसमें शोषण के प्रति जागरूकता से लेकर, किसानों के अनवरत बलिदान 1857 के विद्रोह और अमृतसर में जलियावाला बाग में मारे गए लोगों के लिए गाने गाये गए। युद्ध और हिंसा की अर्थहीनता भारत के विभाजन के खिलाफ विरोध को अपनी गीतों के माध्यम से गाकर बताया।

ब्रिटिश ने कई रणनीतियाँ अपने नियम को प्रभावी करने के लिए बनाई। आरम्भिक समय में, भारत में वारेन हेस्टिंग्स, विलियम जोन्स, जोनाथन डंकन आदि जैसे ब्रिटिश प्रशासकों ने भारत के प्राचीन अतीत की महिमा को जाना। इन विद्वानों और प्रशासकों को एशिया की भाषा का ज्ञान कहा गया। उन्होंने सोचा कि भारतीय भाषाओं साहित्य और संस्कृति का ज्ञान उन्हें भारत के शासन को आसानी से चलाने में मदद देगा। महत्वपूर्ण संस्थान जो उनके प्रयासों से पहचान में आए थे वॉरेन हेस्टिंग्स (1781) द्वारा कलकत्ता में मदरसे की स्थापना की, बंगाल की एशियाटिक सोसाइटी की स्थापना विलियम जोन्स ने (1784) में की बनारस में संस्कृत कॉलेज की स्थापना जोनाथन डंकन (1794) में की और फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना (1800) में की। विशेष रूप से एशियाटिक सोसाइटी और फोर्ट विलियम कॉलेज भारतीय संस्कृति, भाषा और साहित्य अध्ययन का मुख्य केन्द्र बन गया। पहली बार प्राचीन संस्कृत के कालिदास जैसे लेखकों की महान कृति का अनुवाद अंग्रेजी के माध्यम से विश्व में जाना गया।

इस अवधि के दौरान कुछ व्यक्तियों ने भारतीय संस्कृति, ज्ञान और परम्परा की महिमा को उजागर करने में भूमिका निभाई थी। कुछ व्यक्तियों को नीचे सूचीबद्ध किया गया है उनका योगदान संसार में जाना जाता है। उनके विषय में अधिक जानकारी के लिए पुस्तकालय/इंटरनेट पर खोज करें।

1. आर्यभट्ट —

2. चरक —

3. मैत्रेयी —

4. गार्गी —

आप कैसे सोचते हो कि भारतीयों को अपने अतीत के इतिहास पर गर्व करने के लिए और आत्म सम्मान पाने में यह सहायता करता है।

5.4.3 सुधार आंदोलन के प्रभाव

सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलनों ने राष्ट्रीय आंदोलन किस प्रकार नेतृत्व किया? सुधारकों की लगातार प्रयासों से समाज पर भारी प्रभाव पड़ा। धार्मिक सुधार आंदोलनों ने भारतीयों के मन में अधिक से अधिक आत्मविश्वास एवं आत्मसम्मान और अपने देश के लिए गर्व की भावना डाली। इन सुधार आंदोलनों से अनेक भारतीय ने महसूस किया है कि आधुनिक विचारों और संस्कृति का भारतीय सांस्कृतिक धारा में समेकित करके आत्मसात किया जा सकता है उन्होंने देशवासियों को बताया कि सभी आधुनिक विचार भारतीय संस्कृति और मूल्यों के विरुद्ध नहीं हैं। आधुनिक शिक्षा की शुरुआत ने भारतीयों को जीवन के लिए एक वैज्ञानिक और तर्कसंगत दृष्टिकोण दिया। लोगों को भारतीयों के रूप में अपनी पहचान के लिए और अधिक जागरूक किया। जो अंततः भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में ब्रिटेन के खिलाफ एकजुट संघर्ष के लिए जिम्मेदार था।

5.4.4 ब्रिटिश प्रशासन और न्यायिक प्रणाली

भारतीयों को ब्रिटिश प्रशासन की नई प्रणाली को समायोजित करने में कठिनाई हुई। भारतीय राजनीतिक अधिकारों से वंचित थे और ब्रिटिश अधिकारी उन से अवमानना के साथ व्यवहार करते थे। भारतीयों को प्रशासनिक और सैन्य सभी उच्च पदों से बाहर रखा गया। अंग्रेजों ने भारत में कानून और न्याय की एक नई प्रणाली की शुरुआत की। एक श्रेणीबद्ध सिविल और आपराधिक अदालतों को स्थापित किया गया। कानूनों के कोड बनाए गये तथा कार्यपालिका से न्यायपालिका को अलग करने का प्रयास किया गया। भारत में कानून के शासन को स्थापित करने के प्रयास किए गए। लेकिन ब्रिटिश भारतीयों के अधिकारों और स्वतंत्रता के साथ हस्तक्षेप कर रहे थे तथा अपनी निर्णायक शक्तियों का आनन्द ले रहे थे। कानूनी आदालतें भी आम लोगों के लिए सुलभ नहीं थी। न्याय एक महंगा मामला बन गया। नई न्यायाधिक प्रणाली भी यूरोपियन तथा भारतीयों के बीच भेदभाव रखती थी।

1. निम्नलिखित को मिलाएँ

(क) विधवा पुनर्विवाह अधिनियम (i) अधिनियम 1857

(ख) चार्टर अधिनियम (ii) अधिनियम 1794

(ग) शिक्षा विभाग (iii) 1813

(घ) बनारस का संस्कृति कॉलेज (iv) 1856

(v) 1855

2. अंग्रेजों द्वारा स्थापित भारतीय संस्कृति तथा भाषा के कम से कम दो केन्द्रों के नाम बताएँ?

3. ब्रिटिश भारत में महिलाओं की स्थिति सुधारने में मदद करने वाले दो कानूनी उपायों को संक्षेप में लिखें?

5.5 विरोध आंदोलन

ब्रिटिश शासन के राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक क्षेत्रों पर प्रतिकूल प्रभाव के परिणामस्वरूप विदेशियों के खिलाफ भारतीय लोगों की कड़ी प्रतिक्रिया हुई। देश भर में ब्रिटिश विरोधी आंदोलनों की श्रृंखला का नेतृत्व किया जाने लगा। इसके लिए किसानों और जनजातियों ने शोषक शासकों के खिलाफ विद्रोह किया। इसका अधिक से अधिक विस्तार में आप आगे के पाठों में पढ़ेंगे। ब्रिटिश शासन के दौरान भारत में अनेक बार अकाल पड़ा जो अभूतपूर्व था। 19वीं सदी के मध्य के दौरान 7 बड़े अकाल दर्ज किये गए जिसमें 15 लाख लोगों की मौत हुई। इस प्रकार 19वीं सदी के उत्तरार्ध में 24 अकाल पड़े जिसमें 200 लाख से अधिक मौतें हुई। सबसे विनाशकारी 1943 में बंगाल का अकाल था जिसने 40 लाख भारतीयों को मार डाला। करोड़ों से दबे किसान भूमि से बेदखल और बंगाल के अकाल से बचे लोग विद्रोही संन्यासियों और फकीरों के समूहों में शामिल हो गए। 1783 में विद्रोहियों ने कंपनी के राजस्व का भुगतान बन्द कर दिया। हालांकि विद्रोहियों को अंत में आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर किया गया। इसी तरह तमिलनाडु, मालाबार और तटीय आंध्र के पोलीगर और मालाबार के मैपिला लोगों ने औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध विद्रोह किया। उत्तर भारत में 1824 में पश्चिमी उत्तर प्रदेश और हरियाणा के जाटों ने विद्रोह किया। महाराष्ट्र और गुजरात में कोलियों ने विद्रोह किया।

देश के विभिन्न भागों में आदिवासी जनजातियों ने अपने अधिकार के विस्तार के लिए औपनिवेशिक सरकार का विद्रोह किया। जनजातियों से विभिन्न वसूलियां की जाती थी। जनजातियों जैसे खानदेश के भोल और सिंहभूम के कोली नेताओं ने अंग्रेजी शासन के खिलाफ विद्रोह किया। हालांकि अंग्रेजों ने उन्हें बेरहमी से दबा दिया। बंगाल की सीमा, बिहार और उड़ीसा के अत्याचार पीड़ित संथालों ने भी अंग्रेजी शासन के खिलाफ विद्रोह किया क्योंकि उनको अपनी भूमि से बेदखल किया जा रहा था। उन्होंने अपनी सरकार की स्थापना की लेकिन अंग्रेजों ने उनके विद्रोह को समाप्त कर दिया। हालांकि इन विद्रोहियों को सफलता नहीं मिली लेकिन वे

औपनिवेशिक शासन के अलोकप्रिय चरित्र को उजागर करने में सफल रहे। आज भी हम अपने समाज में कई असमानताओं को देखते हैं। यदि आप इस स्थिति की आजादी के समय के साथ तुलना करें तो हमने अच्छी प्रगति की है। लेकिन हमें अभी एक लंबा रास्ता तय करना है।



चित्र 5.8 संथाल विद्रोह: रेलवे इंजीनियरों और संथालों के बीच लड़ाई

चित्र 5.8 संथाल विद्रोह : रेलवे इंजीनियरों और संथालों के बीच लड़ाई

विशेषज्ञों के विश्लेषण के अनुसार 17,500 से अधिक किसानों ने 2002 और 2006 बीच आत्म हत्या की महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, गुजरात, केरल, पंजाब, छत्तीसगढ़ और तमिलनाडु में किसानों की आत्महत्या की सूचना मिली है। इनकी आत्महत्या का मुख्य कारण फसल विफलता और ऋण था। इसके अलावा, किसानों की संख्या भी कम हो रही है, उनके खेती का परित्याग करने के कारण अखबारों, पत्रिकाओं और इंटरनेट या 5-6 किसानों से बात करके इकट्ठा करके और यह पता करें कि किन संभावित कारणों से वे यह कदम उठा रहे हैं? आप अपने विचार प्रस्तुत करें।

क्या आपने फिल्म “पीपली लाइव” देखी है? यदि आप देख सकते हैं तो देखें।

5.5.1 1857 के विद्रोह के प्रभाव

किसानों एवं कारीगरों की आर्थिक गिरावट 1770 से 1857 तक के 12 प्रमुख अकालों तथा कई छोटे अकालों से स्पष्ट है। यह सभी कारक ब्रिटिश विरोधी भावना सहायक सिद्ध हुए। अंग्रेजों ने बेरहमी से शासन किया और वे जनता की भावनाओं के प्रति संवेदनशील नहीं थे। सुधारों

के द्वारा कुछ सामाजिक परिवर्तन किए गए लोगों का मानना था कि सरकार उन्हें इसाई धर्म में परिवर्तित करना चाहती थी। परिणाम स्वरूप भारत में अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन के खिलाफ एक बड़ी संख्या में विद्रोह हुए। आगे के पाठ में आप कुछ महत्वपूर्ण और लोकप्रिय विद्रोहों के बारे में पढ़ेंगे। उनके महत्व तथा प्रकृति के विषय में पढ़ेंगे। तुम 1857 के विद्रोह के बारे में जिसका हमारे राष्ट्रीय आंदोलन पर एक गहरा प्रभाव पड़ा। इसमें पहली बार एकीकृत हुए विभिन्न धार्मिक और जातीय पृष्ठभूमि वाले वर्ग के लोगों को ब्रिटिश शासन के खिलाफ एक साथ लाया गया।

विद्रोह ने ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन का भारतीय राज्यों के प्रति ब्रिटिश नीति में परिवर्तन के साथ अन्त कर दिया। विद्रोह का सबसे महत्वपूर्ण परिणाम था कि इससे राष्ट्रवाद का जन्म हुआ। भारतीय लोगों में अपने नेताओं के प्रति जागरूकता आ गई। जो देश के लिए अपने जीवन का बलिदान कर रहे थे ताकि आगामी समय में दूसरे लोग स्वतंत्र भारत में रह सकें। इस विद्रोह के बाद अंग्रेजों ने फूट डालो और राज करो नीति से हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच संबंध को खराब किया। उन्होंने महसूस किया कि यदि वे भारत में अपने शासन को जारी रखना चाहते हैं तो उन्हें हिन्दू और मुसलमानों को अलग करना आवश्यक है।

5.5.2 आज पर प्रभाव

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप जान जायेंगे कि ब्रिटिश शासन ने किस प्रकार भारतीय जीवन के हर पहलू को प्रभावित किया। अंग्रेजों के राजनीतिक और व्यापारिक हितों को मजबूत बनाने के लिए कुछ परिवर्तन जानबूझकर प्रस्तुत किए गए। लेकिन भारतीय और पश्चिमी संस्कृतियों के बीच बातचीत का प्रतिफल एक दूसरे रूप में भी हुआ। एक बड़ी संख्या में ब्रिटिश और यूरोपीय इस दौरान हमारे देश में रह गए जिससे सांस्कृतिक परिवर्तन हुआ।

हमें यह भी समझना चाहिए कि हमारे वर्तमान जीवन को काफी हद तक तत्काल अतीत से आकार मिलता है। इस तत्काल अतीत में देश के एक बड़े हिस्से पर ब्रिटिश नियंत्रण एक निर्धारण कारक बन गया। ब्रिटिश शासन के एक परिणाम के रूप में सांस्कृतिक और कानूनी परिवर्तन आज भी हमारे जीवन को प्रभावित करते हैं। रेल, क्लब जीवन, राष्ट्रपतिभवन जैसे शाही भवन और संसद भवन भारत में ब्रिटिश शासन की याद ताजा कराते हैं। कई खाद्य पदार्थ जैसे ब्रेड, चाय और केक जो हम आज भी खाते हैं यह सब यूरोपीय लोगों के साथ रहने का परिणाम है। यदि आप अपने आप को चारों ओर देखेंगे तो आश्चर्य चकित हो जाएंगे कि शहरी भारत में प्रचलित वेशभूषा का बड़ी संख्या में ब्रिटिश शासन के दौरान अपनाया गया था। उदाहरण के लिए पतलून, कोट और टाई। इस अवधि के दौरान भारतीय सिविल सेवा शुरू की गई। भारतीय सशस्त्र बलों ने अभी भी यूरोपीय प्रशिक्षण और संस्कृति के कई पहलुओं को बनाए रखा है। हमारी शिक्षा या सीखने का माध्यम भी मुख्य रूप से अंग्रेजी है। सुप्रीम कोर्ट और हाईकोर्ट अपने निर्णय अंग्रेजी में पारित करते हैं। यह भाषा भी ब्रिटिश शासन की विरासत है और भारतीयों को अपने देश में रोजगार की मांग की लोकभाषा बनी हुई है।

1. भारत में किसान और आदिवासी समूहों द्वारा विरोध आंदोलनों के दो कारणों को चिन्हित करो ।
2. “फूट डालो और राज करो” ब्रिटिश नीति ने देश के राष्ट्रीय हितों को कैसे प्रभावित किया? 30 शब्दों में समझाओ ।

आपने क्या सीखा

- अंग्रेज व्यापारियों के रूप में भारत आए थे लेकिन क्षेत्रीय महत्वाकांक्षाओं के साथ धीरे-धीरे पूरे भारत पर समायोजन और कूटनीति जैसे विभिन्न साधनों का उपयोग करके विजय प्राप्त कर उन्होंने भारत पर नियंत्रण कर लिया ।
- भारत में ब्रिटिश राजनीतिक प्रभुत्व का कारण 1857 की प्लासी की लड़ाई मानी जाती है । ब्रिटिश शासन का भारतीयों के राजनीतिक और सामाजिक जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा ।
- ब्रिटिश शासन के आर्थिक प्रभाव सबसे अधिक दूरगामी था । इसने भारत की परंपरागत अर्थव्यवस्था नष्ट की और भारत के पैसों को ब्रिटेन भेजा । ब्रिटिश आर्थिक नीतियों का किसानों, कारीगरों पर बहुत प्रतिकूल प्रभाव पड़ा ।
- ब्रिटिश राज से असन्तोष के परिणामस्वरूप अंग्रेजों के खिलाफ प्रतिरोध आंदोलनों की एक श्रृंखला का जन्म हुआ । सनयासी और फकीरों की बगावतें, फराजी आंदोलनों बाहबी आंदोलन और सन्थाल विद्रोह ब्रिटिश शासन के प्रति विरोध का उदाहरण है ।
- सैन्य और राजनीतिक कमजोरियों के कारण भारतीयों की 1857 के युद्ध में हार हुई?

पाठान्त प्रश्न

1. अंग्रेजी की भू-राजस्व नीतियों ने किसानों के जीवन को कैसे प्रभावित किया ।
2. स्थायी बंदोबस्त और महालवारी बंदोबस्त के बीच भेद बताएं?
3. अंग्रेजी शिक्षा ने भारत में राष्ट्रवाद की वृद्धि में कैसे योगदान दिया?
4. देश में अंग्रेजी भाषा की सफलता के लिए कारणों की जांच करें?

5.1

1. (क) (iv)

(ख) (iii)

2. ब्रिटेन के उद्योगों के लिए कच्चा माल तथा अपने तैयार माल के लिए बाजार को बढ़ाना ।

3. विलय की नीति और सहायक संधि

5.2

1. (क) नहीं, क्योंकि विदेशी माल भारतीय हथकरघा उद्योग के लिए एक खतरा था । इसके अलावा भारतीय बुनकरों को बहुत ज्यादा नुकसान भी उठाना पड़ा ।

(ख) नहीं, क्योंकि ब्रिटिश शासन द्वारा उच्च राजस्व दरों के खिलाफ किसानों ने विद्रोह किया । हालांकि ब्रिटिश साम्राज्य की आर्थिक रूप से लाभ हुआ परंतु यह करने से आगे चल कर उन्हें राजनीतिक नुकसान पहुंचा ।

(ग) नहीं है क्योंकि चावल और गेहूँ खाद्य फसलें हैं ।

(घ) हाँ, क्योंकि जब किसान को अपना ऋण वापिस करने में विफल रहते तो साहूकार वर्ग के हाथों अपनी भूमि खो देते ।

2. उनका मुख्य उद्देश्य गांवों से व्यापार बन्दरगाहों और औद्योगिक शहरों को जोड़ना था जहां वे अपने कच्चे माल जो नकदी फसल हैं । आसानी और तेजी से व्यापार बन्दरगाहों तक ले जा सकते थे । ऐसा परिवहन व्यवस्था ने सुनिश्चित किया ।

5.3

1. (क) (iv) (ख) (iii) (ग) (i) (घ) (ii)

2. बंगाल की एशियाटिक सोसाइटी 1784 में विलियम जोन्स द्वारा स्थापित की गई लार्ड वैलसली ने 1800 में फोर्ट विलियम कालेज की स्थापना की ।

3. सती प्रथा जिसमें पत्नी अपने पति की चिता के आग में कूद जाती थी । इस पर 1829 में प्रतिबंध लगा दिया गया ।

शारदा अधिनियम 14 वर्ष से कम आयु की लड़की और 18 वर्ष से कम आयु के लड़के के बाल विवाह को रोकने के लिए 1929 में पारित किया गया ।

5.4

1. (क) अंग्रेजों की शोषक नीति, भारी कराधान तथा किसानों पर उंचे राजस्व की दर ।

(ख) विभिन्न जबरन वसूली की नीतियों और आदिवासी भूमि पर ब्रिटिश अधिकार का विस्तार ।

2. “फूट डालो और राज करो” ब्रिटिश नीति देश को धार्मिक आधार पर विभाजन का कारण बनी । इस नीति के द्वारा अंग्रेजों ने हिन्दु मुसलमानों के सम्बन्ध खराब करके अपने शासन को कायम रखा ।

6. औपनिवेशिक भारत में धार्मिक एवं सामाजिक जागृति

एक तेरह साल की लड़की मिमी और उसकी दादी गायत्री के बीच एक बातचीत पढ़ें:

मिमी : दादी माँ, आप कौन से कालेज में पढ़ती थीं?

दादी : (मुस्कुराते हुए) बिटिया : मैं कालेज में कभी नहीं गई, मैं तो केवल कक्षा 6 तक पढ़ी हुई हूँ तब जब मैं तेरह साल की थी तभी मेरा विवाह हो गया था।

मिमी : (आश्चर्य से) तेरह साल में विवाहित। यह तो अवैध है दादी। क्या आप ने विरोध नहीं किया?

दादी : उस समय हालात अलग थे और मेरी सहेलियों की भी मेरी उम्र तक ही शादी हो गई थी।

इस बातचीत से मिमी यह जानने को उत्सुक हो गई कि समाज में ऐसी कौन सी प्रथाएँ प्रचलित थीं जब दादी छोटी बच्ची थी। उसे इस पर भी आश्चर्य हुआ कि समय के दौरान यह सब किस प्रकार परिवर्तित हो गया। इन बदलावों को लाने के लिए कौन से लोग जिम्मेदार थे। मिमी इन सब परिवर्तनों के विषय में अधिक जानना चाहती थी। आप इस पाठ में पढ़ेंगे कि 19वीं सदी एवं 20वीं सदी में भारत में सुधार हुए। आप इन सुधारों के समाज पर प्रभाव के विषय में पढ़ेंगे।

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप जान सकेंगे कि :

- 19वीं सदी के दौरान हमारे समाज में कौन सी प्रथाएँ प्रचलित थीं
- चर्चा कर सकेंगे कि 19वीं सदी तथा आरंभिक 20वीं सदी के दौरान सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आंदोलनों ने किस प्रकार प्रचलित सामाजिक प्रथाओं के बारे में जागरूकता उत्पन्न की।
- जाति व्यवस्था, बाल विवाह, सती प्रथा जैसे मुद्दों को सुधारकों ने कानूनों और अन्य साधनों के माध्यम से किस प्रकार सुलझाने की कोशिश की गई।

- 19वीं सदी के बाद भारत में शिक्षा को बढ़ावा देने में सुधारकों की भूमिका पर चर्चा कर सकेंगे ।
- भारतीय समाज में सुधार आंदोलनों के प्रभावों का विश्लेषण कर सकेंगे ।

6.1 19वीं सदी के प्रारंभ के समाज

आज जो भारतीय समाज आप देखते हैं वह आरंभिक 19वीं सदी से बहुत भिन्न था। समाज की प्रगति दो मुख्य कारणों से रूकी हुई थी। एक कारण था शिक्षा का अभाव और दूसरा था महिलाओं की अधीनता। भारतीय समाज के कई वर्ग रूढ़िवादी थे और उन प्रथाओं को मानते थे जो मानवीय विचारों के विरुद्ध थे।

6.1.1 शिक्षा का अभाव

उस समय अधिकांश लोग अशिक्षित थे। संपूर्ण संसार में शिक्षा बहुत थोड़े से लोगों के पास ही थी। भारत में भी शिक्षा उच्चतम जाति के पुरुषों के ही पास थी। भारत में वेद जो संस्कृत में लिखे गये थे, का प्रयोग ब्राह्मण वर्ग ने ही किया था। यह भाषा केवल वे ही जानते थे। धार्मिक ग्रंथों पर भी उन लोगों का नियंत्रण था। उन्होंने अपने को लाभान्वित करने के लिए इनका प्रयोग किया। उन्होंने महंगे अनुष्ठान, बलिदान और जन्म या मृत्यु के बाद होने वाले अनुष्ठानों को प्रोत्साहन दिया। मृत्यु के बाद एक बेहतर जीवन जीने के विश्वास में प्रत्येक व्यक्ति को इन अनुष्ठानों का करना अनिवार्य था। क्योंकि कोई नहीं जानता था कि शास्त्रों में क्या लिखा है। कोई भी ब्राह्मण, पुजारियों से प्रश्न नहीं करता था। इसी तरह यूरोप में भी बाइबिल लैटिन भाषा में लिखी गई थी। यह चर्च की भाषा थी और उनके पादरी इन धार्मिक ग्रंथों की अपने अनुसार व्याख्या करते थे। यही वजह है कि एक प्रतिक्रिया के रूप में, यूरोप के पुनर्जागरण तथा सुधार आंदोलन को देखा गया, जिसके विषय में आप पहले इस पुस्तक में पढ़ चुके हैं। यहां तक कि स्वतंत्रता, समानता, आजादी तथा मानव अधिकारों जैसे विचार को यूरोप में विभिन्न क्रांतियों के रूप में सामने आये।

6.1.2 महिलाओं की स्थिति

लड़कियों और महिलाओं के विकास के लिए आज उनके पास बेहतर अवसर हैं। अपने अध्ययन और घर के बाहर काम करने के लिए वे अधिक स्वतंत्र भी हैं। लेकिन 19वीं सदी में अधिकांश महिलाओं का जीवन बहुत कठिन था। कुछ सामाजिक प्रथाएँ जैसे कन्या बाल-विवाह, सती प्रथा, भ्रूण हत्या और बहुविवाह आदि भारतीय समाज में प्रचलित थीं। कन्या भ्रूण हत्या एवं कन्या हत्या बहुत ही आम बात थी। जो लड़कियाँ बच जाती थी अक्सर उनकी बहुत कम उम्र में शादी कर दी जाती थी। बड़ी उम्र के पुरुषों से भी शादी (विवाह) कर दी जाती थी। बहुविवाह यानि कि पुरुष की एक पत्नी से ज्यादा पत्नी रखना कई धर्म तथा जातियों में स्वीकार किया जाता था। देश के कुछ भागों में सती प्रथा का प्रचलन था जिसमें एक विधवा औरत को मजबूर किया जाता था कि वह अपने पति की चिता पर खुद को जला दें। जो महिलाएं सती प्रथा से बच जाती थी वे एक बहुत ही दुखी जीवन जीती थी। महिलाओं का संपत्ति में भी कोई अधिकार नहीं था। उनको शिक्षा भी नहीं दी जाती थी। इस प्रकार, सामान्य जीवन में महिलाओं की समाज में

अधीनस्थ स्थिति होती थी। बाह्य आक्रमणों तथा परिवार के सम्मान में कमी होने के डर ने इन प्रथाओं को बढ़ावा दिया।

दहेज तथा पैतृक संपत्ति में साझेदारी से उनकी स्थिति और भी खराब हो गई। यह स्पष्ट था कि कुछ प्रथाओं और अंधविश्वासों के कारण भारतीय समाज की प्रगति रुकी हुई थी। समाज में सुधार लाने के लिए लोगों के सामाजिक और धार्मिक जीवन में परिवर्तन लाने की जरूरत थी।

क्या आप जानते हैं

शिशुहत्या : जन्म लिए एक जीवित शिशु की हत्या; एक नए जन्मे बच्चे की हत्या;

बाल लिंगानुपात :

0-6 वर्ष के आयु वर्ग के 1000 लड़कों के प्रति लड़कियों की संख्या। भारत में 1961 में प्रति हजार लड़कों पर लड़कियों की संख्या 976 थी जो गिरकर 2011 की जनगणना के अनुसार 1000 लड़कों के अनुपात में घट कर 914 लड़कियां हो गई है। वैश्विक संदर्भ के अनुसार, सामान्यतः बाल लिंगानुपात 950 से ऊपर होना चाहिए।

2011 की जनगणना के अनुसार, सबसे ज्यादा और सबसे कम लिंग अनुपात क्रमशः केरल में 1000 पुरुषों पर 1084 महिलाएं तथा 1000 पुरुषों पर 877 महिलाएं हरियाणा में हैं। किन्हीं 5 राज्यों में 1000 पुरुषों में 914 महिलाओं के लिंग अनुपात की जानकारी दें। अधिक जानकारी के लिए website www.censusindia.gov.in पर खोज करें।

6.2 परिवर्तन की इच्छा : सामाजिक-धार्मिक जागृति

आपके अनुसार लोगों में भेदभाव तथा असमानता के विरुद्ध जागृति के क्या कारण हो सकते हैं? राजाराम मोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, स्वामी दयानंद सरस्वती, ज्योतिबा फूले, सर सैयद अहमद खान और पंडिता रमाबाई जैसे कई सुधारक समझ गये थे कि अज्ञानता और समाज में पिछड़ापन ही प्रगति और विकास में बाधा के लिए जिम्मेदार थे। इस बात का उनको अहसास तब हुआ जब वे यूरोपियों के साथ संपर्क में आये और पाया कि उनका यह जीवन दुनिया के अन्य भागों से बहुत अलग है। ब्रिटिश मिशनरियों ने जब ईसाई धर्म का प्रसार शुरू किया तब उन्होंने हमारे सामाजिक और धार्मिक प्रथाओं की आलोचना की तथा उन पर कई प्रश्न उठाये। समाज में सुधार लाने की इच्छा इतनी प्रबल थी कि परम्परागत रूढ़िवादी भारतीयों के विरोध तथा चुनौतियों के बावजूद इन समाज सुधारकों द्वारा समाज में वांछित परिवर्तन लाने हेतु अनेक आंदोलन शुरू किये।

स्वामी दयानंद सरस्वती और राजा राम मोहन राय जैसे प्रबुद्ध लोगों द्वारा ही इसे संभव बनाया गया। उन्होंने धार्मिक ग्रंथ का अध्ययन किया और प्रचलित धार्मिक और सामाजिक प्रथाओं की

आलोचना की। उनके अनुसार, समाज पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए समानता और स्वतंत्रता की अवधारणा चाहिए और यह महिलाओं के बीच विशेष रूप से आधुनिक और वैज्ञानिक शिक्षा के प्रसार से ही संभव था। यह आंदोलन “सामाजिक-धार्मिक आंदोलन” के नाम से जाना जाने लगा क्योंकि सुधारकों ने महसूस किया कि धर्म में सुधार के बिना समाज में कोई भी परिवर्तन संभव नहीं है। हमें आगे पढ़ने से यह पता लगेगा कि क्यों शिक्षा एवं अन्य सुविधाएं समाज में केवल उच्च वर्ग के लिए उपलब्ध थे।

6.2.1 जाति व्यवस्था

प्राचीन काल में भारतीय समाज में जाति व्यवस्था मूलतः व्यवसाय पर आधारित थी। जैसे जैसे समय बीतता गया उच्च जाति के द्वारा धार्मिक ग्रंथों की व्याख्या और निम्न जाति की धार्मिक ग्रंथों से दूरी के कारण कई अंधविश्वासी प्रथाओं का प्रचलन हुआ। इसके परिणामस्वरूप, उच्चजाति के हाथों में सत्ता आ गई और निम्न जाति के शोषण की शुरुआत हो गई।

हिन्दू समाज वर्ण व्यवस्था ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र पर आधारित था। इस व्यवस्था के अनुसार लोगों को उनके व्यवसाय के आधार पर विभाजित किया गया था।

जो लोग ईश्वर की प्रार्थना और पूजा पाठ के काम में लगे हुए थे उन्हें ब्राह्मणों के रूप में वर्गीकृत किया गया। जो युद्ध में लगे हुए थे वे उन्हें क्षत्रिय। जिनका व्यवसाय कृषि तथा व्यापार था वे वैश्य के रूप में जाने जाते थे और जो ऊपरी तीनों वर्णों की सेवा कार्य में लगे थे वे शूद्र कहे जाते थे। यह वर्ण व्यवस्था जो विशुद्ध रूप से व्यवसाय पर आधारित थी बाद में वंशानुगत हो गई। किसी एक विशेष जाति में पैदा हुआ व्यक्ति अपनी जाति को बदल नहीं सकता था यद्यपि वह अपने काम को बदल सकता है। इससे समाज में असमानताओं ने जन्म लिया। इससे निम्न जातियों का शोषण होने लगा। जिसके कारण जाति व्यवस्था एक स्वच्छ लोकतांत्रिक और प्रगतिशील समाज को बनाने में बाधक हो गई। समाज में जन्मी इन कुरीतियों के विरुद्ध कई समाज सुधारक सामने आए। कई समाज संगठन जैसे ब्रह्म समाज, आर्य समाज, रामकृष्ण मिशन तथा सुधारक जैसे ज्योतिबा फूले, पंडिता रमाबाई, नारायण गुरु, पेरियार, विवेकानंद, महात्मा गांधी तथा और कई दूसरों ने इन सबका दृढ़ता से विरोध किया। अधिकांश सुधारकों ने जाति प्रथा को वेदों और धर्मग्रंथों के विरुद्ध माना। उनके अनुसार जाति व्यवस्था, अतार्किक और अवैज्ञानिक थी। उन्होंने महसूस किया कि यह मानवता के बुनियादी नियमों के खिलाफ थी। समाज सुधारकों के अथक और अनवरत प्रयासों ने लोगों के मदद की जिससे एक-दूसरे के प्रति सहिष्णुता जागृत हुई।

क्या आप जानते हैं

संविधान के अनुच्छेद 14 में उल्लेख किया गया है कि “धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग, जन्म स्थान अथवा इनमें से किन्हीं के भी आधार पर किसी नागरिक के साथ भेदभाव नहीं किया जायेगा।” इन सांविधानिक प्रावधानों ने देश के सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक विकास में समाज के पिछड़े वर्गों (अधिकारविहीन वर्गों) की भागीदारी सुनिश्चित की है।

6.2.2 प्रचलित धार्मिक प्रथाएँ

अधिकांशतः सामाजिक प्रथाएँ धर्म के नाम पर की जाती थी। इसलिए सामाजिक सुधार, धार्मिक सुधार के बिना कोई अर्थ नहीं रखता था। हमारे सामाजिक सुधारकों को भारतीय परंपरा और दर्शन का गहन ज्ञान था और शास्त्रों का भी अच्छा ज्ञान था। वे पश्चिमी विचारों और लोकतंत्र और समानता के सिद्धांतों के साथ सकारात्मक भारतीय मूल्यों का मिश्रण करने में सक्षम थे। इस ज्ञान के आधार पर उन्होंने धर्म में कठोरता तथा अंधविश्वासी प्रथाओं को चुनौती दी। उन्होंने शास्त्रों से उद्धृत करके बताया कि उन्नीसवीं सदी के दौरान प्रचलित प्रथाओं को किसी भी प्रकार की मंजूरी नहीं मिली है। प्रबुद्ध और बुद्धिवादी लोगों ने लोकप्रचलित धर्म पर जो कि अंधविश्वास से भरा पड़ा था तथा पुजारियों के हाथों शोषण का एक मंत्र बना हुआ था, पर अनेक प्रश्न उठाये। ये समाज सुधारक चाहते थे कि समाज तर्कसंगत और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को स्वीकार करे। उनका मानव गरिमा और सभी पुरुषों और महिलाओं की सामाजिक समानता के सिद्धांत में भी विश्वास था।

6.2.3 शैक्षिक परिदृश्य

19वीं सदी में, अनेक बच्चों, खासकर लड़कियों, को स्कूल नहीं भेजा जाता था। शिक्षा पारंपरिक पाठशालाओं, मदरसों, मस्जिदों और गुरुकुलों में प्रदान की जाती थी। धार्मिक शिक्षा के साथ संस्कृत, व्याकरण, गणित, धर्म तथा दर्शन जैसे विषयों को पढ़ाया जाता था। विज्ञान और प्रौद्योगिकी की पाठ्यक्रम में कोई जगह नहीं थी। कई अंधविश्वासी मान्यताओं का समाज में अस्तित्व था। कुछ समुदायों में तो लड़कियों को शिक्षित करने की भी अनुमति नहीं थी। यह सोचा जाता था कि शिक्षित महिलाएं शादी के बाद जल्दी विधवा हो जाएंगी। लेकिन वास्तविकता में शिक्षा और जागरूकता की कमी ही भारतीयों के बीच सामाजिक और धार्मिक पिछड़ेपन का मूल कारण थी। इसलिए यह महत्वपूर्ण था कि आधुनिक शिक्षा को बढ़ावा दिया जाए।

इसलिए हिन्दु, मुस्लिम, सिख या पारसी सभी सामाजिक-धार्मिक सुधारकों को विश्वास था कि आधुनिक शिक्षा ही हमारे समाज को जागरूक और आधुनिक बना सकती है। आधुनिक शिक्षा का प्रसार करना मुख्य उद्देश्य बन गया। वे मानते थे कि हमारे समाज को जागृत करने का शिक्षा ही एक प्रमुख प्रभावी उपकरण है।

1. किसी दो सामाजिक प्रथाओं की सूची बनाएं जिनके विरुद्ध समाज सुधार आंदोलन शुरू किये गये।
 2. जाति व्यवस्था अतार्किक तथा अवैज्ञानिक क्यों मानी जाती थी?
 3. समाज सुधारकों द्वारा “धर्म में कठोरता” की आलोचना के क्या आधार थे?
 4. नीचे दिए गए अंश को पढ़ें तथा प्रश्नों के उत्तर दें
- डा. भीम राव अंबेडकर एक गरीब महार परिवार के थे, जो अछूत जाति मानी जाती थी। उन्होंने भारत में कालेज की शिक्षा प्राप्त की और बाद में कोलंबिया विश्वविद्यालय तथा लंदन

स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से अपने अध्ययन तथा शोधकार्य के लिए डिग्री तथा डॉक्टर की उपाधि प्राप्त की। डा. अंबेडकर भारतीय संविधान की मौजूदा समिति के अध्यक्ष थे। सामाजिक और वित्तीय कठिनाइयों का सामना करने के बावजूद डा. अंबेडकर ने अपना पूरा जीवन सामाजिक भेदभाव के विरुद्ध लड़ने में व्यतीत किया। सन् 1990 में उनको मरणोपरांत “भारत रत्न” से सम्मानित किया गया।

1. शिक्षा के अलावा कुछ और चीजें जिसने डा. अम्बेडकर को समाज में व्याप्त भेदभाव से लड़ने के लिए सक्षम बनाया।

क्रियाकलाप 6.2

कम से कम दो उदाहरण देकर बताएं कि समाज में आपने जाति भेदभाव महसूस किया है। 50 शब्दों में अपनी प्रतिक्रिया लिखें।

6.3 19वीं सदी में सामाजिक-धार्मिक सुधार

19वीं सदी में कई भारतीय विचारक और सुधारक, समाज में सुधार लाने के लिए आगे आए। उनके मुताबिक समाज और धर्म आपस में जुड़े हुए थे। दोनों में सकारात्मक विकास और देश के विकास को प्राप्त करने के लिए सुधार करने की जरूरत है। इसलिए हमारे सुधारकों ने भारतीय जनता को जगाने की पहल की। इन सुधारकों ने जागरूकता फैलाने के लिए कुछ संगठनों की स्थापना की जिसके बारे में आप अब आगे पढ़ेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में इन सुधारकों का यह एक अन्य प्रमुख योगदान था।

6.3.1 राजा राम मोहन राय

राजा राम मोहन राय बंगाल के एक ब्राह्मण परिवार में पैदा हुए थे। उन्हें कई भाषाओं का ज्ञान था उन्होंने कुरान, बाइबिल तथा हिन्दु ग्रंथों का गहराई के साथ अध्ययन किया था। उदार शिक्षा से उन्होंने विभिन्न संस्कृतियों और दर्शन के साथ उजागर किया था।

उनको उस वक्त गहरा अवसाद हुआ जब उनकी अपने भाई की विधवा को सती प्रतिबद्ध के लिए मजबूर किया जा रहा था, उसकी दुर्दशा से उनपर असर पड़ा और उन्होंने इस सामाजिक प्रथा को खत्म करने का निश्चय कर लिया। उस समय उन्होंने अन्य अनुचित सामाजिक और धार्मिक प्रचलित प्रथाओं को चुनौती देने के लिए आंदोलनों का नेतृत्व किया। उन्होंने 1828 में ब्रह्मा समाज की स्थापना की। सती प्रथा को चुनौती देने के लिए पहल करने वाले



चित्र 6.1 राजा राम मोहन राय

चित्र 6.1 राजा राम मोहन राय

वह पहले व्यक्ति थे और जल्द ही यह उनके जीवनभर का धर्मयुद्ध बन गया। उन्होंने जनता की राय जुटाई और शास्त्रों के अर्थ दिखाये कि इस प्रथा को हिन्दु धर्म में कहीं भी कोई मंजूरी नहीं थी। इस प्रक्रिया में उनको रूढ़िवादी हिन्दुओं की नाराजगी और दुश्मनी का सामना करना पड़ा। भारत के तत्कालीन गवर्नर जनरल, सर विलियम वेनटीक ने इनका समर्थन किया। 1829 में एक कानून पारित किया गया। जिसमें सती प्रथा को अवैध और दंडनीय माना गया। उन्होंने बाल विवाह, विधवा पुनर्विवाह की वकालत के लिए प्रयास किए।

उन्होंने पूर्वी और पश्चिमी विचारों के संश्लेषण का प्रतिनिधित्व किया। धर्म शास्त्रों के वह अच्छे जानने वाले थे। उन्होंने वेदों के महत्व की वकालत की, धर्म सुधार तथा सभी धर्मों के बीच मौलिक एकता को सही ठहराया उनका मत था कि हिन्दु ग्रंथों में एकेश्वरवाद की प्रथा जोर दिया गया था सभी प्रमुख प्राचीन ग्रंथों (एक ही पूजा) और बहुदेववाद (एक से अधिक भगवान में विश्वास) का विरोध किया गया है। उन्होंने मूर्ति पूजा की आलोचना की तथा अर्थहीन रिवाजों का खंडन किया।

उन्होंने दृढ़ता से अंग्रेजी भाषा की शिक्षा, साहित्य, वैज्ञानिक उन्नति प्रौद्योगिकी की भारत के आधुनिकीकरण के लिए वकालत की। उन्होंने कोलकाता में अपनी पैसा से एक अंग्रेजी स्कूल बनाया। यहां और विषयों के साथ यांत्रिकी और दर्शन जैसे विषय भी पढ़ाये गए। वेदांत कॉलेज 1825 में खोला गया था। इन्होंने राजा राम मोहन राय की सहायता से उच्च शिक्षा के लिए कोलकाता में हिन्दू कॉलेज भी खोला।

6.3.2 ईश्वर चन्द्र विद्यासागर

एक महान विद्वान और सुधारक, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर ने सामाजिक सुधारों के लिए अपने पूरे जीवन को समर्पित कर दिया। 1856 में सबसे पहले हिन्दु विधवा पुनर्विवाह अधिनियम उनके अथक प्रयासों के कारण प्रस्तुत किया गया। उन्होंने बाल-विवाह तथा बहुविवाह के विरुद्ध अभियान भी चलाया। हालांकि वह खुद को धार्मिक नहीं मानते थे तथा वे धर्म के नाम पर किए गए सुधारों का विरोध भी करते थे।

यद्यपि वे संस्कृत के विद्वान थे फिर भी उनका मन अच्छे पश्चिमी विचारों को अपनाने को तैयार था। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में प्रमुख योगदान दिया। उन्होंने संस्कृत एवं बंगला साहित्य को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने संस्कृत महाविद्यालय में पश्चिमी विचारों को भी पढ़ने को कहा तथा भारतीयों को पुराने विश्वासों को दूर करने एवं आधुनिक विचारों को अपनाने के लिए प्रेरित किया। उनके अनुसार महिलाओं को शिक्षित करके समाज में सुधार किया जा सकता। इस दिशा में उनके प्रयासों की प्रशंसा हुई। वह महिलाओं की शिक्षा के चैंपियन थे। उनकी मदद से बंगाल में लगभग 35 लड़कियों के स्कूल खोले गए। उनके प्रयासों के माध्यम से संस्कृत कॉलेज में गैर ब्राह्मण छात्रों का भी दाखिला किया गया।



चित्र 6.2 ईश्वर चन्द्र विद्यासागर

चित्र 6.2 ईश्वर चन्द्र विद्यासागर

6.3.3 स्वामी दयानंद सरस्वती

स्वामी दयानंद सरस्वती ने 1875 में उत्तर भारत में हिंदू धर्म को सुधारने के लिए आर्य समाज की स्थापना की। वे वेदों को त्रुटिरहित तथा समस्त ज्ञान का आधार मानते थे। उन्होंने सभी धार्मिक विचारों को जो वेदों से मतभेद रखते थे, उनको खारिज कर दिया। उनका मानना है कि हर व्यक्ति का अधिकार है वह भगवान से सीधे संपर्क रखें। उन्होंने शुद्धि आंदोलन शुरू कर दिया जो उन हिन्दुओं को वापस लाने के लिए था, जिन्होंने इस्लाम और ईसाई धर्म अपना लिया था। उनकी सत्यार्थ प्रकाश सबसे महत्वपूर्ण पुस्तक थी।



चित्र 6.3 स्वामी दयानंद सरस्वती

चित्र 6.3 स्वामी दयानंद सरस्वती

आर्य समाज ने सामाजिक सुधार की वकालत की और महिलाओं की दशा में सुधार के लिए काम किया। इन्होंने अस्पृश्यता और वंशानुगत जाति व्यवस्था के विरुद्ध कठोर लड़ाई की तथा सामाजिक समानता को आगे बढ़ाया। आर्य समाज की राष्ट्रीय आंदोलन में प्रमुख भूमिका रही जिसके द्वारा उन्होंने लोगों के बीच आत्म विश्वास तथा आत्म सम्मान की भावना का विकास किया।

आर्य समाज की भूमिका जनता के बीच शिक्षा को बढ़ावा देने में सराहनीय थी। स्वामी दयानंद के अनुयायियों ने बाद में स्कूलों और कॉलेजों का एक नेटवर्क डी.ए.वी. आरंभ किया (दयानंद एंग्लो वैदिक)। जहां देश में वैदिक शिक्षाओं पर समझौता किए बिना पश्चिमी शिक्षा प्रदान की जाती है।

उन्होंने संस्कृत और वैदिक शिक्षा के साथ अंग्रेजी और आधुनिक विज्ञान की शिक्षा को भी प्रोत्साहित किया ।

6.3.4 रामकृष्ण परमहंस एवं स्वामी विवेकानंद

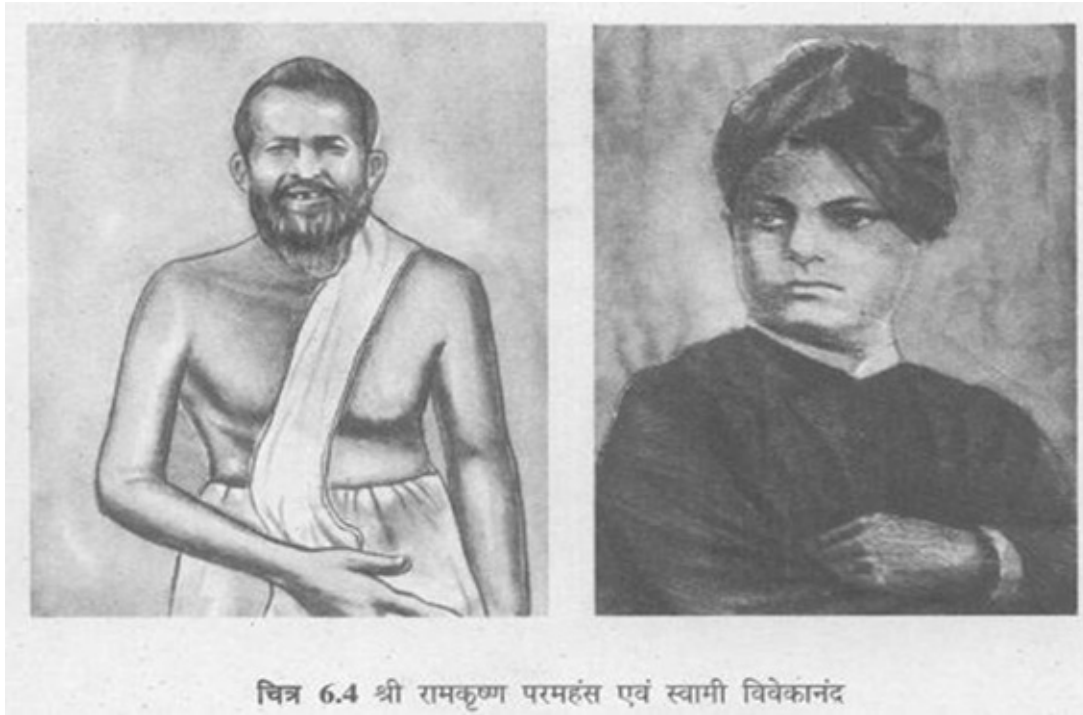
रामकृष्ण परमहंस (1836-1886) ने धर्मों की आवश्यक एकता और एक आध्यात्मिक जीवन जीने की जरूरत पर प्रकाश डाला । उनका मानना था कि संसार के विभिन्न धर्मों में भगवान तक पहुंचने के लिए अलग-अलग रास्ते हैं । स्वामी विवेकानन्द (1863-1902) उनके महत्वपूर्ण शिष्य थे ।

बाक्स प्रारंभ

दुनिया के इतिहास में कुछ पुरुषों को ही अपने आप में विश्वास था। वह विश्वास भीतर देवत्व से मिलता है। आप कुछ भी कर सकते हैं। आप केवल असफल होते हैं जब आप प्रकट अनंत शक्ति के लिए प्रयास कम करते हैं। एक आदमी के रूप में या स्वयं में या एक राष्ट्र खूद में विश्वास खो देता है तो मृत्यु आती है। पहले अपने आप में विश्वास करें और फिर भगवान में। - स्वामी विवेकानंद

बाक्स समाप्त

विवेकानंद पहले आध्यात्मिक नेता थे जिन्होंने धार्मिक सुधारों से हट कर सोचा। उन्होंने महसूस किया कि भारतीय जनता को धर्मनिरपेक्ष के रूप में, आध्यात्मिक ज्ञान के रूप में खुद में विश्वास करने के लिए सशक्त करना आवश्यक है। विवेकानंद ने अपने गुरु रामकृष्ण परमहंस के नाम से “रामकृष्ण मिशन” की स्थापना की। उन्होंने भाषणों और लेखन के माध्यम से हिन्दु संस्कृति और धर्म का सार बताया। उन्हें वेदांत पर विश्वास था, वे एकता और सभी धर्मों की समानता पर बल देते थे। उन्होंने धार्मिक अंधविश्वासों, प्रगतिविरोध और प्राचीन सामाजिक रीतियों को हटाने एवं जाति बंधन और अस्पृश्यता को दूर करने की कोशिश की। उन्होंने लोगों को महिलाओं के सम्मान के लिए प्रेरित किया। उन्होंने महिलाओं के उत्थान और शिक्षा के लिए काम किया। विवेकानंद ने लोगों के बीच अज्ञानता को हटाने के लिए प्राथमिक महत्वपूर्ण कार्य किए।



चित्र 6.4 श्री रामकृष्ण परमहंस एवं स्वामी विवेकानंद

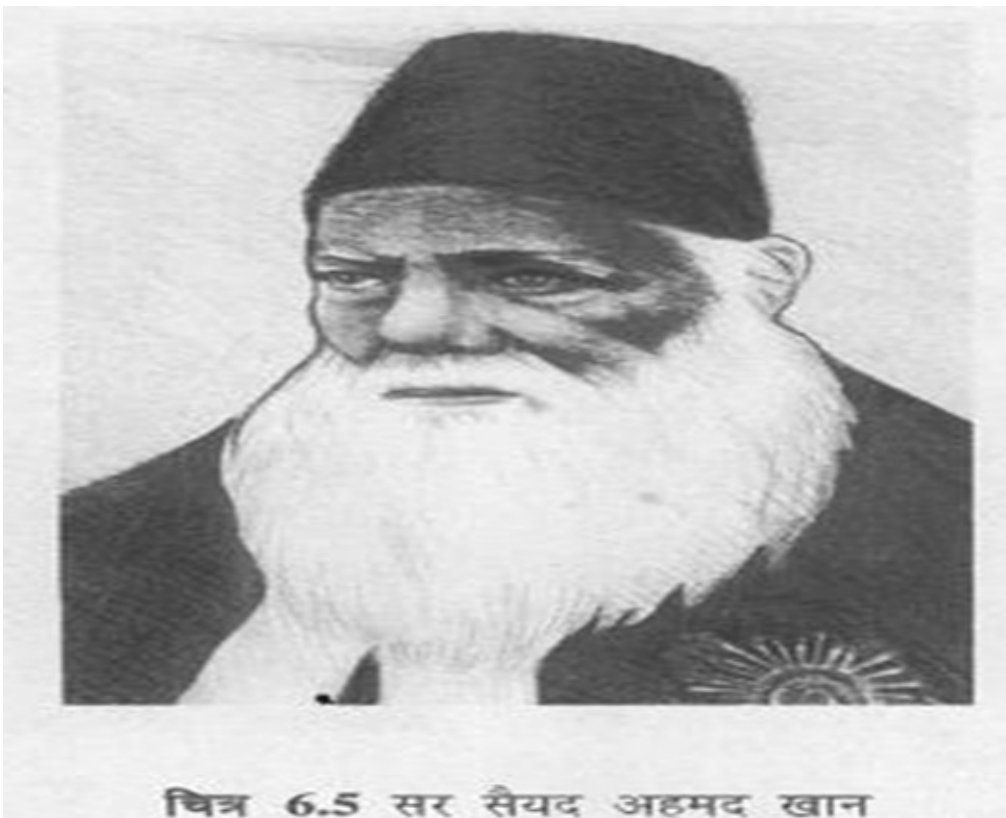
चित्र 6.4 श्री रामकृष्ण परमहंस एवं स्वामी विवेकानंद

6.3.5 सर सैयद अहमद खान

सर सैयद अहमद खान का मानना है कि मुसलमानों के धार्मिक और सामाजिक जीवन में सुधार आधुनिक पश्चिमी वैज्ञानिक ज्ञान और संस्कृति अपनाने से हो सकते हैं। उनको मुसलमानों में सामाजिक और शैक्षिक पिछड़ेपन को दूर करने के लिए विभिन्न कार्य किए। उन्होंने मुस्लिम महिलाओं की स्थिति को बढ़ाने के लिए कड़ी मेहनत की वे पर्दा प्रणाली, बहुविवाह, आसान तलाक और लड़कियों के बीच शिक्षा की कमी के विरुद्ध थे। हालांकि रूढ़िवादी मुसलमानों ने उनका विरोध

किया था, उन्होंने महिलाओं की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सराहनीय प्रयास किए। उन्होंने तर्क सहित कुरान की व्याख्या करने की कोशिश की और कट्टरता और अज्ञानता के विरुद्ध अपनी बात कही। उन्होंने मुस्लिम समाज के उत्थान के लिए सामाजिक सुधार प्रारंभ किया।

अपने प्रारंभिक जीवन के दौरान उन्होंने भी अंग्रेजी भाषा के अध्ययन के खिलाफ रूढ़िवादी मुसलमानों का विरोध किया। उन्होंने कहा कि केवल आधुनिक शिक्षा ही मुसलमानों को प्रगति की दिशा में ले जा सकती है। उन्होंने 1864 में गाजीपुर में (वर्तमान में उत्तर प्रदेश) एक अंग्रेजी स्कूल की स्थापना की थी। उन्होंने मोहम्मदन एंग्लो ओरिएंटल कॉलेज (एम.ए.ओ) जो बाद में 1875 में अलीगढ़ में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के रूप में विकसित हुआ। यहां मानविकी और विज्ञान के क्षेत्र में अंग्रेजी भाषा के माध्यम से शिक्षा प्रदान की गई। उन्होंने अंग्रेजी पुस्तकों के अनुवाद के लिए एक साइंटिफिक सोसोइटी की स्थापना की। उन्होंने मुसलमानों के बीच सामाजिक सुधारों के प्रति जागरूकता के प्रसार विशेष रूप से आधुनिक शिक्षा के लिए पत्रिका प्रकाशित की। पत्रिका के द्वारा चलाया गया सुधार आंदोलन अलीगढ़ आंदोलन के नाम से जाना गया जो मुसलमानों के बीच सामाजिक और राजनीतिक जागृति की ओर एक महत्वपूर्ण कदम साबित हुआ।



चित्र 6.5 सर सैयद अहमद खान

6.3.6 ज्योतिराव गोविंदराव फुले

महाराष्ट्र से ज्योतिराव गोविंदराव फुले ने किसानों और निम्न जाति को समान अधिकार दिलाने के लिए काम किया। वह और उनकी पत्नी सावित्री बाई फुले ने निम्न जातियों की महिलाओं को शिक्षित करने के लिए सबसे अधिक प्रयास किए। सबसे पहले उन्होंने अपने पत्नी को शिक्षित किया जिसके बाद उन दोनों ने लड़कियों के लिए अगस्त 1848 में पूना में स्कूल खोला। आज भी उनको विधवाओं के विवाह के लिए किए गए प्रयासों के लिए याद किया जाता है। सितम्बर

1873 में, ज्योतिराव ने अपने अनुयायियों के साथ सत्यशोधक समाज का गठन (सत्य साधक सोसायटी) किया जो इस समाज की जातियों को शोषण और अत्याचार से बचाती है। वह 'ज्योतिबा' के रूप में लोकप्रिय हुए।



चित्र 6.6 ज्योतिबा फुले तथा उनकी पत्नी सावित्री बाई

6.3.7 न्यायमूर्ति महादेव गोविंद रानाडे

न्यायमूर्ति महादेव गोविंद रानाडे ने पूना में सार्वजनिक समा की तथा 1867 में बंबई में प्रार्थना समाज की धार्मिक सुधारों को लाने के लिए स्थापना की। जाति व प्रतिबंध को हटाने, बाल विवाह को समाप्त करने के लिए, विधवाओं के बाल कटवाना, विवाह तथा अन्य सामाजिक कार्यों में लगने वाली भारी लागत, महिलाओं की शिक्षा को प्रोत्साहित करने तथा विधवा विवाह आदि के लिए कार्य किया। ब्रह्म समाज के समान एक ईश्वर की पूजा की वकालत की। उन्होंने मूर्ति पूजा तथा धार्मिक मामलों में पुरोहित जातियों के वर्चस्व की निंदा की। उन्होंने विश्वविद्यालयों में स्थानीय भाषाओं में पाठ्यक्रम की शुरुआत की जिससे उच्च शिक्षा हर भारतीय के लिए सुलभ हो जाए। भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के सामाजिक वातावरण को नष्ट करे बिना समाज में कठोर परंपराओं को सुधारने का प्रयास किया। वे “भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस” के संस्थापक सदस्य भी थे।



चित्र 6.7 न्यायमूर्ति महादेव गोविंद रानाडे

6.3.8 पंडिता रमाबाई

महाराष्ट्र में एक प्रसिद्ध समाज सुधारक पंडिता रमाबाई ने महिलाओं के अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी तथा बाल विवाह की प्रथा के खिलाफ आवाज उठाई। उन्होंने लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा

देने के लिए “आर्य महिला समाज” की 1881 में किया। महिलाओं की हालात में सुधार के लिए विशेष रूप से बाल विधवाओं? पुणे में शुरूआत की मुक्ति के लिए स्थापना की। 1889 में “मुक्ति मिशन” बनाया जो युवा विधवाओं के लिए एक शरण स्थल बना उन्होंने शारदा सदन की स्थापना की जिसमें शरण शिक्षा और चिकित्सा सेवाएं, विधवाओं, अनाथों और नेत्रहीनों को सेवाएं प्रदान की जाती थी। उन्होंने बाल दुल्हन एवं विधवाओं के कठिन जीवन पर पुस्तकें भी लिखी। पंडिता रमाबाई मुक्ति मिशन आज भी सक्रिय है और कार्य कर रहा है।



चित्र 6.8 पंडिता रमाबाई

6.3.9 एनी बेसेंट

एनी बेसेंट थियोसोफिकल सोसायटी की सदस्या थी और 1898 में पहली बार भारत आई थी। यह आंदोलन पश्चिमी लोगों द्वारा भारतीय धार्मिक महिमा और दार्शनिक परंपराओं के लिए काम करता था। उन्होंने भारतीय भाषा को प्रोत्साहित करने और साहित्यिक भाषा में काम किया जो भारतीय विरासत तथा संस्कृति में गर्व की भावना को दर्शाता था। इससे भारतीय में राजनैतिक जागरूकता और आत्मविश्वास का उदय हुआ और देश के प्रति गर्व की भावना विकसित हुई। उन्होंने विश्व बंधुत्व का प्रचार किया। उन्होंने आधुनिक भारत के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया था। एनी बेसेंट 1907 में थियोसोफिकल सोसायटी की अध्यक्ष बन गई। बेसेंट ने बनारस में सेंट्रल हिन्दू कॉलेज लड़कों के लिए खोला जो थियोसोफिकल सिद्धांतों पर आधारित था। छात्रों को धार्मिक ग्रंथों के साथ आधुनिक विज्ञान का भी ज्ञान दिया गया। 1917 से वह कॉलेज नए विश्वविद्यालय, हिन्दू विश्वविद्यालय का हिस्सा बन गया।



चित्र 6.9 एनी बेसेंट

किसी भी दो सामाजिक प्रथाओं या अंधविश्वास के बारे में बताएं, जो अब भी कई सुधार आंदोलनों और सरकार के नियमों के बावजूद प्रचलित हैं। क्या आप, एक व्यक्ति के रूप में इन सामाजिक प्रथाओं या अंधविश्वास को चुनौती दे सकते हैं।

संकेत : सामाजिक प्रथाएं या अंधविश्वास जैसे दहेज, लिंग भेदभाव, अशिक्षा, बालविवाह, कन्या शिशु हत्या आदि।

संभावित कार्यवाई : व्यक्तिगत उदाहरण के द्वारा, समूह चर्चा का आयोजन, समाचार पत्र में पत्र लिखकर तथा सार्वजनिक स्थानों आदि में संकट के समय लोगों की सहायता करना।

6.3.10 मुस्लिम सुधार आंदोलन

आधुनिक शिक्षा के प्रसार तथा बहु विवाह जैसी सामाजिक प्रथाओं को दूर करने के लिए कई आंदोलन शुरू किए गए हैं। अब्दुल लतीफ ने 1863 में कलकत्ता में “मोहम्मदन साक्षरता सोसायटी” स्थापित की। यह आरंभिक संगठनों में से एक था, जिसने आधुनिक शिक्षा को मध्यम वर्ग एवं उच्च वर्ग के मुसलमानों के बीच तथा हिन्दू मुस्लिम एकता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बंगाल के शरीयतुल्ला “फरायजी” आंदोलन के प्रवर्तक ने बंगाल में किसानों के लिए काम किए। उन्होंने मुसलमानों के बीच व्याप्त जाति व्यवस्था जैसी बुराइयों की निंदा की।

अन्य कई सामाजिक धार्मिक आंदोलनों ने मुसलमानों में राष्ट्रीय जागृति लाने में सहायता की। मिर्जा गुलाम अहमद ने 1899 में “अहमदिया आंदोलन” की स्थापना की, इन आंदोलन के अंतर्गत विद्यालय कालेज देश भर में खोले गए। उन्होंने इस्लाम के सार्वभौमिक और मानवीय चरित्र पर जोर दिया। वे हिन्दु और मुसलमानों के बीच एकता को पसंद करते थे।

आधुनिक भारत के महानतम कवियों में से एक कवि मोहम्मद इकबाल (1876-1938) थे। उन्होंने कविताओं के माध्यम से कई पीढ़ियों के दार्शनिक और धार्मिक दृष्टिकोण को प्रभावित किया।



चित्र 6.10 मोहम्मद इकबाल

क्या आप जानते हैं

मोहम्मद इकबाल ने “सारे जहां से अच्छा हिन्दुस्तान हमारा” प्रसिद्ध गीत लिखा।

6.3.11 अकाली सुधार आंदोलन

अमृतसर और लाहौर में “दो सिंह सभा” का 1870 में गठन किया गया जिसमें सिखों के बीच में धार्मिक सुधार आंदोलन की शुरुआत की गई। 1892 में अमृतसर में “खालासा कालेज” में गुरुमुखी, सिख शिक्षा और पंजाबी साहित्य को बढ़ावा देने में मदद के लिए स्थापना की गई। अंग्रेजों की मदद से इस कॉलेज को बनाया गया था। 1920 में पंजाब में अकाली आंदोलनों द्वारा गुरुद्वारों या सिख धार्मिक स्थलों के प्रबंधन को सुधारा गया। 1921 में महंतों के खिलाफ एक शक्तिशाली सत्याग्रह ने सरकार को 1925 में एक नया गुरुद्वारा अधिनियम पारित करने के लिए मजबूर किया। इस अधिनियम की सहायता से तथा प्रत्यक्ष कार्रवाई के द्वारा वे भ्रष्ट महंतों के नियंत्रण तथा प्रभुत्व से मुक्त करा सके।

6.3.12 पारसियों के बीच में सुधार आंदोलन

19वीं सदी के बीच नौरोजी फरदोजी, दादाभाई नौरोजी, एस.एस बंगाली और दूसरी पारसियों के बीच धार्मिक सुधारों की शुरुआत हुई। सन् 1851 में “रहनुमाय मांजदायासन सभा” या धार्मिक सुधार संगठन की स्थापना की गई। उन्होंने शिक्षा के प्रसार में विशेष रूप से लड़कियों के बीच एक महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। उन्होंने पारसी धर्म में रूढ़िवादी प्रथाओं के विरुद्ध अभियान चलाया। समयक्रम में पारसी धर्म भारतीय समाज के प्रगतिशील वर्गों में सबसे महत्वपूर्ण बन गए।



चित्र 6.11 दादाभाई नौरोजी

10 प्रतिष्ठित व्यक्तियों की एक सूची बनाए जिन्होंने हमें समाज में बेहतर जीवन के लिए जगह देने में योगदान दिया है। इसके साथ उनके अन्य योगदान वाले क्षेत्रों को भी ढूँढें।

1. रिक्त स्थान में सही उत्तर भरें।

(i) वह — पूर्व और पश्चिम के विचारों को संश्लेषण का प्रतिनिधित्व नहीं करते थे।

(क) स्वामी विवेकानंद

(ख) राममोहन राय

(ग) दयानंद सरस्वती

(घ) ईश्वरचंद विद्यासागर

(ii) वे वेदों की अचूक प्रभाव पर विशेष जोर नहीं देते थे?

(क) स्वामी विवेकानंद

(ख) रामकृष्ण परमहंस

(ग) दयानंद सरस्वती

(घ) सैयद अहमद खान

(iii) पवित्र स्थानों को भ्रष्ट महंतों के वर्चस्व तथा नियंत्रण से मुक्त करने के लिए आंदोलन शुरू कर दिया।

(क) अकाली आंदोलन

(ख) जाति सुधार आंदोलन

(ग) शुद्धि आंदोलन

(घ) सत्याग्रह आंदोलन

2. निम्नलिखित को मिलाएं:

(i) ब्रह्म समाज (क) स्वामी विवेकानंद

(ii) आर्य समाज (ख) एनी बेसेंट

- (iii) रामकृष्ण मिशन (ग) स्वामी दयानंद सरस्वती
- (iv) थियोसोफिकल सोसायटी (घ) ज्योतिबा फुले
- (v) अकाली आंदोलन (ई) पंडिता रमाबाई
- (vi) सत्य शोधक समाज (च) राजा राम मोहन राय
- (vii) अलीगढ़ आंदोलन (छ) सिख
- (viii) आर्य महिला समाज (ज) न्यायमूर्ति महादेव गोविंद रानाडे
- (प) सर सैयद अहमद खान
- (च) दादाभाई नौरोजी

3. सुधार आंदोलनों के किसी भी दो सीमाओं का उल्लेख करें?

4. निम्नलिखित उदाहरण को पढ़ें और दिये गए सवालों के जवाब दें :

रामवती एन आई ओ एस कार्यालय में चपरासी के रूप में काम कर रही है। उसकी 21 वर्ष की उम्र में शादी हो गई थी, लेकिन दुर्भाग्य से उसके पति का निधन हो गया। तब वह 28 वर्ष की थी। उसे एनआईओएस में उसके पति की जगह नौकरी की पेश की गई, क्योंकि उसने माध्यमिक स्कूल शिक्षा प्राप्त की थी। इस नौकरी के कारण रामवती अपने बच्चों तथा खुद को संभालने में सक्षम हैं। उसका सम्मानजनक जीवन है और उसके बच्चों को अपनी माँ पर गर्व है।

(क) यदि रामवती ने बाल विवाह किया होता तो उसके साथ क्या-क्या हो सकता था?

(ख) यदि रामवती को घर के बाहर काम करने की अनुमति नहीं मिलती तो उसकी तथा उसके परिवार की क्या दशा हो सकती थी।

6.4 भारतीय समाज पर सुधार आंदोलनों का प्रभाव

19वीं सदी के भारतीय सामाजिक धार्मिक आंदोलन भारतीयों के बीच चेतना पैदा करने में सक्षम हुए। इन सभी आंदोलनों ने सामाजिक और धार्मिक विचारों को समझने में तर्कसंगत सहायता की तथा वैज्ञानिक और मानवीय दृष्टिकोण को प्रोत्साहित किया। सुधारकों ने यह महसूस किया है कि आधुनिक विचारों और संस्कृति के भारतीय सांस्कृतिक धाराओं में एकीकृत करके आत्मसात किया जा सकता है। आधुनिक शिक्षा का परिचय जीवन के लिए एक वैज्ञानिक और तर्कसंगत दृष्टिकोण की दिशा में भारतीयों को निर्देशित कर सकता है। सब आंदोलनों ने महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए काम किया और जाति व्यवस्था विशेष रूप से अस्पृश्यता की आलोचना की है। वे आंदोलन सामाजिक स्वतंत्रता, समानता और भाईचारा की दिशा में कार्य करते हैं।

शिक्षा में विशेष रूप से महिलाओं की शिक्षा को महत्व दिया गया था। महिलाओं की स्थिति को बढ़ाने के लिए कुछ कानूनी उपाय शुरू किये गये। उदाहरण के लिए सती प्रथा तथा शिशु हत्या

अवैध घोषित किया गया। 1856 में पारित कानून से पुनर्विवाह संभव बन गया और विधवाओं की स्थिति में सुधार हुआ। 1872 में पारित कानून, अंतर्जातीय और अंतर सांप्रदायिक विवाह को मान्यता दी। 1860 में पारित कानून द्वारा लड़कियों की शादी की उम्र 10 वर्ष तक बढ़ा दी गई। बाल विवाह को रोकने के लिए इसके बाद शारदा अधिनियम 1929 को पारित किया गया। इसके अनुसार 14 वर्ष से कम की लड़की और 18 वर्ष से कम का लड़का शादी नहीं कर सकते थे। इन सुधारकों के प्रयासों के सबसे स्पष्ट प्रभाव राष्ट्रीय आंदोलन पर दिखा। महिलाओं की एक बड़ी संख्या आजादी के संघर्ष में भाग लेने के लिए घरों से बाहर आई। इंडियन नेशनल आर्मी की कैप्टन लक्ष्मी सहगल की तरह महिलाओं की भूमिका सरोजिनी नायडू एनी बेसेंट, अरूणा आसफ अली तथा अन्य स्वतंत्रता संग्राम में अति महत्वपूर्ण है। महिलाएं अब परदे से बाहर आई और नौकरियां करने लगी।

सुधारकों के लगातार प्रयासों से समाज पर भारी प्रभाव पड़ा। धार्मिक सुधार आंदोलनों ने भारतीयों के मन में अधिक आत्मसम्मान और आत्म विश्वास और देश के प्रति गर्व का भाव जगाया। इन सुधार आंदोलनों से अनेक भारतीयों को आधुनिक दुनिया के साथ जोड़ा। लोग भारतीय के रूप में पहचान बनाने में अधिक जागरूक हो गए। अंततः लोगों का एक जुट होना भारत का स्वतंत्रता आंदोलन ही ब्रिटिश के विरुद्ध संघर्ष का जिम्मेदार है।

20वीं शताब्दी में और 1919 के बाद भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन सामाजिक सुधार का मुख्य प्रचारक बन गया। स्वतंत्रता ने विचारों को भारतीय भाषाओं के द्वारा जनता तक पहुंचाने के लिए प्रयोग किया गया। उन्होंने 1930 में उपन्यास, नाटक, लघु कथाएं, कविता, प्रेस तथा सिनेमा का अपने विचारों को प्रचारित करने में प्रयोग किया। आत्म विश्वास, आत्म सम्मान, जागरूकता, देशभक्ति तथा एक विकसित राष्ट्रीय चेतना की भावना को इन आंदोलनों द्वारा बढ़ावा दिया गया। क्या आपको याद है कि उपन्यास को पढ़ने और कुछ स्वतंत्रता आंदोलन से संबंधित फिल्मों को देखना भी आंदोलन का हिस्सा माना जाता था। आरंभ के लिए कुछ इस तरह के लेखकों और उनकी पुस्तकों की एक सूची बनायें। कुछ फिल्मों की भी एक सूची बनाओ। इसके अलावा कुछ गीतों की भी एक सूची बनाएं। जैसे “इंसाफ की डगर पे, बच्चों दिखाओ चल के ये देश है तुम्हारा, नेता तुम्हीं हो कल के”

या “बंदे मातरम”।

सुधार आंदोलनों की कुछ सीमाएं थी। यह एक बहुत छोटे प्रतिशत जनसंख्या को प्रभावित कर पाए थे जो ज्यादातर शिक्षित वर्ग ही थे। यह आम जनता तक नहीं पहुंच सके। यह किसानों एवं गरीब जनता तक भी नहीं पहुंच सके।

मानवीय : मानवीय चिंता का विषय होने या कल्याण को बेहतर बनाने में मदद सभी लोगों की खुशी के लिए तथा उनके कल्याण को बेहतर बनाने में मदद के लिए

स्वतंत्रता : अपने स्वच्छंद

विरादरी : भाईचारा

आपने क्या सीखा

- भारतीय समाज में अंधविश्वासी विषय पिछड़ेपन तथा कुप्रथाएं जैसे सती या विधवा बलि और अस्पृश्यता जैसे मुद्दों को चुनौती दी गई।
- राजा राममोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, ज्योतिबा फुले, स्वामी दयानंद सरस्वती, सर सैयद अहमद खान, स्वामी विवेकानंद जैसे शिक्षित भारतीयों ने समाज में सुधार से पहले धर्म सामाजिक प्रथाओं के रूप में अक्सर धार्मिक विश्वासों से प्रेरित समाज में सुधार किया।
- समाज में सुधार आंदोलनों का प्रभाव बहुत था। सुधारकों के लगातार प्रयासों की वजह से कानून द्वारा सती, अस्पृश्यता जैसे सामाजिक बुराईयों को समाप्त कर दिया गया था। विधवा पुनर्विवाह शुरू किया गया। आधुनिक शिक्षा को समाज में प्रोत्साहित किया गया।
- सभी प्रयासों के बावजूद, भारत में अभी भी शिक्षित लोगों की जागरूकता फैलाने में आवश्यकता है। इस संबंध में मीडिया की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है।
- सभी सामाजिक और धार्मिक आन्दोलनों ने समाज में सुधार के लिए आधुनिक शिक्षा और वैज्ञानिक ज्ञान को महत्वपूर्ण बताया और महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए स्त्री शिक्षा को महत्वपूर्ण बताया।

पाठांत प्रश्न

1. 19वीं सदी के भारत में सामाजिक प्रथाओं के अस्तित्व के बारे में बताएं।
2. आपको क्यों लगता है कि सुधारों के लिए समाज को जगाने की जरूरत थी?
3. आपको ऐसा क्यों लगता है कि सामाजिक सुधार आंदोलन का धार्मिक सुधारों के बिना कोई अर्थ नहीं है?
4. क्या आपको लगता है कि सुधारक भारतीय समाज में परिवर्तन लाने में सक्षम थे?
5. सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों ने किस प्रकार राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व किया?
6. जाति व्यवस्था एवं विधवा पुनर्विवाह की वकालत में सुधारकों की भूमिका स्पष्ट करें। (क) राजा राम मोहन राय
(ख) ईश्वर चंद्र विद्यासागर
(ग) ज्योतिबा फूले
7. निम्नलिखित सुधारकों के बीच सामान्य लक्षण को पहचानें:-
(क) थियोसोफिकल सोसायटी और रामकृष्ण मिशन।
(ख) अकाली आंदोलन और आर्य समाज
8. 19वीं सदी में भारत में महिलाओं की शिक्षा के विकास में कौन सी बाधाएं आईं?
9. मुसलमानों में अंग्रेजी की शिक्षा किसने शुरू की। इस क्षेत्र में उनके योगदान और भूमिका का वर्णन करें।

10. नक्शे को ध्यान से पढ़ें और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें ।?

(क) ब्रह्म समाज, आर्य समाज, प्रार्थना समाज और एम.ए.ओ कॉलेज किन स्थानों पर लोकप्रिय हुए ।

(ख) जो सामाजिक सुधारक पश्चिमी भारत में सक्रिय थे, उनके नाम बतायें तथा जिस स्थान पर वे सक्रिय थे उनको चिन्हित करें ।



चित्र : भारत का मानचित्र जिसमें अरब सागर और बंगाल की खाड़ी का दर्शाया गया है ।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

1. सती, जाति व्यवस्था, बाल विवाह, विधवाओं की दुर्दशा ।
2. क्योंकि यह मानवता की बुनियादी सिद्धांतों के खिलाफ था ।
3. साहस, दृढ़ संकल्प, प्रेरणा और लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए दृष्टि ।
4. उन्होंने शास्त्रों में कठोरता और अंधविश्वास को नहीं पाया ।

6.2

(1) (i) (ग) (ii) (घ) (iii) (क)

2. (i) (च) (ii) (ग) (iii) (क) (iv) (ख) (v) (छ) (vi) (घ)

(vii) (प) (viii) (ई)

3. (क) वह अनपढ़ थी, जिसका छोटी आयु में विवाह हो गया; उसके कई बच्चे हैं और संभवतः बीमार स्वास्थ्य के कारण पीड़ित थी। कम उम्र में बच्चे को जन्म देने के कारण वह भी बीमार थी। उसे जीने के लिए माता-पिता या ससुराल वालों पर निर्भर रहना पड़ता है।

(ख) सामाजिक-आर्थिक दयनीय स्थिति के कारण उसे दूसरों पर निर्भर होना पड़ता है।

4. (क) इससे ज्यादातर शिक्षित वर्ग की जनसंख्या का एक बहुत छोटा प्रतिशत प्रभावित है।

(ख) यह जनता तक नहीं पहुंचा था।

7. ब्रिटिश शासन के विरुद्ध लोकप्रिय जन प्रतिरोध

अंग्रेजी औपनिवेशिक शासन का भारतीय समाज के सभी वर्गों पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि कुछ अजनबियों द्वारा अनेक वर्षों तक हमारे ऊपर शासन किया जाए? नहीं बिल्कुल नहीं। हममें से अधिकांश का जन्म 1947 के बाद हुआ, जबकि भारत पहले ही स्वाधीनता प्राप्त कर चुका था। क्या आप जानते हैं कि अंग्रेजों ने भारत पर कब विजय प्राप्त की और इसकी अर्थव्यवस्था को औपनिवेशिक नियंत्रण में ले लिया जिसके लिए उन्हें लोगों के कड़े विरोध का सामना करना पड़ा। इन विरोधों का एक लंबा तांता सा लग गया। इन विरोधों का नेतृत्व जीते गए भारतीय राज्यों के अपदस्थ शासकों, पूर्व कर्मचारियों और दरिद्र बना दिए गए ज़मींदारों और पोलिगरो द्वारा किया गया। इन विद्रोहों ने विभिन्न नस्लों, धर्मों और सामाजिक पृष्ठभूमि के सभी वर्गों को अंग्रेजी शासन के विरुद्ध एकजुट कर दिया। इस पाठ में हम कुछ महत्वपूर्ण लोकप्रिय विद्रोहों, उनकी प्रकृति और उनके अभिप्राय के संबंध में पढ़ेंगे। हम 1857 के विद्रोह के संबंध में भी पढ़ेंगे जिसका हमारे राष्ट्रीय आंदोलन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा था।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- 1857 से पूर्व औपनिवेशीय शासन के विरुद्ध लोकप्रिय प्रतिरोधी आंदोलनों के संबंध में चर्चा कर सकेंगे ।
- किसानों और जनजातियों के विरोध की प्रकृति और उसकी सार्थकता की व्याख्या कर सकेंगे ।
- ऐसे मुद्दों की पहचान कर सकेंगे जिनके परिणामस्वरूप 1857 का विद्रोह भड़का ।
- 1857 के विद्रोह के महत्व और उसके अभिप्राय का विश्लेषण कर सकेंगे ।

7.1 अंग्रेजी शासन के विरुद्ध प्रारंभिक प्रतिरोध आंदोलन (1750-1857)

क्या आप किसी ऐसे कारण के संबंध में सोच सकते हैं जिसकी वजह से इन विद्रोही आंदोलनों को लोकप्रिय कहा जाता है? क्या इसका कारण उन लोगों की बहुत बड़ी संख्या है जिन्होंने इनमें

भाग लिया? अथवा यह कि इन आंदोलनों को मिली अपार सफलता? इस खंड को पढ़ने के बाद आप किसी निर्णय तक पहुंचने के योग्य होंगे।

7.1.1 जनविद्रोह व प्रतिरोध के कारण

लोग विरोध क्यों करते हैं? वे तभी विरोध करते हैं जब उन्हें अनुभव होता है कि उनके अधिकार छीने जा रहे हैं। इसका तात्पर्य यह है कि सभी प्रतिरोधी आंदोलन किसी न किसी प्रकार के शोषण के विरुद्ध प्रारंभ हुए। अंग्रेजी शासन, जिसकी नीतियों ने भारतीयों के अधिकारों, प्रतिष्ठा और आर्थिक स्थिति की अवमानना की वे सभी इसी शोषण का प्रतीक थीं।

विरोध और प्रतिरोध मुख्यतः अपदस्थ शासक वर्गों, किसानों और जनजातियों द्वारा किया गया था। उदाहरणतया जब वारेन हेस्टिंग्स के बनारस पर आक्रमण किया और धन और सेना की अपनी अन्यायपूर्ण मांग पूरी करने के लिए राजा चेत सिंह को कारागार में डाला तो बनारस के लोगों ने विरोध किया। मद्रास प्रेसीडेंसी में जब अंग्रेजों ने सामंतों (पॉलिगारस) के सैनिक और भूमि अधिकारों को छीनने का प्रयास किया तो उन्होंने अंग्रेजों का विरोध किया। धार्मिक रीति-रिवाजों में हस्तक्षेप इन लोकप्रिय प्रतिरोधों का एक और कारण था। यह बगावतें प्रायः ईसाई विरोधी होती थीं। इसका कारण था अंग्रेजों द्वारा प्रारंभ किए गए सामाजिक-धार्मिक सुधार, जो लोगों को स्वीकार नहीं थे।

कुछ अन्य विद्रोहों में शासक और शोषित वर्गों के धर्म में भिन्नता भी प्रतिरोध का तात्कालिक कारण बनी। मालाबार क्षेत्र के मैप्पिला विरोध में ऐसा ही हुआ था। यहाँ पर मुसलमान किसानों ने हिन्दु जमींदारों और साहूकारों के विरुद्ध लड़ाइयाँ कीं। अगले खंड में हम इस आंदोलन की प्रकृति के संबंध में पढ़ेंगे।

7.1.2 जनविद्रोह व प्रतिरोध की प्रकृति

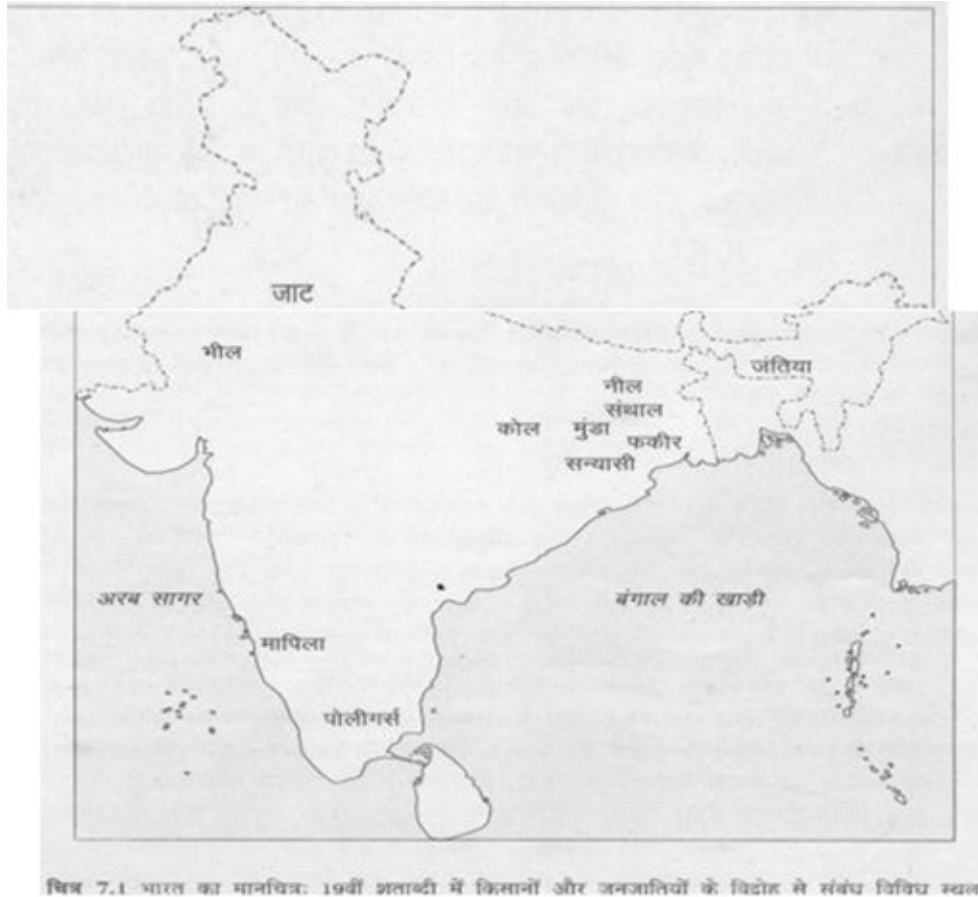
अपना विरोध प्रकट करने के लिए विद्रोहियों द्वारा दमनकारियों के प्रतिरोध में हिंसा और लूटपाट जैसे हथियारों का प्रयोग किया जाता था। निम्न और शोषित वर्ग प्रायः अपने शोषकों पर आक्रमण करते थे। यह शोषक थे अंग्रेज या जमींदार अथवा लगान एकत्र करने वाले अधिकारी, धनी व्यक्तियों के समूह और व्यक्ति। संथाल विद्रोह में बहुत बड़े स्तर पर हिंसा देखने में आई जहाँ सूदखोरों के बही-खातों और सरकारी भवनों को जला दिया गया और शोषकों को दण्ड दिया गया।

पिछले पाठ में हमने अंग्रेजों की भूमि संबंधी नीतियों के संबंध में पढ़ा। इनका उद्देश्य था किसानों और जनजातियों से यथासंभव अधिक से अधिक धन निकलवाना। इसने किसानों और जनजातियों में इतना असंतोष भर दिया कि उन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध अपना क्रोध प्रदर्शित करना शुरू कर दिया। यह जानना बहुत महत्वपूर्ण है कि इन लोकप्रिय विद्रोही आंदोलनों का उद्देश्य था पुरानी संरचनाओं और संबंधों का पुनरुत्थान करना जिन्हें अंग्रेजों ने नष्ट कर दिया था। प्रत्येक सामाजिक वर्ग के पास औपनिवेशिक शक्तियों के विरुद्ध आवाज उठाने के अपने निजी कारण थे। उदाहरणतया पदच्युत जमींदार और शासक अपनी ज़मीन और संपदाएँ पुनः प्राप्त करना चाहते

थे । इसी प्रकार, जनजातीय समूहों ने इसलिए विद्रोह किया कि वे नहीं चाहते थे कि व्यापारी और सूदखोर उनके जीवन में हस्तक्षेप करें ।

7.2 19वीं शताब्दी में किसानों और जनजातियों के विद्रोह

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि 1760 की कालावधि से शुरू करें तो सन्यासी विद्रोह और बंगाल और बिहार में मछुआरों के विद्रोह तक शायद ही कोई वर्ष होगा जिसमें कोई सैनिक विद्रोह नहीं हुआ। 1763 से 1856 तक छोटे-छोटे विद्रोहों को छोड़कर 40 मुख्य विद्रोह हुए। तथापि, यह सभी विद्रोह विशिष्टताओं और प्रभाव की दृष्टि से स्थानीय ही थे। वे सभी परस्पर भिन्न प्रकृति के थे क्योंकि प्रत्येक विद्रोह का भिन्न लक्ष्य था। इस पाठ के अगले खंड में हम इन आंदोलनों के संबंध में अधिक विस्तार से पढ़ेंगे।



चित्र 7.1 भारत का मानचित्र: 19वीं शताब्दी में किसानों और जनजातियों के विद्रोह से संबंध विविध स्थल

7.2.1 किसान विद्रोह

पिछले पाठ में आपने विविध भू-व्यवस्थाओं उनके भारतीय किसानों पर पड़े प्रतिकूल प्रभावों के संबंध में पढ़ा। स्थाई व्यवस्था (पर्मनैन्ट सैटलमेंट) ने ज़मींदारों को भूमि का स्वामी बना दिया था, परंतु यदि वे समय पर लगान अदा करने में असफल रहें तो उनकी ज़मीन को बेचा जा सकता था। इसने ज़मींदारों और भू-स्वामियों को किसानों से धन छीनने के लिए मजबूर कर दिया, चाहे उनकी सारी फसल नष्ट हो गई हो। यह किसान प्रायः ऋणदाताओं से ऋण लेते थे जिन्हें महाजन भी कहा जाता था। वे दरिद्र किसान उनसे लिए गए ऋण को कभी भी लौटा नहीं पाते थे। इसके कारण उन्हें घोर दरिद्रता जैसे कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था और उन्हें बंधुआ मजूदरों की तरह काम करने के लिए बाध्य किया जाता था। अतः निम्न एवं शोषित वर्ग के लोग अपने शोषकों पर प्रायः आक्रमण करते रहते थे। ज़मींदारों द्वारा लगान का भुगतान न करने का तात्पर्य यह भी था कि अंग्रेजों द्वारा उनकी ज़मीन को छीन लिया जाएगा। तत्पश्चात् इस जमीन को ऊँची कीमत अदा करने वाले बोलीदाता को नीलामी में बेच दिया जाता था, जोकि प्रायः शहरी क्षेत्रों के निवासी होते थे। शहरों से आने वाले नये ज़मींदारों की ज़मीन में बहुत कम अथवा बिल्कुल भी रुचि नहीं होती थी। वे ज़मीन की उपजाऊ शक्ति को बढ़ाने के लिए बीजों या खाद में धन का निवेश नहीं करते थे परंतु उनकी रुचि अधिक से अधिक लगान वसूली, जितनी ज्यादा से ज्यादा वे कर सकते थे, में रहती थी। यह किसानों के लिए विनाशकारी प्रमाणित हुआ, जिससे वे बहुत पिछड़े और निष्क्रिय हो गये।

इस स्थिति से बाहर आने के लिए किसानों ने अब नील, गन्ना, पटसन (जूट), कपास, अफीम और इसी प्रकार की व्यापारिक फसलों की उपज शुरू कर दी। यहीं से खेती (कृषि) का वाणिज्यीकरण प्रारंभ हुआ। फसल की अवधि के दौरान किसान अब अपनी फसल/उत्पाद को बेचने के लिए थोक व्यापारियों, सौदागरों और दलालों पर निर्भर हो गए। जैसे ही वे व्यापारिक फसल की ओर मुड़े खाद्यान्नों का उत्पादन कम हो गया। खाद्यान्नों की कमी से अकाल पड़ गया। अतः इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि भूखे किसानों ने विद्रोह कर दिया। अंग्रेजी नीतियों के परिणामस्वरूप हुए किसान विद्रोहों के संबंध में आइए कुछ विस्तार से पढ़ते हैं।

1. फकीर और सन्यासी विद्रोह (1770-1820) : 1757 के पश्चात् बंगाल पर अंग्रेजों के नियंत्रण की स्थापना के उपरांत भू-लगान की वसूली और किसानों पर शोषण में बढ़ोतरी हो गई। 1770 के बंगाल में पड़े अकाल ने उन किसानों को जिनकी ज़मीनों पर कब्जा कर लिया गया था, अपदस्थ जमींदारों, सेना से निकाले गये सैनिकों और गरीबों को मिलकर विद्रोह करने के लिए मार्ग दिखाया। सन्यासी और फकीर भी इनके साथ जुड़ गए थे।

फकीर बंगाल में घुमन्तु धार्मिक मुसलमान भिक्षुओं के समूह थे। दो प्रसिद्ध हिन्दु नेता जिन्होंने इनका समर्थन किया वे थे भवानी पाठक और एक महिला देवी चौधरानी। इन्होंने अंग्रेजों के कारखानों पर धावा बोल दिया और उनका सामान, नकदी, शस्त्र और बारूद छीन लिए। मजनू शाह इनके प्रमुख नेताओं में से एक थे। अन्ततः 19वीं शताब्दी के प्रारंभ में इन विद्रोहों को नियंत्रित किया जा सकता।

सन्यासी विद्रोहों की घटनाएँ बंगाल में 1770 से 1820 के बीच के वर्षों में हुईं। 1770 के भीषण अकाल के बाद बंगाल में सन्यासियों के विद्रोह उभरे जिनके कारण अत्यंत अव्यवस्था और गरीबी फैल गई। तथापि, विद्रोह का तात्कालिक कारण था हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों

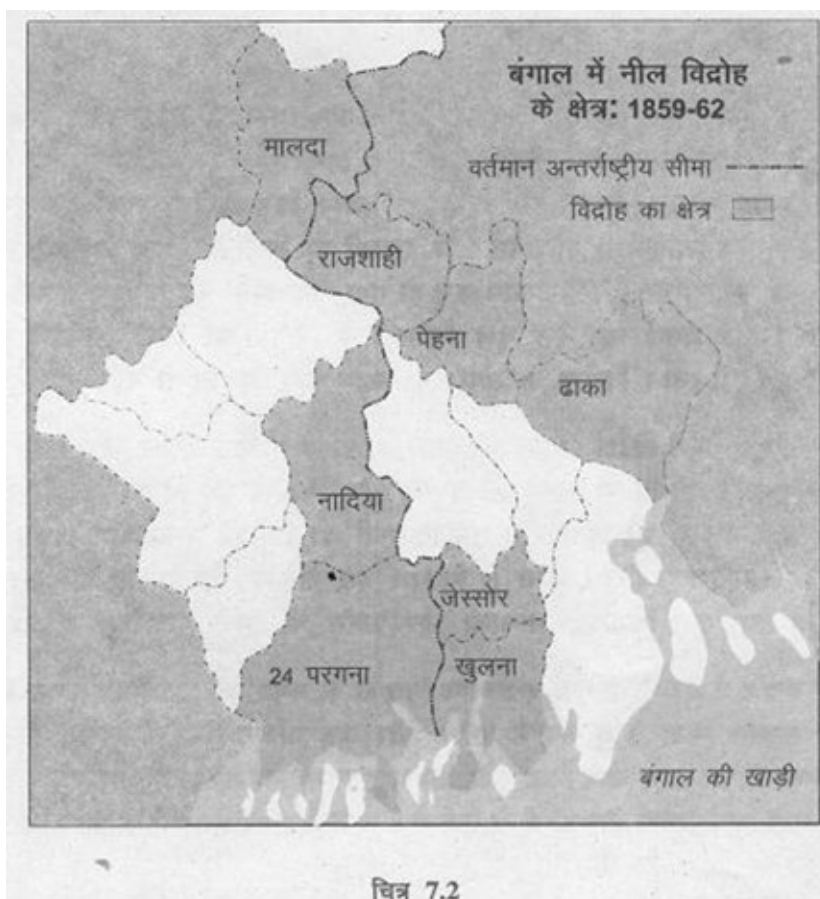
में से तीर्थस्थलों का जाने वाले तीर्थयात्रियों पर अंग्रेजी सरकार द्वारा लगाये जाने वाले प्रतिबंध ।

2. नील विद्रोह (1859-1862) : अंग्रेजों ने अनेक ऐसे उपायों को अपनाया जिनसे उनके लाभों में वृद्धि हो सकती थी । उन्होंने लोगों के जीवन-यापन के बुनियादी साधनों में हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया । उन्होंने न केवल नई फसलों की शुरुआत की बल्कि खेतीबाड़ी की नई तकनीकें भी शुरू कर दी । किसानों और जमींदारों पर भारी कर अदा किए जाने और वाणिज्यिक फसलें उगाने के लिए गहरा दबाव डालना शुरू कर दिया । ऐसी ही एक वाणिज्यिक फसल थी नील की खेती । नील की खेती का निर्धारण अंग्रेजों के कपड़ा बाजार के अनुरूप ही किया जाता था । नील की खेती करने वाले किसानों को मुख्यतया तीन कारणों से असंतोष था:

- नील उगाने के लिए उन्हें बहुत कम भुगतान किया जाता था ।
- नील की खेती लाभप्रद भी नहीं थी क्योंकि इसकी और खाद्यान्नों की अवधि

एक ही थी ।

- नील की खेती के परिणामस्वरूप मिट्टी की उर्वराशक्ति समाप्त होना ।



चित्र 7.2 बंगाल में नील विद्रोह के क्षेत्र

इसके फलस्वरूप खाद्यान्नों के भंडार का अभाव हो गया । किसानों को उन व्यापारियों और दलालों के हाथों परेशान होना पड़ा जिन पर उन्हें अपने सामान को बेचने, और कभी कभार

तो बहुत सस्ते दामों पर बेचने के लिए निर्भर होना पड़ता था। उन्होंने जमींदारों को अपना वर्चस्व बनाये रखने और उनके द्वारा शासित क्षेत्रों में उनकी समस्याओं के समाधान करने के लिए समर्थन दिया। किसानों ने बंगाल में नील की खेती न किए जाने के लिए एक अभियान चलाया। हिन्दु और मुसलमान किसानों ने मिलकर हड़तालें की और सबने मिलकर मालिकों पर कानूनी केस दर्ज करा दिए। प्रेस और मिशनरियों ने इनका समर्थन किया। नवम्बर 1860 में सरकार ने आदेश जारी किया, जिसमें अधिसूचित किया गया कि रैय्यतों को नील की खेती करने के लिए बाध्य करना गैर-कानूनी है। विद्रोहियों के लिए इसे बड़ी जीत माना गया।



चित्र 7.3 : बंगाल में नील की कृषि

चित्र 7.3 : बंगाल में नील की कृषि

3. फरायजी आंदोलन (1838-1848) : यह अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध सर्वप्रथम “कोई कर नहीं” दिए जाने संबंधी अभियान था जिसका नेतृत्व शरायतुल्लाह खान और दादू मियां ने किया। उनके स्वयंसेवकों की टुकड़ियों (बैंउस) ने नील बागान के मालिकों और ज़मींदारों से बड़ी बहादुरी के साथ युद्ध किया। इसने बंगाल के सभी खेतीहरों को भू-स्वामियों के अत्याचार और गैर-कानूनी वसूलियों के विरुद्ध एकजुट कर दिया।

4. वहाबी आंदोलन (1830-1860): इस आंदोलन के नेता थे रायबरेली के सैयद अहमद बरेलवी जो कि अरब के अब्दुल वहाब और दिल्ली के संत शाह वलीउल्लाह की शिक्षाओं से बहुत प्रभावित थे। मूलतः यह आंदोलन धार्मिक प्रकृति का था। शीघ्र ही कुछ स्थानों पर इसने वर्ग संघर्ष का रूप ले लिया, विशेष रूप से बंगाल में जहाँ सांप्रदायिक विभेदों के बावजूद किसान अपने ज़मींदारों के विरुद्ध एकजुट हुए।

7.2.2 किसान विद्रोह की सार्थकता

अंग्रेजों की आक्रामक आर्थिक नीतियों ने भारत की पारंपरिक कृषि प्रणाली को तहस-नहस कर दिया और किसानों की हालत को दयनीय बना दिया। देश के विभिन्न भागों में होने वाले किसान विद्रोह मुख्यतः इन्हीं नीतियों से निर्देशित थे। यद्यपि इन विद्रोहों का उद्देश्य भारत से अंग्रेजी राज को उखाड़ फेंकने का नहीं था, फिर भी इन्होंने भारतीयों में एक जागरूकता अवश्य पैदा की। अब उन्होंने और दमन के विरुद्ध संगठित होने और मिलकर इसके खिलाफ लड़ने की आवश्यकता अनुभव की। संक्षेप में कहें तो इन विद्रोहों ने अनेक अन्य प्रतिरोधों के लिए भूमिका तैयार की जैसे कि पंजाब में सिखों के युद्ध और अंत में 1857 का विद्रोह।

अपने दिन प्रतिदिन के जीवन में हम सब भी विरोध प्रदर्शित करते हैं यह प्रतिरोध, विद्रोही आंदोलनों से किस प्रकार भिन्न हैं? कुछ विद्रोही आंदोलनों को कौन-सी चीज़ लोकप्रिय बनाती है। अपने मित्रों, समवयस्क समूहों या परिवार के साथ इन प्रश्नों पर चर्चा कीजिए। अधिक से अधिक 50 शब्दों में इस चर्चा के संबंध में एक टिप्पणी लिखिए।

7.2.3 जनजातीय विद्रोह

एक अन्य समूह जिसने अंग्रेजी राज के विरुद्ध विद्रोह किया वे थे जनजाति के लोग। जनजातीय समूह भारतीय जीवन का एक महत्वपूर्ण और अभिन्न हिस्सा थे। इनके सहयोजन और तत्पश्चात् इन्हें अंग्रेजी प्रदेशों में सम्मिलित किए जाने से पहले इनकी निजी सामाजिक और आर्थिक प्रणालियाँ थीं। यह प्रणालियाँ पारंपरिक प्रकृति की थीं और जनजातियों की आवश्यकताओं को संतुष्ट करती थीं। प्रत्येक समुदाय का एक मुखिया होता था जो उस समुदाय के सभी मामलों के प्रबंधन में पूरी तरह स्वतंत्र होता था। जमीन और जंगल उनकी जीविका के मुख्य संसाधन थे। जीवित रहने के लिए जिन बुनियादी चीजों की उन्हें आवश्यकता होती थी उनकी पूर्ति जंगलों से होती थी। जनजातीय समुदाय गैर-जनजातीय समुदायों से बिल्कुल अलग-अलग रहते थे।

अंग्रेजी नीतियाँ जनजातीय समाज के लिए बहुत हानिकार सिद्ध हुई। इसने उनकी अपेक्षाकृत आत्म-निर्भर अर्थव्यवस्था और समुदायों को नष्ट कर दिया। विभिन्न प्रदेशों के जनजातीय समूहों ने अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह कर दिया। उनके आंदोलन गैर-औपनिवेशिक प्रकृति के थे क्योंकि वे सभी औपनिवेशिक प्रशासन के विरोध में चलाये गये थे।

जनजातीय लोग पारंपरिक हथियारों, विशेष रूप से धनुष बाणों का प्रयोग करते थे और अक्सर हिंसक हो जाते थे। अंग्रेजों ने इनका सख्ती से दमन कर इन्हें अपराधी और समाज विरोधी घोषित कर दिया। इनकी सम्पत्ति पर कब्ज़ा कर लिया गया। उन्हें जेलों में डाल दिया गया और कड़ियों को फांसी पर चढ़ा दिया गया। जनजातीय आंदोलन भारत के कुछ प्रदेशों तक ही सीमित रहा। परंतु जहाँ तक उपनिवेश-विरोधी आंदोलनों का प्रश्न है यह लोग इसमें भाग लेने के मामले में अन्य सामाजिक समूहों से किसी प्रकार भी पीछे नहीं रहे। अब हम कुछ मुख्य जनजातीय विद्रोहों के संबंध में पढ़ेंगे जो अंग्रेजी शासन के विरुद्ध खड़े हुए:

1. सन्थाल विद्रोह (1855- 1857) : सन्थालों के गढ़ को दमन-ए-कोह अथवा सन्थाल परगना कहा जाता था। इसका विस्तार उत्तर में बिहार के भागलपुर से दक्षिण में उड़ीसा तक, हजारीबाग से बंगाल की सीमा तक विस्तृत था। अन्य जनजातियों की तरह सन्थाल भी जंगलों और वनों में अपने जीवन यापन के लिए कठिन परिश्रम करते थे। वे अपनी जमीन पर तब तक खेतीबाड़ी करके शांतिपूर्ण जीवन यापन करते रहे जब तक कि अंग्रेज अधिकारी व्यापारियों, साहूकारों (ऋणदाताओं), जमींदारों और थोक सौदागरों को अपने साथ नहीं ले आए। वे उन्हें सामान उधार लेने और फसल के समय भारी ब्याज सहित इसे वापिस करने के लिये मजबूर करते थे। जिसके परिणामस्वरूप कई बार उन्हें महाजनों को न केवल अपनी फसल देनी पड़ती थी, बल्कि इसके साथ ही अपने हल, बैल और अंत में जमीन भी देने पर मजबूर होना पड़ता था। बहुत जल्दी ही वे बंधुआ मजदूर बन जाते थे और सिर्फ अपने ऋणदाताओं की ही सेवा कर सकते थे। शांतिपूर्ण जनजातीय समुदायों ने अब अपने शोषक अंग्रेजी अफसरों, जमींदारों और ऋणदाताओं के विरुद्ध शस्त्र उठा लिए थे। सन्थाल विद्रोहियों का नेतृत्व सिद्ध और कानु कर रहे थे। उन्होंने अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध लड़ाई में बहादुरी से मुकाबला किया। दुर्भाग्यवश इस असमान स्तर की लड़ाई में सन्थाल विद्रोह का दमन कर दिया गया था परंतु यह विद्रोह भविष्य के लिए कृषक संघर्षों के लिए एक प्रेरणा का स्रोत बना।



चित्र 7.4 तिरका मांझी

चित्र 7.4 तिरका मांझी

2. मुंडा विद्रोह (1899-1900) : 1857 के पश्चात हुये अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रमुख विद्रोहों में से एक था मुंडा विद्रोह। पारंपरिक रूप से मुंडाओं को जंगलों की सफाई करने के रूप में कुछ विशेषाधिकार प्राप्त थे जिन्हें किसी अन्य जनजाति को नहीं दिया जाता था। परंतु अंग्रेजों के आने से बहुत समय पहले से ही व्यापारियों और ऋणदाताओं के हाथों इस भू-पद्धति को विनष्ट किया जा रहा था। परंतु जब अंग्रेज वास्तव में इस क्षेत्र में आए और जब उन्होंने ठेकेदारों और सौदागरों को इस क्षेत्र से परिचित कराया तो उन्होंने इस पद्धति को और भी तेजी से नष्ट करने में सहायता की। इन ठेकेदारों को इनके साथ काम करने के लिए इकरारनामे में बंधे मजदूरों की आवश्यकता थी। अंग्रेजों और उनके ठेकेदारों के हाथों मुंडाओं के इस विस्थापन ने महत्वपूर्ण मुंडा विद्रोह को जन्म दिया। इस विद्रोह का बहुत महत्वपूर्ण नेता था बिरसा मुंडा जो कि अन्य लोगों की तुलना में अधिक जागरूक था क्योंकि उसने मिशनरियों से कुछ शिक्षा प्राप्त की थी। उसने अपनी जनजाति के लोगों को पवित्र वृक्ष कुंजों की पूजा को जीवित रखने के लिए प्रेरित किया। अंग्रेजों द्वारा अपनी बंजर जमीन पर कब्जे से बचने के लिए ऐसी कार्रवाई करना बहुत महत्वपूर्ण था। इसके लिए बिरसा मुंडा ने ऋणदाताओं/महाजनों और अंग्रेज अधिकारियों के विरुद्ध लड़ाई की। उसने पुलिस थानों, गिरजाघरों और धर्मप्रचारकों (मिशनरियों) पर आक्रमण किया। दुर्भाग्यवश विद्रोहियों की हार हुई और शीघ्र ही सन् 1900 में जेल में मुंडा की मृत्यु हो गई। परंतु उसका बलिदान व्यर्थ नहीं गया।

1908 के छोटानागपुर काश्तकारी अधिनियम (टीनेंस एक्ट) के अधीन लोगों को भूमि पर कुछ स्वामित्व अधिकार प्रदान किए गए और जनजातियों की बंधुआ मजदूरी पर भी रोक लगा दी गई। बिरसा मुंडा, मुंडा विद्रोह के निर्माता और एक ऐसे व्यक्ति बन गए जिन्हें आज भी याद किया जाता है।



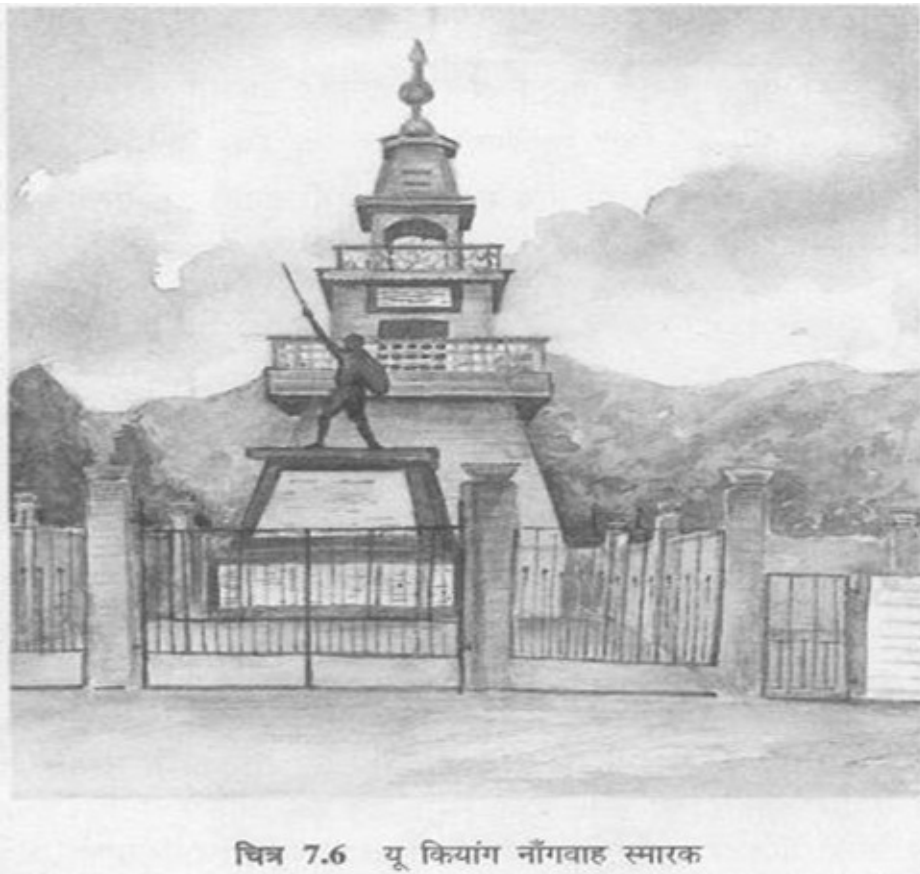
चित्र 7.5 बिरसा मुंडा

चित्र 7.5 बिरसा मुंडा

क्या आप जानते हैं

इनडेन्चर्ड: इनडेन्चर्ड मजदूर से तात्पर्य है वह व्यक्ति जिसे एक संविदा (टेके) के आधार पर एक निर्धारित समयावधि के लिए किन्हीं दूसरे व्यक्तियों के लिए काम करना पड़ता है। उस व्यक्ति को विदेश/किसी नए स्थान पर काम करना पड़ता है और इसके बदले में उसे यात्रा करने के लिए किराये का भुगतान, आवास और खाना दिया जाता है।

3. जयंतिया और गारों विद्रोह (1860-1870) : प्रथम एंग्लो-बर्मा युद्ध के उपरान्त अंग्रेजों ने ब्रह्मपुत्र घाटी (आधुनिक असम) को सिल्हट (आज का बांग्लादेश) से जोड़ने के लिए एक सड़क बनाने की योजना बनाई। भारत के उत्तर-पूर्वी भाग (आधुनिक मेघालय) में जयंतिया और गारों लोगों ने इस सड़क के निर्माण का विरोध किया जो कि अंग्रेजों के लिए सैन्यदलों के आवागमन के लिए यौद्धिक महत्व की थी। 1827 में जयंतिया लोगों ने काम को रोकने की कोशिश की और बहुत जल्दी ही यह असंतोष पड़ोस की गारो पहाड़ियों तक फैला गया। सतर्क अंग्रेजों ने कुछ जयंतिया और गारो गांवों को जला दिया। अंग्रेजों द्वारा सन् 1860 के दशक में गृहकर और आयकर शुरू किए जाने पर यह शत्रुता और भी बढ़ गई। जयंतियाओं के नेता यू कियांग नाँगवाह को गिरफ्तार कर लिया गया और सार्वजनिक रूप से उसे फांसी दे दी गई और गारो नेता तोगान संगमा अंग्रेजों से हार गए।



चित्र 7.6 यू कियांग नाँगवाह स्मारक

चित्र 7.6 यू कियांग नाँगवाह स्मारक

4. भीलों का विद्रोह (1818-1831) : भीलों की अधिकांश आबादी थी खानदेश में (आधुनिक महाराष्ट्र एवं गुजरात) खानदेश 1818 में अंग्रेजों के कब्जे में आ गया। भीलों ने उन्हें विदेशी माना। बाजीराव द्वितीय के बागी मंत्री त्रिंबकजी के उकसाने पर उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह कर दिया।

5. कोल विद्रोह (1831-1832) : छोटानागपुर क्षेत्र के सिंहभूम में कोलों को अपने मुखियाओं के अधीन स्वायत्तता प्राप्त थी परंतु अंग्रेजों के आने से उनकी स्वतंत्रता के लिए खतरा पैदा हो गया था। तदोपरान्त जनजातीय जमीनों के हस्तांतरण और साहूकारों, व्यापारियों और अंग्रेजी कानूनों के आने से वहाँ बहुत तनाव पैदा हो गया था। इसने कोल जनजाति को संगठित होने और विद्रोह करने के लिए उकसाया। इसका इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि अंग्रेजों को इस विद्रोह को दबाने के लिए दूर-दूर के स्थानों से सैनिक टुकड़ियाँ मंगवानी पड़ी।

6. मैप्पिला विद्रोह (1836-1854) : मैप्पिला, भाड़े पर खेतीबाड़ी करने वाले, भूमिहीन मजदूर और मालाबार क्षेत्र के मल्लुआरे मुसलमान थे। मालाबार क्षेत्र पर अंग्रेजों के अधिकार करने और नए भूमि कानूनों के साथ जमीन के मालिकों (मुख्यतया हिन्दु) द्वारा अत्याचारों ने मैप्पिला लोगों को अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए उकसाया। मैप्पिला लोगों के दमन में अंग्रेजों को बहुत वर्ष लग गए।

1. निम्नलिखित पदों का एक-एक वाक्य बनाकर इनकी व्याख्या करें।

(क) फकीर

(ख) महाजन

(ग) मैप्पिला

2. नीचे दिए गए रिक्त स्थानों में ऐसे तीन समूहों की सूची बनाएँ जो भारतीय किसानों के शोषण में सम्मिलित थे।

(क) —

(ख) —

(ग) —

3. नीचे दिए गए रिक्त स्थान में जन विद्रोह व प्रतिरोध के तीन कारण लिखें:-

(क) —

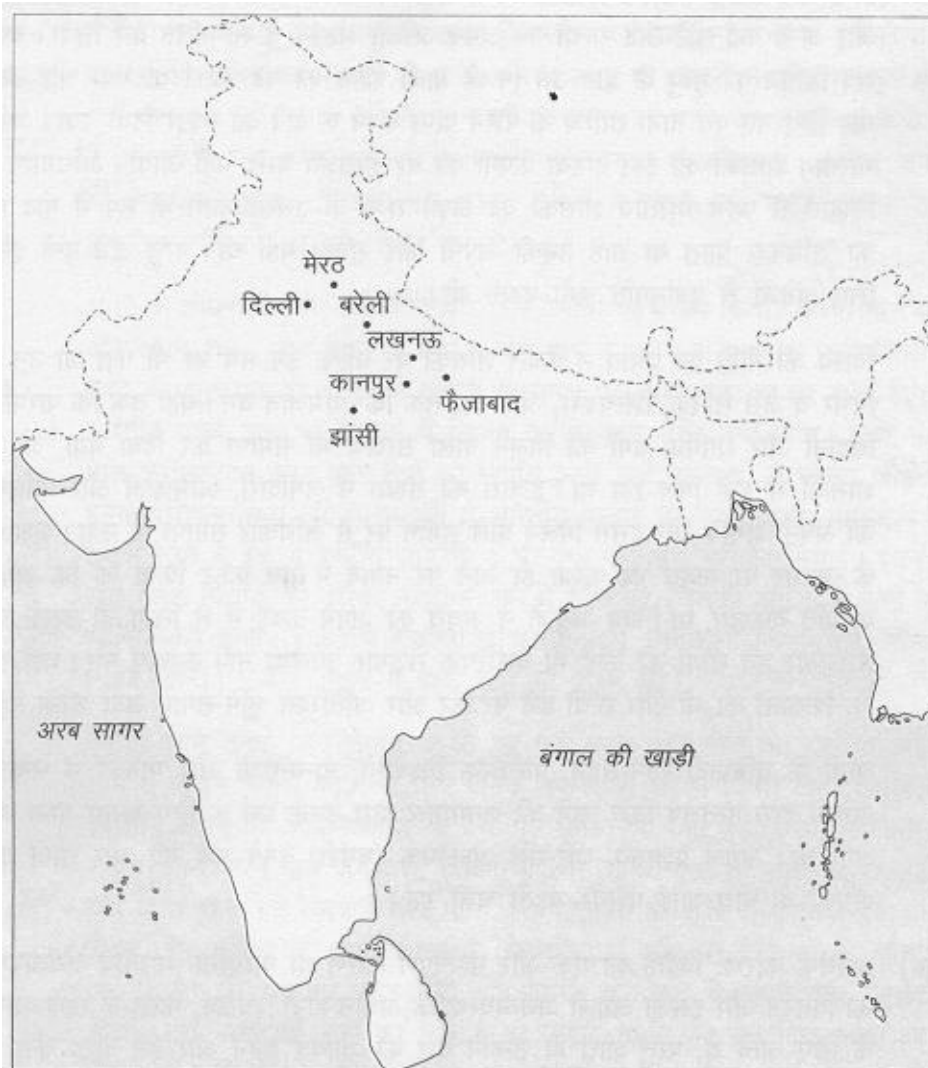
(ख) —

(ग) —

7.3 1857 का विद्रोह- कारण, दमन और परिणाम

1857 का विद्रोह 10 मई को जब प्रारंभ हुआ जब भारतीय सैनिकों ने मेरठ में बगावत कर दी। अंग्रेजों ने इसे सिपाही विद्रोह का नाम दिया, परंतु अब इसे अंग्रेजों के विरुद्ध स्वाधीनता प्राप्ति का प्रथम युद्ध माना जाता है। भारतीय सैनिकों ने अपने यूरोपीय अधिकारियों को मार गिराया

और दिल्ली की ओर कूच कर दिया। वे लाल किले में प्रवेश कर गये और उन्होंने वयोवृद्ध और शक्तिहीन मुगल बादशाह बहादुरशाह जफ़र को भारत का सम्राट घोषित कर दिया। यह विद्रोह अंग्रेजों की आक्रामक साम्राज्यिक नीतियों के विरुद्ध, एक बड़ा औपनिवेशीय- विरोधी आंदोलन था। वास्तव में यह आंदोलन अंग्रेजी शासन के विरुद्ध एक आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक संघर्ष था। क्रोध की इस विस्फोटक अभिव्यक्ति और असंतोष ने भारत के बहुत बड़े भाग में औपनिवेशिक शासन की नींव हिलाकर रख दी। अब हम, भारतीय लोगों में अंग्रेजी शासन के विरुद्ध उभरे असंतोष के कारणों के संबंध में अध्ययन करेंगे जिन्होंने विद्रोह करवाया।



चित्र 7.7 1857 के विद्रोह के प्रमुख केन्द्र

चित्र 7.7 1857 के विद्रोह के प्रमुख केन्द्र

(क) राजनीतिक कारण : राज्यों को अपने राज्य में मिलाने की नीति (कब्जे) के द्वारा औपनिवेशीय विस्तार की प्रकृति, भारतीय शासकों में असंतोष का प्रमुख कारण बना।

अंग्रेज जमीन प्राप्त करना और इंग्लैण्ड के लिए यथासंभव अधिक से अधिक धन की उगाही करना चाहते थे। विलय की नीति को अधिग्रहण का सिद्धांत 'डॉक्टरीन ऑफ लैप्स' कहा गया और सहायक संधि जिसके परिणामस्वरूप अनेक स्वतंत्र साम्राज्यों को अंग्रेजी शासन में मिला लिया गया। यह वे प्रदेश थे जिनको अंग्रेजी शासन की सुरक्षा मिली हुई थी परंतु उनके शासकों का निधन हो चुका था और उनके पीछे उनके राज्य का कोई नैसर्गिक उत्तराधिकारी नहीं था जिसके परिणामस्वरूप उनके दत्तक पुत्र उनकी संपत्ति के उत्तराधिकारी नहीं बन सकते थे और न ही अंग्रेजों द्वारा उन्हें प्रदान की जा रही पेंशन प्राप्त कर सकते थे। इस प्रकार लॉर्ड डल्हौजी ने सतारा के मराठा राज्यों नागपुर, झांसी और अन्य कई छोटे-छोटे राज्यों को अपने अंग्रेजी शासन में सम्मिलित कर लिया। बाजी राव द्वितीय की मृत्यु के बाद उसे मिलने वाली पेंशन को बंद कर दिया गया और उनके गोद लिए गए पुत्र नाना साहिब के पेंशन प्राप्त करने के दावे को नकार दिया गया। अनेक भारतीय शासकों को ईस्ट इंडिया कंपनी का यह हस्तक्षेप पसंद नहीं आया। अधिग्रहण के सिद्धांत से पहले भारतीय शासकों को अपने राज्य के उत्तराधिकारी के रूप में गोद लेने का अधिकार प्राप्त था चाहे उनकी अपनी कोई संतान नहीं थी। परंतु अब उन्हें इसके लिए अंग्रेजों से पूर्वानुमति लेनी पड़ती थी।

विलय की नीति का प्रभाव न केवल शासकों पर बल्कि उन सब पर भी पड़ा जो उन पर निर्भर थे जैसे सैनिक, शिल्पकार, और यहां तक कि अभिजात वर्ग। यहाँ तक कि पारंपरिक विद्वानों और धार्मिक वर्गों को मिलने वाला संरक्षण भी समाप्त कर दिया गया, जो इन शासकों से इन्हें मिल रहा था। हजारों की संख्या में जमींदारों, अभिजातों और पोलिगरो का अपनी ज़मीन और इससे मिलने वाले लगान पर से अधिकार समाप्त हो गया। कुशासन के आधार पर अवध पर कब्जा हो जाने पर नवाब ने रोष प्रकट किया जो कि अंग्रेजों के प्रति वफादार था। जब अंग्रेजों ने अवध को अपने कब्जे में ले लिया तो उसके बाद बेरोज़गार हुये लोगों को कोई भी वैकल्पिक रोज़गार उपलब्ध नहीं करवाए गए। यहाँ तक कि किसानों को भी और ऊँची दरों पर कर और अतिरिक्त भूमि-लगान अदा करना पड़ा।

लोगों के बुनियादी रहन-सहन, पारंपरिक विश्वासों, मान्यताओं और मानकों में लगातार अंग्रेजों द्वारा हस्तक्षेप किए जाने को जनमानस द्वारा उनके धर्म के लिए खतरा माना जाने लगा था। अंग्रेज प्रशासक धीरे-धीरे आक्रामक (घमंडी) बनते चले गए और लोगों तथा अंग्रेजों के बीच खाई परस्पर बढ़ती चली गई।

(ख) आर्थिक कारण : विद्रोह का एक और महत्वपूर्ण कारण था पारंपरिक भारतीय अर्थव्यवस्था का विघटन और इसका अंग्रेजी अर्थव्यवस्था के अधीन होना। अंग्रेज, भारत के साथ व्यापार के लिए आये थे, परंतु शीघ्र ही उन्होंने देश को शोषित करने और इसे दरिद्र बना देने का निर्णय ले लिया। उन्होंने ने यहाँ से इतना ज्यादा से ज्यादा धन और कच्चा माल ले जाने का प्रयास किया जितना कि उनके लिए ले जाना संभव था। सभी ऊँचे और अधिक वेतन वाले पद उन्होंने अपने लिए आरक्षित कर लिए। अपने व्यापार को बढ़ाने और विदेशी वस्तुओं के आयात-निर्यात के लिए उन्होंने राजनीतिक नियंत्रण का प्रयोग किया। भारत से संपदा की लूटपाट और धन निकासी के लिए हर उपाय का प्रयोग किया गया। अंग्रेजी

नीतियों के अधीन भारतीय अर्थव्यवस्था को अब तक झकझोर कर रख दिया था। क्योंकि उन्होंने भारतीय व्यापार और उद्योगों को नष्ट करने के लिए काम किया इसलिए भारतीय हस्तशिल्प पूरी तरह तहस-नहस हो गए थे। जिन शिल्पकारों को शाही संरक्षण मिला हुआ था, उन राज्यों को अंग्रेजी राज में विलय के उपरान्त वे अत्यंत दरिद्र हो गए थे। वे अंग्रेजी कारखाने में बने उत्पादों का मुकाबला नहीं कर सकते थे क्योंकि वहाँ पर मशीनों का प्रयोग किया जाता था। इससे भारत अंग्रेजी सामान का बहुत ही बढ़िया उपभोक्ता और इंग्लैण्ड के उद्योगों के लिए कच्चे माल की पूर्ति का बहुत बड़ा आपूर्तिदाता बन गया था। अंग्रेजों द्वारा मशीनों से बुने गए सस्ते कपड़े भारत में बेचे जाते थे जिससे भारत के कुटीर उद्योग नष्ट हो गए। इसके परिणामस्वरूप लाखों शिल्पकार बेकार हो गए। अंग्रेजों ने इंग्लैण्ड स्थित कारखानों के लिए कच्चा माल भी यहीं से भेजा जाता था। इससे भारतीय बुनकरों के लिए यहाँ कुछ भी नहीं बचा। अंग्रेजों ने भारतीय सामान पर भारी कर लागू कर दिया। अब वे अत्यधिक लाभ कमा सकते थे क्योंकि उनके सामान से प्रतिस्पर्धा के लिए अब कोई भी भारतीय उत्पाद नहीं था। इस प्रकार अंग्रेजों ने, भारत की संपूर्ण धन-संपदा और प्राकृतिक संसाधनों से इसे वंचित कर दिया।

भारत के शोषण के लिए अंग्रेजों ने और किन उपायों का प्रयोग किया? कच्चा माल खरीदने और अपना तैयार माल बेचने के लिए उन्होंने भाप से चलने वाले जहाज (स्टीमशिप्स) और रेलवे की शुरुआत की। रेलवे ने अंग्रेजों के समक्ष एक बहुत बड़ा बाज़ार खोल दिया और भारतीय कच्चे माल को विदेशों में निर्यात करना बहुत सरल बना दिया। रेलवे ने कच्चे माल का उत्पादन करने वाले क्षेत्रों को निर्यात करने वाले बंदरगाहों से परस्पर जोड़ दिया। इसके परिणामस्वरूप अंग्रेजी वस्तुओं से भारतीय बाज़ार भर गया। परंतु क्या आप जानते हैं कि रेलवे ने देश में राष्ट्रीय जागरण में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसने लोगों और उनके विचारों को परस्पर नजदीक लाने में मदद की, जिसकी अंग्रेजों ने कभी कल्पना भी नहीं की होगी। 1853 में डल्हौजी ने कलकत्ता से आगरा के लिए प्रथम टेलीग्राफिक खोली। उन्होंने भारत में डाक सेवा भी प्रारंभ की।

क्योंकि भूमि उनके लिए लगान वसूली का एक बहुत बड़ा स्रोत था, इसलिए अंग्रेजों ने भूमि से लगान वसूली बढ़ाने के लिए अनेक उपायों के बारे में विचार किया। भूमि लगान की मांग बढ़ाने की औपनिवेशीय नीति के परिणामस्वरूप बहुत बड़ी संख्या में किसानों को लगान वसूल करने वाले ज़मींदारों, व्यापारियों और ऋणदाताओं के हाथों अपनी ज़मीन से हाथ धोना पड़ा। इसे रैय्यवाड़ी और महलवाड़ी पद्धतियों के जरिए लागू किया गया। बंगाल, बिहार और उड़ीसा की स्थाई व्यवस्था (सैटलमेंट) में भूमि पर किसानों के आनुवांशिक उत्तराधिकार को मान्यता प्राप्त नहीं थी। दूसरी ओर यदि वे अपने कुल उत्पादन का 10वां/11वां भाग अदा नहीं कर पाते थे तो उनकी संपत्ति को बेच दिया जाता था। इस स्थिति से बचने के लिए किसान प्रायः कर्जदाताओं से ऊँची ब्याज दरों पर कर्ज लेते थे। यहाँ तक कि कई बार उन्होंने अपनी ज़मीन कर्जदाताओं के हाथों बेच भी दी थी। अधिकारी भी उन किसानों को परेशान करते थे जो न्याय न मिलने के विरुद्ध और भविष्य में परेशान किए जाने के डर से बचने के लिए अदालतों में जाते थे। अंग्रेजों द्वारा निर्मित ज़मींदारों का नया वर्ग उनका राजनीतिक सहयोगी बन गया। उन्होंने आवश्यकता के समय उन्हें समर्थन दिया और अंग्रेजों और लोगों के बीच मध्यस्थ की भूमिका निभाई। यहाँ तक

कि कुछेक ने तो स्वतंत्रता आंदोलन के विरुद्ध अंग्रेजों का साथ भी दिया। किसानों और शिल्पियों के आर्थिक पतन की छवि 12 प्रमुख और 1770 से 1857 तक के अनेक छोटे-छोटे अकालों में प्रदर्शित होती है। इन सभी घटकों ने अंग्रेज-विरोधी विचारधारा को फैलाने में सहायता की जो कि अंत में 1857 के विद्रोह के रूप में प्रस्फुटित हुई।

(ग) सामाजिक और धार्मिक कारण : अंग्रेज, भारतीय जनमानस की भावनाओं के प्रति संवेदनशील नहीं थे। सती प्रथा और कन्या शिशुओं की हत्या का विरोध, विधवा पुनर्विवाह और महिलाओं के लिए शिक्षा जैसे सामाजिक सुधारों ने अनेक लोगों को नाराज कर दिया था। लोगों के ईसाई बनाने के उद्देश्य से ईसाई-मिशनरियों ने स्कूल और कालेज खोले। उन्हें एक ऐसे जनसमूह की भी आवश्यकता थी जो उनका सामान, खरीदने की दृष्टि से पर्याप्त शिक्षित और आधुनिक हो, परंतु अंग्रेजों के हितों के लिए हानिकारक सिद्ध न हो। इस स्थिति ने लोगों में यह विश्वास पैदा कर दिया कि अंग्रेज सरकार उनके धर्म को समाप्त करके उन्हें ईसाई धर्म में परिवर्तित करने के लिए मिशनरियों के साथ मिली हुई। 1850 के 22वें अधिनियम के पास होने से धर्मांतरित ईसाईयों को अपनी पैतृक संपत्ति पाने का अधिकार मिल गया। स्वाभाविक था कि इस नये कानून को ईसाई धर्मांतरण करने वाले ईसाईयों के लिए एक रियासत के रूप में व्याख्यायित किया गया, जिसने लोगों में और अधिक चिंता और डर पैदा कर दिया।

1806 में मदरास प्रेसिडेंसी में सैनिकों की धार्मिक भावनाओं को चोट पहुँचाई गई। हिन्दुओं को उनके माथे से उनके धार्मिक प्रतीकों को मिटाने और मुसलमानों को उनकी दाढ़ी कटवाने के लिए बाध्य किया गया, हालांकि सैनिक विद्रोह को दबा दिया परंतु यह स्पष्ट था कि अंग्रेजों ने भारतीय सैनिकों को कभी-भी समझा नहीं और न ही कभी उनकी ओर ध्यान दिया। सैनिकों की सत्यनिष्ठा की और अधिक अवमानना की गई, अनेक सैनिक सुधारों के माध्यम से जिनके अधीन उनके लिए समुद्रपार सेवा पर जाना आवश्यक कर दिया गया। इसने उनकी धार्मिक भावनाओं को भड़का दिया। उनमें यह धारणा बनी हुई थी कि समुद्रपार यात्रा का तात्पर्य होगा अपनी जाति से बाहर कर दिया जाना।

(घ) सेना में असंतोष: ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना के सैनिक किसान परिवारों से आते थे, जो कि सरकारी नीतियों से अत्यधिक प्रभावित थे। भारतीय सैनिकों को सूबेदारों से ऊपर के पदों पर नहीं रखा जाता था। कुछ सैनिक यदि उन्हें समुद्रपार की ड्यूटी पर भेजा जाए तो विशेष भत्ता चाहते थे, कभी-कभार उनको यह भत्ता दिया जाता था परंतु अधिकांश समय कुछ भी नहीं दिया जाता था। इसलिए उन सैनिकों ने अपने अधिकारियों पर अविश्वास करना शुरू कर दिया। इन घटनाओं ने अपने निजी ढंग से 1857 के विद्रोह में योगदान दिया। सैनिकों को और भी कई प्रकार की शिकायतें थीं। उनको अपने बराबर पद के अंग्रेजों से कम वेतन अदा किया जाता था। इस कारण भारतीय सैनिकों का मनोबल बहुत दुर्बल हो गया था। दूसरी ओर जब भी सैनिक 'काला पानी' के पार अर्थात् समुद्र और सागर पार जाने के लिए मना करते जो कि उनके लिए धर्मविरुद्ध था, तो अंग्रेज उनके साथ क्रूरता से पेश आते।

(ङ) तात्कालिक कारण : भारतीयों में गहन आक्रोश उभर रहा था और वे विद्रोह करने के किसी अवसर की तलाश में थे। भूमिका तैयार थी। केवल उस भड़काने के लिए मात्र एक चिंगारी

की आवश्यकता थी। 1856 में चिकनाई वाले कारतूस शुरू किए जाने ने उस विद्रोह की आग को भड़काने के लिए चिंगारी का काम किया। सरकार ने पुरानी बंदूक (मस्केट), 'ब्राऊन बैग्स' को 'एनफील्ड राइफल' से बदलने का निर्णय लिया। एनफील्ड राइफल में बारूद भरने (लोड) की प्रक्रिया में कारतूस (कार्टरिज) को मुँह तक लाकर उसके ढक्कन को दांतों से काटकर खोलना पड़ता था। 1857 जनवरी में सैनिकों में यह अफवाह फैली हुई थी कि चिकनाई लगे कारतूसों (कार्टरिजों) में गाय और सूअर की चर्बी लगी हुई है। गाय हिन्दुओं के लिए पवित्र है और सूअर की मुसलमानों के लिए मनाही है। अब सैनिकों को विश्वास हो गया था कि चर्बी वाले कारतूस शुरू करना हिन्दुओं और मुसलमानों का धर्म भ्रष्ट करके उनकी धार्मिक भावनाओं को आहत करने के लिए जानबूझ कर किया गया प्रयास है। इसने 29 मार्च 1857 को सिपाहियों के विद्रोह में आग में घी का काम किया।

7.3.2 विद्रोह के चरण

मंगल पाण्डे पहला ऐसा सैनिक था जिसने खुले रूप में आदेशों का उल्लंघन किया। कलकत्ता के पास बैरकपुर में 29 मार्च 1857 को उसने दो अंग्रेज अफसरों की हत्या कर दी। उसे गिरफ्तार करके उस पर मुकदमा चलाया गया और फांसी दे दी गई। बैरकपुर की रेजीमेंट को तोड़ दिया गया। मंगल पाण्डे का समाचार बहुत जल्दी देश के दूसरे भागों तक पहुंच गया और परिणामस्वरूप खुले विद्रोह भड़क उठे। सबसे निर्णायक विद्रोह मेरठ में हुआ जहाँ पर घुड़सवार (कैवेलरी) रेजीमेंट के 85 सैनिकों को चर्बी वाले कारतूसों का प्रयोग करने से इंकार करने पर 2-10 वर्षों के कारावास की सजा दे गई। इसके अगले ही दिन अर्थात् 10 मई 1857 को तीन रेजीमेंटों ने खुली बगावत कर दी। उन्होंने अंग्रेज अफसरों की हत्या कर दी और अपने साथी सैनिकों को छुड़ाने के लिए जेलों को तोड़ दिया। उन्होंने दिल्ली की ओर कूच (मार्च) शुरू कर दिया, जहाँ उनके साथ स्थानीय पैदल सेना और सामान्य लोग भी मिल गए। बागियों ने दिल्ली पर कब्जा कर लिया और अनेक अंग्रेज अफसरों की हत्या कर दी। उन्होंने मुगल बादशाह बहादुरशाह को भारत का सम्राट घोषित कर दिया।



चित्र 7.8 मंगल पाण्डे

चित्र 7.8 मंगल पाण्डे

दिल्ली से यह विद्रोह अन्य स्थानों तक फैल गया। कानपुर में नाना साहिब को पेशवा घोषित कर दिया गया। उसकी सैनिक टुकड़ियों (टूप्स) की कमान तात्या टोपे और अजीमुल्लाह ने संभाली। लखनऊ में बेगम हजरत महल की सहायता मौलवी अहमदुल्ला ने की। झांसी में रानी लक्ष्मी बाई और आरा में कुंवर सिंह ने विद्रोह का नेतृत्व किया। बरेली में इसके नेता थे खान बहादुर खान। दिल्ली की हार ने अंग्रेजों की प्रतिष्ठा को बहुत चोट पहुँचाई थी। अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा को वापिस हासिल करने के लिए उन्होंने पंजाब के अपने वफादार सैन्यबल की सहायता ली। सैनिक घेराबंदी चार महीने तक चली और अंततः 10 सितंबर 1857 को दिल्ली को पुनः जीत लिया गया। यह युद्ध दस महीने तक और चला जब तक गवर्नर जनरल, लॉर्ड केनिंग ने 8 जुलाई 1858 को, इस बगावती विद्रोह के समापन की घोषणा नहीं कर दी। झांसी की रानी लक्ष्मी बाई, तात्या टोपे और कुंवर सिंह ने बड़ी बहादुरी से अंग्रेजी सैन्य बल को टक्कर दी। रानी लक्ष्मी बाई ने बागी सैनिकों का नेतृत्व किया। उसने घोड़े पर सवार हो अंग्रेज घुड़सवार सैनिकों का डटकर मुकाबला किया परंतु उसका घोड़ा ठोकर से लड़खड़ा गिर पड़ा और उसकी मृत्यु हो गई। अंग्रेज कमांडर-इन-चीफ, सर ह्यूग रोज़ के अनुसार वे विद्रोहियों की सर्वश्रेष्ठ और सर्वाधिक वीर सैनिक नेता थीं। कुंवर सिंह का निधन बिहार में एक अन्य लड़ाई के दौरान हुआ। तात्या टोपे को सोते हुए गिरफ्तार कर लिया गया। एक मुकदमा चलाकर उसे फांसी दे दी गई। इस प्रकार इन तीनों बहादुर नायकों का अंत हुआ और अंततः इस विद्रोह का अंग्रेजों द्वारा दमन कर दिया गया।



चित्र 7.9 बेगम हजरत महल

चित्र 7.9 बेगम हजरत महल

वृद्ध शहंशाह बहादुर शाह ज़ुल्फ़र को, उनके दो पुत्रों सहित, कारागार में डाल दिया गया। एक मुकदमे के पश्चात उसे रंगून में देश निकाला दे दिया गया, जहाँ पर 1862 में, 87 वर्ष की आयु में उनका देहांत हो गया। उसके पुत्रों को बगैर कोई मुकदमा चलाए ही दिल्ली में गोली मार दी गई। अब हम इस विद्रोह की असफलता के कारणों का गहराई से अध्ययन करेंगे।

1857 के विद्रोह के किस व्यक्तित्व ने आपको सबसे अधिक प्रभावित किया? क्या आप उनके किन्हीं दो ऐसे गुणों की पहचान कर सकते हैं जिन्हें आप भी अपने जीवन में उतारना चाहेंगे?

7.3.3 विद्रोह की प्रकृति

1857 के विद्रोह आंदोलन की चारों ओर आज भी एक बहस जारी है। अंग्रेज इतिहासकार 1857-1858 की घटनाओं को सैनिकों द्वारा की गई सैनिक बगावत मानते हैं। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि 1857 से पहले भी सैनिकों द्वारा अनेक विद्रोह किए गए। इसका एक उदाहरण है जुलाई 1806 में वेल्लूर की सैनिक बगावत। जहाँ भारतीय सैनिकों ने ईस्ट इंडिया कंपनी के गैरिज़न के खिलाफ विद्रोह किया था। बेशक बहुत जल्दी अनुशासन बहाल कर दिया गया था और यह विद्रोह सैनिक छावनी में दीवारों तक ही सीमित रहा।

परंतु यदि आप 1857 के तथ्यों का गहराई से अध्ययन करें तो आपको इसका अंतर स्पष्ट दिखाई देगा। विद्रोह के आंदोलन की शुरुआत सैनिकों द्वारा की गई थी परंतु बहुत बड़ी संख्या में असैनिक जनमानस भी इसके साथ जुड़ गए थे। किसानों और शिल्पियों द्वारा इसमें भाग लिए जाने की वजह से यह आंदोलन बहुत दूर-दूर तक फैला और एक लोकप्रिय घटना बन गया। यहां तक कि कुछ क्षेत्रों में साधारण जनता ने सैनिकों से पहले ही विद्रोह कर दिया था। इससे यही पता चलता है कि स्पष्टतया यह एक लोकप्रिय विद्रोह था। इसे हिन्दु मुस्लिम एकता के रूप में पहचाना गया। विभिन्न क्षेत्रों में भी एकता का अस्तित्व दिखाई दिया। देश के एक भाग के विद्रोहियों ने अन्य क्षेत्रों के लोगों को लड़ाई करने में सहायता की। इस विद्रोह को अंग्रेजी शासन के विरुद्ध भारत के प्रथम स्वाधीनता संग्राम के रूप में देखा जाना चाहिए।

आप अनुभव करेंगे कि 1857 का विद्रोह एक आंदोलन नहीं बल्कि कई आंदोलन थे। यह किसी वर्ग का विद्रोह नहीं था। किसानों ने ज़मींदारों के विरुद्ध बगावत नहीं की उन्होंने सिर्फ अनाज के ऋणदाता व्यापारियों अथवा अंग्रेजों की भारतीय सरकार के विरुद्ध आक्रमण किए थे। परंतु उनकी नीतियों ने किसी विशिष्ट क्षेत्र को इतने गहरे से प्रभावित किया कि संपूर्ण क्षेत्र ने एक ही प्रकार से प्रतिक्रिया की। अवध और अन्य क्षेत्रों में विद्रोह इस प्रकार लोकप्रिय हुआ कि इसका संबंध समग्र रूप से लोगों पर पड़ा और उन सबने मिलकर इसका संचालन किया। अवध में ताल्लुकदारों और किसानों ने मिलकर इकट्ठे ही एक सामान्य शत्रु के विरुद्ध लड़ाई की। परंतु इसमें कोई संदेह नहीं कि 1857 में पहली बार विभिन्न जातियों, हिंदुओं और मुसलमानों से भारतीय सेना के लिए चयनित सैनिक, जमींदार और किसान एकजुट होकर अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध एकजुट हुए। इसने अंग्रेजों के विरुद्ध बाद में हुये औपनिवेशीय विरोधी संघर्षों के लिए भी आवश्यक बुनियाद की सफल भूमिका निभाई।

7.4 विद्रोह की असफलता

यद्यपि यह विद्रोह भारत के इतिहास की एक बहुत बड़ी घटना रही है तथापि एक संगठित और शक्तिशाली शत्रु के विरुद्ध सफलता प्राप्त करने के लिए इनके पास बहुत कम ही अवसर थे ।

विद्रोह के शुरु होने के एक वर्ष के भीतर ही इसे दबा दिया गया। 1857 के विद्रोह की असफलता के अनेक कारण थे। बागियों के उद्देश्य में एकरूपता नहीं थी। बंगाल के सैनिक मुगलों की खोई शानो-शौकत को पुनः जीवित करना चाहते थे जबकि नाना साहिब और तात्या टोपे ने मराठा शक्ति को पुनः स्थापित करने का प्रयास किया। रानी लक्ष्मी बाई ने झांसी को पुनः प्राप्त करने के लिए लड़ाई की जोकि उसने 'अधिग्रहण के सिद्धांत की' अंग्रेजी नीति के परिणामस्वरूप खो दी थी। दूसरे यह विद्रोह अधिक क्षेत्रों तक फैला हुआ नहीं था बल्कि उत्तर और मध्य भारत तक सीमित रहा।

यहाँ तक कि उत्तर में कश्मीर, पंजाब, सिंध और राजपुताना इस विद्रोह से दूर रहे। अंग्रेज मद्रास और बंबई की रेजिमेंटों और सिख प्रदेशों की निष्ठा प्राप्त करने में सफल रहे। अफगानों और गोरखाओं ने भी अंग्रेजों को समर्थन दिया। अनेक भारतीय शासकों ने विद्रोहियों की सहायता करने से इंकार कर दिया। मध्य और उच्च वर्गों और आधुनिक शिक्षित भारतीयों ने भी विद्रोह का समर्थन नहीं किया। तीसरे, इस आंदोलन का नेतृत्व बहुत कमजोर था। भारतीय नेताओं में संगठन और संयोजन की योग्यता नहीं थी। विद्रोही नेताओं की अंग्रेज सैनिकों से कोई तुलना नहीं थी। अधिकांश नेताओं के विचार केवल उनके निजी हितों तक सीमित थे। इनका उद्देश्य केवल गहन निजी लाभ ही था। उन्होंने केवल अपने निजी प्रदेशीय क्षेत्रों की स्वाधीनता के लिए लड़ाई की। कोई भी ऐसा राष्ट्रीय नेता उभर कर नहीं आया जो इस आंदोलन का समन्वय करके इसे कोई उद्देश्य और दिशा प्रदान कर पाता। लक्ष्मी बाई, तात्या टोपे और नाना साहिब बहुत साहसी थे परंतु वे अच्छे सैन्य जनरल नहीं थे। नाना साहिब के बच निकलने और बहादुर शाह जफ़र की मृत्यु से पेशवागिरी और मुगल शासन का अंत हो गया।

विद्रोहियों के पास शस्त्रों और धन का भी अभाव था। जो भी शस्त्र थे वे पुराने और नकारा हो चुके थे। वे अंग्रेजों के संवेदनशील और आधुनिक शस्त्रों का सामना नहीं कर सकते थे। बागियों की संगठन व्यवस्था भी अच्छी नहीं थी। देश के विभिन्न भागों में भड़कने वाले विद्रोहों में परस्पर कोई समन्वय नहीं था। प्रायः सिपाही अनियंत्रित रूप में व्यवहार करते थे। दूसरी ओर टेलीग्राफिक सिस्टम और डाक संचार ने अंग्रेजों को अपनी कारवाई की गति तेज करने में सहायता की। अंग्रेजों की सामुद्रिक दक्षता के फलस्वरूप उन्हें इंग्लैण्ड से सामरिक सहायता उन्हें आसानी से उपलब्ध थी और उन्होंने इस विद्रोह का बड़ी बेरहमी से दमन कर दिया गया।

7.5 विद्रोह की सार्थकता और प्रभाव

1857 के विद्रोह का प्रथम लक्षण था कि भारतीय अंग्रेजी शासन को समाप्त करना चाहते थे और इस लक्ष्य के लिए संगठित रूप से उनका मुकाबला करने के लिए खड़े होने के लिए भी तैयार थे। यद्यपि वे अपने उद्देश्य प्राप्त करने में असफल रहे परंतु वे भारतीयों के मन में राष्ट्रीयता के बीज बोने में सफल रहे। भारतीय लोग उन बहादुरों के लिए और भी जागरूक हो गए थे, जिन्होंने इस विद्रोह में अपने जीवन का बलिदान किया। तथापि, यहीं से हिन्दुओं और मुसलमानों में परस्पर अविश्वास की शुरुआत हुई, जिसका बाद में अंग्रेजों ने भारत में शासन जारी रखने के लिए शोषण किया।

1857 का विद्रोह इस दृष्टि से अद्वितीय है कि इसने जाति, समुदाय और वर्ग के बंधनों को समाप्त कर दिया। पहली बार भारत के लोगों ने एकजुट होकर अंग्रेजी शासन के लिए एक चुनौती खड़ी की। यद्यपि विद्रोहियों के प्रयासों को सफलता नहीं मिली फिर भी अंग्रेजी सरकार को भारत के प्रति अपनी नीतियों को बदलने के लिए बाध्य कर दिया। अगस्त 1858 में भारत में बेहतर सरकार अधिनियम के द्वारा बोर्ड ऑफ कंट्रोल और बोर्ड ऑफ डाइरेक्टरस को समाप्त कर दिया गया और भारत के लिए एक स्टेट सैक्रेटरी के पद का निर्माण किया गया जिसमें 15 सदस्यों की एक भारतीय परिषद को शामिल किया गया, ताकि वे भारत के वायसराय, वह पदनाम जिसे पहले भारत का गवर्नर जनरल कहा जाता था, की सहायता कर सकें। अगस्त 1858 में ब्रिटेन की साम्राज्ञी ने भारत का नियंत्रण ईस्ट इंडिया कंपनी से सीधे अपने हाथों में ले लिया और 1877 में रानी विक्टोरिया को भारत की साम्राज्ञी घोषित कर दिया गया। इसने भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन को समाप्त कर दिया। 1 नवंबर 1858 की उद्घोषणा के द्वारा रानी ने यह घोषणा की कि कंपनी की नीतियों को जारी रखा जाएगा। भारत अंग्रेजी साम्राज्य का उपनिवेश बन गया। भारतीय शासकों को आश्वासित किया गया कि गोद लेने के उपरांत उनके उत्तराधिकारी के अधिकार को मान्यता दी जाएगी। सम्राज्ञी ने वचन दिया कि कंपनी द्वारा भारत राज्य के शासकों के साथ की गई संधियों और करारनामों का मान रखा जाएगा।

अब तक अंग्रेजों को हिन्दु-मुस्लिम एकता पर पक्का अविश्वास हो गया था। उन्होंने देश में फूट डालों और राज करने की नीति को अपनाने का निर्णय किया। सिविल और सैनिक प्रशासन में केन्द्रीय पदों पर उन्होंने अपना सख्त नियंत्रण बनाये रखा। इस इरादे को अंजाम देने के लिए इंडियन सिविल सर्विस अधिनियम 1861 जारी किया गया जिसके द्वारा आकर्षक सिविल सेवा में चयन के लिए लंदन में हर वर्ष एक प्रतियोगी परीक्षा का आयोजन शुरू किया गया। इस विद्रोह ने एंग्लो-इंडियन इतिहास में केन्द्रीय भूमिका निभाई। अंग्रेज सावधान हो गए और अपने साम्राज्य के प्रति रक्षात्मक भूमिका में आ गए, जबकि भारतीयों के मन में कड़वाहट भरी रही कि वे अब कभी भी अपने शासकों पर भरोसा नहीं कर पायेंगे। यह विश्वास तब तक नहीं हो पाया जब तक कि 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (इंडियन नेशनल कांग्रेस) की स्थापना नहीं हो गई और महात्मा गांधी के साथ भारतीयों ने होम रूल के लिए पुनः गति हासिल नहीं कर ली। एक समूह जो इस मुसीबत और अंग्रेजों के विरोध से दूर रहा वह था अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त भारतीय लोगों का समूह। यह समूह अपनी उन्नति का श्रेय नए शासन की स्थितियों को देता था। इसके कुछ सदस्य बंगाली ज़मींदारों के नए समूह से थे, वह वर्ग जो बंगाल के स्थाई बंदोबस्त की पैदाइश था। यह जानना रोचक होगा कि इस कुलीन समूह के कुछ सदस्य 1857 के विद्रोह के करीब तीस या चालीस वर्ष बाद अंग्रेजों के खिलाफ हो गये थे। 1857 के संकट के लिए मुख्यतया सेना जिम्मेदार थी। अतः सेना में कुछ मूलभूत परिवर्तन शुरू किए गए। भारत में यूरोपियन टूप्स के सैन्य बल में वृद्धि की गई और भारतीय टूप्स की संख्या में 1857 से पूर्व की संख्या से भी ज्यादा कमी कर दी गई। कुछेक माऊंटेन बैटरीज को छोड़कर सभी भारतीय तोपखाना यूनिटों (आर्टिलरी) यूनिटों को समाप्त कर दिया गया, यहाँ तक कि अंग्रेज सैनिकों के साथ आर्टिलरी को रखा गया। दूसरी ओर स्वदेशियों को जाति, धर्म और क्षेत्र के आधार पर स्वदेशियों से ही लड़वाने का प्रयास किया गया। सेना और तोपखाना विभागों (आर्टिलरी डिपार्टमेंट्स) में सभी बड़े पदों को यूरोपियनों के लिए आरक्षित कर दिया गया। भारतीयों और अंग्रेजों में परस्पर अविश्वास और डर व्याप्त था। बड़े समय से यह अनुभव किया जा रहा था कि 1857 के विद्रोह का मूल

कारण था शासक और शासित में परस्पर संपर्क का अभाव । इस प्रकार इंडियन कौंसिल्स एक्ट, 1861 के द्वारा भारत में प्रतिनिधित्व संस्थाओं के विकास का एक विनम्र प्रयास शुरू किया गया । विद्रोह के भावनात्मक उत्तरोत्तर प्रभाव शायद सबसे ज्यादा दुर्भाग्यपूर्ण थे । नसलीय कड़वाहट इस संघर्ष की शायद सबसे खराब विरासत रही थी ।

1. औपनिवेशीय शासन के विरुद्ध भारतीय सैनिकों की दो शिकायतों उल्लेख करें।
2. 1857 के विद्रोह के तीन महत्वपूर्ण नेताओं के नाम लिखें।
3. ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन को कब और कैसे समाप्त किया गया?
4. 1857 के विद्रोह आंदोलन की विफलता के तीन प्रमुख कारणों की सूची बनाएँ।

आपने क्या सीखा

- भारत में अंग्रेजी शासन के विरुद्ध और नाराजगी का मुख्य कारण थे लोगों का उनके द्वारा दमन और शोषण।
- खेतीहर किसानों और जनजातियों के लोगों को अपनी ही जमीन से बेदखल करने से वे अपनी ही जमीन पर मजदूर बन गए थे। विभिन्न प्रकार के करों ने उनके जीवन को दयनीय बना दिया था।
- जो लोग लघु कुटीर उद्योगों में लगे हुए थे उन्हें अंग्रेजों द्वारा उत्पादित सामान के आयात के परिणामस्वरूप अपने कारखाने बंद करने पड़े थे। इन सभी परिवर्तनों और अंग्रेजी प्रशासन के गैर-जिम्मेदार व्यवहार के कारण किसानों को अपनी शिकायतों की अभिव्यक्ति विद्रोह के द्वारा प्रदर्शित करने के लिए मजबूर होना पड़ा।
- दुर्भाग्यवश संगठित अंग्रेजी सशस्त्र बलों के समक्ष यह विद्रोह सफल नहीं हो पाए परंतु इन विद्रोहों ने भारत में ब्रिटिश राज के भविष्य को चुनौती देने की राह खोल दी थी।
- 1857 का विद्रोही आंदोलन अंग्रेजी सत्ता के सामने एक बड़ी चुनौती था। इसका नेतृत्व सैनिकों ने किया परंतु सामान्य लोगों ने भी इसका समर्थन किया।
- 1857 के विद्रोह के लिए आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक और सैनिक कारण उत्तरदायी थे - चर्बी लगे कारतूसों की घटना इसका तात्कालिक कारण बनी।
- भारत का एक बहुत बड़ा हिस्सा इससे प्रभावित हुआ। विद्रोह के मुख्य केन्द्र थे मेरठ, दिल्ली, कानपुर, लखनऊ, झांसी, बरेली और आरा। विद्रोह के कुछ मुख्य नेता थे- बख्त खान, नाना साहिव, तात्या टोपे, अजी मुल्लाह, बेगम हजरत महल, मौलवी अहमदुल्लाह, रानी लक्ष्मी बाई, खान बहादुर खान और कुवर सिंह।
- विद्रोह भारत से ब्रिटिश शासन को समाप्त करने में असफल रहा। असफलता के मुख्य कारण थे - इसका स्थानीय और असंगठित होना, कमजोर नेतृत्व तथा धन और हथियारों का अभाव।

पाठांत प्रश्न

1. किसानों तथा जनजातीय विद्रोहों के दो समान लक्षणों की व्याख्या करें।
2. किस प्रकार राजनीतिक और सामाजिक-धार्मिक कारक 1857 के विद्रोह का कारण बने?
3. 1857 के विद्रोह के महत्व की व्याख्या करें।
4. 1857 के विद्रोह के मुख्य नेताओं के नाम लिखिये और क्यों उन्होंने विद्रोह में भाग लिया की एक सारणी बनाए।
5. क्या आप सोचते हैं कि 1857 के विद्रोह ने अंग्रेजों और उनके भारत में शासन पर कोई प्रभाव डाला? स्थिति का विश्लेषण करते हुए अपनी प्रतिक्रिया दें।
6. इतिहास हमें बताता है कि सामान्य लोग तब विरोध करते हैं जब कि उनकी जीविका संकट में हो। क्या आप सोचते हैं कि यह कथन आज भी सार्थक है? किसी एक ऐसी ही घटना को पहचानिए जो हाल में घटी हो और किसी समाचार पत्र या पत्रिका में छपी हो तथा उस पर लगभग 50 शब्दों में एक रिपोर्ट बनाइए।
7. (a) दिए गए भारत के भौगोलिक मानचित्र पर निम्नलिखित विद्रोहों के क्षेत्रों को अंकित करें:
 - (i) फकीर और सन्यासी विद्रोह
 - (ii) संथाल विद्रोह
 - (iii) मुंडा विद्रोह
 - (iv) जयंतिया तथा गारो विद्रोह
- (b) प्रत्येक विद्रोह का एक कारण लिखें

7.1

2. शोषकों के तीन समूह थे ।

(क) अंग्रेजी सरकार के अफसर

(ख) ज़मींदार

(ग) ऋणदाता

3. लोकप्रिय विद्रोही आंदोलनों के निम्नलिखित चार कारण थे:

(क) अंग्रेजों द्वारा शोषण

(ख) किसानों पर लगाया जाने वाले ऊँची दर में लगान

(ग) वाणिज्यिक/नकदी फसल उगाने की बाध्यता

(घ) अंग्रेजों द्वारा लोगों के धार्मिक रीति-रिवाजों में हस्तक्षेप

7.2

1. (क) कम वेतन और कोई भत्ता नहीं, समुद्रपार ड्यूटी लगाय जाने के लिए कोई अतिरिक्त भुगतान नहीं ।

(ख) पदोन्नति, पेंशन और सेवा शर्तों में सामाजिक भेदभाव

2. रानी लक्ष्मी बाई, तात्या टोपे, बेगम हज़रत महल, नाना साहिब, आरा के कुंवर सिंह ।

3. ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन का अंत 1858 में ब्रिटिश पार्लियामेंट द्वारा रानी की एक उद्घोषण के द्वारा किया गया था ।

4. 1857 के विद्रोह की विफलता के तीन मुख्य कारण थे ।

(क) यह विद्रोह भारत के इतिहास की एक बड़ी घटना थी । एक संगठित और शक्तिशाली शत्रु के समक्ष इसके सफल होने की बहुत कम संभावना थी ।

(ख) यह केवल उत्तर और मध्य भारत तक सीमित रहा ।

(ग) विद्रोहियों के उद्देश्य में एकरूपता नहीं थी ।

(घ) आंदोलन का नेतृत्व कमज़ोर था ।

(ड) विद्रोहियों के पास शस्त्रों और धन की कमी थी ।

8. भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन

पिछले कुछ अध्यायों में आपने हमारी सभ्यता के इतिहास के बारे में पढ़ा। आपने प्रागैतिहासिक काल से प्रारंभ किया और इस अध्याय में भारत का स्वतंत्रता आंदोलन तक की यात्रा की। यह अवश्य ही बहुत मजेदार यात्रा रही होगी। आपने पढ़ा कि कैसे लोग जंगल में रहते थे, जानवरों को मारकर भोजन प्राप्त करने के लिए तथा अपनी रक्षा के लिए कठोर पत्थरों का प्रयोग करते थे। आपने ताम्र युग के बारे में भी पढ़ा होगा जब धातु की खोज की गई और उसका प्रयोग छोटे जंगलों को काटने में किया गया और कैसे इसके प्रयोग ने जीवन को आसान बना दिया। इसने हमें लौह-युग और औद्योगीकरण की शुरुआत की ओर अग्रसर किया। आपने पढ़ा कि जैसे ही समाज का जन्म हुआ कुछ लोग अन्य लोगों के अपेक्षा ज्यादा शक्तिशाली हो गए। हमने यह भी पढ़ा कि कैसे धन और जमीन शक्तिशाली देशों के लिए लालच का स्रोत बन गये। हमने यह भी पढ़ा कि किस प्रकार इसने राज्यों और राष्ट्रों का विरोध किया जिसने प्राकृतिक एवं मानव संसाधनों का शोषण कर और उनके ऊपर निर्भरता पूर्वक शासन कर उसे नियंत्रित करने की कोशिश की। उनमें से एक राज्य हमारा देश भारत भी हुआ। हम इस अध्याय में भारत की स्वतंत्रता के लम्बे संघर्ष के बारे में पढ़ेंगे।

उद्देश्य

- भारत में राष्ट्रवाद के उत्थान के कारणों को पहचान सकेंगे ।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के उद्भव को चिन्हित कर सकेंगे ।
- भारत में राष्ट्रीय आन्दोलन के विभिन्न चरणों पर चर्चा कर सकेंगे ।
- राष्ट्रीय आन्दोलन में गाँधीजी की भूमिका पर चर्चा कर सकेंगे ।
- भारतीयों पर राष्ट्रीय आंदोलन के प्रभाव को स्थापित कर सकेंगे ।

8.1 राष्ट्रवाद का उद्भव

राष्ट्रवाद का उद्भव यूरोप के नवजागरण के उत्साह में प्रतिबिंबित हुआ, जब धार्मिक प्रतिबन्ध मुक्ति ने राष्ट्रीय अस्मिता को बढ़ावा दिया। राष्ट्रवाद की यह अभिव्यक्ति फ्रांसीसी क्रांति द्वारा

इस राजनीतिक परिवर्तन के फलस्वरूप संप्रभुता राजा के हाथ से फ्रांसीसी नागरिक के हाथों में चली गई। राजा जिसके पास राष्ट्र का निर्माण करने और भाग्य तय करने की शक्ति थी। फ्रांसीसी क्रांति का नारा “उदारता, समानता एवं भ्रातृत्व” ने सम्पूर्ण संसार को प्रेरणा दी। अन्य कई आन्दोलन जैसे अमेरिकी क्रांति, रूसी क्रांति इत्यादि ने भी राष्ट्रवाद के विचार को शक्ति दी, जिसके बारे में आप पहले ही अध्याय 3 में पढ़ चुके हैं। यहां आप भारत में राष्ट्रवाद के उदय जो 1857 की क्रांति के बाद 19 शताब्दी में प्रकट हुआ, के बारे में पढ़ेंगे।

8.1.1 भारत में राष्ट्रवाद का उदय

भारत के लिए राष्ट्रीय पहचान का बनना एक लम्बी प्रक्रिया थी जिसका मूल प्राचीन युग से लिया जा सकता है। भारत में संपूर्णतः प्राचीन काल में अशोक और समुद्रगुप्त द्वारा तथा मध्य युग में अकबर से औरंगजेब तक के द्वारा शासन किया गया। लेकिन राष्ट्रीय अस्मिता और राष्ट्रीय जागरण केवल 19वीं शताब्दी में ही प्रकट हुआ। यह उदय उपनिवेश विरोध की आन्दोलन से गहरे रूप से जुड़ा था जो आप पिछले अध्याय में पढ़ चुके हैं। सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक तत्वों ने लोगों को राष्ट्रीय पहचान को परिभाषित करने और उसे प्राप्त करने में प्रेरणा दी। लोगों ने उपनिवेशवाद के विरुद्ध संघर्ष के क्रम में अपनी एकता को खोजना प्रारंभ कर दिया।

औपनिवेशिक शासन के अधीन सत्ताये जाने के भाव ने एक सामूहिक बंधन प्रदान किया जिसमें विभिन्न समूह के लोग एक साथ आये। उनके अनुभव भिन्न थे और उनके राष्ट्र की आजादी हमेशा एक जैसी नहीं थी। साथ ही कई अन्य कारणों ने भी राष्ट्रवाद के उद्भव और विकास में योगदान दिया। कई क्षेत्रों में ब्रिटिश सरकार का एक कानून राजनीतिक और प्रशासनिक एकता की ओर ले गया। इसने नागरिकता और भारतीयों के लिए एक राष्ट्र की अवधारणा को बल प्रदान किया। आपने प्रसिद्ध विरोध आंदोलन पढ़ा था वह याद है? क्या आपको वह तरीका याद है जिससे किसानों व आदिवासियों ने विद्रोह किया था, जब उनकी जमीन और जीविका का अधिकार उनसे छीन लिया गया था। इसी प्रकार, अंग्रेजों द्वारा आर्थिक शोषण ने अन्य लोगों को एक होने एवं उनके जीवन और संसाधन पर ब्रिटिश सरकार के नियंत्रण के विरुद्ध प्रतिक्रिया करने के लिए उकसाया। 19वीं सदी के सामाजिक व धार्मिक सुधार आन्दोलनों ने भी राष्ट्रवाद की भावना को उत्पन्न करने में भूमिका निभाई आपने स्वामी विवेकानन्द, एनीबेसेंट, हेनरी डेरोजियो एवं कई अन्य के बारे में पहले अवश्य पढ़ा होगा। उन्होंने प्राचीन भारत के गौरव को फिर से जगाया, लोगों में उनके धर्म और संस्कृति में विश्वास पैदा किया और इस प्रकार उन्हें उनकी मातृभूमि से प्रेम का संदेश दिया। राष्ट्रवाद के बौद्धिक और आध्यात्मिक पक्ष को बंकिम चंद्र चटर्जी, स्वामी दयानन्द सरस्वती और अरविन्द घोस सरीखे लोगों द्वारा स्वर दिया गया। बंकिम का मातृभूमि के लिए श्लोक ‘वन्दे मातरम्’ राष्ट्रवादी देशभक्तों का वैचारिक स्वर बन गया। इसने आने वाली पीढ़ियों को सबसे बड़े आत्म-बलिदान के लिए प्रेरित किया। यह इतना मजबूत स्वर था कि अंग्रेजों को इस पर प्रतिबंध लगाना पड़ा। स्वामी विवेकानन्द का लोगों को संदेश “उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक कि लक्ष्य को प्राप्त न कर लो।” सभी भारतीयों से अनुरोध किया। इसने भारतीय राष्ट्रवाद के क्रम में एक महत्वपूर्ण ताकत के रूप में काम किया।

क्या आपको प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना के बारे में याद है, और कैसे इसने उदारता, समानता और भ्रातृत्व जैसे विचारों के विस्तृत संचार में मदद की? इन सभी तत्वों ने भारत के लोगों में राष्ट्रवाद के प्रसार में मदद की।

इस समय के आसपास कई संगठन स्थापित हो रहे थे जिन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ अपनी आवाज उठायी। इनमें से ज्यादातर संगठन क्षेत्रीय स्वरूप के थे। इनमें से कुछ संगठन काफी सक्रिय थे जैसे कि बंगाल इंडियन एसोसिएशन, बंगाल प्रेसिडेंसी एसोसिएशन, पुणे पब्लिक मीटिंग, आदि। यद्यपि यह अनुभव किया गया कि यदि ये सभी क्षेत्रीय संगठन सम्मिलित रूप से कार्य करेंगे तो भारतीय जनसमुदाय को ब्रिटिश शासन के खिलाफ अपनी आवाज उठाने में बहुत मदद मिलेगी। इसलिए वर्ष 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का निर्माण हुआ। इस अध्याय के अगले भाग में हम इसके बारे में चर्चा करेंगे।

8.2 भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का आविर्भाव (1885)

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना 1885 में एलेन ऑक्टावियन ह्यूम द्वारा की गई। ह्यूम एक सेवानिवृत्त सिविल सेवा अधिकारी थे। उसने भारतीयों में राजनीतिक सजगता को बढ़ा देखा और वे इसे एक सुरक्षित संवैधानिक स्वरूप देना चाहते थे ताकि उनका असंतोष भारत में अंग्रेजी शासन के विरुद्ध सार्वजनिक क्रोध के रूप में विकसित न हो सके। इस योजना में उन्हें वायसराय लॉर्ड डफरिन एवं प्रसिद्ध भारतीयों के एक समूह की मदद मिली। कलकत्ता (कोलकाता) के वोमेश चन्द्र बनर्जी इसके पहले अध्यक्ष के रूप में चुने गए। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस राजनैतिक रूप से सजग भारतीयों का उनकी बेहतरी के लिए काम करने के लिए राष्ट्रीय संगठन स्थापित करने के लिए काम करने के हेतु विचार रखते थे। इनके नेताओं का ब्रिटिश सरकार और इसके न्याय में पूरा विश्वास था। वे मानते थे कि यदि वे सरकार के सामने तर्क पूर्ण ढंग से शिकायत रखेंगे तो अंग्रेज निश्चित रूप से उनमें सुधार करेंगे। इन उदार नेताओं में सबसे प्रसिद्ध फिरोजशाह मेहता, गोपाल कृष्ण गोखले, दादा भाई नौरोजी, रास बिहारी बोस, बदरुद्दीन तयैबजी इत्यादि थे। 1885 से 1905 तक भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का बहुत संकीर्ण सामाजिक आधार था।



चित्र 8.1 भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस अधिवेशन 1885

चित्र 8.1 भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस अधिवेशन 1885

इसका प्रभाव शिक्षित शहरी भारतीयों तक ही सीमित था। इस संगठन का पहले ब्रिटिश सरकार से भारतीयों की ओर से संवाद करना और उनकी शिकायत को आवाज देने जैसे सीमित उद्देश्य थे। वास्तव में, इस युग को नरमपंथियों का युग कहा गया है। क्यों? इसका पता आप शीघ्र ही लगा पाएंगे।

8.2.1 भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का आरंभिक चरण

इसके प्रथम बीस वर्षों के दौरान कांग्रेस ने नरमी से अपनी मांगें रखी। उन्होंने (क) विधानसभा में प्रतिनिधित्व (ख) सेवाओं का भारतीयकरण (ग) सेना के खर्च में कमी (घ) कृषकों के बोझ में कमी (ङ) नागरिक अधिकारों की रक्षा (च) न्यायपालिका का कार्यपालिका से पृथक्करण (छ) काश्तकार नियम में बदलाव (ज) भूमि से आय एवं नमक कर में कमी (झ) भारतीय उद्योग एवं हस्तशिल्प के विकास में मदद हेतु नीति और (ञ) लोगों के लिए कल्याण कार्यक्रम लाने के लिए कहा।

कांग्रेस ने सरकार के सामने अपनी मांग हमेशा आवेदन के रूप में रखी और कानूनी नियमों में रहकर काम किया। यही कारण था कि कांग्रेस के पहले के नेताओं को नरमपंथी कहा गया। यह प्रयास भारत में अंग्रेजों की नीति एवं प्रशासन में कोई सुधार नहीं ला पाया। प्रारंभ में कांग्रेस के प्रति सहयोग अंग्रेजों की पूर्ण मानसिकता थी। लेकिन 1887 के बाद यह मानसिकता बदलने लगी। वे नरमपंथियों की मांग को पूरा नहीं करते थे। कांग्रेस की एक मात्र सफलता भारतीय परिषद् अधिनियम 1892 को लागू करना है जिसने कुछ गैर-कार्यालयीय सदस्यों को शामिल कर विधान सभा का विस्तार किया और भारतीय सिविल सेवा परीक्षा को भारत और लन्दन में एक साथ आयोजित कराने का समाधान पास किया। धीरे-धीरे बहुत सारे नेता संवैधानिक प्रक्रिया में विश्वास खोने लगे। यहाँ तक कि कांग्रेस अपने लक्ष्य को पाने में असफल हो गयी। किन्तु राष्ट्रीय जागृति लाने एवं लोगों के मन में एक देश से सम्बद्ध होने का भाव लाने में सफल हुई। उसने भारतीयों को बड़े राष्ट्रीय मुद्दे पर बातचीत करने के लिए एक मंच प्रदान किया। सरकार की नीतियों की आलोचना करके इसने लोगों को राजनीति का बहुमूल्य प्रशिक्षण दिया। वे आक्रामक कदम बढ़ाने की स्थिति में नहीं थे जो उनको सरकार से सीधे संघर्ष की स्थिति में ला देता। सबसे बड़ी सफलता एक राष्ट्रीय आन्दोलन की नींव रखने की थी।

अंग्रेज जो कि पहले नरमपंथियों की मदद करते थे, शीघ्र ही यह अनुभव करने लगे कि यह आन्दोलन एक राष्ट्रीय शक्ति के रूप में बदल सकता है जो उन्हें देश से बाहर कर देगी। इससे उसकी मानसिकता पूरी तरह बदल गई। उन्होंने शिक्षा को नियंत्रित करने और प्रेस को कुचलने के लिए कड़े नियम पारित किए। कांग्रेसी नेताओं को शांत रखने के लिए कुछ छूट दी गई। ब्रिटिश वायसराय लॉर्ड कर्जन भारत में राष्ट्रवाद को दबाने के लिए प्रयासरत था। कर्जन एक कट्टर साम्राज्यवादी था और अंग्रेजों के अन्य लोगों की तुलना में बेहतर होने में विश्वास रखता था। ब्रिटिश शासन के विरुद्ध लोगों को उत्तेजित करने का अपराध बनाकर उसने 1898 में एक नियम पारित किया। उसने भारतीय विश्वविद्यालयों पर कड़े नियम आरोपित कर 1904 में विश्वविद्यालय अधिनियम पारित किया जिन्हें आप अगले भाग में पढ़ेंगे।

जो बंगाल में 1905 में हुआ उसे आप क्या सोचते हैं? कर्जन ने बंगाल के विभाजन की घोषणा की। विभाजन का कारण प्रशासन में सुधार की कोशिश दिया गया। लेकिन मुख्य लक्ष्य 'फूट डालो और शासन करो' का था। यह विभाजन मुसलमानों को एक अलग राज्य देने के लिए किया गया जिससे देश में साम्प्रदायिकता का बीज फैलाया जा सके। यद्यपि भारतीयों ने इसे अंग्रेजों द्वारा बंगाल में उभरते हुए राष्ट्रीय आन्दोलन को नष्ट करने और इस क्षेत्र के हिन्दुओं और मुसलमानों को बांटने की कोशिश के रूप में देखा। आन्दोलन और गलियों में बड़े पैमाने पर फैल गया। हिन्दुओं और मुसलमानों ने दूसरे की कलाई पर राखी बाँध कर अपनी एकता और विरोध का प्रदर्शन किया। स्वदेशी गहरे गुस्से से भरा और जोशीला आन्दोलन था जो सबका मातृभूमि के प्रति अविर्भाव परेम का परिचायक था। आत्मविश्वास का यह नया राष्ट्रवादी जोश सम्पूर्ण भारतीय क्षितिज पर गिरफ्तारी, दर्दनाक यातना के साथ अंग्रेजों का दमनकारी शासन बनकर छा गया। उस समय बालगंगाधर तिलक ने एक शस्त्र के रूप में बहिष्कार के महत्व को स्वीकार किया जिसे भारत में सम्पूर्ण ब्रिटिश प्रशासनिक व्यवस्था को शिथिल करने में उपयोग किया जा सकता था। बहिष्कार और स्वदेशी आन्दोलन कपड़ा मिल, राष्ट्रीय बैंक, होजियरी, चमड़ा उद्योग, रासायनिक उद्योग और बीमा कम्पनी के स्थापना में सहायक सिद्ध हुआ। स्वदेशी भंडार खोले गए। स्वयंसेवी स्वदेशी सामानों को प्रत्येक घर के दरवाजे तक पहुँचाते थे। यह आन्दोलन लोगों के हरेक वर्ग और सभी समूह तक फैला। प्रत्येक व्यक्ति यहाँ तक कि महिलाएँ और बच्चे भी हिस्सा लेने को आगे आए। सबसे ज्यादा सक्रिय स्कूल और कॉलेज के छात्र थे। 1911 में अंग्रेजों ने बंगाल का विभाजन वापस ले लिया और बंगाल पुनः एक हो गया। उस समय के दौरान भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस खास कर गरम दल की भूमिका को सराया जाना चाहिए। उसने सभी वर्ग व सभी समुदाय के लोगों यहाँ तक कि किसानों कामगारों, छात्रों एवं महिलाओं को भी आन्दोलन में शामिल करने का प्रयत्न किया। वे सबके दुश्मन अंग्रेजों के विरुद्ध भारतीय लोगों को एक करने सफल रहे। युवा लोग देशभक्ति के उच्चतम स्तर तक भड़क गए थे और देश को आजाद करने का जोश था। उन्होंने लोगों को आत्मविश्वासी व आत्मनिर्भर बनाने में मदद की। उन्होंने भारतीय कुटीर उद्योगों को भी पुर्नजीवित किया।

8.4 गरम दल का उदय

कांग्रेस में नरमपंथियों की विनमर नीति ही अतिवादी एवं उग्रसुधार राष्ट्रवादी आन्दोलन का प्रथम दौर एक ओर कांग्रेस के विरुद्ध सरकार की प्रतिक्रिया और दूसरी ओर कांग्रेस में 1907 में आये दरार के साथ ही खत्म हो गया। वह इसलिए कि 1905 से 1918 तक की अवधि को 'अतिवादी उग्र राष्ट्रवादियों या गरम दल का युग' कहा जा सकता है। लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक एवं विपिन चन्द्र पाल (लाल-बाल-पाल) इस (गरम) उग्र पंथी दल के महत्वपूर्ण नेता थे। जब नरमपंथी इस कार्य में आगे थे तब उन्होंने निम्न रूप रेखा को बनाये रखा किन्तु अब ये अतिशीघ्र और पूरे जोश के साथ हरकत में आ गए। इनके प्रवेश ने एक नई प्रवृत्ति और भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष में एक नये चेहरे को चिह्नित किया। उनके अनुसार नरमपंथी भारत का राजनीतिक लक्ष्य तय करने में असफल रहे उनके द्वारा अपनाया गया तरीका नरम और प्रभावहीन था। इसके अलावा वे उच्च, जमींदार वर्ग तक सीमित रहे और ब्रिटिशों से बातचीत के अंधकार के रूप में बड़े वर्ग के समर्थन में असफल रहे।



चित्र 8.2 लाल-बाल-पाल

चित्र 8.2 लाल-बाल-पाल

गरमदल का यह विश्वास था कि अंग्रेज भारतीयों का शोषण करते हैं, उसकी आत्म-प्रचूरता को नष्ट करते हैं और भारत का धन ले जाते हैं। वे अनुभव करते थे कि अब भारतीयों को खुद सरकार चलानी चाहिए। ये गरमपंथी गुट सरकार को दरखास्त करने के बदले बड़े पैमाने पर विरोध करने, सरकार की नीतियों की आलोचना करने, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने, स्वदेशी (गृह-निर्मित) वस्तुओं का उपयोग करने आदि में विश्वास करते थे। वे स्वतंत्रता के लिए सरकार की दया पर निर्भर नहीं थे लेकिन वे यह विश्वास करते थे कि यह उसका अधिकार है। बाल गंगाधर तिलक ने नारा दिया “आजादी मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है और हम इसे लेकर रहेंगे।” 1916 में दोनों समूह पुनः एनी बेसेन्ट के प्रयास से एक हुए। क्या आपको उनके बारे में याद है जो आप पहले के अध्याय में पढ़ चुके हैं? उन्होंने 1914 में होमरूल आन्दोलन के लिए काम करना शुरू किया। उनके द्वारा बताया गया कि भारत को स्वशासन दिया जाना चाहिए। 1916 में मुस्लिम लीग और कांग्रेस भी वैचारिक तौर पर परस्पर नजदीक आए और लखनऊ एक्ट पर हस्ताक्षर किए। बाद में महात्मा गाँधी, जवाहर लाल नेहरू सुभाष चन्द्र बोस भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रसिद्ध चेहरे हुए जिन्होंने स्वतंत्रता संघर्ष को आगे बढ़ाया।

क्रियाकलाप 8.1

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना से स्वतंत्रता तक इतिहास की घटनाओं की एक समय रेखा तैयार करें। इससे संबंधित तस्वीर इकट्ठा करें और उन्हें इस चार्ट में व्यवस्थित करें।

8.5 मुस्लिम लीग का गठन (1906)

जैसे-जैसे उग्र परिवर्तनवादी आन्दोलन शक्तिशाली हुए ब्रिटिश भारतीयों की एकता को तोड़ने का रास्ता तलाशने लगे। ऐसा उसने बंगाल के विभाजन द्वारा और भारतीयों के बीच साम्प्रदायिकता

का बीज-बोकर कोशिश की। उन्होंने मुसलमानों को अपना खुद का एक स्थाई राजनीतिक संगठन बनाने को उकसाया। दिसम्बर, 1906 में ढाका में मोहम्मदन एजुकेशनल कॉन्फरेंस के दौरान नवाब सलीम उल्लाह खान ने मुस्लिम हितों की देखभाल के लिए सेंट्रल मोहम्मदन एसोसिएशन की स्थापना का विचार दिया। उसी के अनुसार 30 दिसम्बर 1906 ऑल इंडिया मुस्लिम लीग की स्थापना हुई। अन्य प्रसिद्ध व्यक्ति जिसने मुस्लिम लीग का नेतृत्व किया वह आगा खान थे जो अध्यक्ष चुने गए। मुस्लिम लीग का मुख्य उद्देश्य मुसलमानों के अधिकारों की रक्षा करना एवं उन्हें उन्नत करना तथा उनकी जरूरतों को सरकार के सामने रखना था। अलग निर्वाचन क्षेत्र के मुद्दे को बढ़ावा देकर सरकार ने भारतीयों में साम्प्रदायिकता व अलगाव के बीज बो दिए। मुस्लिम लीग के गठन को ब्रिटिश मुख्य रणनीति 'बाँटों और शासन करो' के प्रथम परिणाम के रूप में माना जाता है। बाद में मोहम्मद अली जिन्ना मुस्लिम लीग के सदस्य बने।

8.6 मॉर्ले-मिंटो सुधार (1909)

क्या आपको भारत विधान परिषद् अधिनियम 1892 याद है जिसने केन्द्रीय विधान सभा में सदस्यों की संख्या बढ़ाकर विधायिका का विस्तार कर दिया था। 1909 परिषद् अधिनियम; 1892 के सुधारों का एक विस्तार था जिसे राज्य सचिव (लार्ड मॉर्ले) एवं वायसराय (लार्ड मिंटो) के नाम पर मॉर्ले-मिंटो सुधार के नाम से जाना गया। उसने विधान सभा में सदस्य संख्या सोलह से बढ़ाकर साठ कर दिया। कुछ अनिर्वाचित सदस्यों को भी शामिल कर लिया गया। यद्यपि विधान परिषद सदस्यों की संख्या बढ़ गई किन्तु उसके पास वास्तव में शक्ति नहीं थी। वे किसी कानून को पारित होने से रोक नहीं सकते थे। न उनके पास बजट पर कोई शक्ति थी। वे मुख्यतः केवल सलाहकार की भूमिका में थे। अंग्रेजों द्वारा मुस्लिमों को अलग निर्वाचन क्षेत्र देना उसके 'बाँटो और शासन करो' का दूसरा प्रयास था। इसका अर्थ यह था कि मुस्लिम प्रभाव वाले निर्वाचन क्षेत्र में केवल मुस्लिम प्रत्याशी ही चुने जाएँगे। हिन्दू केवल हिन्दू को वोट देंगे और मुस्लिम केवल मुस्लिम को। यह भारतीय राजनीति में साम्प्रदायिकता का बीज बोने का जान-बूझ कर किया गया काम था। बहुत नेताओं ने साम्प्रदायिक निर्वाचन क्षेत्र का विरोध किया।

8.7 प्रथम विश्व युद्ध के दौरान राष्ट्रीय आन्दोलन

प्रथम विश्व युद्ध वर्ष 1914 में प्रारंभ हुआ जिसके बारे में आप पिछले अध्याय में पढ़ चुके हैं। यह युद्ध यूरोप के देशों के बीच औपनिवेशिक एकाधिकार पाने के लिए लड़ा गया। युद्ध के समय ब्रिटिश सरकार ने भारतीय नेताओं से अपील की, कि उनके संकट की घड़ी में उनका साथ दें। भारतीय नेता तैयार हो गए किन्तु इन्होंने अपनी एक शर्त रख दी। वह यह कि जब युद्ध समाप्त हो जाये तब ब्रिटिश सरकार भारतीय लोगों को संवैधानिक (विधायी और प्रशासनिक) शक्ति दे दे। दुर्भाग्यवश, प्रथम विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटिश सरकार द्वारा उठाये गये कदम ने भारतीय लोगों में असंतोष पैदा कर दिया वह इसलिए कि ब्रिटिश सरकार ने युद्ध के दौरान एक बहुत बड़ा कर्ज ले रखा था जिसे उन्हें वापस करना था। उन्होंने जमीन का किराया अर्थात् लगान बढ़ा दिए। उन्होंने ब्रिटिश फौज में भारतीयों की जबरदस्ती भर्ती की। उन्होंने आवश्यक वस्तुओं के दाम बढ़ा दिए और व्यक्तिगत एवं पेशे से प्राप्त आय पर कर लगा दिए। परिणामस्वरूप, उन्हें भारतीय समाज के विरोध का सामना करना पड़ा।

चम्पारण, बारदोली, खेड़ा और अहमदाबाद के किसानों एवं कामगारों ने ब्रिटिश सरकार की शोषणकारी नीतियों के खिलाफ डटकर विरोध किया। लाखों छात्रों ने स्कूल और कॉलेज छोड़ दिए, सैकड़ों वकीलों ने अपनी वकालत छोड़ दी। महिलाएँ ने भी इस आन्दोलन में विशेष रूप से योगदान दिया और उनकी भागीदारी गाँधीजी के आंदोलन के दौरान ज्यादा विस्तृत रही। विदेशी कपड़ों का बहिष्कार एक बड़ा आंदोलन बन गया, विदेशी कपड़ों के हजारों होलिका दहन भारतीय आक्रोश को आलोकित कर रही थी।

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की सफलता में मीडिया ने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। इस समय के दौरान उपयोग किए गए मीडिया प्रचारों के प्रकारों की सूची बनाएँ। उस समय के कुछ प्रसिद्ध अखबारों के नामों का पता लगाएँ। अगर किसी अन्य देश में इस प्रकार के आन्दोलन आज हो तो उसमें मीडिया की क्या भूमिका होगी?

8.7.1 नरमदल और गरम दल का एकजुट होना

युद्ध काल के दौरान, नरम दल एवं गरम दल 1916 के कांग्रेस के लखनऊ सम्मेलन में एक साथ आए। मुस्लिम लीग एवं कांग्रेस अलग निर्वाचन क्षेत्र पर सहमत हो गए और दूसरे दल को जहाँ कहीं वे अल्पमत में थे, महत्व देने का निर्णय किया। कांग्रेस एवं मुस्लिम लीग दोनों ने मिलकर स्वशासन की मांग की जिसकी सरकार द्वारा लम्बे समय तक अनदेखी नहीं की जा सकती थी। लखनऊ अधिवेशन इस मामले में भी महत्वपूर्ण था कि कांग्रेस के अति परिवर्तनवादी नेता भी 1907 के अलगाव के बाद इसमें हिस्सा ले रहे थे। इस सम्मेलन ने तिलक को प्रसिद्धि में ला दिया और वे 1920 में अपनी मृत्यु तक आन्दोलन में सक्रिय सदस्य बने रहे। कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच हुए इस समझौते ने देश में बड़ी आशा और अभिप्रेरणा पैदा की। साथ ही, होमरूल आन्दोलन द्वारा किया कार्य लोगों में आत्मविश्वास और लगन पैदा कर दी। भारतीयों को शान्त करने के क्रम में 1919 में माण्टेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार आया। इसने दोहरे शासन का प्रस्ताव रखा जो एक प्रकार से राज्यों में दो सरकारें थी। अस्थायी सरकार को दो भागों में बाँटा जाना था, एक को विधान सभा द्वारा निर्वाचन क्षेत्र के प्रति उत्तरदायी होना था और दूसरे को गवर्नर के प्रति। इस रिपोर्ट ने सेवाओं के भारतीयकरण पर भी जोर डाला।

प्रथम विश्व युद्ध में ब्रिटेन और इसके सहयोगी दलों ने युद्ध जीता। मुस्लिमों ने युद्ध के दौरान सरकार की मदद की। इस समझ के साथ कि ऑटोमन साम्राज्य का पवित्र स्थान खलीफा के हाथों में होगा। लेकिन युद्ध के बाद तुर्की के सुल्तान पर नया समझौता थोप दिया गया और ऑटोमन साम्राज्य विभाजित हो गया। इससे मुस्लिम क्रुद्ध हो गए और इसे उन्होंने खलीफा के अपमान के रूप में लिया। शौकत अली और मोहम्मद अली ने ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध खिलाफत आन्दोलन की शुरुआत की।

प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद अंग्रेजी सरकार ने एक अन्य अधिनियम पारित किया जिसे 'रोलट एक्ट' के नाम से जाना जाता है। यह अधिनियम ब्रिटिश सरकार को किसी भी व्यक्ति

पर बिना न्यायालय में मुकदमा चलाने गिरफ्तार करने और जेल भेजने का अधिकार देता था। इसने भारतीयों को किसी प्रकार के हथियार रखने पर भी प्रतिबंध लगा दिया। इससे सिख क्रुद्ध हो गए जो अपने धर्म के अनुसार अपने साथ कृपाण (एक प्रकार की छोटी तलवार) रखते थे। भारतीयों ने इस अधिनियम को अपना अपमान समझा। 13 अप्रैल, 1919 को बैसाखी मेले के अवसर पर जालियाँवाला बाग (अमृतसर) में लोग इस अधिनियम के शान्तिपूर्ण विरोध के लिए एकत्र हुए। अचानक एक ब्रिटिश अधिकारी, जनरल डायर बाग में अपनी सैन्य टुकड़ी के साथ आया और भीड़ पर अपनी मशीनगन से गोलियाँ चलाने का आदेश दे दिया। यह सब बिना लोगों को कोई चेतावनी दिए किया गया। जालियाँवाला बाग का दरवाजा बन्द था और लोग-आदमी औरत और बच्चे सुरक्षा के लिए नहीं भाग सके। कुछ मिनट में ही लगभग एक हजार व्यक्ति मार दिए गए। इस नरसंहार ने भारतीय लोगों के उग्र क्रोध को भड़का दिया। रवीन्द्र नाथ टैगोर ने अपना क्रोध और दर्द दिखाते हुए ब्रिटिश सरकार को नाइटहुड की उपाधि लौटा दी।

पाठगत प्रश्न 8.1

1. ब्रिटिश शासन काल में भारतीयों में राष्ट्रीय चेतना आने के तीन कारणों की व्याख्या करें ।
2. 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के गठन करने को ब्रिटिश सरकार क्यों उत्सुक थी?
3. नरमपंथी और गरमपंथियों में क्या अन्तर थे?
4. भारतीय नेताओं ने प्रथम विश्व युद्ध में अंग्रेजों की मदद क्यों की?
5. खिलाफत आंदोलन ब्रिटिश शासन के विरुद्ध क्यों था?

8.8 गाँधीजी का उदय

मोहनदास करमचन्द गाँधी एक ब्रिटेन से प्रशिक्षित वकील थे। वे 1893 में दक्षिण अफ्रीका गए और वहाँ इक्कीस वर्षों तक रहे। अंग्रेजों द्वारा दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के साथ दुर्व्यवहार ने उनकी अंतरात्मा को झकझोड़ दिया। उसने दक्षिण अफ्रीकी सरकार के जातीय विभेद के खिलाफ लड़ने का निर्णय किया। सरकार से संघर्ष करने के दौरान उसने सत्याग्रह (सत्य और न्याय के लिए अहिंसक विरोध) की तकनीक विकसित की। गाँधीजी दक्षिण अफ्रीका में इस संघर्ष में सफल रहे। वे 1915 में भारत लौटे। 1916 में उन्होंने सत्य के विचार एवं अहिंसा पर अभ्यास के लिए अहमदाबाद में साबरमती आश्रम की स्थापना की। गोपाल कृष्ण गोखले ने उन्हें देश भ्रमण मुख्यतः गावों में लोगों और उनकी समस्याओं को समझने की सलाह दी। सत्याग्रह में उनका प्रथम प्रयोग बिहार के चम्पारण में 1917 में प्रारंभ हुआ यहाँ वे किसानों की समस्याओं को सुनने के लिए आमंत्रित किए गए थे। इस समझ के आधार पर उसने चम्पारण, खेड़ा और अहमदाबाद के स्थानीय हलचल का सफलतापूर्वक नेतृत्व किया।



चित्र 8.3 मोहनदास
करमचन्द गाँधी

चित्र 8.3 मोहनदास करमचन्द गाँधी

किसान समुदाय के द्वारा आपको गाँधीजी से मिलने तथा उन्हें चंपारण आमंत्रित करने का निवेदन किया जाता है। उन्हें किसान की स्थिति को बताते हुए एक पत्र लिखें और जो आप को अच्छा लगे वे इन लोगों के लिए करें।

8.8.1 असहयोग आंदोलन (1920-22)

उस समय तक, गाँधीजी समझते थे कि सरकार को समर्थन देकर कोई उपयोगी काम नहीं हो सकता। बीती घटनाओं के प्रकाश में और ब्रितानी सरकार के कार्य के बाद, उन्होंने सरकार के सामने कुछ मांगें रखी। जैसे, सरकार को अमृतसर की घटनाओं पर पछतावा व्यक्त करना चाहिए, इसे तुर्की के प्रति उदार प्रवृत्ति दर्शानी चाहिए और भारतीयों की संतुष्टि के लिए सुधार की नई योजनाएँ प्रारंभ करनी चाहिए। यदि सरकार उनके माँगों को स्वीकार में असफल हुई उन्होंने असहयोग आंदोलन प्रारंभ करने की धमकी दी। सरकार ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया। इस प्रकार गाँधी ने अपना असहयोग आंदोलन अगस्त 1920 में प्रारंभ किया जिसमें उन्होंने लोगों से ब्रितानी सरकार का साथ न देने की अपील की। इसी समय, मुस्लिमों के द्वारा प्रारंभ खिलाफत आंदोलन और गाँधी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन मिलकर ब्रिटिश सरकार के खिलाफ एक मोर्चा बना। इसके लिए गाँधीजी ने एक विस्तृत कार्यक्रम तय किया (1) पदवी तथा सम्मान लौटाना, कार्यालय तथा स्थानीय निकाय के पदों से त्यागपत्र। (2) कार्यालय और गैर कार्यालय के कार्यों में उपस्थित होने से इनकार। (3) सरकार के द्वारा संचालित विद्यालयों तथा कॉलेजों से धीरे-धीरे छात्रों को हटाना। (4) वकीलों के द्वारा ब्रिटिश न्यायालय का बहिष्कार आदि। (5) सैनिक, लिपिक तथा मजदुर वर्गों की सेवा की नियुक्ति का इनकार (6) विधानसभा के चुनाव में प्रत्याशी तथा मतदाताओं का बहिष्कार (7) विदेशी सामानों का



चित्र 8.4 महात्मा गांधी राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान

बहिष्कार और राष्ट्रीय स्कूल तथा कॉलेज स्थापित किए गए। बाद में सृजनात्मक कार्यक्रम के द्वारा इसे बढ़ाया गया जिसके तीन मुख्य उद्देश्य थे (1) स्वदेशी को बढ़ावा देना खासकर हस्तकरघा और बुनाई (2) हिंदुओं में अस्पृश्यता का अंत (3) हिंदू-मुस्लिम एकता को बढ़ावा देना। गाँधीजी के इसी अपील के कारण देश में असाधारण जोश फैल गया। बड़ी संख्या में लोगों ने आपसी मतभेद छोड़कर इस आंदोलन में भाग लिया। दो-तिहाई से ज्यादा मतदाताओं ने नवंबर 1920 में हुए

कांउसिल के चुनाव में भाग लेने से परहेज किया। हजारों छात्रों और शिक्षकों ने अपने विद्यालयों तथा कॉलेजों को छोड़ दिया तथा उन लोगों के द्वारा एक नए भारतीय शिक्षा केंद्रों की स्थापना हुई मोतीलाल नेहरू, सी. आर. दास, सी. राजगोपालाचारी और आसफ अली जैसे वकीलों ने न्यायालय का बहिष्कार किया। विधान सभा का भी बहिष्कार किया गया। विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया गया तथा विदेशी कपड़ों को जला दिया गया। लेकिन आंदोलन के दौरान कुछ ऐसी घटनाएँ घटीं जो गाँधीजी के विचारों से बिल्कुल अलग थी। अहिंसक असहयोग आंदोलन के शुभारंभ के बाद अगस्त 1921 में हिंसा का दाग लग गया। सरकार ने भी गंभीर कारवाई प्रारंभ कर दी। महत्वपूर्ण नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। दो महीने में लगभग 30,000 लोगों को गिरफ्तार कर लिया गया। हिंसा फैलने से गाँधीजी ने चेतावनी दी। उग्र भीड़ के द्वारा उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले चौराचौरी गाँव में 9 फरवरी 1922 को हिंसा फैली। इसके बाद बरेली में हिंसा की एक और घटना हुई। गाँधीजी ने 14 फरवरी 1922 को असहयोग आंदोलन स्थगित कर दिया। उन्हें 18 मार्च 1922 को अहमदाबाद में पकड़ लिया गया तथा छः साल जेल की सजा सुनाई गई। असहयोग आंदोलन वापस लेने के बाद गाँधीजी और उनके अनुयायी ग्रामीण क्षेत्रों में सृजनात्मक किरयाकलापों में व्यस्त रहे। इसके द्वारा उन्होंने लोगों को जाति आधारित वैमनस्य को हटाने का संदेश दिया।

1922 में, गाँधीजी ने चौरी-चौरा घटना के बाद अपना असहयोग आंदोलन स्थगित कर दिया उस समय जब आंदोलन एक ऊँचाई पर था। बहुतों ने गाँधीजी के निर्णय की निंदा की। कल्पना कीजिए आप उस समय एक पत्रकार हैं और आंदोलन के बाद आपको गांधी जी के साक्षात्कार का कार्य सौंपा है। महात्मा गांधी के साथ वार्ता के लिए काल्पनिक डायलॉग लिखकर उनके निर्णय को न्यायसंगत कीजिए।

सी. आर. दास मोतीलाल नेहरू और दूसरे एक जैसे विचारों वाले लोगों ने पुनर्गठित काउंसिल के भीतर से ही असहयोग की एक नई योजना का सृजन किया। उन लोगों ने 01 जनवरी 1923 को स्वराज पार्टी की स्थापना की। सी. आर. दास पार्टी के अध्यक्ष तथा मोतीलाल नेहरू सचिव थे। पार्टी के बारे में कहा गया कि यह कांग्रेस के भीतर की ही पार्टी है न कि इसका विद्रोही संगठन। लेकिन वे न तो 1919 के कानून का अंत कर सके और न ही बदलाव। 1927 में, ब्रिटिश सरकार ने सर जॉन साइमन की अध्यक्षता में एक कमीशन नियुक्त किया। कमीशन की नियुक्ति 1919 के सुधार के अध्ययन तथा आगे के संवैधानिक सुधारों के मापदंड तय करने के लिए किया गया। कमीशन का कोई भारतीय सदस्य नहीं था। जब यह कमीशन भारत पहुँचा, भारतीयों ने इसे “आल ह्वाइट कमीशन” कहकर इसका बहिष्कार किया। इसे पूरे भारत में विरोध का सामना करना पड़ा। काले झंडे दिखाए गए, पूरे देश में विरोध प्रदर्शन और हड़ताल हुए और साइमन कमीशन वापस जाओ की आवाजें

सुनाई दी। इन प्रदर्शनों पर बहुत जगह ब्रिटिश सरकार के द्वारा लाठीचार्ज करवाया गया। लाला लाजपत राय को बुरी तरह पीटा गया और इस चोट के कारण ही उनकी मृत्यु हो गई। साइमन कमीशन के खिलाफ यह विरोध भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को एक नई ताकत दे गया। इसी बीच, भारतीय राजनीतिक नेता संविधान बनाने में व्यस्त हो गए। यह नेहरू रिपोर्ट ही है जिसने संविधान के निर्माण कैसे हो के लिए भूमिका तैयार किया। इसकी मुख्य सिफारिश थी अधिकारों की घोषणा, सरकार की संसदीय प्रणाली, व्यक्तिगत अधिकार और स्वतंत्र न्याय व्यवस्था जिसमें सर्वोच्च न्यायालय सबसे ऊपर हो। इसकी अधिकतर सिफारिशें स्वतंत्र भारत के संविधान की मुख्य आधार बनीं जिसे लगभग 20 वर्षों के बाद अपनाया गया। 1929 के लाहौर के ऐतिहासिक अधिवेशन में कांग्रेस ने पूर्ण स्वराज की मांग का निश्चय किया, अर्थात् पूर्ण स्वतंत्रता तथा पूरे भारत में 26 जनवरी के दिन को पूर्ण स्वराज दिवस मनाने का ऐलान किया। 26 जनवरी 1930 को कांग्रेस ने पूर्ण स्वतंत्रता दिवस मनाया। इसी दिन 1950 में स्वतंत्र भारत के संविधान को अपनाया गया, जिससे भारत को संप्रभुत्व, लोकतांत्रिक समाजवादी गणराज्य बनाया। तब से ही 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस के रूप में मनाया जाता है।

8.8.2 दांडी मार्च

उसी समय सरकार ने एक नया कानून बनाया। उन्होंने नमक के उपयोग पर टैक्स लगा दिया जिसका लोगों ने विरोध किया क्योंकि नमक लोगों की मूलभूत आवश्यकता थी। लेकिन लोगों की मांग पर कोई ध्यान नहीं दिया गया। मार्च-अप्रैल 1930 के समय गांधी जी ने अपने साबरमती आश्रम से गुजरात के तट दांडी तक सरकार के नमक कानून को तोड़ने के उद्देश्य से यात्रा की। यह एक शांतिपूर्ण यात्रा थी। गांधीजी ने 06 अप्रैल 1930 को नमक कानून को कुशलतापूर्वक तोड़ने के लिए मन बना लिया था। 06 अप्रैल 1930 को उन्होंने बिखड़े पड़े समुद्री नमक को उठाकर इस कानून को तोड़ा। इस आंदोलन में किसान, व्यापारी तथा औरतों ने भी बड़ी संख्या में हिस्सा लिया। सरकार ने उन्हें मई 1930 में गिरफ्तार कर लिया तथा पूना के यरवदा जेल में रख दिया। इस यात्रा का पूरी बदलती दुनिया पर और अंग्रेजों की भारतीय प्रवृत्ति पर बहुत महत्वपूर्ण असर हुआ। 1931 का गांधी-इरविन समझौता उसी



चित्र 8.5: दांडी मार्च के दौरान गांधी

चित्र 8.5 : दांडी मार्च के दौरान गांधी

का एक उदाहरण था। गाँधीजी 1931 में कांग्रेस के एकमात्र प्रतिनिधि बनकर गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने इंग्लैंड भी गए। लेकिन कुछ भी समझौता नहीं हुआ और वे खाली हाथ लौट आए। यद्यपि गाँधीजी की गिरफ्तारी से वे सक्रिय नेतृत्व से हट गए लेकिन नागरिक सविनय चलता रहा। विदेशी सामान खासकर कपड़ों के बहिष्कार पर जोर दिया गया।

सविनय अवज्ञा आंदोलन यद्यपि असफल हो गया फिर भी यह स्वतंत्रता की लड़ाई का महत्वपूर्ण दौर था। यह कांग्रेस के झंडे के नीचे विभिन्न क्षेत्रों के भारतीयों के बीच एकता का प्रसार था। इसने युवा को नियुक्ति का अवसर प्रदान किया और उसे संगठन के साथ साथ राज्य के शासन में जो 1937 के चुनाव में जीता गया था में पद की गरिमा तथा उत्तरदायित्व की शिक्षा दी। इसने राजनीतिक विचारों और प्रक्रिया को पूरे देश में व्यापक प्रसिद्ध किया और सुदूर गाँवों में भी राजनीतिक जागरूकता उत्पन्न की।

8.9 क्रांतिकारी

अंग्रेजों की प्रतिक्रियात्मक नीति ने भारत के युवा पीढ़ी के लोगों के बीच एक गहरी घृणा पैदा की। यह पीढ़ी विश्वास करती थी कि एक संगठित आंदोलन के द्वारा भारत स्वतंत्रता पा सकता है। परिणामस्वरूप, उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ क्रांतिकारी गतिविधियाँ प्रारंभ करने के लिए गुप्त समूह संगठित किया। अंग्रेजों के खिलाफ ताकत के लिए युवाओं को हिंसा के उग्र तरीकों से प्रशिक्षित किया गया। उन्होंने कम प्रसिद्धि वाले अंग्रेज अधिकारियों को मारने का प्रयास किया, अपने क्रियाकलापों में धन के लिए डकैती की और हथियारों को लूटा। उनमें से अधिकतर भारत की आजादी पाने के लिए हिंसा की मार्ग पर चले गए। उन्हें क्रांतिकारी कहा जाने लगा। पंजाब, महाराष्ट्र, बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश और उड़ीसा उनके क्रियाकलापों का केन्द्र था। इन क्रांतिकारियों में खुदीराम बोस, प्रफुल चाकी, भुपेन्द्र नाथ दत्त, वी. डी. सावरकर, सरदार अजीत सिंह, लाला हरदयाल और उसकी गदर पार्टी, सरदार भगत सिंह, राज गुरु, सुखदेव, चंद्रशेखर आजाद आदि प्रमुख थे। इन क्रांतिकारियों ने गुप्त संघ बनाया, कई ब्रिटिश कर्मचारियों को मारा गया, रेलवे यातायात बाधित किया और ब्रिटिश धन पर संगठित होकर आक्रमण करते रहे। 1925 में रामप्रसाद बिस्मिल असफ़ाक-उल्लाह खान तथा हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के सदस्यों ने हथियार के बल पर ब्रिटिश शासन को पलटने के लिए काकोरी षडयंत्र की योजना बनाई। 1928 में, चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह, बटुकेश्वर दत्त और अन्य ने मिलकर हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन का निर्माण किया। भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने पब्लिक सेफ्टि बिल तथा ट्रेड डिस्प्यूट बिल के पास होने के विरोध में केन्द्रीय विधान सभा में 8 अप्रैल



चित्र 8.6 : भगत सिंह, सुखदेव, राज गुरु, चंद्रशेखर आजाद

1929 को विरोध करते हुए बम फेका तथा 'इंकलाब जिंदाबाद' का नारा लगाते रहे, यद्यपि इस घटनाक्रम में न कोई मारा गया न ही कोई घायल हुआ। दूसरे केस के लिए उनपर बाद में मुकदमा चला और भगत सिंह, सुखदेव तथा राजगुरु को 1931 में फाँसी दे दी गई। उनके बलिदान ने लोगों के लिए प्रेरणा का काम किया। उन्हें शहीद का दर्जा दिया गया और वे भारत की एकता और प्रेरणा के प्रतीक बने।

भारतीय स्वतंत्रता पर आधारित फिल्मों का संग्रह इकट्ठा करें। क्या ये सब फिल्मों में हमें राष्ट्रीयता के प्रति जोड़ने में महत्वपूर्ण रोल अदा करते हैं। अपने विचारों को डायरी में लिखें और अपने घर तथा मित्रों के साथ चर्चा करें।

8.10 सामाजिक विचारों का विकास

बीसवीं सदी की महत्वपूर्ण बातें कांग्रेस में और इससे बाहर सामाजिक विचारों का उत्थान थी। अब किसान भूमि सुधार, जमींदारी प्रथा का अंत और राजस्व में कमी और कर्ज में छूट के लिए कहने लगे थे। अखिल भारतीय व्यापार संघ कांग्रेस जिसकी स्थापना 1920 में हुई थी मजदूरों के काम तथा रहन-सहन की व्यवस्था के विकास के लिए काम करता था। इसने पूर्ण स्वतंत्रता के लिए लोगों को प्रेरित किया जिसने आंदोलन को विस्तृत करने में मदद किया। कुछ महत्वपूर्ण सामाजिक और कम्युनिष्ट नेता थे एम. एन. राय, एस. ए. डांग, अंबनी मुखोपाध्याय नलिनी गुप्ता मुजाफ़र अहमद, शौकत उसमानी, गुलाम हुसैन सिंगारावल चेतैर, जी. एम. अधिकारी और पी.सी. जोशी। उन लोगों ने क्रांति की राह तय की, पृथक हड़ताल से उसका सामान्य राजनीतिक हड़ताल में रूपांतरण किसानों की अपने आप हड़ताल का विकास, पूर्ण स्वतंत्रता के लिए राष्ट्रव्यापी आंदोलन, पुलिस और सेना में क्रांतिकारी विचार फैलाना। साम्राज्यवाद के खिलाफ लड़ाई एक प्रमुख नारा था। 1936 में जब नेहरू कांग्रेस के अध्यक्ष थे तब उन्होंने लखनऊ अधिवेशन में घोषणा की कि भारत की समस्याओं का सामाजिक विचारों को अपनाने में निहित है। नेहरू कार्ल मार्क्स से काफी हद तक प्रभावित थे। सुभाष चन्द्र बोस भी सामाजिक विचारों से प्रभावित थे। गाँधीजी से मतभेद होने के कारण सुभाष चन्द्र बोस ने कांग्रेस से त्यागपत्र दे दिया और अपने “फारवर्ड ब्लॉक” की स्थापना की।

8.11 सांप्रदायिक विभाजन

‘फूट डालो शासन करो नीति’ का प्रारंभ ईस्ट इंडिया कंपनी ने दिनों में किया था जब अंग्रेज अपने भारत के शासक के रूप में स्थापित कर रहे थे। आपने पढ़ा होगा कैसे कंपनी ने एक शासक को दूसरे के खिलाफ किया और अंतः वे स्वतंत्र शासक बन गये। आपने देखा कि अर्द्ध उन्नीसवीं शताब्दी की समाप्ति के पश्चात् से ही राष्ट्रीयता उत्पन्न होने लगी थी। अब ब्रिटिश सरकार ने पाया कि फूट डालो और करो की नीति को बढ़ाकर हिन्दु और मुस्लिम के बीच द्वेष पैदा करना ही बुद्धिमानी है। अंग्रेजों को 1857 के

विद्रोह से ही मुस्लिम अप्रिय और संदेहास्पद होने के कारण अच्छे नहीं लगते थे। लेकिन अब उन्हें लगा कि बढ़ते राष्ट्रवाद को रोकने के मुस्लिमों को खुश करने का समय आ गया है। सरकार ने उन सभी अवसरों पर अपने अधिकार कर लिया जिनसे भारतीय धर्म के अंधकार पर एक-दूसरे के समक्ष होते और उन लोगों के बीच उन्होंने शत्रुता उत्पन्न कर दी थी। अंततः इसी नीति के कारण मुसलमानों का अलग चुनाव क्षेत्र स्थापित हुआ। आपने मुस्लिम लीग के निर्माण के बारे में पढ़ा होगा जिसने सांप्रदायिकता के बीज बोए थे। आपको याद होगा कि ब्रिटिश अधिकारियों के बढ़ावे के कारण ही लीग की स्थापना हुई थी।

1932 का कम्युनल अवार्ड इसी नीति की एक पहल थी क्योंकि इसने ही समाज के कमजोर वर्गों के लिए सीटों का आरक्षण और अलग चुनाव क्षेत्र की अनुमति दी थी। अलग चुनाव क्षेत्र की पहली बार मांग 1906 में मुस्लिम लोग ने किया और 1907 के मार्ले-मिंटो सुधार में इसे लागू किया गया। इसे भारतीय राष्ट्रवाद के खिलाफ मुस्लिम सांप्रदायवाद को बढ़ाने को ध्यान में रखकर बनाया गया। मोंटफोर्ड सुधार (1919) के तहत उसे सिक्ख युरोपियन, ओगल-इंडियन, इंडियन-क्रिश्चन आदि तक बढ़ाया गया। 1935 के अधिनियम के अधीन-सत्रह अलग चुनाव क्षेत्र बनाए गए। दो राष्ट्र सिद्धांत 1938 में आया और जिन्ना ने 1940 में खुलकर इसका समर्थन किया। जब पाकिस्तान की मांग की गई तो अंग्रेज हुकुमत ने सीधे और परोक्ष रूप से इसको प्रोत्साहित किया। पाकिस्तान की मांग के प्रकट होने का तात्कालिक कारण 1937 के चुनाव के बाद कांग्रेस का मिली-जुली सरकार बनाने से इंकार था। देश अराजकता और बर्बाद होने के कगार पर था।

इन घटनाओं के बीच, पूरी तरह कानून व्यवस्था को टूटने से बचाने तथा ब्रिटिश शासन से छुटकारा पाने का एकमात्र रास्ते के रूप में विभाजन को आवश्यक अभिशाप के रूप में स्वीकार किया गया।

1. सत्याग्रह अन्य विरोधों से किस प्रकार भिन्न था?
2. साइमन कमीशन का भारतीयों ने बहिष्कार क्यों किया? कोई दो कारण बताओ?
3. गाँधीजी ने असहयोग आंदोलन वापस क्यों ले लिया?
4. क्रांतिकारियों के रास्ते दूसरों से किस प्रकार अलग थे?
5. 'पूर्ण स्वराज' से आप क्या समझते हैं?
6. अंग्रेजों ने किस प्रकार भारत में सांप्रदायिक फुट को बढ़ावा दिया?

8.12 स्वतंत्रता की प्राप्ति (1935-47)

मार्च 1933 में अंग्रेजी सरकार ने श्वेत पत्र तैयार किया। इस श्वेत पत्र के आधार पर एक बिल बनाया गया तथा उसे दिसंबर 1934 में संसद में प्रस्तुत किया गया। बिल अंततः 2 अगस्त 1935 को भारत सरकार अधिनियम 1935 के नाम से पारित हुआ। 1935 के अधिनियम की सबसे

सुस्पष्ट विशेषता अखिल भारतीय परिसंघ का विचार था जो ब्रिटिश भारतीय प्रांत और देशी प्रांतों से बना था। प्रांतों को इस प्रस्तावित परिसंघ में शामिल होना अनिवार्य था। देशी रियासतों के लिए यह ऐच्छिक था। प्रांतों के सदस्यों को चुना जाना था जबकि रियासतों के उम्मीदवारों को वहाँ का शासन मनोनीत करता था। ब्रिटिश भारत में जनसंख्या के 14% लोगों को ही वोट देने का अधिकार था। विधानसभा की शक्ति सीमित और प्रतिबंधित थी। रक्षा और विदेशी संबंधों पर कोई नियंत्रण नहीं था। अधिनियम अंग्रेजों के खुद के अधिकारों की रक्षा करता था। राष्ट्रीय एकता के उद्भव को हतोत्साहित करता था, जबकि अलगाव और सांप्रदायिकता को बढ़ावा देता था। नेहरू, जिन्ना समेत सभी राष्ट्रवादियों ने इस अधिनियम की भर्त्सना की।

कांग्रेस का अधिवेशन 25 अप्रैल 1935 को लखनऊ में हुआ। यद्यपि अधिनियम की भर्त्सना की गई पर ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरोध के लिए, विभिन्न नियम कानून और अधिनियम जो भारतीय राष्ट्रवाद के खिलाफ प्रारंभ किये गये थे के अंत के लिए चुनाव लड़ने का निर्णय लिया गया।

1937 के चुनाव में कांग्रेस बहुमत में आई। ग्यारह प्रांतों में से सात प्रांतों में कांग्रेस सरकार बनी। 18 मार्च 1937 को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने विधानसभा में कांग्रेस की नीतियों पर एक प्रस्ताव अपनाया। इसमें कहा गया कि कांग्रेस स्वतंत्रता और नए संविधान के पूर्ण अस्वीकृति के उद्देश्य से चुनाव लड़ी थी और इसमें भारत का संविधान बनाने के लिए संविधान सभा की माँग की। कांग्रेस की नई घोषित नीति, नए अधिनियम और उसको खत्म करने की लड़ाई थी। कांग्रेस मंत्रिमंडल के आने का तात्कालिक प्रभाव राहत का अनुभव था। राजनीतिक बंदियों को रिहा किया गया और बड़ी मात्रा में नागरिक स्वतंत्रता स्थापित की गई। किसान विधान पारित हुआ और इसने किसानों को काफी हद तक राहत दी। प्रत्येक बच्चों को अनिवार्य और निःशुल्क मौलिक शिक्षा की इच्छा व्यक्त की गई।

8.12.1 द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान राष्ट्रीय आंदोलन

1939 में जब द्वितीय विश्व युद्ध शुरू हुआ, कांग्रेस का खैया सहानुभूतिपूर्ण था। जबकि इसने बिना शर्त सहयोग देने से इंकार कर दिया। कांग्रेस ने माँग की कि भारत को एक स्वतंत्र संघ घोषित कर दिया जाये और अंग्रेज सहमत नहीं हुए परिणामस्वरूप, 1939 में सभी मंत्रियों ने इस्तीफा दे दिया। 1940 में सी. राजगोपालाचारी के अनुरोध पर केन्द्र में अस्थायी राष्ट्रीय सरकार की माँग की गई इसे वायसराय लॉर्ड लिनलिथगो द्वारा अस्वीकार कर दिया गया। अक्टूबर, 1940 में सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू किया गया। आचार्य विनोबा भावे व्यक्तिगत सत्याग्रह देने वाले थे।

एब्ली की अध्यक्षता में कैबिनेट की अखिल भारतीय समिति गठित की गई और घोषणापत्र का एक प्रारूप बनाया गया। मार्च 1942 में सर स्टेफोर्ड क्रिप्स घोषणापत्र लेकर भारत आए। इसमें युद्ध के बाद भारत को 'प्रभुत्व राज्य का दर्जा' देने की ब्रिटिश सरकार की इच्छा व्यक्त की गई थी। सम्पूर्ण स्वतंत्रता का वादा नहीं किया गया था। भारतीय लोगों की राष्ट्रीय सरकार की कोई चर्चा नहीं थी। कांग्रेस ने इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। मुस्लिम लीग ने एक ही संघ बनाने का विरोध किया, इस प्रकार यह योजना अस्वीकार्य रही क्योंकि इसमें पाकिस्तान को स्पष्टतः नहीं माना गया। क्रिप्स मिशन सफल हो गया।

सुभाषचन्द्र बोस द्वारा विदेश से स्वतंत्रता के लिए संघर्ष को चलाया गया। उन्होंने द्वितीय विश्व युद्ध की शुरुआत को भारत की स्वतंत्रता के लिए अंग्रेजों पर चोट करने का एक सुविधाजनक अवसर पाया। बोस को 1940 में उनके घर में ही कैद कर दिया गया लेकिन 28 मार्च 1941 को वे बर्लिन निकल भागने में सफल रहे। वहाँ भारतीय समुदाय में उन्हें 'नेताजी' के रूप में सम्मान दिया गया। उनका 'जय हिन्द' से स्वागत किया गया। उन्होंने एक भारतीय सेना की शुरुआत की कोशिश की और अपने देश के लोगों को ब्रिटिश के विरुद्ध हथियार उठाने को प्रेरित किया। 1942 में इंडियन इंडिपेंडेंस लीग की स्थापना की गई और भारत को आजादी के लिए इंडियन नेशनल आर्मी के गठन का निर्णय लिया गया। रासबिहारों बोस के एक आमंत्रण पर 13 जून 1943 को सुभाष चन्द्र बोस पूर्वी एशिया आए। उन्हें इंडियन इंडिपेंडेंस लीग का अध्यक्ष और आई.एन.ए. जिन्हें आजाद हिन्द फौज कहा जाता है, के अध्यक्ष बनाया गया। उन्होंने प्रसिद्ध युद्ध घोष 'चलो दिल्ली' दिया। उन्होंने भारतीयों से स्वतंत्रता का वादा यह कहते हुए किया कि 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा।' मार्च 1944 में कोहिमा में भारतीय झंडा फहराया गया। दुर्भाग्यवश, आन्दोलन खत्म हो गया। अगस्त 1945 में एक हवाई दुर्घटना में सुभाष की मृत्यु की सूचना दी गई। लेकिन आई.एन.ए. ने भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष में एक सम्मानित स्थान पर अपना कार्य करता रहा। बोस एवं आई.एन.ए. की सेना की अति देशभक्ति ने भारतीय लोगों के लिए प्रेरणा का बहुत बड़ा स्रोत सिद्ध हुआ।



चित्र 8.7: सुभाष चन्द्र बोस और आजाद हिन्द फौज

चित्र 8.7 : सुभाष चन्द्र बोस और आजाद हिन्द फौज

8.12.2 भारत छोड़ो आन्दोलन और उसके बाद

किप्स मिशन की असफलता ने भारतीयों को निराश व क्रोधित कर दिया। उस समय यह अनुभव किया गया कि ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध एक विशाल आन्दोलन शुरू करने का समय आ गया है। भारतीयों का असंतोष युद्ध समय की कमी एवं बेरोजगारी की वृद्धि के कारण बढ़ रहा था। जापान के आक्रमण का लगातार भय बना हुआ था। भारतीय नेताओं को विश्वास दिलाया गया कि भारत जापानी आक्रमण का दोषी होगा क्योंकि भारत में अंग्रेज मौजूद हैं। गाँधीजी ने कहा- "भारत में अंग्रेजों की उपस्थिति जापान को भारत पर आक्रमण का निमंत्रण है।" सुभाष चन्द्र बोस जी 1941 में भारत से निकल भागे थे, वे बार-बार बर्लिन से रेडियो पर अंग्रेज विरोधी भावनाओं को उठाते हुए बोलते थे जिसने जापानी समर्थन की भावनाओं को बढ़ावा दिया।

गाँधी जी के अधीन कांग्रेस ने यह अनुभव किया कि अंग्रेजों को भारतीयों की मांगों को मानने के लिए मजबूर किया जाए या भारत छोड़ने को बाध्य किया जाना चाहिए। 14 जुलाई 1942 को वर्धा में कांग्रेस कार्यकारिणी समिति की बैठक में भारत छोड़ो प्रस्ताव को पारित किया गया। जिसका देर से लिखित समर्थन मिला और 8 अगस्त को कांग्रेस ने अहिंसा के आधार पर विस्तृत पैमाने पर एक व्यापक संघर्ष प्रारम्भ करने का निर्णय लिया। 8 अगस्त की रात में कांग्रेस प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुए गाँधी जी ने अपनी आत्मा को झकझोड़ते हुए भाषण में कहा :

बाक्स प्रारंभ

मैं आजादी जल्द इसलिए चाहता हूँ... सम्पूर्ण आजादी से कम में मैं अन्य किसी चीज से संतुष्ट नहीं होने जा रहा हूँ। यहाँ एक छोटा सा मंत्र है जो मैं आप लोगों को दे रहा हूँ। आप इसे अपने हृदय में छाप सकते हैं और अपने प्रत्येक सांस के साथ इसका सम्बोधन कर सकते हैं। यह मंत्र है- “करो या मरो”। हम या तो भारत को आजाद करेंगे या इस प्रयास में मर जाएंगे। हम गुलामी को लम्बे समय तक देखते रहने के लिए जिन्दा नहीं रहेंगे।

बाक्स समाप्त

लेकिन इससे पहले कि कांग्रेसी नेता आंदोलन प्रारम्भ कर पाते, सभी महत्वपूर्ण कांग्रेसी नेताओं को 9 अगस्त 1942 से पूर्व ही गिरफ्तार कर लिया गया। कांग्रेस को प्रतिबंधित कर दिया गया और एक अवैध संगठन घोषित कर दिया गया। प्रेस पर पाबंदी लगा दी गई।

जनप्रिय नेताओं की गिरफ्तारी की खबर ने राष्ट्र को सदमे में डाल दिया। उनका क्रोध और असंतोष असंख्य विरोधों, हड़तालों, जुलूसों और विरोध प्रदर्शनों द्वारा देश के सभी भागों में व्यक्त हुआ। अधिकांश नेताओं के जेलों में होने से आन्दोलन ने विभिन्न जगहों पर विभिन्न रूप ले लिया। लोगों ने सरकारी भवन, पुलिस स्टेशन, पोस्ट ऑफिस और अन्य कोई भी चीज जो अंग्रेजों के अधिकार में आता था, को जलाकर अपने क्रोध को खुलकर व्यक्त किया। रेल और टेलिग्राफ की लाइनें तोड़ दी गईं। कुछ स्थानों पर जैसे उत्तर प्रदेश के बलिया जिला में, पश्चिम बंगाल



चित्र 8.8: भारत छोड़ो आंदोलन (अगस्त 1942)

चित्र 8.8 : भारत छोड़ो आंदोलन (अगस्त 1942)

के मिदनापुर जिला में एवं बम्बई के सतारा में विद्रोह ने गम्भीर मोड़ ले लिया। गाँधीजी के मंत्र से प्रेरित होकर लोग अपना सर्वस्व त्याग करने को तैयार थे। अंग्रेज अपनी सेना और पुलिस के साथ भारतीय लोगों पर अत्याचार करने लगे। लोग बर्बरता पूर्वक मारे गए। भारत छोड़ो आन्दोलन। ऐतिहासिक महत्व के जन-आन्दोलनों में एक बन गया। इसने राष्ट्रीय भावनाओं की गहराई का प्रदर्शन किया और भारतीय लोगों ने बलिदान और लगनशील संघर्ष की क्षमता का संकेत दिया। इस आन्दोलन के बाद पनाह की कोई जगह नहीं थी। भारत की आजादी से अब ज्यादा लाभ उठाने की बात नहीं थी। इसे अब सच में होना था।

1945 में विश्व-युद्ध के अन्त में ब्रिटिश सरकार भारतीयों और मुसलमानों से शक्ति हस्तांतरित करने के सम्बन्ध में बातचीत प्रारंभ कर दिया। प्रथम चक्र की बातचीत सफल नहीं हो सकी क्योंकि मुस्लिम नेता सोचते थे कि मुस्लिम ही एक मात्र वे लोग हैं जो भारतीय मुसलमानों का प्रतिनिधित्व कर सकती हैं। कांग्रेस इस पर सहमत नहीं हुई। 1946 में कैबिनेट मिशन भारतीय समस्या का परस्पर सहमति से समाधान ढूँढ़ने के लिए भारत आया मिशन ने सभी प्रसिद्ध राजनीतिक दलों के नेताओं से बातचीत की और तब भारत में गणतन्त्रात्मक सरकार की स्थापना की योजना का प्रस्ताव रखा। प्रारंभ में सभी दलों द्वारा योजना की आलोचना की गई किन्तु बाद में सभी ने इस पर अपनी स्वीकृति दे दी। अब संविधान सभा का चुनाव हुआ, कांग्रेस ने एक सौ नित्यानवे सीटों पर कब्जा कर लिया और मुस्लिम लीग को तिहत्तर सीट मिले।

8.12.3 भारत की आजादी और विभाजन

संविधान सभा की शक्ति को लेकर कांग्रेस मुस्लिम लीग में शीघ्र ही मतभेद उभर आये। अतः लीग ने 1946 के मध्य में कैबिनेट मिशन की योजना को अस्वीकार कर दिया। सितम्बर, 1946 में कांग्रेस ने केन्द्र में सरकार बनाई। लीग ने इसमें हिस्सा लेने से इनकार कर दिया। मुस्लिम लीग ने 16 अगस्त 1946 के दिन पाकिस्तान प्राप्त करने के लिए 'सीधी कार्यवाही दिवस' मनाया। संघर्ष के परिणामस्वरूप भारत के विभिन्न हिस्से में बड़े पैमाने पर साम्प्रदायिक दंगे फैल गए। हजारों लोग दंगे में मारे गए, लाखों लोग बेघर हो गए। इसी बीच लॉर्ड माउण्टबेटेन को वायसराय बनाकर भारत भेजा गया। उसने अपनी योजना जून 1947 में रखी जिसमें भारत का विभाजन शामिल था। गाँधीजी के प्रबल विरोध के बावजूद सभी दल विभाजन के लिए राजी हो गए और भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम 1947 अस्तित्व में आया। इसने भारतीय उपमहाद्वीप को दो भागों में कर बाँट दिया, वे थे - भारतीय संघ और पाकिस्तान। भारत ने 15 अगस्त 1947 ने अपनी स्वतंत्रता पाई। ठीक आधी रात (14वाँ - 15वाँ अगस्त 1947) को शक्ति का हस्तांतरण हुआ।

आप ब्रिटिश सरकार द्वारा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस एवं मुस्लिम लीग के सदस्यों से स्वतंत्रता के बाद शक्ति के हस्तांतरण के तरीके पर बातचीत करने के लिए केबिनेट मिशन का एक सदस्य चुने गए हैं। उन प्रस्तावों की एक सूची बनाएँ जो आप उनके सामने रखेंगे।

1. 1935 के अधिनियम की दो मूल विशेषताएँ लिखें।
2. मुस्लिम लीग की मुख्य मांगें क्या थीं?
3. 1935 के बाद कांग्रेस का चुनाव में शामिल होने का क्या कारण था?
4. द्वितीय विश्व-युद्ध के दौरान भारत में अंग्रेजों की उपस्थिति को लेकर भारतीय नेता क्यों दुखी थे?
5. भारत विभाजन के मुख्य कारण क्या थे?

आपने क्या सीखा

- नव जागरण, फ्रांसीसी क्रांति, अमेरिकी क्रांति, रूसी क्रांति ने राष्ट्रवाद के विचार को आगे बढ़ाया।
- उपनिवेश विरोधी आन्दोलन 19वीं शताब्दी में राष्ट्रवाद के उदय का कारण बना। समकालीन सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आन्दोलनों ने भी राष्ट्रवाद की भावना पैदा करने में भूमिका निभाई।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस 1885 में केवल ब्रिटिश सरकार से भारतीय जनता की ओर से बातचीत करने एवं उनकी शिकायतों को आवाज देने के लिए स्थापित किया गया।
- 1905 में लॉर्ड कर्जन ने बंगाल विभाजन की घोषणा की। भारतीयों ने इस विभाजन को अंग्रेजों द्वारा बंगाल में उभरते राष्ट्रीय आंदोलन को नष्ट करने और क्षेत्र के हिन्दू एवं मुस्लिम को बाँटने के रूप में देखा।
- 1906 में ढाका में मुस्लिम लीग बना। इस का उद्देश्य भारत में मुस्लिमों के अधिकारों की रक्षा करना और उन्हें उन्नत बनाना तथा सरकार को उनकी आवश्यकताओं को बताना था।
- विचारों में अन्तर 1907 में कांग्रेस में विभाजन का कारण बना। दो समूह-नरम दल और गरम दल बने।
- प्रथम विश्व-युद्ध में भारतीय नेता इस शर्त के साथ ब्रिटिश सरकार की मदद करने को सहमत थे कि युद्ध के बाद भारतीयों को संवैधानिक शक्ति सौंप दी जाएगी।
- गाँधीजी ने दक्षिण अफ्रीका, चम्पारण, खेड़ा और अहमदाबाद में सत्याग्रह का सफल प्रयोग किया।
- गाँधीजी ने ब्रिटिश नीतियों के विरुद्ध जन आंदोलन प्रारंभ किया। उन्होंने इस आन्दोलन में समाज के सभी वर्ग को शामिल किया और प्रोत्साहित किया।
- ब्रिटिश द्वारा साम्प्रदायिक विभाजन का बोया गया बीज भविष्य में विभाजन का कारण बना।

- विदेश से स्वतंत्रता के लिए संघर्ष सुभाष चन्द्र बोस द्वारा चलाया गया। वे भारत को ब्रिटिश से मुक्त कराने के लिए इंडियन नेशनल आर्मी के नेता बने।
- भारत छोड़ो आन्दोलन ने भारतीय स्वतंत्रता की राह को आसान कर दिया। गाँधीजी का यह अंतिम आह्वान था 'करो या मरो'
- मुस्लिम लीग ने मुसलमानों के लिए पाकिस्तान बनाने की मांग की जो विभाजन का कारण बना। भारत ने 15 अगस्त 1947 को अपनी स्वतंत्रता पायी।

पाठान्त प्रश्न

1. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा प्रारंभिक वर्षों के शुरुआत में किस प्रकार की मांग ब्रिटिश सरकार के सामने रखी गई?
2. लॉर्ड कर्जन बंगाल का विभाजन क्यों चाहता था?
3. अफ्रीका में गाँधीजी द्वारा किए गए सत्याग्रह का क्या महत्व था? गाँधीजी द्वारा भारत में किए गए सत्याग्रह की क्या प्रकृति थी?
4. असहयोग आंदोलन अपने उद्देश्य में सफल था, अपने तर्क के पक्ष में कोई दो कारण दें।
5. साइमन कमीशन को भारत छोड़ने को क्यों कहा गया?
6. दांडी मार्च गाँधीजी की गिरफ्तारी का कारण क्यों बनी?
7. आंदोलनकारियों ने विधान सभा में बम फेंक कर क्या किया?
8. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में सुभाष चन्द्र बोस के नेतृत्व में आजाद हिन्द फौज की भूमिका की चर्चा करें।
9. भारत की स्वतंत्रता में भारत छोड़ो आंदोलन ने किस प्रकार योगदान दिया?
10. ब्रिटिशों को भारत को आजादी देने के किन्हीं तीन कारणों का उल्लेख करें।
11. बीसवीं शताब्दी में अंग्रेजों द्वारा भारत के आजादी देने किन्हीं तीन मुख्य कारणों का उल्लेख कीजिए।

मॉड्यूल II भारत : पर्यावरण संसाधन एवं विकास

9. भारत का भौतिक भूगोल

10. जलवायु

11. जैव विविधता

12. भारत में कृषि

13. यातायात तथा संचार के साधन

14. जनसंख्या हमरा प्रमुख संसाधन

9. भारत का भौतिक भूगोल

शिक्षक : प्रिय छात्रों, आप सहमत होंगे कि हम जिस स्थान पर रहते हैं हमारी सोच और व्यवहार पर उसका गहरा प्रभाव होता है। हम यहां जानना चाहते हैं कि किन स्थानों से हम लोगों का संबंध है।

नताशा : मैं हिसार शहर से हूँ। फराह फतेहाबाद से और राजिंदर भिवानी से आता है।

शिक्षक : क्या आप जानते हैं ये सभी स्थान कहाँ पर स्थित हैं?

राजिंदर : हाँ, ये हरियाणा में है उसी तरह से भारत में हैं। लेकिन, भारत कहाँ स्थित है?

फराह : भारत की स्थिति पता करने की आवश्यकता क्या है?

शिक्षक : किसी देश की स्थिति उसकी पहचान होती है। जलवायु, वनस्पति, कृषि, संसाधन आदि जैसे महत्वपूर्ण पहलुओं को निर्धारित करता है। ये बहुत गहराई तक प्रभाव डालता है, लोग कहाँ रहते हैं, क्या खाते हैं और दुनिया के मंच पर अपनी आवाज को कितने शक्तिशाली रूप में रखते हैं। इसलिए, भारत के विभिन्न पहलुओं को समझने की जरूरत है। हम इस पाठ में इसके बारे में और अधिक चर्चा करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप:

- अक्षांश और देशांतर के संदर्भ में भारत की स्थिति का वर्णन कर सकेंगे;
- पड़ोसी देशों के संदर्भ में भारत की सापेक्षिक स्थिति के महत्व को मानचित्र द्वारा वर्णन कर सकेंगे;
- भारत के राजनीतिक मानचित्र की सहायता से राज्यों और संघ शासित प्रदेशों का वर्णन कर सकेंगे;
- भारत की प्रमुख भौतिक विभागों की व्यवस्था कर सकेंगे;
- भारत में अपवाह तंत्र का वर्णन कर सकेंगे;
- हिमालयीय और प्रायद्वीपय अपवाह तंत्र में विभेद कर सकेंगे; और
- नदी को स्वच्छ रखने में लोगों की भागीदारी के महत्व पर प्रकाश डाल सकेंगे ।

9.1 स्थान

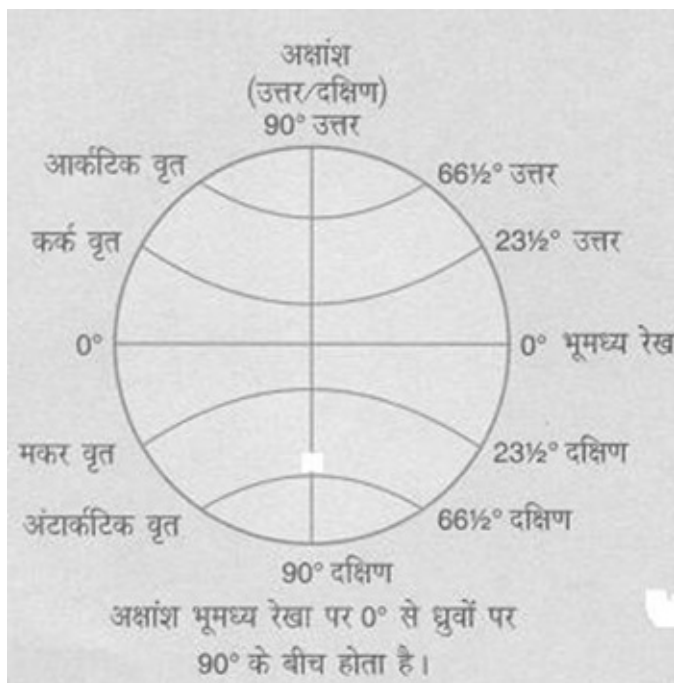
शिक्षक : छात्रों, जब कोई पूछे भारत कहां है, हम निरपेक्ष और सापेक्ष स्थिति के संदर्भ में दो तरीकों से उत्तर दे सकते हैं। हमारा तात्पर्य निरपेक्ष और सापेक्ष स्थिति से क्या है? निरपेक्ष स्थिति अक्षांश और देशांतर की डिग्री में दिया जाता है। सापेक्ष स्थिति संदर्भ किसी बिंदु पर निर्भर करता है, उदाहरण के लिए, निकट या दूर या आस-पास का कोई स्थान।

क्या आप जानते हैं

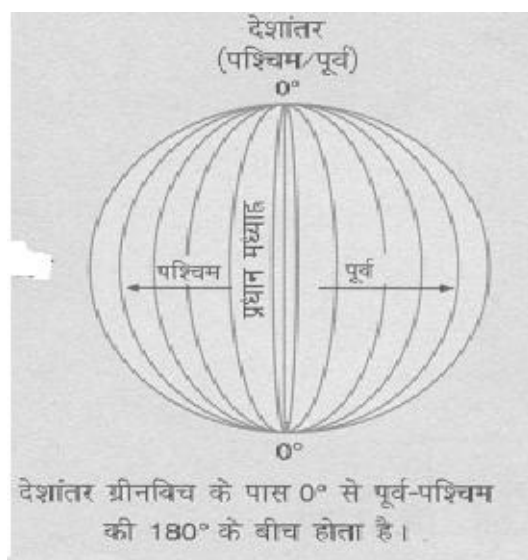
अक्षांश : अक्षांश वह कोणीय दूरी है जो पृथ्वी की सतह पर किसी स्थान के भूमध्य रेखा से उत्तर या दक्षिण होती है।

देशांतर : देशांतर पृथ्वी की सतह पर किसी स्थान का वह कोणीय दूरी है जो ग्रीनविच के प्रधान मध्याह्न से पूर्व या पश्चिम मापी जाती है।

कोणीय दूरी : केन्द्र से बिन्दुओं के बीच की दूरी को कोणीय दूरी कहा जाता है।



चित्र : अक्षांश (उत्तर/ दक्षिण) 90° डिग्री उत्तर

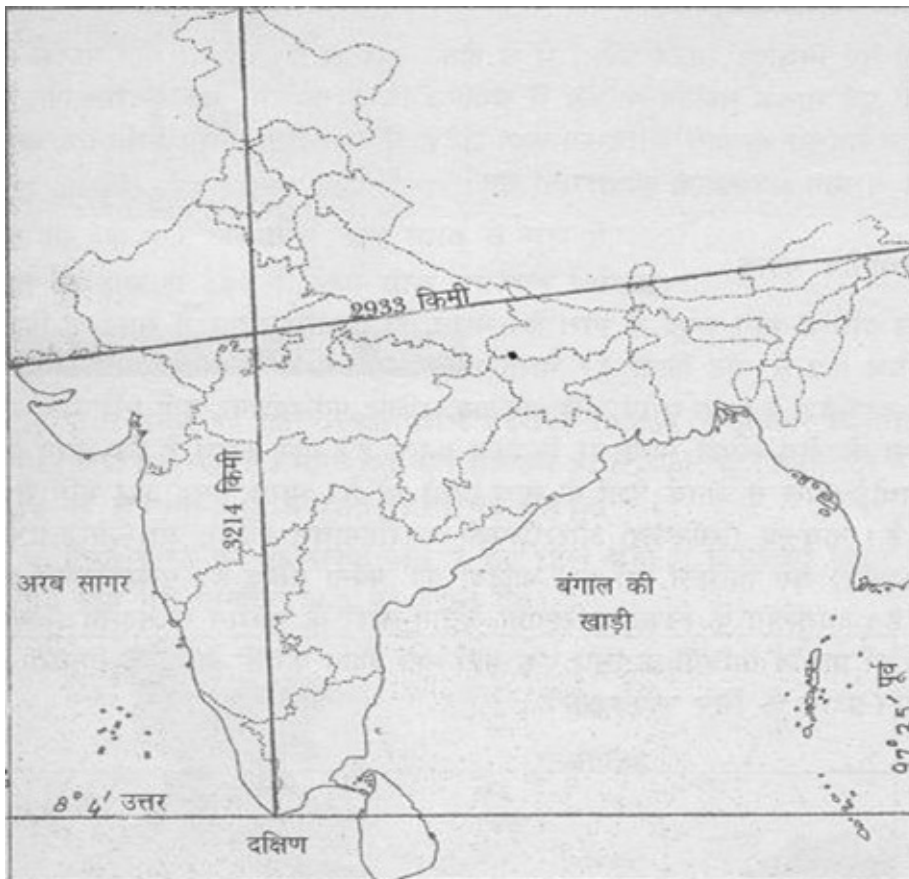


चित्र : देशांतर (पश्चिम/ पूर्व) 0 डिग्री

शिक्षक : मानचित्र की सहायता से क्या आप पता कर सकते हैं कि भारत की मुख्य भूमि का अक्षांशीय और देशान्तरीय स्थिति क्या है?

नताशा : भारतीय मुख्य भूमि 8 डिग्री 4 मिनट उत्तर और 37 डिग्री 6 मिनट उत्तरी अक्षांश और 68 डिग्री 7 मिनट पूर्व और 97 डिग्री 25 मिनट पूर्व देशांतर के बीच स्थित है। इस प्रकार, उत्तर-दक्षिण विस्तार 3214 किलोमीटर है और पूर्व-पश्चिम विस्तार 2933 किलोमीटर हैं। भारत संसार की कुल भूमि क्षेत्र के 2.42 प्रतिशत है।

शिक्षक : भारत पूरी तरह से उत्तरी गोलार्द्ध और पूर्वी गोलार्द्ध में स्थिति हैं। कर्क रेखा (23 डिग्री 30 मिनट उत्तरी) देश के मध्य भाग से गुजरता है। यह देश को लगभग दो बराबर भागों में विभाजित करता है। इसके उत्तर की ओर उत्तर भारत और इसके दक्षिण की ओर



चित्र 9.1 : भारत का विस्तार

चित्र 9.1 : भारत का विस्तार

दक्षिण भारत के नाम से जानते हैं। इसी प्रकार से 82 डिग्री 30 डिग्री पूर्वी देशांतर देश के लगभग मध्य से गुजरता है। यह भारत के मानक मध्यान्ह के रूप में जाना जाता है।

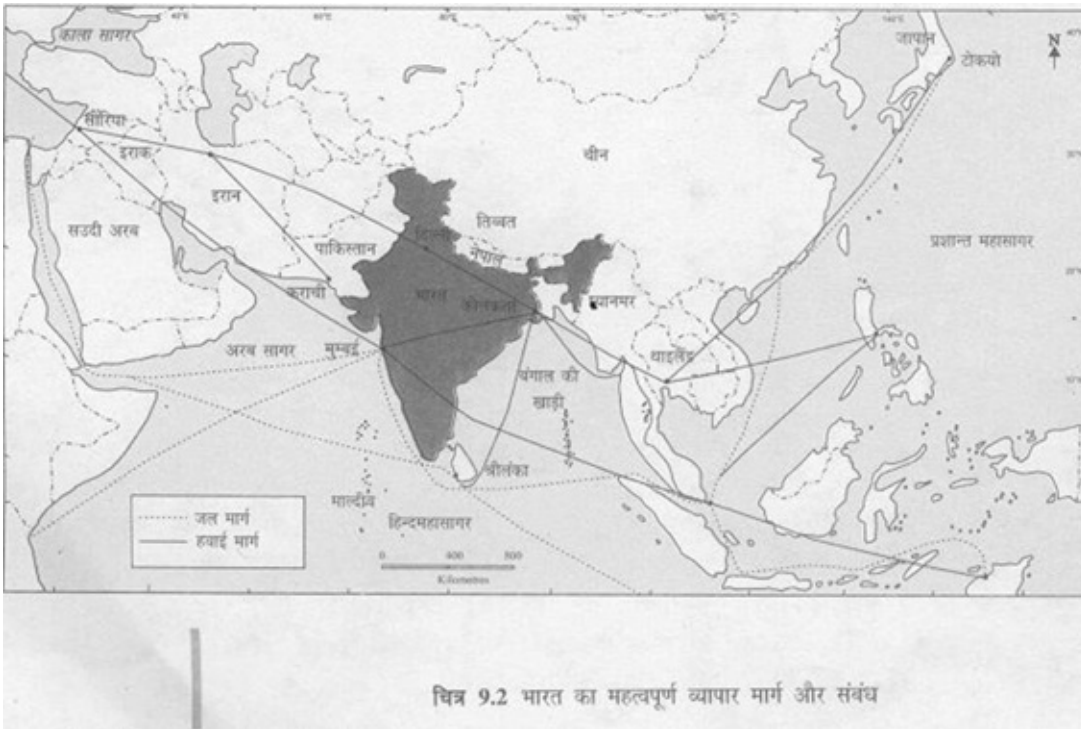
शिक्षक : अब भारत के सापेक्ष स्थिति निर्धारित करें और फिर इसे नीचे दिए गए स्थान में रिकॉर्ड करें। याद रखें कि सापेक्ष स्थिति अन्य स्थानों (उत्तर, दक्षिण, पश्चिम, पूर्व से आर-पार) के संबंध बताता है। भारत एशिया महाद्वीप का हिस्सा है। भारत तीन तरफ से पानी से घिरा हुआ है। इसके उत्तर पश्चिम की ओर पाकिस्तान और अफगानिस्तान है। चीन, भूटान, तिब्बत और नेपाल इसके उत्तर में स्थित है। बांग्लादेश और म्यांमार इसके पूर्व में है। श्रीलंका और मालदीव हिंद महासागर में इसके दक्षिण की ओर स्थित है। देश का सबसे दक्षिणतम बिंदु इंदिरा प्वाइंट (निकोबार द्वीप समूह) जो 6 डिग्री 4' दक्षिणी अक्षांश पर स्थित है जबकि भारतीय मुख्य भूमि का दक्षिणतम बिंदु कन्याकुमारी 8 डिग्री 4' उत्तरी अक्षांश पर स्थित है।

क्या आप जानते हैं

82डिग्री 30मिनट पूर्व मिर्जापुर (उत्तर प्रदेश) में से होकर गुजरता है। यह देश का मानक मध्याह्न है। 82डिग्री 30मिनट पूर्व मानक मध्याह्न के रूप में चयनित किया गया है। वह गुजरात और अरुणाचल प्रदेश के लगभग बीच में है। इसलिए पूरे देश में एक जैसा समय निर्धारित करने के लिए केन्द्रीय मध्याह्न का चयन किया गया है।

9.1.1 स्थानीय महत्व

भारत का दक्षिणी भाग समुद्र से घिरा है। भारत की हिन्दमहासागर में सामरिक स्थिति है। क्या आपने चित्र 9.2 में नोट किया है? भारत दक्षिण एशिया में जनसंख्या और क्षेत्रफल की दृष्टि में सबसे बड़ा देश है। यह यूरोप और अफ्रीका, दक्षिण पूर्व एशिया, पूर्वी एशिया दूरस्थ क्षेत्र और ओशिनिया के बीच समुद्री मार्गों पर नियंत्रण करता है। यही कारण है कि भारत के व्यापारिक संबंध प्राचीन काल से अनेक देशों के साथ अच्छे रहें हैं। भारत समुद्र और भूमि से अच्छी तरह से जुड़ा है। नाथू-ला (सिक्किम) और शिपकी-ला (हिमाचल प्रदेश), और जोजिला और बुर्जीला (जम्मू कश्मीर) जैसे विभिन्न दरों मर्ण घाटियों का अपना महत्व है। मुख्य व्यापार भारत-तिब्बत के बीच है। दार्जिलिंग के निकट कलिम्पोंग जलपा-लादरों के माध्यम से लहासा (तिब्बत) से जुड़ा हुआ है। दरें प्राचीन यात्रियों के लिए एक मार्ग नहीं प्रदान कराती हैं, बल्कि विचारों और संस्कृति का आदान-प्रदान के लिए महत्वपूर्ण हैं।



चित्र 9.2 भारत का महत्वपूर्ण व्यापार मार्ग और संबंध

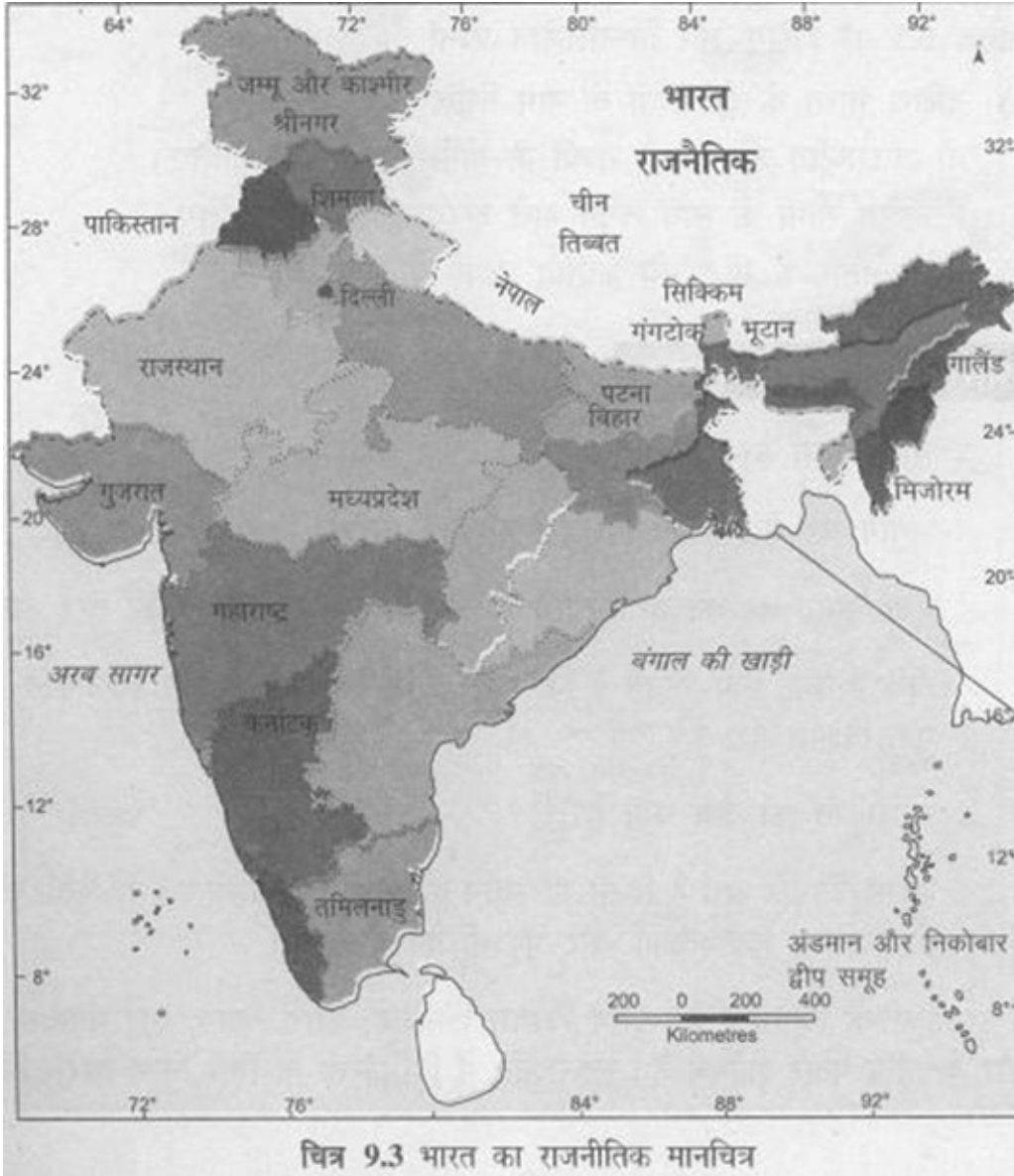
पाठगत प्रश्न 9.1

1. मानचित्र 9.4 को देखिए और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :
 1. भारत के पूर्वी हिस्से में स्थित दो देशों के नाम का पता लगाइए ।
 2. भारत के पूर्वी और पश्चिम किनारों पर स्थित दो समुद्रों के नाम बताइए ।
 3. कौन सा देश पाक जलसन्धि द्वारा से जुड़ा है?
 4. भारत के साथ दो देशों के मध्य सीमा नाम लिखिए ।

9.2 भारत के राज्य और संघीय राज्य

क्षेत्र के अनुसार भारत संसार का सातवां बड़ा देश है। इसकी 15,200 किलोमीटर स्थलसीमा और 6100 किलोमीटर लंबी तट रेखा है। भारत का कुल क्षेत्रफल 32.8 वर्ग किलोमीटर है। संसार के कुल भू-क्षेत्र का लगभग 2.47 प्रतिशत भारत का क्षेत्रफल है।

अच्छे शासन के लिए, भारत 28 राज्यों और 7 संघ राज्य क्षेत्रों में विभाजित किया गया है। आइए, हम नीचे दिये गये मानचित्र 9.3 को देखते हैं।



चित्र 9.3 भारत का राजनीतिक मानचित्र

इस मानचित्र में स्पष्ट रूप से बताया गया है कि प्रत्येक राज्य और संघ क्षेत्र की अपनी राजधानी है। यह नोट करना दिलचस्प होगा कि केवल भारत की राजधानी नई दिल्ली है, यह केन्द्रशासित दिल्ली की भी राजधानी है। आप इस तरह किसी भी अन्य राजधानी की पहचान कर सकते हैं? हां, यह चंडीगढ़ है जो कि हरियाणा और पंजाब की राजधानी है और केन्द्रशासित प्रदेश चंडीगढ़ की भी राजधानी है।

यदि आप निम्नलिखित स्थानों के बीच जाना चाहते हैं, राज्यों की न्यूनतम संख्या पता किजिए (चित्र 9.3 देखें)

क) कश्मीर से मिजोरम

ख) पंजाब से बिहार

ग) दिल्ली से बंगलौर

घ) मुंबई से कोलकता

ड) चेन्नई से रायपुर

1. मानचित्र 9.3 को देखिए और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

- (i) दक्षिण भारत के दो राज्यों के नाम लिखिए ।
- (ii) दो अंतराष्ट्रीय सीमा वाले राज्यों के नामों का उल्लेख कीजिए ।
- (iii) सिक्किम सीमा के साथ लगने वाले दो देशों के नाम लिखिए ।
- (iv) अरब सागर के साथ संघ शासित प्रदेशों के नाम लिखिए ।

9.3 भारत का भौतिक विभाग

नताशा : भूभाग क्या है?

शिक्षक : भूभाग वह क्षेत्र है जो विशेष प्रकार की भौतिक विशेषता रखता है ।

फराह : मुंबई समुद्र तट की तरह रेतीले है और शिलांग की पहाड़ी की तरह ठोस है ।

शिक्षक : ठीक है क्या आप जानते है कि भारत विभिन्न स्थलरूपों और स्थलाकृति के साथ एक विशाल देश है?

राजिंदर : स्थलाकृति का अर्थ क्या है?

शिक्षक : स्थलाकृति का अर्थ है किसी भी स्थान की प्राकृतिक विशेषता । यह पृथ्वी की सतह पर विभिन्न विशेषताओं और भूदृश्यों का वर्णन है ।

भारत में स्थलाकृतिक विविधता है । इसमें विशाल हिमालय, उत्तरी मैदान, थार रेगिस्तान, तटीय मैदान और प्रायद्वीप पठार शामिल है । स्थलाकृति में विभिन्नता के लिए निम्न कारण हो सकते हैं ।

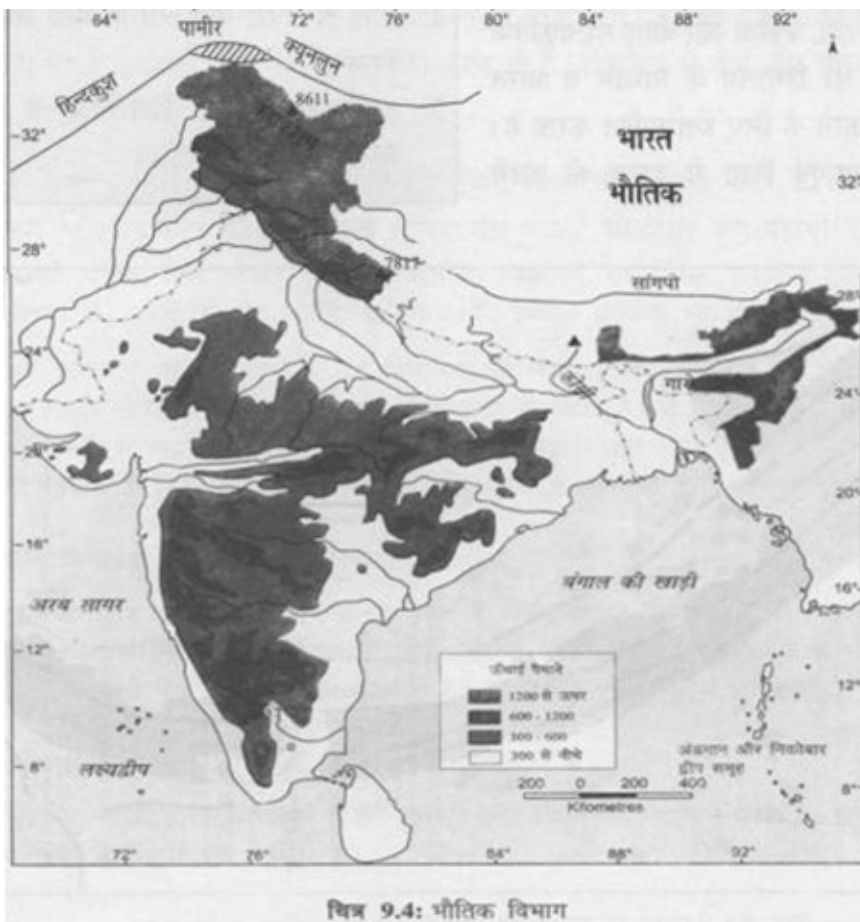
- चट्टानों की संरचना में अंतर हैं। ये स्थलखंड विभिन्न भूगर्भिक समय में बनी हैं।
- विभिन्न प्रक्रियाओं द्वारा अपक्षय, कटाव और जमाव के कारण वर्तमान रूप में परिवर्तित हुआ है।

अपक्षय : अपक्षय पृथ्वी की सतह के निकट हवा, पानी, जलवायु परिवर्तन आदि के कारण भौतिक, रासायनिक और जैविक प्रक्रियाओं के माध्यम से चट्टानों के क्रमिक विनाश की प्रक्रिया है।

कटाव : कटाव की प्रक्रिया प्राकृतिक एजेंसियों जैसे हवा, नदियाँ, ग्लेशियरों आदि द्वारा अपक्षयित सामग्री का क्रमिक परिवहन है।

अपक्षय कटाव से भिन्न है क्योंकि अपरदन में परिवहन शामिल है जबकि अपक्षय के मामले में शामिल नहीं है।

भारत भौगोलिक विविधता का देश है। यहाँ कुछ क्षेत्रों में उच्च पर्वत चोटियाँ हैं। दूसरी ओर नदियों द्वारा निर्मित समतल मैदान भी हैं। भौतिक विशेषताओं के आधार पर भारत को निम्नलिखित छह भागों में विभाजित किया जा सकता है :



चित्र 9.4: भौतिक विभाग

चित्र 9.4 भौतिक विभाग

1. उत्तरी पर्वत
2. उत्तरी मैदान
3. प्रायद्वीपीय पठार
4. भारतीय रेगिस्तान
5. तटीय मैदान
6. द्वीप समूह

उत्तरी पर्वत : इसको तीन समूहों में विभाजित किया गया है। वे हैं :

(क) हिमालय

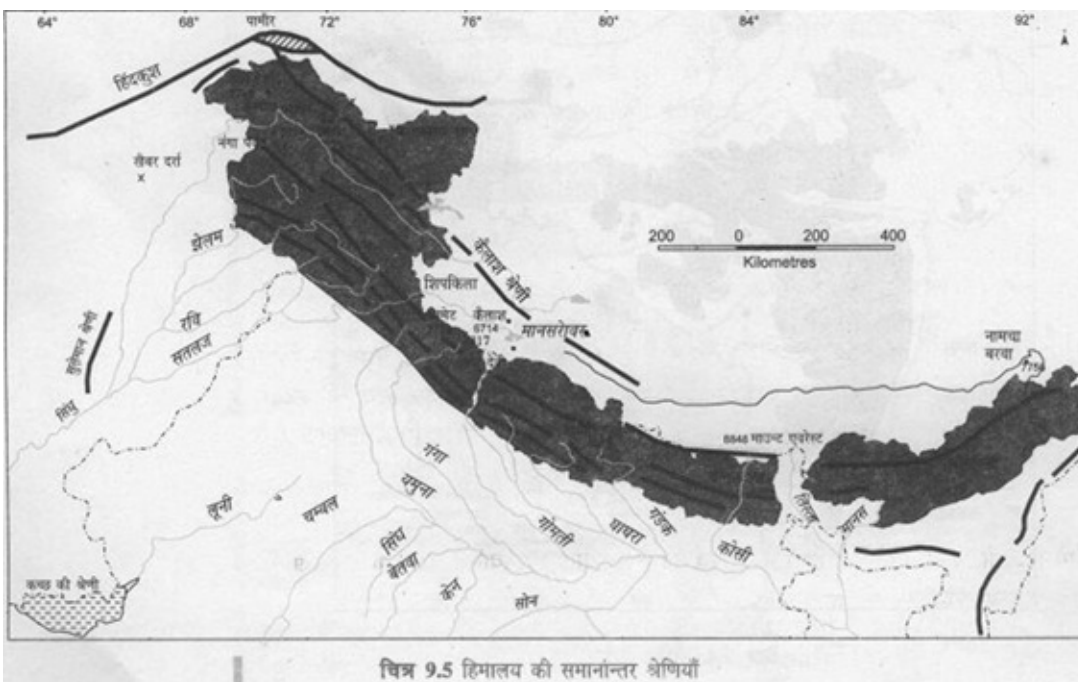
(ख) ट्रांस हिमालय

(ग) पूर्वांचल हिमालय

(क) हिमालय

हिमालय एक नवीन वलित पर्वत है। यह संसार का सर्वोच्च पर्वत श्रृंखला है। हिमालय प्राकृतिक अपरोध के रूप में कार्य करता है। अत्यधिक ठंडा, बर्फीला और बीहड़ स्थलाकृतियां पड़ोसियों को हिमालय के माध्यम से भारत में प्रवेश करने के लिए हतोत्साहित करता है। यह पश्चिम-पूर्व दिशा से भारत की उत्तरी

1. दर्रे- यह दो पहाड़ियों के बीच रास्ता या प्राकृतिक रूप खाली निम्न स्थान।
2. श्रेणी-बड़ा भू-भाग जिनमें ऊँची चोटी, श्रेणियां और पर्वत है।
3. चोटी- किसी भी पर्वत श्रेणी ती सबसे ऊँचा बिंदु
4. घाटी-दो ऊँचाई वाले क्षेत्र के मध्य समतल/ निम्नभूमि
5. दून-हिमालय और शिवालिक के मध्य ऊर्ध्वाधर घाटी



चित्र 9.5 हिमालय की समानान्तर श्रेणियाँ

सीमा के साथ 2500 किलोमीटर की दूरी में सिंधु नदी से ब्रह्मपुत्र नदी तक फैला है। इसकी चौड़ाई 100 किलोमीटर से 150 किलोमीटर है। हिमालय तीन समानान्तर श्रेणियों में विभाजित

किया जाता है :

1. महान हिमालय या हिमाद्रि
2. मध्य हिमालय या हिमाचल
3. बाह्य हिमालय या शिवालिक

1. हिमालय या हिमाद्रि : महान हिमालय में उत्तरी पर्वतमाला और चोटियाँ शामिल हैं। इसकी औसत ऊँचाई 6000 मीटर और चौड़ाई 120 किलोमीटर से 190 किलोमीटर के बीच है। यह सबसे अधिकतम निरंतर श्रेणी है। यह बर्फाच्छादित है और उसके नीचे कई ग्लेशियर हैं। यहां ऊँची चोटियाँ हैं जैसे- माउंट एवरेस्ट, कंचनजंगा, मकालू धौलागिरी, नंगा पर्वत आदि हैं जो 8000 मीटर से अधिक उंचे हैं। विश्व की सबसे ऊँची चोटी माउंट एवरेस्ट (8848 मीटर) नेपाल में है। भारत में कंचनजंगा चोटी सबसे ऊँची चोटी है। उच्च पर्वतीय दर्रे जैसे-बारा लाचा-ला, शिपकी-ला, नाथू-ला, बोमीडी-ला आदि भी हैं। हिमालय से गंगा और यमुना नदियाँ भी निकलती हैं।

2. मध्य हिमालय या हिमाचल : इस चोटी की ऊँचाई 1000 और 4500 मीटर के बीच चौड़ाई 50 किलोमीटर है। इनमें प्रमुख श्रेणियाँ पीर पंजाल, धौलाधार और महाभारत हैं। यहाँ पर कई प्रसिद्ध हिल स्टेशन हैं जैसे- शिमला, डलहौजी, दार्जिलिंग, चकराता, मसूरी और नैनीताल हैं। इनमें कश्मीर, कुल्लू कांगड़ा आदि प्रसिद्ध घाटियाँ भी शामिल हैं।

3. बाह्य हिमालय या शिवालिक : यह हिमालय की सबसे बाह्य पर्वतश्रेणी है। इसकी ऊँचाई 900- 1100 मीटर और चौड़ाई 10-50 किलोमीटर के बीच है। ये कम ऊँचाई की पहाड़ियाँ हैं जैसे जम्मू हिल्स, मिशमी हिल्स आदि। शिवालिक पहाड़ी और मध्य हिमालय के बीच स्थित कई घाटियाँ हैं जिसे दून कहा जाता है जैसे- देहरादून, कोटली दून और पाटली दून।

(ख) ट्रांस हिमालय (हिमालय के उपार)

यह महान हिमालय के उत्तर में समानान्तर फैला है जिसे जस्कर पर्वत कहते हैं। जस्कर पर्वत के उत्तर में लद्दाख श्रेणी स्थित है। जस्कर और लद्दाख श्रेणी के बीच से होकर सिंधु नदी बहती है। कराकोरम श्रेणी देश के सबसे उत्तर स्थित है। के-2 संसार की दूसरी सबसे ऊँची चोटी है।

(ग) पूर्वांचल पहाड़ियाँ

इसमें मिशामी, नागा, मिजो पहाड़ियाँ हैं जो पूर्व की ओर स्थित हैं। मेघालय पठार के गारो, खासी और जयंतिया पहाड़ियाँ भी शामिल हैं।

1. हिमालय की तीन श्रेणियों के नाम लिखिए ।
2. मानचित्र संख्या 9.5 को देखिए और पता किजिए-
(क) नंगा पर्वत और नंदा देवी किस राज्य में स्थित है?
(ख) हाँ या नहीं में उत्तर बताइए-
 1. माउंट एवरेस्ट भारत में स्थित है ———
 2. शिपकी-ला, दर्रा शिवालिक श्रेणी में स्थित है ———
 3. मानसरोवर झील कैलाश श्रेणी में स्थित है ———
3. उन देशों के नाम लिखिए जिनमें महान हिमालय स्थित हैं?
4. दो पूर्वांचल पहाड़ियों की पहचान किजिए ।

2. उत्तरी मैदान

भारत के उत्तरी मैदान (चित्र 9.5) में स्थिति राज्यों के नाम लिखने की कोशिश करते हैं। उत्तरी मैदान हिमालय के दक्षिण और प्रायद्वीप पठार के उत्तर के बीच स्थित हैं। यह सिंधु, गंगा और ब्रह्मपुत्र और तीन मुख्य नदियों द्वारा जमा किये गये अवसादों से बना है। पश्चिम में पंजाब से पूर्व में असम तक इस मैदान की लम्बाई लगभग 2400 किलोमीटर हैं। इसकी चौड़ाई पूर्व में 150 किलोमीटर और पश्चिम में लगभग 300 किलोमीटर है। यह मैदान दुनिया के सबसे बड़े और सबसे उपजाऊ मैदानों में से एक है। प्रमुख फसले जैसे गेहूं चावल, गन्ना, दालें, तिलहन और जूट यहां उगाए जाते हैं। उचित सिंचाई के कारण मैदान अनाज के उत्पादन में महत्वपूर्ण योगदान देता है। उत्तरी मैदान मोटे तौर पर दो भागों में विभाजित है-

1. पश्चिमी मैदान

2. गंगा-ब्रह्मपुत्र मैदान

1. पश्चिमी मैदान

यह मैदान सिंधु नदी और उसकी सहायक नदियों के द्वारा बना है। यह अरावली के पश्चिम में स्थित है। यह मैदान सतलुज, व्यास और रावी नदियों द्वारा लाए गए अवसादों के जमा होने से बना है। मैदान का यह भाग दोआब से बना है।

2. गंगा-ब्रह्मपुत्र मैदान

यह दो मुख्य नदी तंत्र अर्थात् गंगा और ब्रह्मपुत्र नदियों द्वारा लाई अवसादों के जमा होने से बना है। सभी प्राचीन सभ्यताएं जैसे हड़प्पा और मोहनजोदड़ों जिसे नदी घाटी सभ्यता कहते हैं, मैदानी क्षेत्रों में फैली थी। यह भूमि के उपजाऊ और नदियों द्वारा जल की उपलब्धता के कारण है।

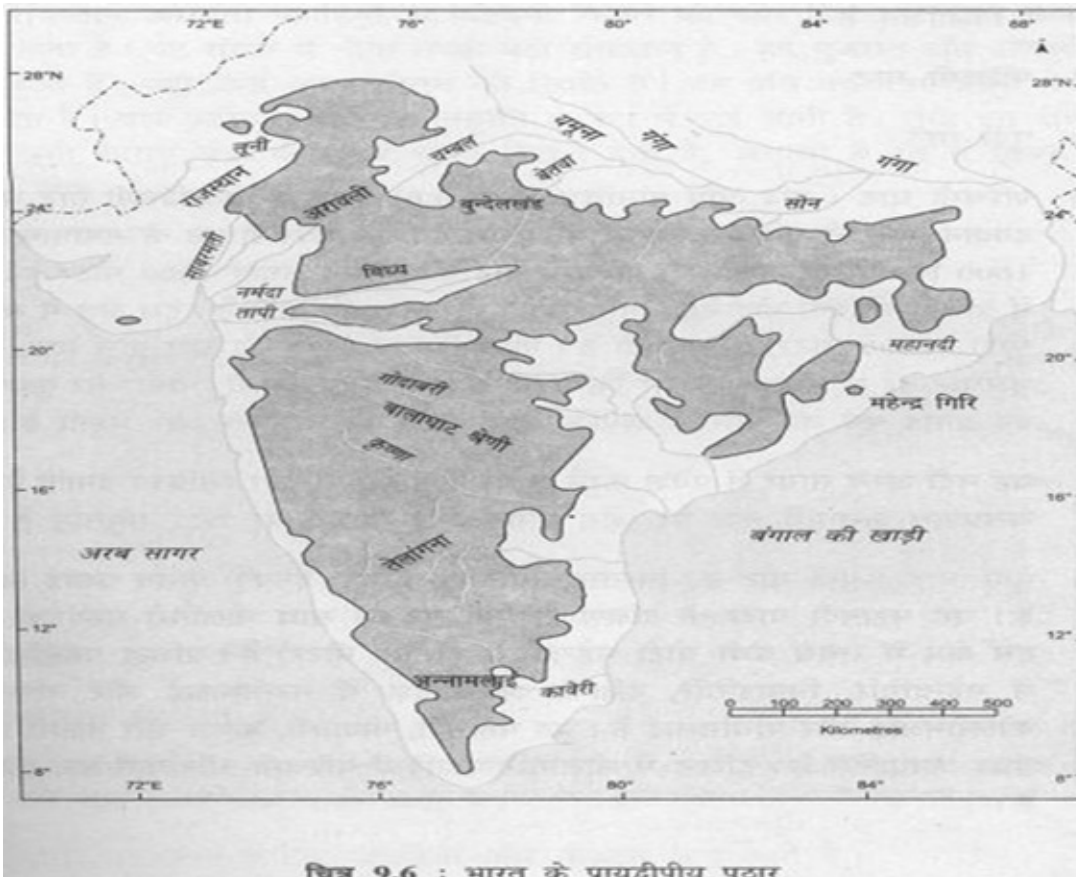
दो आब : दो नदियों के बीच जुड़े जलोढ़ भूमि । जैसे पंजाब में दोआब क्षेत्र ।

खादर : लगभग प्रत्येक वर्ष नदियों का बाढ़ क्षेत्र ।

बांगर : नदियों के बाढ़ क्षेत्र में उच्च भूमि ।

3. प्रायद्वीपीय पठार

नीचे दिए गए मानचित्र (चित्र 9.6) देखिए । आप पाएंगे कि प्रायद्वीपीय पठार एक त्रिकोणीय आकार की उच्च भूमि है । इस प्राचीन भू-भाग को गोंडवाना लैंड कहा जाता है । यह लगभग 5 लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला है । यह गुजरात, महाराष्ट्र, बिहार, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश राज्यों में फैला हुआ है । नर्मदा नदी प्रायद्वीपीय पठार को दो भागों में बांटती है-मध्य उच्च भूमि और दक्कन पठार



चित्र 9.6 भारत के प्रायद्वीपीय पठार

1. मध्य उच्च भूमि - इसका विस्तार नर्मदा नदी से उत्तरी मैदानों के मध्य है। अरावली एक महत्वपूर्ण पर्वत है जो गुजरात से राजस्थान होते हुए दिल्ली तक फैली हुई है। अरावली पहाड़ियों की सबसे ऊँची चोटी माउंट आबू के पास गुरुशिखर (1722 मी) है। मालवा पठार और छोटा नागपुर पठार मध्य उच्च भूमि के हिस्से हैं। बेतवा, चंबल और केन मालवा पठार की महत्वपूर्ण नदियाँ हैं जबकि महादेव, कैमूर और मैकोल छोटा नागपुर पठार की महत्वपूर्ण पहाड़ियाँ हैं। नर्मदा घाटी विंध्य और सतपुड़ा के मध्य स्थित है। नर्मदा नदी पूर्व से पश्चिम बहती हुई अरब सागर में मिलती है।

2. डक्कन का पठार - मध्य उच्च भूमि से डक्कन पठार एक भ्रंश से अलग है (चट्टानों में एक अस्थिभंग जो चट्टानों के साथ अपेक्षाकृत प्रतिस्थापन) डक्कन पठार में काली मिट्टी क्षेत्र डक्कन ट्रेप के रूप में जाना जाता है। यह ज्वालामुखी विस्फोट के कारण बना है। यह मिट्टी कपास और गन्ना की खेती के लिए अच्छी है। मोटे तौर पर डक्कन पठार में दो भागों में विभाजित है-

(क) पश्चिमी घाट

(ख) पूर्वी घाट

(क) पश्चिमी घाट : यदि आप मानचित्र (चित्र 9.6) देखते हैं तो पश्चिमी घाट या सह्याद्रि डक्कन पठार के पश्चिमी किनारे पर स्थित है। यह पश्चिमी तट के समानान्तर लगभग 1600 किलोमीटर लम्बा है। पश्चिमी घाट की औसत ऊँचाई 1000 मीटर है। इस क्षेत्र में प्रसिद्ध चोटियाँ दोदाबेहा, अनाइमुदी, और माकुर्ती आदि हैं। इस क्षेत्र में सबसे ऊँची चोटी (2695 मीटर) अनायूमुदी है। पश्चिमी घाट निरंतर है और पाल घाट, थालघाट, भोरघाट दर्रे के माध्यम से पार किया जा सकता है। गोदावरी, भीमा और कृष्णा नदियों का प्रवाह पूर्व की ओर है जबकि ताप्ती नदी पश्चिम की ओर बहती है।

यह नदी अरब सागर में प्रवेश करने से पहले जलप्रपात और क्षिप्रिका बनाती है। प्रसिद्ध जलप्रपात शरावती नदी पर जोग प्रपात और कावेरी पर शिव समुन्द्रम् है।

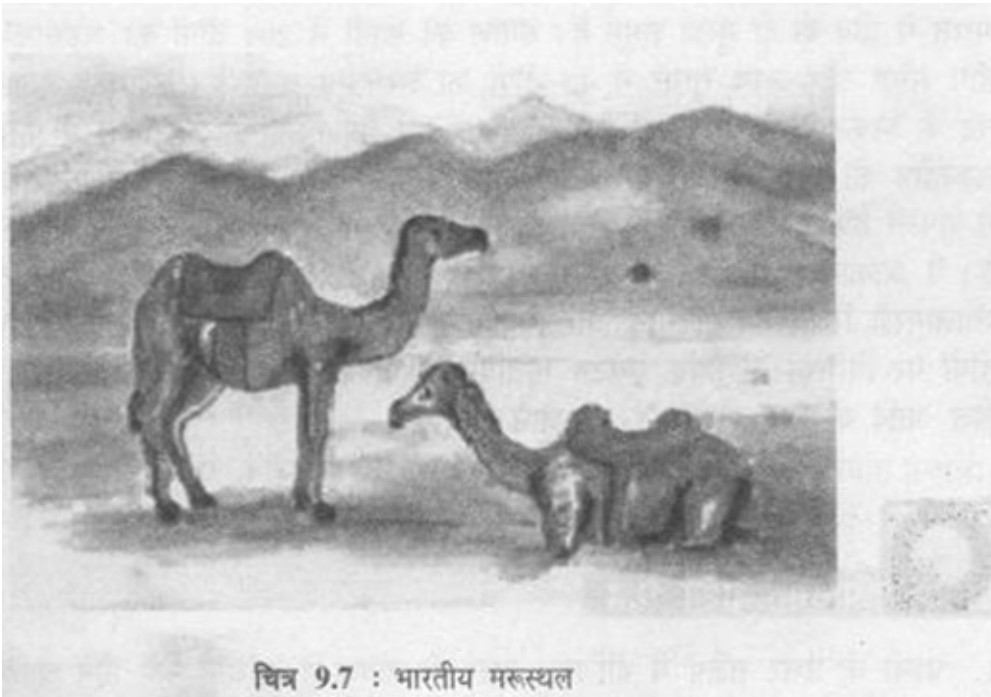
(ख) पूर्वी घाट : पूर्वी घाट का विस्तार लगातार नहीं है। इनकी औसत ऊँचाई 600 मीटर है। यह महानदी घाटी के दक्षिण से पूर्वी तट के साथ नीलगिरी पहाड़ियों तक है। इस क्षेत्र में सबसे ऊँची चोटी महेन्द्रगिरी (1501 मीटर) है। प्रसिद्ध पहाड़ियाँ उड़ीसा में महेन्द्रगिरि, निमाइगिरि, दक्षिणी आन्ध्रप्रदेश में नल्लामलाई और तमिलनाडु में कोल्लीमलाई और पांचीमलाई हैं। यह महानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी नदी तंत्रों द्वारा अपवाहित है। दक्षिण में नीलगिरि पहाड़ियाँ पश्चिमी और पूर्वी घाट को जोड़ती हैं।

पश्चिमी और पूर्वी घाट के बीच मुख्य पांच अंतर पता किजिए

1. निरंतरता
2. औसत ऊँचाई
3. विस्तार
4. उच्चतम शिखर
5. नदियां

4. भारतीय रेगिस्तान

भारतीय रेगिस्तान अरावली पहाड़ियों के पश्चिमी किनारे की ओर स्थिति है। इसे थार मरूस्थल भी कहा जाता है। यह संसार में नौवां सबसे बड़ा रेगिस्तान है। यह गुजरात और राजस्थान राज्यों में फैला हुआ है। यहाँ अर्द्ध शुष्क मौसम की स्थिति है। यह प्रति वर्ष 150 मिमी से कम वर्षा प्राप्त करता है। यहाँ कांटेदार झाड़ियां वनस्पति के रूप में पाई जाती हैं। लूनी इस क्षेत्र में मुख्य नदी है। सभी धाराएं वर्षा के समय में ही दिखाई देती हैं, अन्यथा वे रेत में गायब हो जाती हैं।



चित्र 9.7 : भारतीय मरूस्थल

चित्र 9.7 : भारतीय मरूस्थल

मैं भारतीय थार मरूस्थल हूँ :

1. मैं साल भर सबसे शुष्क रहता हूँ। नमी से युक्त हवाएं अरावली के समानांतर चलती हैं। इसलिए मुझे अल्प वर्षा प्राप्त होती है।
2. मेरे शरीर पर अन्य कांटेदार झाड़ियां और कैक्टस पाए जाते हैं।

3. यदि आप प्यासे हैं तो कई किलोमीटर तक चलते रहेंगे पर रेगिस्तान में पानी का अभाव पाएंगे। कहीं-कहीं पर ही जल मिल पाएगा।

4. बालू के टिब्बे मेरे रेगिस्तान का सौंदर्य बढ़ाते हैं।

5. तटीय मैदान

भारत में तटीय मैदान अरब सागर और बंगाल की खाड़ी के समानांतर प्रायद्वीपीय पठार के साथ है। पश्चिमी तटीय मैदान अरब सागर के साथ एक संकीर्ण पट्टी 10-20 किलोमीटर चौड़ा है। यह कच्छ के रण से कन्याकुमारी तक फैला है। पश्चिमी तटीय मैदान तीन भागों में बटा है (1) कोंकण तट (मुंबई से गोवा), (2) कर्नाटक तट (गोवा से मंगलौर), (3) मालाबार तट (मंगलौर से कन्या कुमारी तक) शामिल है। पूर्वी तट बंगाल की खाड़ी के साथ है। यह पश्चिमी तटीय मैदान से अधिक व्यापक है। इसकी औसत चौड़ाई 120 किलोमीटर है। इस तट के उत्तरी भाग को उत्तरी सिरकार और दक्षिणी भाग कोरोमंडल तट कहा जाता है। पूर्वी तटीय मैदान महानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी नदियों के द्वारा बनाई गई डेल्टा चिह्नित है। चिल्का भारत में सबसे बड़ी खारे पानी की झील है जो महानदी डेल्टा के दक्षिण में स्थित है। तटीय मैदानों में मसाले, चावल, नारियल, काली मिर्च आदि उगाए जा रहे हैं। वे व्यापार और वाणिज्य का केंद्र रहे हैं। तटीय क्षेत्रों में मछली पकड़ने की गतिविधियों के लिए जाना जाता है। इसलिए बड़ी संख्या में मछली पकड़ने के लिए गांवों को तट के साथ विकसित किया गया है। विम्बनाद प्रसिद्ध लैगून है जो मालाबार तट पर स्थित है।

6. द्वीप समूह

भारत में द्वीप के दो मुख्य समूह हैं। बंगाल की खाड़ी में 204 द्वीपों का अंडमान और निकोबार द्वीप समूह और अरब सागर में 43 द्वीपों का लक्षद्वीप समूह है। लक्षद्वीप केरल के मालाबार तट के निकट अरब सागर में स्थित है। वह 32 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैली है। कवरत्ती लक्षद्वीप की राजधानी है। यह कोरल द्वारा बना है और विभिन्न प्रकार के पौधे एवं जानवरों से संपन्न है। अंडमान और निकोबार द्वीप समूह उत्तर से दक्षिण में बंगाल की खाड़ी में विस्तृत है। वे आकार में बड़े हैं। ये अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह में बंजर द्वीप पर एक सक्रिय ज्वालामुखी स्थित है। अंडमान और निकोबार द्वीप पर्यटकों को बहुत आकर्षित करती हैं। इन द्वीपों पर विभिन्न आकर्षक पर्यटन गतिविधियों विकसित की गई हैं, जैसे पानी और पानी के खेल आदि के लिए विशेषतौर पर जाने जाते हैं।

पाठगत प्रश्न 9.4

1. प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए। उत्तर दो वाक्य से अधिक नहीं होने चाहिए
1. डेक्कन ट्रैप कैसे बना था?
2. तटीय मैदानों के किसी भी दो आर्थिक गतिविधियों को बताइए।
3. अंडमान और निकोबार द्वीप समूह पर्यटकों को क्यों आकर्षित करता है?
4. उन नदियों के नाम लिखिए जो पश्चिमी मैदान को बनने में मदद किया है?

जल प्रवाह प्रणाली सतह के पानी का मुख्य रूप से नदियों के माध्यम प्रवाह होता है। एक नदी और उसकी सहायक नदियों द्वारा अपवाहित क्षेत्र बेसिन कहा जाता है। जल प्रवाह प्रणाली के लिए भूमि की ढाल, भूगर्भिक संरचना और पानी की मात्रा से संबंधित है। जल प्रवाह प्रणाली के माध्यम से एक नदी कई कार्य करती है। ये एक विशेष क्षेत्र से अधिक पानी बहाने, एक स्थान से दूसरे स्थान पर अवसादों का परिवहन, सिचाई के लिए प्राकृतिक स्रोत को बनाये रखता है। परंपरागत रूप से, नदियाँ प्रचुर मात्रा में ताजा पानी और जल परिवहन स्रोत के रूप में उपयोगी थे। आज दुनिया में नदियों के महत्व में जल विद्युत उत्पादन, नदी, नौकायान, चट्टानों से कूदना और पानी आधारित उद्योगों की स्थापना बढ़ी है। ये भी नौका विहार जैसे गतिविधियों के लिए महत्वपूर्ण पर्यटक आकर्षण हैं। उनकी उपयोगिता के कारण नदियाँ जीवन के लिए महत्वपूर्ण हैं, इसलिए नदियों को जीवन रेखा के रूप में माना जाता है। कई नगर नदियों के किनारे स्थित हैं और घनी आबादी वाले हैं। दिल्ली, यमुना किनारे, पटना गंगा नदी के किनारे, गुवाहाटी ब्रह्मपुत्र के किनारे, नासिक गोदावरी के किनारे, कटक महानदी के किनारे, आदि कुछ उदाहरण हैं। उत्पत्ति के आधार (चित्र 9.8) पर जल प्रवाह के दो भागों में विभाजित किया जा सकता है :

1. हिमालय जलप्रवाह प्रणाली
2. प्रायद्वीप जलप्रवाह प्रणाली

सहायक नदी : एक धारा या नदी जो एक बड़ी नदी में बहते हुए जा मिलती है। जैसे यमुना गंगा में मिलती है!

डेल्टा : नदी के निचले हिस्से में मुहाने पर छोटे रेत, गाद जमा होने से एक त्रिकोणीय आकार की भूमि विकसित होती है। जैसे गंगा डेल्टा।

एश्चुयरी : आंशिक रूप से संलग्न समुद्री नमकीन पानी नदी के ताजे पानी के साथ मिलता है। जैसे नर्मदा नदी एक एश्चुयरी बनाती है।

9.5 मुख्य जल प्रवाह प्रणाली

उत्पत्ति के आधार पर पहले उल्लेख किया है कि भारतीय नदी तंत्र को दो प्रमुख प्रणाली में वर्गीकृत किया गया है। दो जल प्रवाह प्रणाली के बीच तुलना की चर्चा करते हैं।

हिमालय नदी प्रणाली

1. हिमनद से उत्पन्न बारहमासी नदियां हैं।
2. अपरदन की प्रक्रिया के द्वारा नदियां घाटियां बनाती हैं।
3. वे मैदानों के उपजाऊ क्षेत्रों से गुजरती हैं इसलिए नदियाँ सिंचाई के उद्देश्य के लिए आदर्श मानी जाती हैं।
4. वे नदियां में विसर्प बने हैं जो समय के साथ मार्ग परिवर्तन करती रहती हैं।

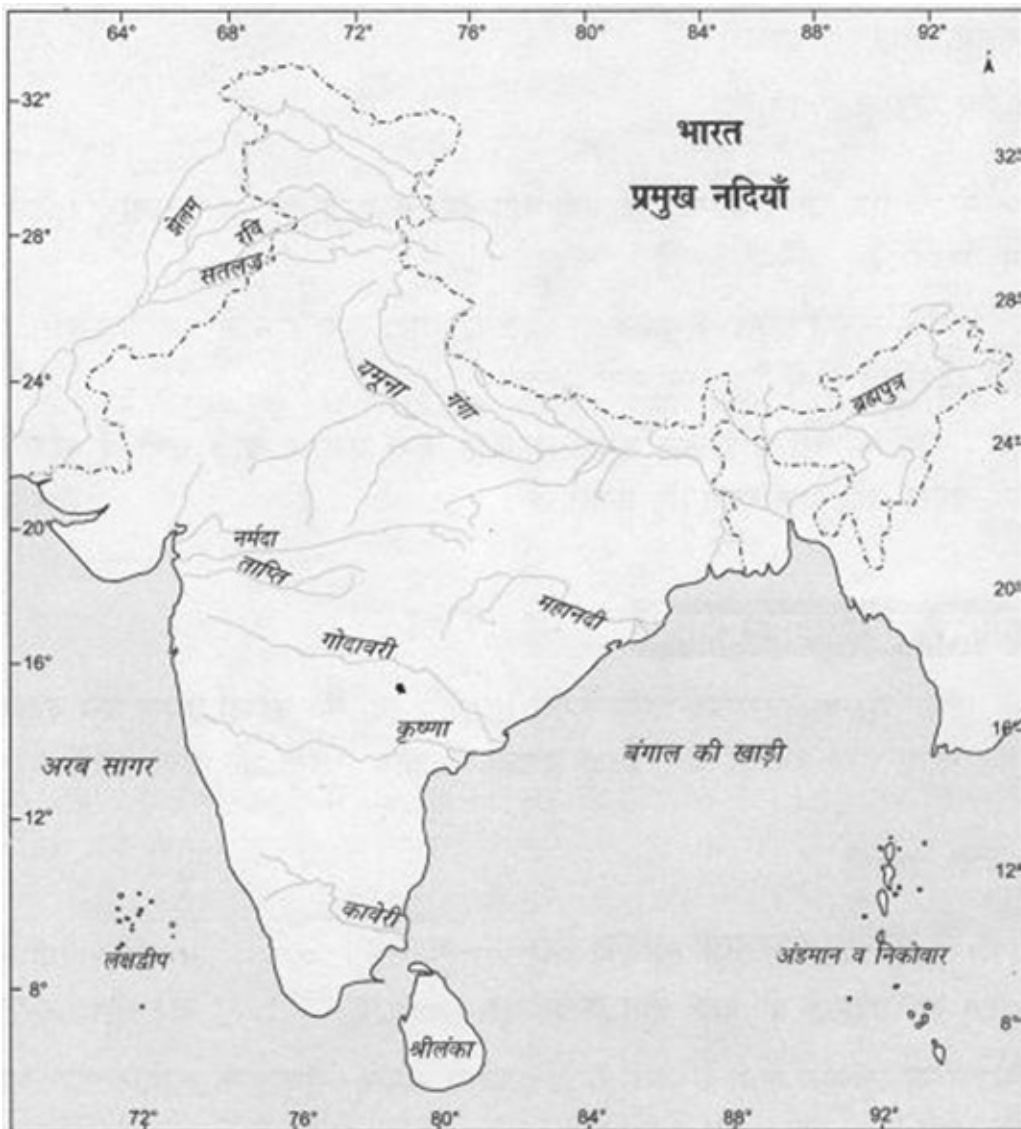
9.5.1 हिमालय जल प्रवाह प्रणाली

हिमालयी नदियाँ अधिकांश बारहमासी हैं। इसका तात्पर्य है कि इनमें वर्ष भर पानी होता है। क्योंकि ये नदियाँ अधिकांशतः हिमनद और बर्फ चोटियों से उत्पन्न होती हैं। ये वर्षा से भी पानी प्राप्त करते हैं। इस श्रेणी में मुख्य नदियाँ इस प्रकार हैं :

1. सिंधु नदी प्रणाली झेलम, रावी, व्यास और सतलुज।
2. गंगा नदी प्रणाली यमुना, रामगंगा, घाघरा, गोमती, गंडक, कोशी आदि।
3. ब्रह्मपुत्र नदी प्रणाली दिबांग, लोहित, तिस्ता और मेघना आदि।

9.5.2 प्रायद्वीप जल प्रवाह प्रणाली

प्रायद्वीप पठार के बारे में आप पहले पढ़ चुके हैं। अधिकतर प्रायद्वीप पूर्व की ओर बहती हुई बंगाल की खाड़ी में प्रवेश करती हैं। केवल नर्मदा और तापी नदियाँ पश्चिम की ओर प्रवाह करती हैं। ये पनबिजली पैदा करने के लिए उपयुक्त हैं क्योंकि ये नदियाँ जलपात एवं क्षिप्रिका बनाती हैं। महानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी मुख्य प्रायद्वीपीय नदियाँ हैं।



चित्रा 9.8 : भारत की प्रमुख नदियाँ

चित्र 9.8 : भारत की प्रमुख नदियां

एक एटलस में भारत के भौतिक और राजनैतिक मानचित्र पर नदियों का अध्ययन कीजिए। नीचे दी गई तालिका में निम्नलिखित सूचनाएँ एवं रिकार्ड का पता लगाएं।

नदियाँ	मुख्य नदियाँ	सहायक स्रोत	राज्य जहाँ गुजरती है।	से यह	जहाँ से निकलती है।

गंगा

ब्रह्मपुत्र

सिंधु

सतलुज

कावेरी

गोदावरी

कृष्णा

क्रियाकलाप 9.4

एटलस को देखिए और गंगा के किनारे स्थित सभी शहरों के नाम भारत के भौतिक मानचित्र पर दर्शाइये :

क्या आप जानते हैं कि पृथ्वी पर उपलब्ध कुल जल का 97 प्रतिशत से अधिक खारा है और शेष 3 प्रतिशत का अधिकांश भाग ध्रुवीय प्रदेश में बर्फ के रूप में जमे हुए। जल का 1 प्रतिशत से भी कम बारिश, नदियों, झीलों और भूमिगत पानी के रूप में प्राप्त है। मीठे ताजा पानी का यह छोटा भाग विश्व की पूरी आबादी की जरूरतों को पूरा करने के लिए है। अतः ताजा पानी एक बहुमूल्य संसाधन है और नदियों और झीलों को बढ़ते प्रदूषण के कारण एक चेतावनी हमारे समक्ष है।

आप अपने शहर, गाँव या कहीं बह रही नदी को देखी है। भारत में अनेकों नदियाँ हैं। उनके किनारे रहने वाले लाखों लोगो के लिए जीवन रेखा हैं। इन नदियों को मोटे तौर पर चार समूहों में वर्गीकृत किया जा सकता है :

1. हिमालय के बर्फ और हिमनदों के पिघलने से निकलने वाली नदियाँ। ये बारहमासी हैं, और वर्ष में कभी नहीं सूखती।
2. दक्कन के पठार की नदियाँ, पानी के लिए वर्षा पर निर्भर है।
3. तटवर्ती नदियाँ, विशेष रूप से पश्चिमी तट पर है। इनमें पानी कम होता है और पूरे वर्ष भर पानी नहीं होता है।
4. पश्चिमी राजस्थान के अंतर्देशीय जल प्रवाह क्षेत्र की नदियाँ वर्षा पर निर्भर है। इन नदियों में प्रायः रेत अथवा गाद प्रवाहित करते हुए झीलों तक पहुँचती है।

नदियों को हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। कई शहर और इसी प्रकार पवित्र स्थान नदियों के किनारों हैं, और वास्तव में, गंगा और यमुना नदियाँ लाखों के लिए पवित्र हैं। इसके बावजूद, वे पर्यावरण को गैर जिम्मेदाराना और पर्यावरणीय विनाशक गति विधियों के साथ प्रदूषित किया जा रहा है। भारतीय नदियों में लगभग 70 प्रतिशत मल निकास से प्रदूषण होता है। केवल रासायनिक प्रदूषण का भारी भार आमतौर पर भिन्न-भिन्न तरीकों से नीचे की ओर से उपयोगकर्ताओं द्वारा जलमार्ग में प्रवेश कराई जाती है। यह जलीय जीवन को प्रभावित करता है और विभिन्न स्वास्थ्य के खतरों का कारण बनता है। प्रदूषण के साथ, नदियों के प्रति लोगों की असंवेदनशीलता गंभीर समस्या को जोड़ती है। नदियों के साथ थोड़ा शहरी निवासियों की पहचान। उदाहरण के लिए अत्यधिक दूषित नई दिल्ली में यमुना नदी का कालपन लिए हुए पानी जो राजधानी नागरिकों से शायद ही ध्यान खींचता हों।

यद्यपि पानी के मुद्दों को भारत में प्रांतीय सरकारों द्वारा आवंटित किया जाता है, प्रत्येक उनमें से अपने साथ नदी के बहाव के प्रभाव को कम या कोई संबंध के साथ, मानते हैं। परिस्थितिकी विज्ञानशास्त्री और संरक्षणवादियों ने लंबे समय से मांग की है कि नदियों को एक इकाई और गंभीर प्रयास के एक निर्धारित समय के विशिष्ट संयोजन पर काम के रूप में लाने के लिए व्यवस्था किया जाना चाहिए। यह नदियों के पानी की गुणवत्ता के सुधार के लिए आवश्यक है। सरकार ने महत्वाकांक्षी गंगा नदी कार्य योजना (जीएपी) और पानी की गुणवत्ता में सुधार की है। राष्ट्रीय नदी संरक्षण योजना (एन.आरसी.पी.) पानी के गुणवत्ता में उम्मीद की है। जल संचयन देश भर में लोकप्रियता प्राप्त कर रहा है, जिसके माध्यम से मानसूनी पानी नदी बेसिन में बनाए रखा जा सकता है। कई नागरिक संगठनों और लोगों के आंदोलनों ने नदियों की गंभीर हालत के लिए जागरूकता और संवेदनशीलता बढ़ाने में योगदान दे रहे हैं।

1. अपने इलाके में प्राकृतिक जल स्रोत का पता लगाइए। वहाँ पर होने वाली गतिविधियों का अवलोकन कीजिए।
 2. नदी प्रणाली को क्षति पैदा करने के कारणों की मानवीय गतिविधियाँ क्या हैं?
 3. प्रदूषण रोकने के लिए एक पत्र के माध्यम क्या सुझाव देते हैं। स्थानीय प्राधिकारी को एक पत्र लिखें कि आप किस प्रकार का सहयोग इसमें देना चाहते हैं।
 4. अपने दोस्तों के साथ एक बैठक आयोजित कर चर्चा करें कि मानव गतिविधियों के नकारात्मक प्रभावों को रोकने के लिए क्या किया जा सकता है?
- प्रदूषण रोकने के कई तरीके हो सकते हैं। जल प्रदूषण को रोकने के उपाय बताइए।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. उत्तर से आकर गंगा में मिलने वाली दो सहायक नदियों के नाम का उल्लेख कीजिए ।
2. महानदी के पास कौन सी झील स्थित है?
3. गोदावरी नदी द्वारा अपवाहित राज्यों के नाम लिखिए ।
4. तुंगभद्रा की सहायक नदी कौन सी है?

आपने क्या सीखा

- भारत 8डिग्री 4मिनट और 37 6मिनट उत्तरी अक्षांशों और 68डिग्री 7मिनट और 97डिग्री 25मिनट पूर्वी देशांतरों के बीच स्थित है । भारत की स्थल सीमा 15,200 किलोमीटर तथा 6100 किलोमीटर लंबी तट रेखा है । भारत का कुल क्षेत्रफल 3.28 लाख वर्ग किलोमीटर है ।
- भारत को छः भौतिक भू-भागों उत्तरी हिमालय, उत्तरी मैदान, प्रायद्वीपीय पठार, भारतीय रेगिस्तान, तटीय मैदान और द्वीप समूह में विभाजित किया जा सकता है ।
- महान हिमालय या हिमाद्रि मध्य हिमाचल या हिमालय और बाहरी हिमालय या शिवालिक तीन समानान्तर श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है ।
- उत्तरी मैदान पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल राज्यों में मुख्य रूप से फैला है । यहां मिट्टी पोषक तत्वों से समृद्ध है और इसलिए गेहूँ चावल, गन्ना, सब्जियाँ, फल आदि विभिन्न फसलों की खेती के लिए अच्छा है ।
- प्रायद्वीपीय पठार अरावली श्रृंखला से भारत के दक्षिणी सिरे तक फैला है । यह उच्च भूमि है जो पुराने और कार्यान्तरित चट्टानों से बनी है ।
- महान भारतीय रेगिस्तान गुजरात और राजस्थान राज्यों में फैला हुआ है । इस क्षेत्र में शुष्क और अर्द्ध शुष्क मौसम की स्थिति है ।
- भारत में तटीय मैदान प्रायद्वीपीय पठार के साथ अरब सागर और बंगाल की खाड़ी के समानांतर में फैले हैं । उन्हें पश्चिमी तटीय मैदान और पूर्वी तटीय मैदान कहा जाता है ।
- भारत में द्वीप के दो मुख्य समूह हैं । बंगाल की खाड़ी में 204 द्वीप जिसे अंडमान और निकोबार द्वीप समूह और अरब सागर में 43 द्वीप जिसे लक्षद्वीप समूह कहा जाता है ।
- भारतीय नदी प्रणाली को दो मुख्य भागों में विभाजित किया जा सकता है हिमालय जलप्रवाह प्रणाली और प्रायद्वीप जलप्रवाह प्रणाली हिमालय प्रणाली में तीन मुख्य नदियां गंगा, ब्रह्मपुत्र और सिंधु हैं । मुख्य प्रायद्वीपीय नदियां नर्मदा, तापी, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी और महानदी हैं ।

1. भारत की स्थिति एवं विस्तार की व्याख्या कीजिए ।
2. भारतीय रेगिस्तान की कोई तीन विशेषताओं का वर्णन कीजिए ।
3. हिमालय की तीनों समान्तर पर्वतमालाओं को कोई दो-दो बिंदुओं में व्याख्या कीजिए ।
4. हिमालय और प्रायद्वीपीय नदी प्रणाली के बीच कोई चार अंतर कीजिए ।
5. कारण दीजिए :
(क) उत्तरी मैदान उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी का बना है ।
(ख) भारतीय रेगिस्तान में बहुत कम वनस्पतियाँ हैं ।

परियोजना

- अपने आस-पास क्षेत्र के लिए आंगतुकों की लिए मार्गदर्शक पुस्तिका बनाइए:

1. इसमें अपने क्षेत्र का अद्वितीय भौतिक और मानव विशेषताओं का वर्णन होना चाहिए ।
2. यह भौतिक भूदृश्य के तत्व की सूची तैयार कीजिए जैसे जलवायु, भू आकृतियाँ, पौधों, जानवरों । मानवीय भूदृश्य के तत्व जैसे काम के अवसर, आर्थिक गतिविधियों, मनोरंजक गतिविधियाँ, क्षेत्रीय भाषा और खाद्य पदार्थ आदि की भी सूची तैयार कीजिए ।
3. मार्गदर्शक में चित्र/कला को शामिल करना चाहिए और अपने इलाके के बारे में यदि आप अच्छा अनुभव कर रहे हो तो उसे भी मार्ग दर्शक पुस्तिका में शामिल कीजिए ।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

9.1

1. (क) बंगलादेश, म्यानमार
(ख) बंगाल की खाड़ी और अरब सागर
(ग) श्रीलंका
(घ) पाकिस्तान, भूटान

9.2

1. (क) केरल, तमिलनाडु
(ख) जम्मू और कश्मीर, अरुणाचल प्रदेश
(ग) नेपाल, भूटान
(घ) दमन व द्वीप, दादर नागर हवेली

9.3

1. हिमाचल, हिमाद्रि और शिवालिक
2. जम्मू और कश्मीर
- (अ) नहीं, (ब) नहीं, (स) हाँ
3. पाकिस्तान, भारत, नेपाल, भूटान
4. पटकोई, मिजो पहाड़ियाँ

9.4

1. ज्वालामुखी विस्फोट के कारण
2. (क) कृषि
- (ख) मत्स्य पालन
- (ग) व्यापार एवं वाणिज्य (कोई दो)
3. क्योंकि द्वीपसमूह/पर्यटन के कई क्रियाकलापों को विकसित किया है जैसे जल के अन्दर तथा जल क्रीड़ा ।
4. सतलूज, व्यास, रावी

9.5

1. गंडक, कोसी
2. चिल्का
3. महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश और छत्तीसगढ़
4. कृष्णा

10. जलवायु

मोना और राजू अपने माता पिता के साथ एक हिल स्टेशन शिमला के लिए अपनी प्रस्तावित यात्रा के बारे में उत्साहित थे। जब वे अपने कपड़े बाँध रहे थे, तभी उनकी माँ ने उनसे कहा कि कुछ ऊनी कपड़े भी बाँध लो। वे दक्षिण भारत के एक राज्य तमिलनाडु की राजधानी चेन्नई शहर में रहते हैं। वे वास्तव में मई का महीना था और चेन्नई में बहुत गर्मी थी। उनकी माँ ने कहा कि हालांकि भारत में मानसूनी जलवायु है लेकिन शिमला एक हिल स्टेशन है यहाँ मौसम ठंडा होता है। वे इस तरह के कुछ प्रश्नों के साथ उलझन में थे कि मौसम क्या होता है? मौसम और जलवायु के बीच क्या अंतर है? हमें भारत में विभिन्न जलवायविक परिस्थितियों क्यों मिलती हैं? हमें इस तरह के प्रश्नों के उत्तर प्रस्तुत पाठ में मिलेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप,

- भारत की जलवायु को प्रभावित करने वाले कारकों की सूची बना सकेंगे;
- मानसून के रचनातंत्र और इसकी विभिन्न विशेषताओं का विश्लेषण कर सकेंगे;
- अपनी अनूठी विशेषताओं के साथ-साथ मौसम की चक्र प्रणाली को पहचान सकेंगे;
- वर्षा के वितरण का वर्णन कर सकेंगे;
- हमारा सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन मौसम के चक्र के साथ कितनी गहराई से जुड़ा हुआ है, इसका विश्लेषण कर सकेंगे; और
- वैश्विक पर्यावरण परिवर्तन और भारतीय जलवायु पर इसके प्रभाव का वर्णन कर सकेंगे ।

10.1 भारत की जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक

जब मोना और राजू अपने माता पिता के साथ ट्रेन में थे तब उन्होंने मौसम और जलवायु के बीच अंतर के बीच में अपने माता पिता से प्रश्न पूछे। सहायत्रियों में एक शिक्षिका, श्रीमती रूपा भी थी।

सामान्यतया उन्होंने बताया कि जलवायु हमेशा बड़े क्षेत्र के लिए होती है और इसमें परिवर्तन नहीं होता है। जैसे - भारत में मानसून जलवायु है, जबकि मौसम एक छोटे क्षेत्र के लिए होता है और यह हमेशा बदलता रहता है जैसा कि आपके शहर या गांव में जहां प्रायः सुबह में बारिश और दोपहर में धूप होती है। श्रीमती रूपा ने उनसे कहा शिमला के रास्ते में मौसम की स्थिति में परिवर्तन का अवलोकन करें। उन्होंने कुछ परिवर्तन अनुभव किए। मौसम दक्षिणी क्षेत्र में गर्म और आर्द्र था और धीरे धीरे उत्तरी मैदान में गर्म और शुष्क हो गया। धीरे धीरे जब वे शिमला के करीब थे उन्होंने ठंडा महसूस किया। उन्होंने शिक्षिका से इसका कारण पूछा। उन्होंने बताया कि मौसम जलवायु या मौसम को प्रभावित करने वाले अनेक कारक हैं।

क्या आप जानते हैं

एक बहुत बड़े क्षेत्र में एक लम्बे समय के लिए (30 वर्ष से अधिक) मौसम की दशाओं और विविधताओं के कुल योग को जलवायु कहते हैं। किसी एक समय पर वायुमंडल की दशा को मौसम कहते हैं। इसी तरह से मौसमी दशाओं का लंबी अवधि तक रहना मौसम बनाने के लिए उत्तरदायी है।

10.1.1 भारत की जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक

1. स्थान - जो स्थान भूमध्य रेखा के करीब हैं, वहीं तापमान अधिक रहता है। जैसे-जैसे आप ध्रुवों की ओर जाते हैं, तापमान घटता जाता है। हमारा देश भारत की स्थिति उत्तरी गोलार्द्ध में विषुवत वृत्त से 8 डिग्री 4 मिनट उत्तर में स्थित है तथा कर्क वृत्त (23 1/2 डिग्री उत्तर) भारत के मध्य से गुजरती है। इस प्रकार से कर्क वृत्त के दक्षिण की जलवायु उष्ण कटिबन्धीय और इसके उत्तर में जलवायु उपोष्ण कटिबन्धीय है। उदाहरण के लिए आंध्र प्रदेश की जलवायु हरियाणा से अधिक गर्म है। मौटेतौर पर कर्क वृत्त के दक्षिण में स्थित भूभाग इसके उत्तर में स्थित भूभागों से अधिक सौर ऊर्जा प्राप्त करते हैं।

2. समुद्र से दूरी - भारत का दक्षिणी आधा भाग तीन ओर समुद्र से घिरा हुआ है। पश्चिम में अरब सागर, पूर्व में बंगाल की खाड़ी और दक्षिण में हिंद महासागर है। समुद्र के अनुकूलन प्रभाव के कारण यह क्षेत्र न तो गर्मियों में ज्यादा गर्म और न ही सर्दियों में बहुत ठंड होती है। उदाहरण के लिए उत्तर भारत के क्षेत्र, जो समुद्र से बहुत दूर है, की जलवायु के विषम है। जबकि दक्षिण भारत, जो समुद्र के निकट है, की जलवायु सम है। हमें दी गयी तालिका संख्या 10. 1 में विभिन्न स्टेशनों पर तापमान और वर्षा में बदलाव देख सकते हैं।

3. समुद्र तल से ऊंचाई - इसका तात्पर्य है औसत समुद्र तल से ऊंचाई। जब हम पृथ्वी की सतह से ऊपर की ओर जाते हैं तो वायुमंडल कम घना होता चला जाता है और हमें सांस लेने में दिक्कत होती है। इस प्रकार तापमान भी ऊंचाई के साथ घट जाता है। उदाहरण के लिए पहाड़ियों पर स्थित शहर ठंडे होते हैं जैसे - शिमला, जबकि एक ही अक्षांश पर मैदानों में स्थित शहर लुधियाना की जलवायु गर्म है।

4. पर्वत श्रेणियाँ - पर्वत श्रृंखलाएँ भी काफी हद तक किसी भी क्षेत्र की जलवायु को प्रभावित करती हैं। हिमालय पर्वत हमारे देश के उत्तरी भाग में 6000 मीटर की औसत ऊँचाई के साथ स्थित है। यह हमारे देश को मध्य एशिया से आने वाले ठंडी हवाओं से बचाता है। इसके अतिरिक्त यह वर्षा करने वाले दक्षिण-पश्चिमी मानसूनी पवनों को रोककर भारत में वर्षा करने के लिए बाध्य करता है। इसी प्रकार, पश्चिमी घाट प्रबल वर्षा करने वाले पवनों को पश्चिमी घाट के पश्चिमी ढलानों पर भारी वर्षा करने के लिए बाध्य करता है।

5. धरातलीय पवनों की दिशा - पवन प्रणाली भी भारतीय जलवायु को प्रभावित करती है। मानसूनी पवनें, धरातलीय और समुद्र पवनें और स्थानीय पवनें इसमें सम्मिलित होती हैं। सर्दियों में भूमि से समुद्र की ओर जाने वाली पवनें ठंडी और शुष्क होती हैं। दूसरी ओर, गर्मियों में पवनें समुद्र से धरातल की ओर चलती हैं। ये अपने साथ समुद्र से नमी लेकर आती हैं और देश के अधिकतर भागों में व्यापक वर्षा करती हैं।

6. ऊपरी वायु धाराएँ - धरातलीय पवनों के अतिरिक्त शक्तिशाली वायु धाराएँ हैं जिन्हें जेट स्ट्रीम कहते हैं। ये भी भारत की जलवायु को प्रभावित करती हैं। ये जेट स्ट्रीम समुद्र तल से लगभग 12000 मीटर की ऊँचाई पर एक संकरी पेट्टी में तेजी से चलने वाली पवनें हैं। वे अपने साथ पश्चिमी विक्षोभों को साथ लाती हैं। ये चक्रवाती विक्षोभ भूमध्य सागर के निकट उत्पन्न होकर पूर्व की ओर बढ़ते हैं। ये रास्ते में फारस की खाड़ी से नमी को गृहण करके सर्दियों के मौसम में उत्तर भारत के पश्चिमी भागों में वर्षा करते हैं। ये जेट वायुधाराएँ गर्मियों में उत्तर की ओर खिसक जाती हैं और मध्य एशिया में बहने लगते हैं। इस तरह से ये मानसून को भारत में आने में मदद करती हैं।

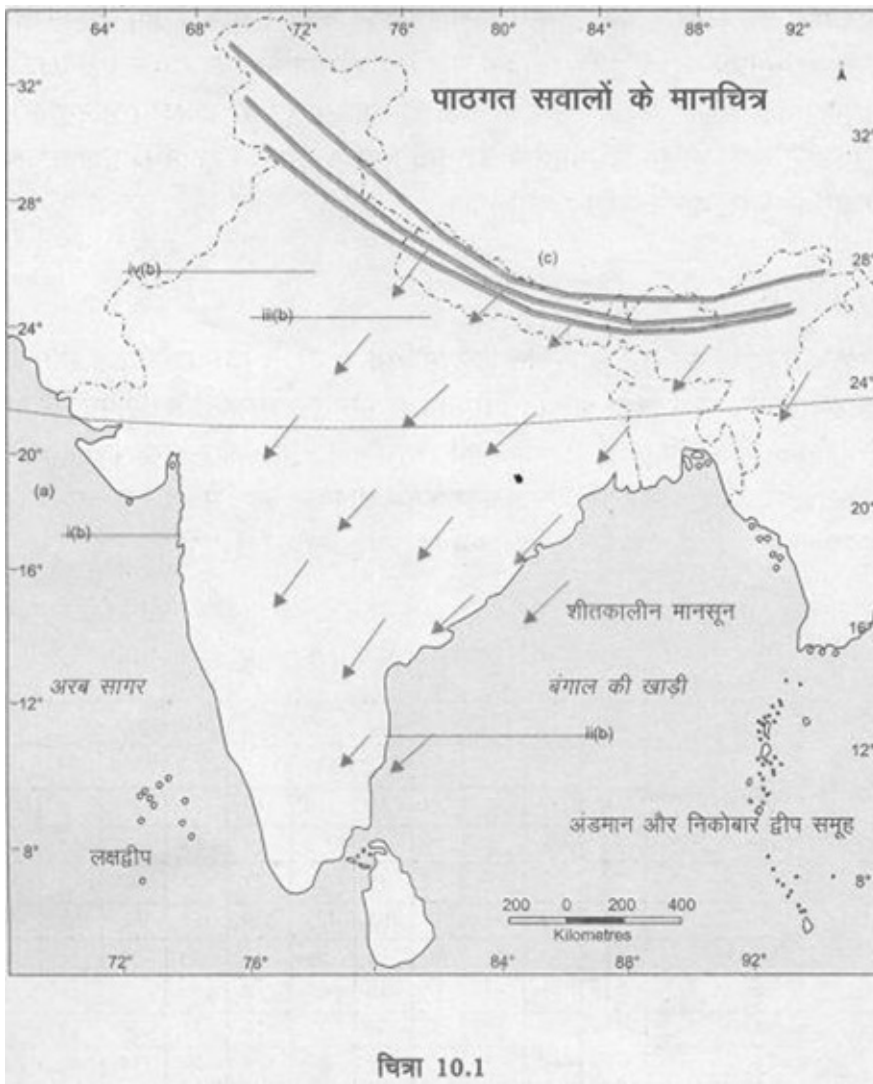
कुछ महत्वपूर्ण स्थानों के मासिक औसत तापमान (त) और वर्षा (व) :

स्थान महीना

	ज	फ	म	अ	म	जू	जू	अ	सि	अ	न	दि
लेह त	-8	-7	-1	9	10	14	17	17	12	6	0	-6
व	10	8	8	5	5	5	13	13	8	5	0	-5
चेन्नई त	25	26	28	31	33	33	31	31	30	28	26	25
व	4	13	13	18	38	45	87	113	119	306	350	135

(i) दोनों स्थानों के बीच वार्षिक ताप परिसर बताइए ।

(ii) दोनों स्थानों में वर्ष में सबसे अधिक वर्षा वाला महीना कौन सा है?



चित्र 10.1 पाठगत सवालों का मानचित्र

ऊपर दिए गए मानचित्र 10.1 को देखिए और निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दीजिए :

- (a) भारत को दो ताप कटिबन्धों में विभक्त करने वाले उस महत्त्वपूर्ण अक्षांश का नाम लिखिए जो मानचित्र पर खींचा गया है। उस अक्षांश की डिग्री भी लिखिए।
- (b) मानचित्र पर दर्शाए गए उन शहरों के नाम लिखिए, जो समुद्र के द्वारा प्रभावित हैं और जो समुद्र द्वारा प्रभावित नहीं हैं।
- (c) कौन सी पर्वत श्रृंखला मध्य एशिया की ठंडी हवाओं से हमारे देश की रक्षा करती है?
- (d) मानचित्र पर दी गई हवा की दिशा का निरीक्षण करें और बतायें कि सर्दियों का मौसम शुष्क क्यों रहता है?

मोना और राजू पांच दिनों के बाद शिमला से लौट आये। वे बहुत खुश थे उन्होंने अपने दोस्तों के साथ अपने अनुभव को बाँटा। कुछ दिनों बाद वे एक समाचार शीर्षक को देखकर हैरान थे कि मानसून समय रहा है। उन्होंने सोचा कि यदि भारत की जलवायु मानसूनी है तो कहीं और से मानसून क्यों आ रहे हैं? मानसून का अर्थ क्या है? उन्होंने अपने शिक्षक की सहायता से अपने प्रश्नों के उत्तर जानने का निर्णय लिया।

10.2 मानसून का रचनातंत्र

मानसून शब्द की उत्पत्ति अरबी भाषा के शब्द मौसिम से हुई है जिसका अर्थ है मौसम या ऋतु। वर्ष के दौरान पवनों की दिशा में ऋतुवत परिवर्तन ही मानसून कहलाता है। गर्मियों के दौरान उत्तर भारतीय मैदान के भीतरी बहुत अधिक गर्म हो जाता है। जैसे- राजस्थान, पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश। इन भागों में दैनिक अधिकतम तापमान 45 डिग्री सेल्सियस तक हो जाता है। नीचे दी गई तालिका 10.1 भारत में जलवायविक विविधता को दर्शाती है?

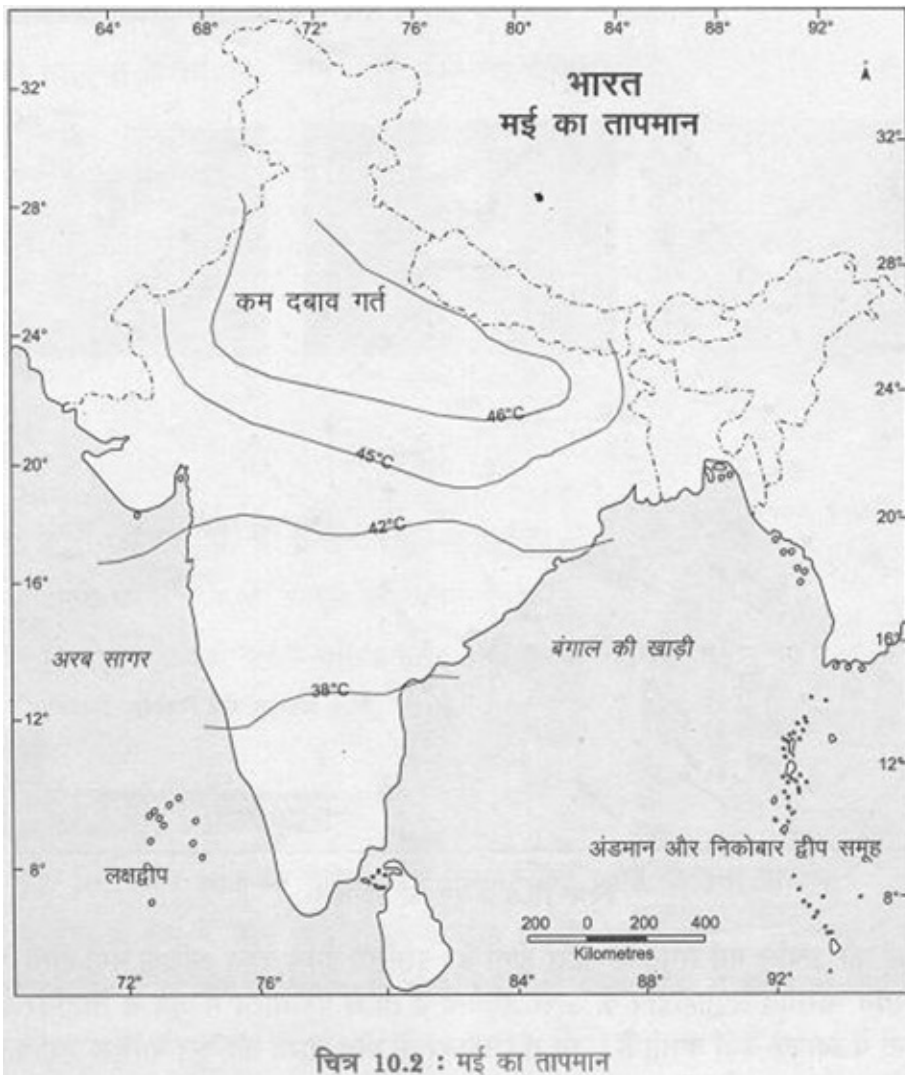
सारणी 10.1 : भारत में कुछ महत्वपूर्ण स्टेशनों के मासिक औसत तापमान (सेल्सियस में) तापमान और (सेंटीमीटर में)

स्थान	महीना	जन	फर	म	अ	म	जून	जु	अग	सित	अक्टू	नव	दिस
लेह	तापमान	-8	-7	-1	9	10	14	17	17	12	6	0	-6
	वर्षा	10	8	8	5	5	5	13	13	8	5	0	5
शिलांग	तापमान	10	11	16	19	19	21	21	21	20	17	13	10
	वर्षा	14	29	56	146	295	476	359	343	302	188	36	10
दिल्ली	तापमान	14	17	23	29	34	35	31	30	29	21	20	15
	वर्षा	21	24	13	10	10	68	186	170	125	14	2	9
जैसलमेर	तापमान	16	20	25	30	33	34	32	31	30	28	22	17
	वर्षा	0.2	0.1	0.3	0.1	0.5	0.7	0.9	86	14	01	0.5	0.2
मुम्बई	तापमान	24	24	24	28	30	29	27	27	27	28	27	25
	वर्षा	4	2	2	2	18	46	56	13	32	9	28	65
चेन्नई	तापमान	25	26	28	31	33	33	31	31	30	28	26	25
	वर्षा	4	13	13	18	38	45	87	113	119	306	350	135
तिरुवनन्तपुरम	तापमान	27	27	28	29	29	27	26	26	27	27	27	27
	वर्षा	2	21	39	106	208	356	223	146	138	273	206	7

क्या आप जानते हैं

- हवा में वजन है और यह वजन हम पर दबाव डालता है, जो हवा के दबाव के रूप में जाना जाता है।
- तापमान और हवा के दबाव के मध्य एक व्युत्क्रम संबंध है, यानी अगर किसी भी क्षेत्र का तापमान अधिक है तो हवा का दबाव कम हो जाएगा। यानी एक दूसरे की तुलना में विपरीत है।
- हवा के दबाव में अंतर हवाओं के आकर्षण के लिए जिम्मेदार है

दिल्ली और जोधपुर में मई के महीने में औसत अधिकतम तापमान 33 डिग्री सेल्सियस से अधिकतर है। इस तरह के उच्च तापमान उस क्षेत्र की हवा को गर्म कर देते हैं। गर्मा हवा ऊपर उठती है तथा सतह पर कम दबाव का क्षेत्र बन जाता है। इस कम दबाव मानसून गर्त के रूप में भी जाना जाता है। यह पश्चिम में जैसलमेर और पूर्व में ओडीशा के बालासोर के मध्य स्थित होता है।



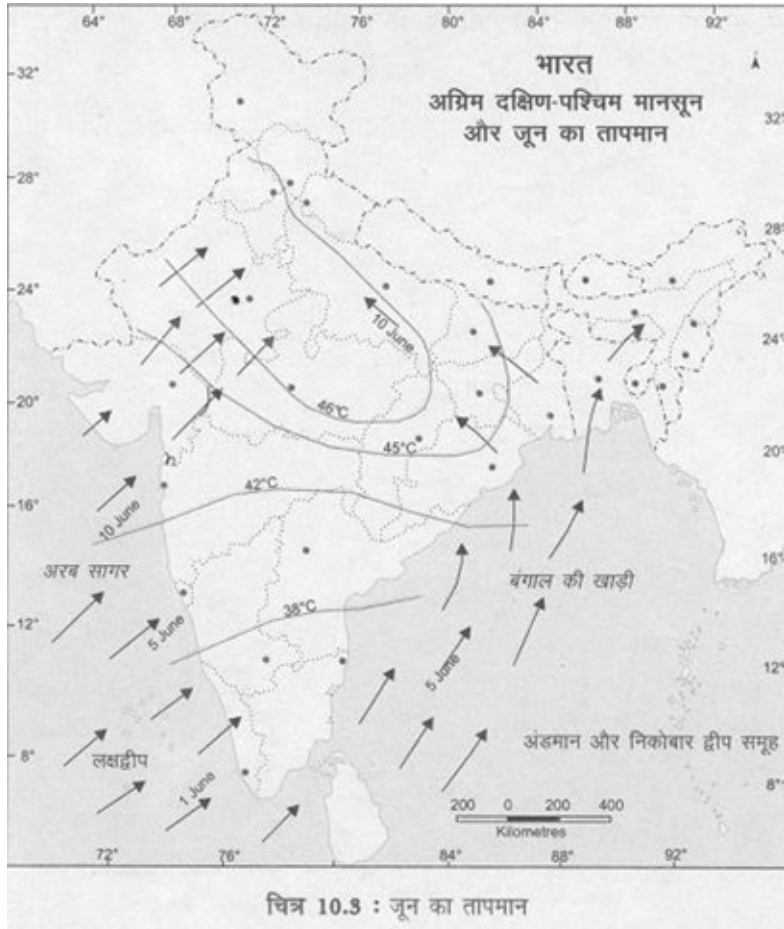
चित्र 10.2 : मई का तापमान

चित्र 10.2 : मई का तापमान

दूसरी ओर, हिंद महासागर के ऊपर तापमान अपेक्षाकृत कम होता है, पानी भूमि की तुलना में अधिक समय में गर्म होता है। इसलिए समुद्र के ऊपर अपेक्षाकृत उच्च दबाव क्षेत्र बन जाता है। ऊपर दिए गए मानचित्र 10.2 को देखें और दिये गये घटना क्रम को समझने की कोशिश करें।

इस प्रकार, उत्तर मध्य भारतीय मैदान और हिंद महासागर पर तापमान और इसके परिणामस्वरूप वायुदाब में अंतर है। इस अंतर के कारण समुद्र के उच्च दाब क्षेत्र से पवनें उत्तर भारत के कम दाब के क्षेत्र की ओर चलनी शुरू हो जाती हैं। इस प्रकार, मध्य जून तक हवा की सामान्य दिशा हिंद महासागर के भूमध्यरेखी क्षेत्रों से भारतीय उपमहाद्वीप की ओर हो जाती है। इन हवाओं की दिशा सामान्यतया दक्षिण - पश्चिम से उत्तर - पूर्व की

ओर होती है। यह दिशा भारत में सर्दियों के दौरान प्रचलित व्यापारिक (उत्तर - पूर्व से दक्षिण - पश्चिम) पवनों के बिल्कुल विपरीत है। पवनों की दिशा का यह उत्क्रमण उत्तर - पूर्व से दक्षिण - पश्चिम और इसके विपरीत मानसून के रूप में जाना जाता है।



चित्र 10.3 : जून का तापमान

चित्र 10.3 : जून का तापमान

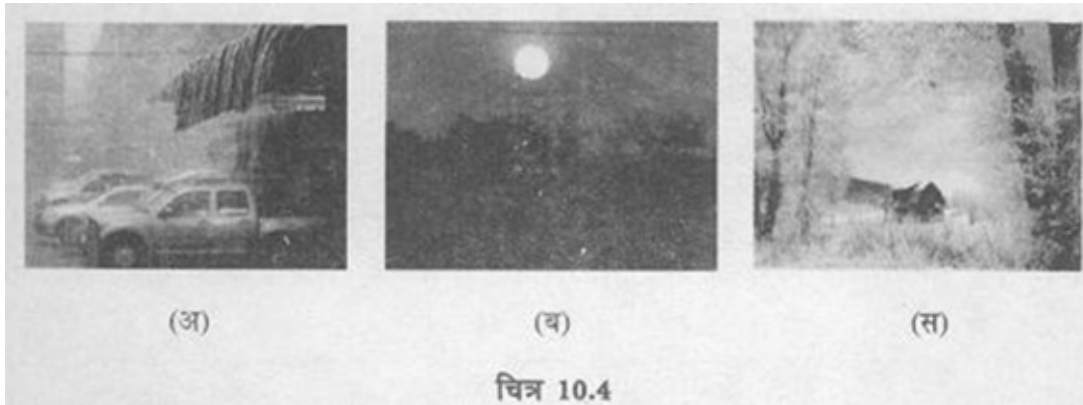
इन हवाओं की उत्पत्ति गर्म समुद्र के ऊपर होती है। इसलिए इनमें बहुत अधिक नमी होती है। जब ये आर्द्र पवनें भारतीय उपमहाद्वीप के ऊपर पहुँचती हैं तो ये पूरे भारत में जून से सितम्बर के बीच चार महीनों में व्यापक वर्षा करती हैं। जून से सितम्बर के बीच भारत की कुल वार्षिक वर्षा का 80% से 90% तक हो जाता है।

10.2.1 मानसून की विशेषताएं

1. मानसून पवनें स्थाई पवनें नहीं हैं। वे प्रकृति में अनियमित हैं एवं वातावरण की विभिन्न दशाओं जैसे क्षेत्रीय जलवायविक दशाओं से प्रभावित की है। किसी वर्ष मानसून जल्दी आता है तो कभी देर से आता है।
2. मानसून समान रूप से वितरित नहीं हैं। केरल, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा जैसे तटीय क्षेत्र भारी वर्षा प्राप्त करते हैं, जबकि हरियाणा, मध्य प्रदेश, जैसे आंतरिक क्षेत्रों में कम वर्षा प्राप्त होती है।

3. जब मानसून आता है तो सैकड़ों दिन तक भारी वर्षा होती है। यह 'मानसून के फटना' के रूप में जाना जाता है। यह मुख्य रूप से केरल तट पर होता है जहां यह सबसे पहले पहुँचता है।

चित्रों को ध्यान से देखिए और निम्न प्रश्नों का उत्तर दीजिए –



चित्र 10.4 वर्षा ऋतु, ग्रीष्म ऋतु, शीत ऋतु

1. दिए गए चित्रों (अ, ब, स) में मौसम को पहचानिए ।
2. उन्हें उनके घटित होने के आधार पर व्यवस्थित करें ।
3. कौन सा मौसम आपको सबसे अधिक पसंद है और क्यों? इसके बारे में 30 शब्दों में बताइए ।

चित्र संख्या 10.2 और 10.3 को देखिए और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. निम्न दाब के क्षेत्र में आने वाले राज्यों के नाम लिखिए ।
2. मानसूनी पवनों के दक्षिण पश्चिम से आने के कारण किस राज्य में सर्वप्रथम वर्षा होगी?
3. मानसून पवनों के बंगाल की खाड़ी पहुँचने पर उनकी दिशा क्या होती है
4. निम्नलिखित शहरों में वर्षा के आँकड़ों का अवलोकन कीजिए और इन चार शहरों में मानसून की औसत अवधि मालूम कीजिए । इन चार शहरों के नाम हैं :

क) मुम्बई

ख) जैसलमेर

ग) दिल्ली

घ) शिलांग

कुछ महीनों बाद मोना और राजू के पिता दिल्ली स्थानांतरित हो गये । वे भारत की राजधानी में रहने के लिए उत्साहित थे । नया घर, नया स्कूल, नए दोस्त और नया वातावरण सब कुछ उनके लिए नया था । उन्होंने महसूस किया कि अब वे मौसम के वास्तविक परिवर्तन को देखने जा रहे हैं जिसके विषय में उन्होंने अपनी किताब में पढ़ा है । हम विभिन्न मौसमों को खोजे और वे कैसे घटित होते हैं इसके विषय में आगे के भाग में जानें ।

10.3 मौसम के चक्र

हमारे देश भारत में भौगोलिक स्थिति के कारण मौसमी विविधता देखने की मिलती है। अब हम भारत के मौसम के बारे में जानेगे और उनकी अनूठी विशेषताओं के बारे में जान सकेंगे। यहां चार मौसम हैं:

(क) शीत ऋतु (दिसंबर - फरवरी)

(ख) ग्रीष्म ऋतु (मार्च - मई)

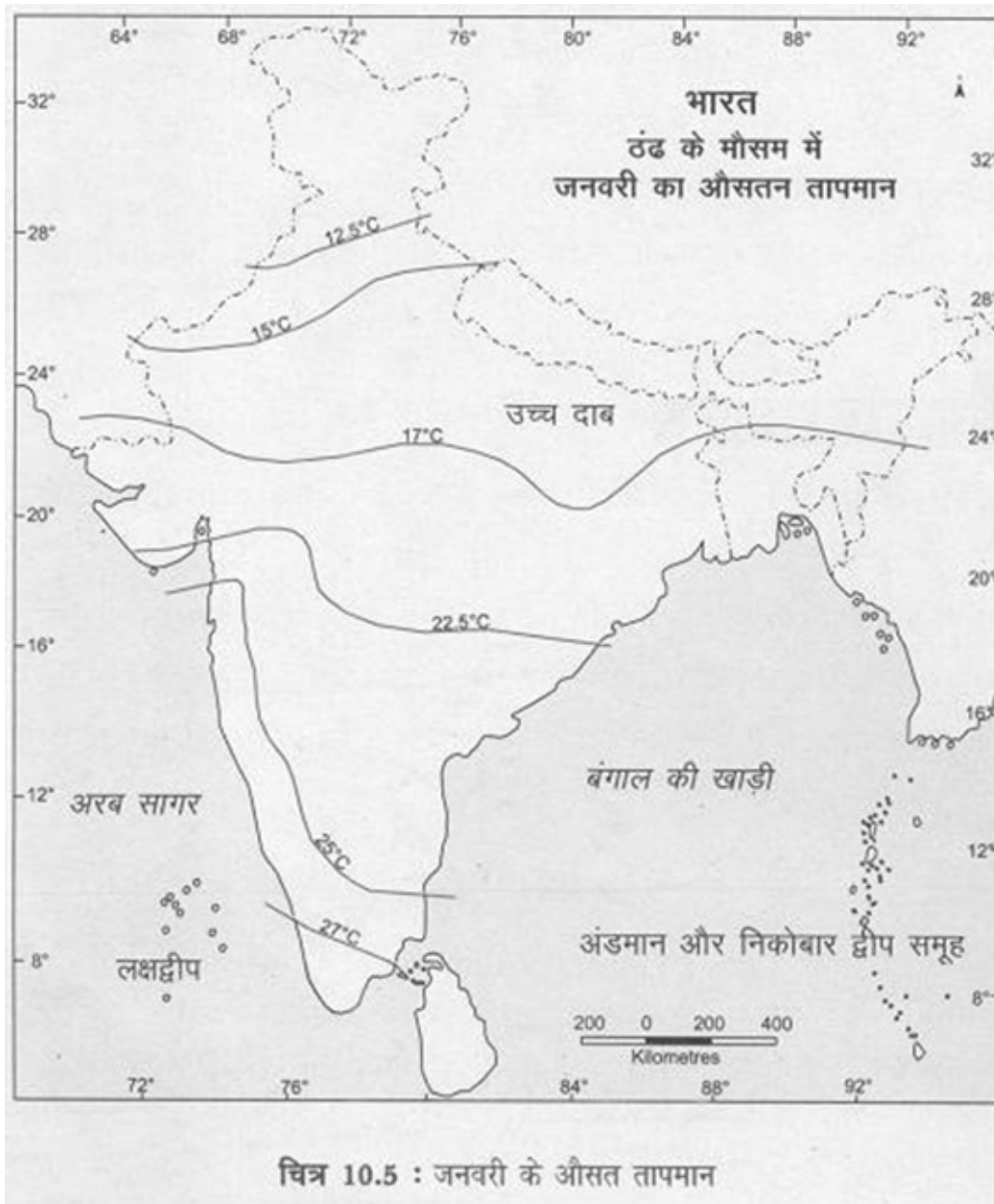
(ग) आगे बढ़ते हुए दक्षिण-पश्चिमी मानसून की ऋतु (जून से सितंबर)

(घ) पीछे हटते हुए मानसून की ऋतु (अक्टूबर - नवंबर)

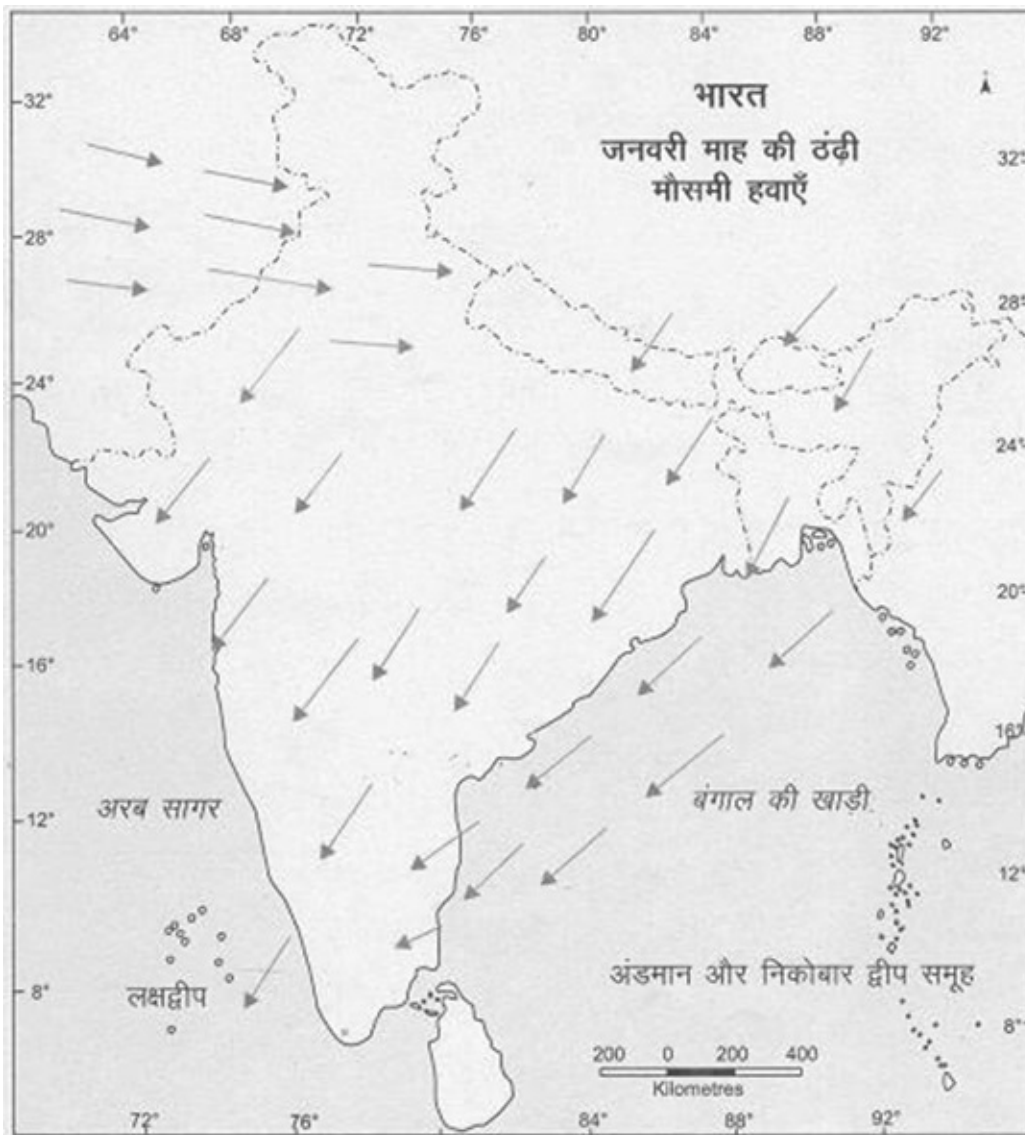
चलो हम इस पर विस्तार से चर्चा करें

(क) शीत ऋतु

शीत ऋतु की अवधि दिसंबर से फरवरी तक है। तापमान दक्षिण से उत्तर की ओर घटते जाते हैं। दिसम्बर तथा जनवरी सबसे अधिक ठंड वाले महीने होते हैं और उत्तर भारत में औसत तापमान



चित्र 10.5 : जनवरी के औसत तापमान



चित्र 10.6 : जनवरी में हवाओं की दिशा

चित्र 10.6 : जनवरी में हवाओं की दिशा

12डिग्री से 15डिग्री सेल्सियस होता है जबकि दक्षिण भारत में 25डिग्री सेल्सियस इन दिनों उत्तर और उत्तर - पश्चिम भारत में प्रायः पाला पड़ता है। इन क्षेत्रों में पश्चिमी विक्षोभों से हल्की बारिश हो जाती है। हिमालय के उच्च ढलानों पर हिमपात होता है। सर्दियों के मौसम के दौरान, भारत में उत्तर-पूर्व व्यापारिक पवनें चलती हैं। वे भूमि से समुद्र की ओर चलती हैं। और इसलिए देश के अधिकांश भाग के लिए यह एक शुष्क मौसम है। हालांकि, तमिलनाडु तट पर सर्दियों में इन हवाओं के कारण वर्षा होती है। उत्तर-पूर्वी व्यापारिक पवनों का एक भाग बंगाल की खाड़ी के ऊपर से गुजरते हुए नमी ग्रहण कर लेता है। इसलिए तमिलनाडु तट पर वर्षा करता है जबकि देश का बाकी भाग शुष्क रहता है। देश के उत्तरी भाग में साफ आसमान, कम तापमान और कम नमी होती है। रबी के फसलों के लिए शीत ऋतु में हल्की वर्षा बहुत उपयोगी है।

(ख) ग्रीष्म ऋतु

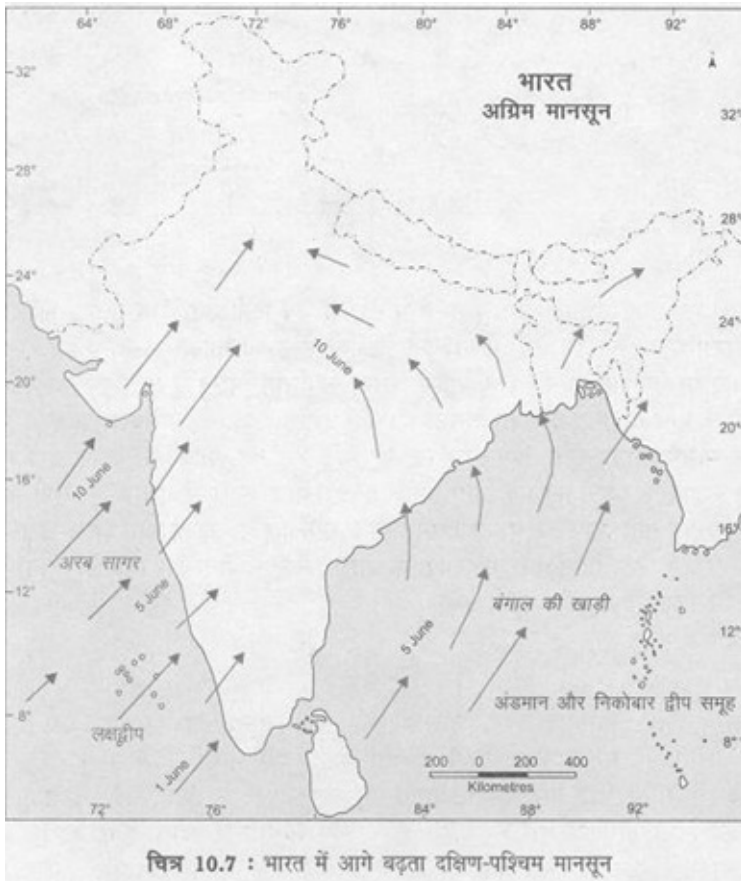
फरवरी के अंत तक तापमान बढ़ना शुरू हो जाता है। इसलिए मार्च से मई तक ग्रीष्म ऋतु होती है। मैदानों, भारत के पश्चिमी भागों और प्रायद्वीपीय भारत के मध्य में उच्च तापमान रहता है। इस समय यहाँ एक लंबा-संकरा निम्न वायु दाब क्षेत्र विकसित हो जाता है। इसे मानसून का निम्न वायुदाब गर्त भी कहते हैं। इसका विस्तार पश्चिमी राजस्थान के जैसलमेर से लेकर पूर्व में झारखंड

तथा ओडीशा के कुछ भाग तक होता है। हालांकि इस ऋतु में

विषुवत वृत्त के दक्षिण में हिन्द महासागर के ऊपर उच्च वायुदाब का क्षेत्र विकसित होने लगता है। उत्तर-पश्चिमी भारत में धूलभरी आंधियाँ चलती हैं। ग्रीष्म ऋतु में भारत के उत्तरी मैदानों में दोपहर के बाद शुष्क और गर्म पवनें चलती हैं। इन पवनों का स्थानीय नाम 'लू' है। इन गर्म तथा झुलसाने वाली पवनों से कभी-कभी लू लग जाती है। इस मौसम में तेज धूलभरी आंधियाँ चलती हैं और गरज के साथ मूसलाधार वर्षा हो जाती है। वर्षा के साथ कभी-कभी ओलावृष्टि भी होती है। पश्चिम बंगाल में, वैशाख के महीने में इन तूफानों को 'काल बैसाखी' आपदा के रूप में जाना जाता है। गर्मी के मौसम की समाप्ति की ओर, मानसून पूर्व की बारिश प्रायः केरल और कर्नाटक में होती है। वे आमों के जल्दी पकने में सहयोग देता है, और प्रायः इसे 'आम्र वृष्टि' के रूप में भी जाना जाता है।

(ग) आगे बढ़ते हुए दक्षिण-पश्चिमी मानसून की ऋतु

गर्मियों की चलचिलाती गर्मी के बाद लोगों को बेसब्री से बारिश के लिए प्रतीक्षा करनी पड़ती है जो उन्हें राहत दे सकती है। किसान बारिश के लिए प्रतीक्षा करते हैं ताकि वे अपने खेतों को खरीफ की फसल के लिए तैयार कर सकें। जून से सितंबर आगे बढ़ते दक्षिण-पश्चिम मानसून ऋतु के महीने हैं। क्षेत्र में उच्च तापमान के कारण उत्तर भारत में मई



चित्र 10.7 : भारत में आगे बढ़ता दक्षिण-पश्चिम मानसून

के अंत तक मानसूनीगर्त और तीव्र हो जाता है। इस मौसम के दौरान हवा की सामान्य दिशा उत्तर-पश्चिम की ओर होती है। ये पवनें काफी प्रबल होती हैं तथा इनकी औसत गति 30 किलोमीटर प्रति घंटा होती है। ये आर्द्र पवनें मई के अंतिम सप्ताह में सबसे पहले अंडमान और नीकोबार द्वीप समूह में पहुँचती हैं और गर्जन के साथ वर्षा करती हैं। जून के प्रथम सप्ताह में केरल के तटीय भागों में तेज गर्जन के साथ वर्षा करती हैं। ये दक्षिण-पश्चिम मानसून भारत में आकर इसके मौसम में बहुत अधिक परिवर्तन करती है। दक्षिण-पश्चिम मानसून की दो शाखाएँ हैं (1) अरब सागर की शाखा और (2) बंगाल की खाड़ी की शाखा।

अरब सागर की शाखा पश्चिमी घाट द्वारा बाधित होने पर पश्चिमी घाट के पश्चिमी ओर भारी वर्षा करती हैं। यह 10 जून को मुंबई पहुँचती है। देखें चित्र 10.7 जब यह शाखा पश्चिमी घाटों को पार करती है और दक्कन के पठार और मध्य प्रदेश के कुछ हिस्सों तक पहुँचती है तो यह कम वर्षा करती है क्योंकि यह एक वृष्टि छाया क्षेत्र है।

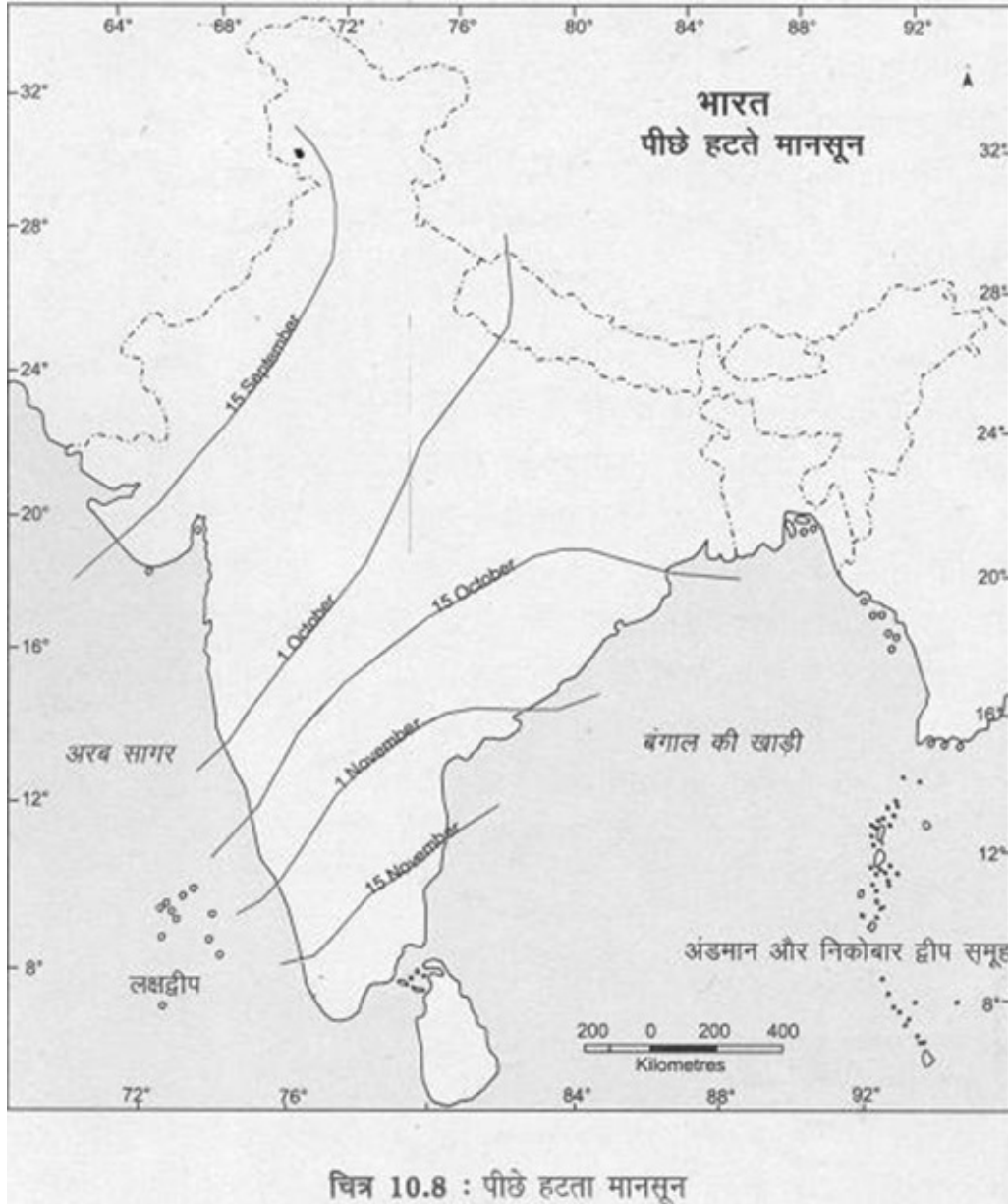
बंगाल की खाड़ी की शाखा से सबसे पहले अंडमान और नीकोबार द्वीप समूह में वर्षा होती है। इसके पश्चात् ये पवनें उत्तर-पूर्वी राज्य, पश्चिम बंगाल के तटीय भागों तथा 15 जुलाई तक पूरे भारत में वर्षा करने लगती हैं। इनसे इस क्षेत्र में भारी वर्षा होती है। हालांकि उत्तरी मैदानों में जैसे-जैसे ये पवनें पश्चिम की ओर बढ़ती हैं, वर्षा की मात्रा कम होती जाती है। उदाहरण के लिए कोलकाता में वर्षा 120 से.मी., इलाहाबाद 91 से.मी. और दिल्ली में केवल 56 से.मी.। आपने देखा होगा कि कभी-कभी वर्षा बहुत दिनों तक नहीं होती। बीच-बीच में शुष्क काल आता रहता है। इससे आर्द्र और शुष्क दौर आते रहते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि मानसूनी वर्षा एक बार में कुछ ही दिन होती है। वर्षा रहित शुष्क दौर इसके बीच में आते रहते हैं। चूंकि मानसून गर्म और शुष्क ग्रीष्म ऋतु के बाद आता है, इसलिए वर्षा होने पर तापमान कम हो जाते हैं। मध्य जून और मध्य जुलाई के बीच तापमान 5 डिग्री सेल्सियस से 8 डिग्री सेल्सियस तक घट जाते हैं। इसी समय भारत के अनेक भागों में बाढ़ भी आती है। बाढ़ों के आने का कारण अधिक वर्षा और जल संसाधन के व्यवस्थित ढंग से प्रबंधन में हमारी असमर्थता है। दूसरी तरफ बहुत से ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ इस समय सूखा पड़ता है।

समाचार पत्रों तथा अन्य स्रोतों से ज्ञात कीजिए कि भारत के कौन से क्षेत्र नियमित रूप से बाढ़ और सूखा से प्रभावित रहते हैं। नमूने के तौर पर समाचार पत्रों की कतरनें भी चिपकाएं। ऐसे क्षेत्रों को पहचानिए और उनके कारण मालूम कीजिए। हाल ही में सूखा एवं बाढ़ से प्रभावित क्षेत्रों के विषय में जानकारी इकट्ठी कीजिए।

(घ) पीछे हटते मानसून की ऋतु

अक्टूबर और नवंबर महीने पीछे हटते मानसून ऋतु के हैं। सितंबर-अक्टूबर के दौरान तापमान उत्तर भारत में कम होना शुरू हो जाता है। उत्तर-पश्चिमी भारत में मानसूनी गर्त भी कमजोर पड़ने लगती है। यह धीरे-धीरे एक उच्च वायुदाब प्रणाली द्वारा प्रतिस्थापित होता है। दक्षिण-पश्चिम, मानसून हवायें नवंबर तक उत्तर भारतीय मैदान से धीरे-धीरे कमजोर होकर वापस होने लगती

है। अक्टूबर के महीने में अधिक तापमान और नमी के कारण मौसम गर्म और नम रहता है। उत्तरी मैदानों में गर्म और आर्द्र मौसम इस समय कष्टदायी हो जाता है। इसे आमतौर पर 'क्वार की उमस' कहा जाता है। हालांकि, अक्टूबर के अंत में, तापमान गिरने, लगते हैं और रातें सुहानी होती है। इस समय उत्तर-पश्चिम भारत का निम्न वायुदाब का क्षेत्र बंगाल की खाड़ी में स्थानान्तरित हो जाता है। फलस्वरूप बंगाल की खाड़ी में चक्रवातीय तूफान विकसित होते हैं। इन चक्रवातों से ओडीशा, आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु के तटीय क्षेत्रों में विशेषकर महानदी, गोदावरी और कृष्णा नदियों के डेल्टाई प्रदेशों में व्यापक विनाश होता है।



चित्र 10.8 : पीछे हटता मानसून

चित्र 10.8 : पीछे हटता मानसून

सही उत्तर चुनें -

(i) ग्रीष्म ऋतु में उत्तरी मैदान में चलने वाली गर्म और शुष्क वायु कहलाती है-

अ) काल बैसाखी

ब) व्यापारिक पवनें

स) लू

द) इनमें से सभी

(ii) कौन सी पर्वत श्रृंखला अरब सागर शाखा के रास्ते में एक बाधा के रूप में कार्य करती है?

अ) अरावली

ब) पश्चिमी घाट

स) पूर्वी घाट

द) राज महल पहाड़ियां

(iii) बंगाल की खाड़ी के उष्णकटिबंधीय चक्रवात प्रायः किसके दौरान आते हैं –

अ) दक्षिण-पश्चिम मानसून

ब) ग्रीष्म ऋतु

स) पीछे हटते मानसून की ऋतु

द) शीत ऋतु

(iv) कौन सी जगह मार्च में सबसे अधिक गर्म होगी?

अ) दिल्ली

ब) शिलांग

स) दक्कन का पठार

द) पंजाब

(v) मानसून कहा जाता है :

अ) मौसमी पवनें

ब) अस्थायी पवनें

स) स्थायी पवनें

द) स्थानीय पवनें

मोना और राजू अब मौसम, इसका चक्र, इसका कारण और प्रभाव को अच्छी तरह समझ चुके थे? केवल एक प्रश्न अनुत्तरित रह गया था। यदि मानसून के एक विशेष क्षेत्र में कुछ अवधि के लिए आता है तो यह तात्पर्य है कि भारत में वर्षा वितरण असमान था? हमें वर्षा वितरण मानचित्र की मदद से इसका उत्तर खोजने की कोशिश करनी चाहिए।

10.4 वर्षा का वितरण

वर्ष के किसी एक समय में भारत में वर्षा का वितरण अत्यन्त असमान है। पूर्व से पश्चिम की ओर उत्तरी मैदानों तथा मध्य भारत में वर्षा की मात्रा कम होती जाती है। प्रायद्वीपीय भारत में तटीय क्षेत्रों से आन्तरिक क्षेत्रों की ओर वर्षा होती जाती है। उत्तरी-पूर्व भारत में ऊँचाई के साथ वर्षा की मात्रा बढ़ती जाती है। वर्षा के वितरण में बहुत अधिक विषमताओं वाला भारत एक अनोखा उदाहरण है। विश्व के सबसे अधिक वर्षा वाले स्थान तथा सबसे कम वर्षा वाले स्थान भारत में ही हैं। क्या आप बता सकते हैं क्यों? भारत में वर्षा की स्थानिक विषमताओं को निम्नलिखित शीर्षकों के अंतर्गत दिखाया जा सकता है। मानचित्र को ध्यान से देखिए और दिए गए वर्गीकरण में आने वाले राज्यों को मालूम कीजिए।

(क) उच्च वर्षा (200 सेमी से अधिक) के क्षेत्र - पश्चिमी तट, उत्तर पूर्व का उप हिमालयी क्षेत्र और मेघालय की गारी, खासी, जयन्तिया पहाड़ियों पर वर्षा अधिक होती है।

(ख) सामान्य वर्षा (100-200 सेमी) के क्षेत्र - भारत में 100 से 200 सेमी वर्षा पश्चिमी घाट पश्चिम बंगाल, ओडीशा, बिहार तथा कई अन्य राज्यों में होती है।

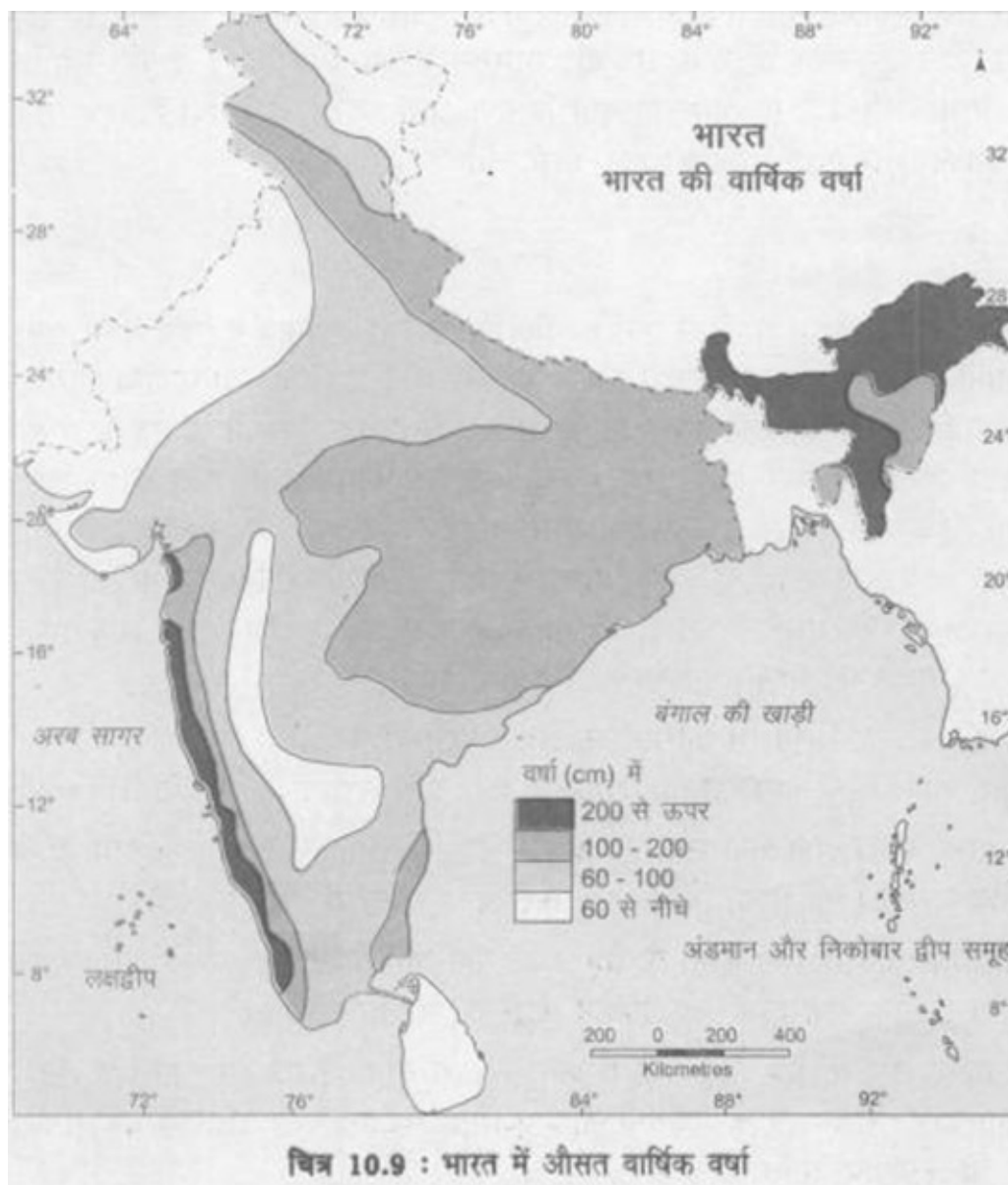
(ग) कम वर्षा (60 से 100 सेमी) के क्षेत्र - यह कम वर्षा के क्षेत्र है। इसके अंतर्गत उत्तर प्रदेश के कुछ भाग, राजस्थान तथा दक्कन पठार का आन्तरिक भाग।

(घ) अपर्याप्त वर्षा के क्षेत्र (60 सेमी से कम) - अल्प वर्षा का यह क्षेत्र भारत के कई राज्यों में शामिल है। राजस्थान के पश्चिमी भाग गुजरात, लद्दाख और दक्षिण मध्य भाग 20 सें.मी. से भी कम वर्षा प्राप्त करते हैं।

नीचे दी गयी तालिका में भारत के त्योहारों की सूची बनाएँ और यह भी पता लगायें कि आपके क्षेत्र में कौन सी ऋतु आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण है और क्यों?

त्योहारों की कहां मनाया दिनांक और ऋतु आर्थिक
सूची जाता है महीना महत्वपूर्ण

क्या आप त्योहारों की ऋतुओं और फसल कटाई के मध्य कोई अंतर्सम्बन्ध देखते हैं? कोई एक कारण दीजिए।



चित्र 10.9 : भारत में औसत वार्षिक वर्षा

अब आप मौसम के चक्र के बारे में अच्छी तरह परिचित हो गए हैं, लेकिन एक दूसरा सवाल हमारे मन में आता है कि मौसम और हमारे जीवन के बीच क्या संबंध है? क्या वे इतना महत्वपूर्ण हैं कि वे हमारे जीवन को प्रभावित करते हैं? उत्तर है 'हां'। वे हमारे सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन को प्रभावित करते हैं। जैसे- भारत एक कृषि प्रधान देश है और कृषि की आर्थिक गतिविधियां पूरी तरह से मौसम के चक्र पर निर्भर हैं। खरीफ फसल का समय आगे बढ़ते मानसून की ऋतु है और कटाई मानसून के बाद होती है। रबी की फसल सर्दियों में उगाई जाती है और जायद फसल सर्दियों के मौसम के अंत में है। बाढ़ और सूखा देश के आर्थिक विकास में बाधा हैं क्योंकि हमारी अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित अर्थव्यवस्था है।

हमारी सभी गतिविधियां ऋतुओं के साथ संबंधित हैं। जब सर्दियों का मौसम आता है दिन छोटा हो जाता है और हम ऊनी कपड़े खरीदते हैं। मूंगफली, बादाम और कैलोरी युक्त भोजन हमारे आहार में बहुत महत्वपूर्ण बन जाते हैं। ठंड के मौसम के होते हुए भी लोग जनवरी के महीने में कई राज्यों में मकर संक्रांति, पंजाब में लोहड़ी और तमिलनाडु में पोंगल, की तरह कई समारोहों का जश्न मनाते हैं। बसंत पंचमी भी फरवरी के महीने में मनाते हैं। लोग फसल के देवता से अच्छी पैदावार के लिए प्रार्थना करते हैं। गर्मी का मौसम बहुत ही सूखा है, लेकिन यह हमें रसीले फल, आइस क्रीम और पेय पदार्थों की विविधता की याद दिलाता है। इस मौसम में उपलब्ध फल क्या हैं? होली और बैसाखी इस मौसम के मुख्य त्योहार हैं। गर्मियों के अंत तक किसान अपने खेतों की तैयारी शुरू कर देते हैं ताकि वे बारिश का स्वागत कर सकें। इस समय केरल में ओणम का जश्न मनाते हैं जो उनकी फसल की कटाई का समय होता है। मानसून के बाद का समय फसल कटाई का होता है। यह भी दशहरा, दुर्गा पूजा और दीवाली के त्योहार का समय है जो पूरे भारत में मनाया जाता है।

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात् आप समझ गए होंगे कि भारत में सौभाग्यवश चार स्पष्ट मौसम हैं। ग्रीष्म, शीत, बसन्त और मानसून की ऋतु। हालांकि आजकल इस मौसम चक्र में विघ्न पैदा होने लगा है। इस का प्रमुख कारण वैश्विक तापन है जो आज के विश्व का ज्वलंत विषय है। इसका बहुत अधिक राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक प्रभाव पड़ा है जिसने हमारे जीवन के हर पहलू और हमारी जीवन शैली को प्रभावित किया है। वैश्विक तापन का विश्व जलवायु पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा है और भारत इसका अपवाद नहीं है। क्या आप नहीं समझते कि हममें से प्रत्येक गहरा विस्तार को रोकने में कैसे योगदान दे सकता है।

आइए सबसे पहले यह जानते हैं कि वैश्विक तापन क्या है? पिछले दशकों के दौरान नगरीकरण, औद्योगीकरण और जनसंख्या में वृद्धि के कारण पर्यावरण प्रदूषित हो गया है। मानवीय अनुक्रियाओं के कारण कार्बन डाइऑक्साइड, क्लोरो-फ्लोरो-कार्बन (CFC) और अन्य विनाशकारी गैसों की मात्रा में वृद्धि हुई है। सौर ऊर्जा के लगभग 51 प्रतिशत भाग पृथ्वी के धरातल द्वारा अवशोषित कर लिया जाता है जिससे इसका तापमान बढ़ जाता है। बाकी की सौर वायुमंडल में परावर्तित हो जाती है। यह एक निश्चित तापमान बनाए रखने में मदद करता है। परन्तु अब प्रदूषण के कारण परावर्तित ऊर्जा का कुछ भाग हरित ग्रह गैसों जैसे मुख्य रूप से कार्बन डाइऑक्साइड रोक लिया जाता है। इससे पृथ्वी के धरातल का तापमान बढ़ गया है। इस बात के प्रमाण हैं कि कार्बन डाइऑक्साइड का स्तर अब भी बढ़ रहा। संयुक्त राष्ट्र

संघ की व्यवस्था के अंतर्गत बहुत से देशों ने हरित ग्रह गैसों को कम करने के लिए समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। हालांकि वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय समझौते जलवायु में महत्वपूर्ण परिवर्तन को रोकने में अभी भी प्रभावी नहीं हैं।

हम यह पहले से जानते हैं कि 70 प्रतिशत भारतीय कृषि क्षेत्र में लगे हुए हैं। तापमान में कोई भी परिवर्तन कृषि पर हानिकारक प्रभाव डालेगा। इसका भारत के सामाजिक व आर्थिक जीवन पर गंभीर प्रभाव पड़ेगा। इस पाठ को पढ़ने के बाद हम यह स्पष्ट रूप से जान गए हैं कि जलवायु का मनुष्य के जीवन पर बहुत महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। हमारे भोजन, हमारे त्योहार और हमारी अर्थव्यवस्था सबकुछ मौसम के चक्र के साथ जुड़े हुए हैं। अगर मौसम अनुकूल हैं तो मानव जीवन अच्छा और आरामदायक हो जायेगा। क्योंकि मौसम की स्थिति कृषि, स्वास्थ्य, परिवहन आदि को प्रभावित करती है, इसलिए हमारे लिए यह महत्वपूर्ण है कि हम अपनी जीवन शैली में परिवर्तन करें और क्लोरो-फ्लोरो-कार्बन (CFC) तथा अन्य हानिकारक गैसों को कम करें।

एक डायरी रखें जिसमें प्राकृतिक आपदाओं जैसे भूकम्प, चक्रवात तथा भौगोलिक घटनाओं को लिखें। उसमें घटना का नाम, तिथि तथा उसका प्रभाव लिखें।

1. हमें भारत में वर्षा का वितरण अत्यधिक असमान क्यों लगता है?
2. भारत के सबसे कम वर्षा प्राप्त करने वाले तीन क्षेत्रों के नाम बताइए।
3. खरीफ और रबी मौसम के महीने बताइए।
4. जायद मौसम कब आता है।
5. कौन सी मानवीय अनुक्रियाएँ वैश्विक तापन के लिए जिम्मेदार हैं?

आपने क्या सीखा

- भारत की जलवायु बहुत से कारकों द्वारा प्रभावित होती है जैसे स्थिति, समुद्र से दूरी, ऊँचाई, पर्वत श्रृंखलाएँ, सतही पवनों की दिशा और ऊपरी वायु धाराएँ।
- भारत में हवाओं का उलट फेर एक विशेष प्रणाली है जो मानसून के रूप में जानी जाती है।
- भारत में मौसम की एक चक्रीय प्रणाली है और इसके चार मुख्य मौसम हैं। ये हैं शीत ऋतु, ग्रीष्म ऋतु, आगे बढ़ते मानसून की ऋतु और पीछे हटते मानसून की ऋतु।
- मौसम हमारे दिन-प्रतिदिन के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और हमारी गतिविधियों और खाने की आदतों को भी प्रभावित करते हैं।
- वैश्विक तापन भारतीय जलवायु को भी प्रभावित करता है।

पाठान्त प्रश्न

1. जलवायु को प्रभावित करने वाले किन्हीं पाँच कारकों का वर्णन कीजिए। प्रत्येक कारक के लिए एक उदाहरण की सहायता के साथ व्याख्या करें।
2. जलवायु और मौसम के बीच अंतर बताइए।
3. पवनें और उनकी दिशा जलवायु को कैसे प्रभावित करती हैं? उदाहरण देकर व्याख्या करें।
4. मानसून की परिभाषा लिखिए। व्यापारिक पवनों के विपरीत दिशा में चलने के मुख्य कारण को पहचानिए।
5. शीत ऋतु की कोई चार विशेषतायें बताइए।
6. ग्रीष्म ऋतु के मौसम की किन्हीं चार मुख्य विशेषताओं की सूची बनाइए?
7. उदाहरण देकर भारत में वैश्विक तापन के प्रभाव समझाइए। इसके क्या कारण हैं?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

10.1

(क) कर्क रेखा, 23¹/₂ डिग्री उत्तर

(ख) समुद्र से प्रभावित

(i) मुम्बई

(ii) चेन्नई

समुद्र से प्रभावित नहीं

(i) लखनऊ

(ii) दिल्ली

(iii) हिमालय पर्वत श्रृंखला

(घ) पवनें उत्तर- पूर्व से आ रही हैं। चूंकि वे भूमि से आ रही हैं, वे शुष्क और देश में बारिश करने में असमर्थ हैं।

10.2

1) राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ तथा ओडीशा के कुछ भाग

2) केरल

3) दक्षिण से उत्तर और उत्तर-पूर्व, उत्तर-पश्चिम

4) क) मुम्बई : 4 महीने

ग) दिल्ली : 4 महीने

ख) नागपुर : 4 महीने

घ) सिलांग : 6 महीने

10.3

(i) (ब) लू

(ii) (स) पश्चिमी घाट

(iii) (स) पीछे हटते हुए मानसून की ऋतु

(iv) (स) ढक्कन का पठार

(v) (अ) मौसमी पवनें

10.4

1. जब मानसून हवाएं तट की ओर से प्रवेश करती हैं तब वे अधिकतम बारिश करती हैं। जब वे मध्य क्षेत्र या उत्तरी क्षेत्रों तक पहुँचती हैं, वे शुष्क होती जाती हैं जिसके परिणामस्वरूप कम वर्षा होती है।

2. कम वर्षा के क्षेत्र –

1. उत्तरी लेह - लद्दाख क्षेत्र

2. पश्चिमी राजस्थान

3. दक्षिण-मध्य भाग

3. खरीफ - जून और जुलाई रबी – अक्टूबर और नवम्बर

4. शीत ऋतु के अंत से यानि मार्च से मई

5. शहरीकरण, औद्योगीकरण, वनों की कटाई, जीवाश्म ईंधन का जलाना आदि।

11. जैव विविधता

आपने विभिन्न प्रकार के घास, पौधों, झाड़ियों, पेड़, कीड़े, पक्षियों, जानवरों या अपने चारों ओर सुंदर परिदृश्य को देखा होगा। हम पौधों और जानवरों की इस विविधता पर भोजन, ईंधन, दवा और अन्य वस्तुओं पर अनिवार्य रूप से निर्भर हैं जिसके बिना हम नहीं रह सकते। इन प्रजातियों के विकास के चार अरब वर्षों से अधिक के उत्पाद हैं। अभी तक, इस समृद्ध जैव विविधता एक खतरनाक दर पर काफी हद तक मानव गतिविधियों की वजह से खो दिया जा रहा है। फिर भी वहाँ कई चीजें हैं जो हम में से हर एक को इन प्रजातियों, पौधों, जानवरों और अन्य जीवित जीवों के संरक्षण में योगदान कर सकती हैं। वहाँ बहुत सारी चीजें हैं जो जीवन की इन कीमती विविधताओं को बचाने में आप मदद कर सकते हैं। यह हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है कि हम इन विभिन्न पौधों, जानवरों और सूक्ष्म जीवों के संदर्भ में जानें। इस पाठ में, हम इन पौधों, पशुओं, उनके महत्व, भारत में उनके वितरण, और उनके संरक्षण की आवश्यकता पढ़ेंगे।

उद्देश्य

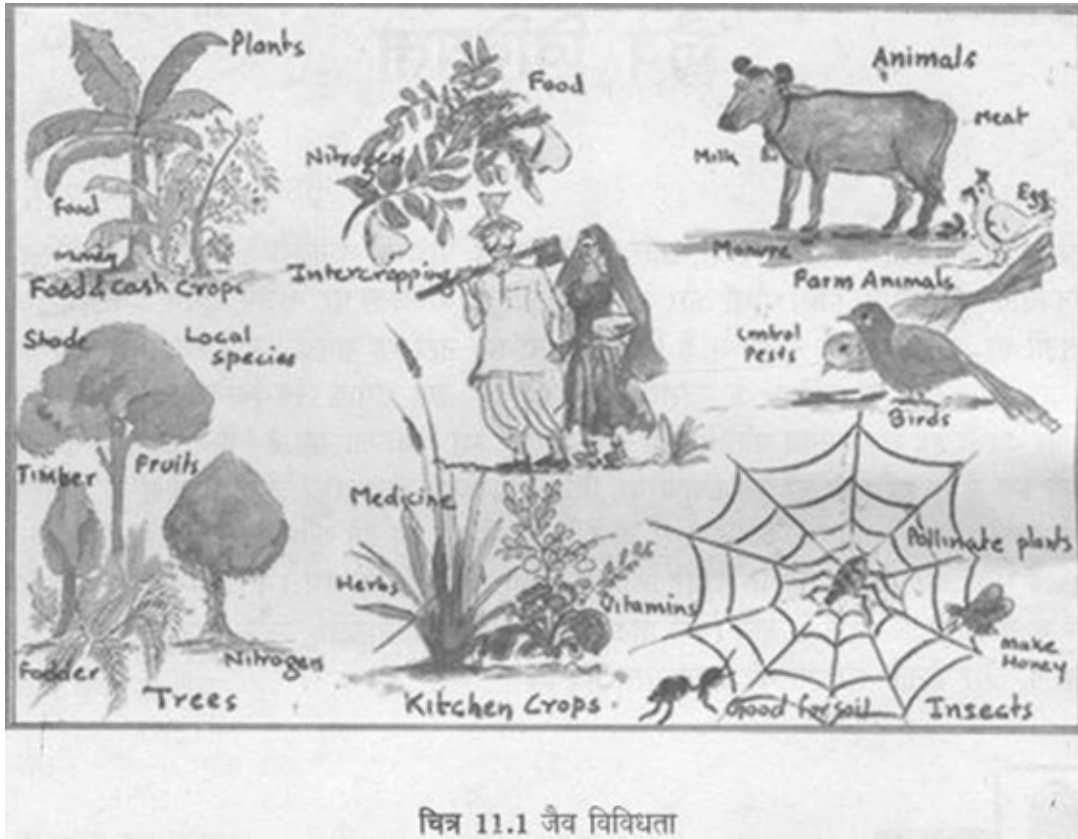
इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- जैव विविधता की अवधारणा की व्याख्या कर सकेंगे;
- भारत में जैव विविधता की स्थिति की व्याख्या कर सकेंगे;
- जैव विविधता के महत्व की स्थापना बता सकेंगे;
- भारत में प्राकृतिक वनस्पति और वन्य जीवन का वर्णन कर सकेंगे;
- भारत की रेखा मानचित्र में वन, वन्यजीव अभयारण्यों, राष्ट्रीय पार्कों, जैव मंडल और नम क्षेत्र को दर्शा सकेंगे और
- अपने क्षेत्र में प्राकृतिक वनस्पति और वन्य जीव संरक्षण में हमारी भूमिका की पहचान कर सकेंगे ।

11.1 जैव विविधता

जैव विविधता, जैविक विविधता का एक संक्षिप्त रूप है। जैविक विविधता या जैव विविधता का एक शब्द है, हम पृथ्वी पर जीवन की विविधता का वर्णन करते हैं जिसमें विभिन्न प्रकार के भौतिक

पर्यावरण के घटकों जैसे तापमान, मिट्टी, पानी को शामिल करते हैं। सरल शब्दों में, जैव विविधता जीन, प्रजातियों और एक क्षेत्र की पारिस्थितिकी तंत्र की कुल संख्या है। इसमें (क) आनुवंशिक विविधता, (ख) प्रजाति विविधता (ग) पारिस्थितिकी तंत्र विविधता शामिल हैं। पौधे और जानवर ही जैव विविधता के एक छोटे घटक का निर्माण करते हैं। क्या आप जानते हैं कि अदृश्य सूक्ष्म जीवों जैव विविधता का एक बड़े घटक का निर्माण करते हैं।



चित्र 11.1 जैव विविधता

चित्र 11.1 : जैव विविधता

जीन : जीन आनुवंशिकता की बुनियादी जैविक ईकाई है। किसी एक प्रजाति के समान होते हैं। और जीन विशेष प्रजाति की विशेषताओं को नियंत्रित करते हैं।

प्रजातियां : यह एक जैसा समूह है जो कुछ सामान्य विशेषताओं या गुणों और अंतर प्रजनन करने में सक्षम होते हैं।

पारिस्थितिकी तंत्र : किसी क्षेत्र में जैविक (सजीव) और अजैविक (निर्जीव) घटकों के मध्य में अंतःक्रिया करना पारिस्थितिकी तंत्र कहते हैं।

11.1.1 भारत में जैव विविधता की स्थिति

जब हम ध्रुव से भूमध्य रेखा की ओर जाते हैं तो जैव विविधता में वृद्धि होती जाती है भारत 8डिग्री 4मिनट उत्तर और 37डिग्री 6मिनट उत्तरी अक्षांश और 68डिग्री 7मिनट पूर्व और 97डिग्री 25मिनट पूर्वी देशांतर के बीच स्थित है। इसकी अद्भुत स्थिति के कारण भारत में समृद्ध जैव विविधता पाई जाती है। यद्यपि भारत का क्षेत्र विश्व की कुल भूमि क्षेत्र का केवल 2.4 प्रतिशत है। लेकिन विश्व जैव विविधता प्रजातियों की कुल संख्या का लगभग 8% है। विश्व में विविध प्रजातियों की संख्या 17.5 करोड़ (यूएनईपी की 1995

के विश्व जैव विविधता के आकलन के अनुसार) विश्व की कुल प्रजातियों का 6 प्रतिशत भारत में पाए जाते हैं। 45000 पौधे विश्व की वनस्पति का लगभग 12 प्रतिशत शामिल प्रजातियाँ भारतीय जंगलों में पाई जाती हैं। भारत में विश्व के 12 जैव विविधता के आकर्षण के केंद्रों में से दो भारत में हैं। वे हैं : उत्तर - पूर्वी क्षेत्र और पश्चिमी घाट।

- जैव विविधता उच्च स्तर के देशज प्रजातियों का एक आकर्षण क्षेत्र हैं। ये वे प्रजातियाँ हैं जो एक निश्चित सीमित क्षेत्र में पाई जाती हैं।
- मेगा जैव विविधता : अलग पौधों और जानवरों की विभिन्न प्रजातियाँ जो कहीं और उपलब्ध नहीं हैं, का एक अद्भुत संयोजन हैं।

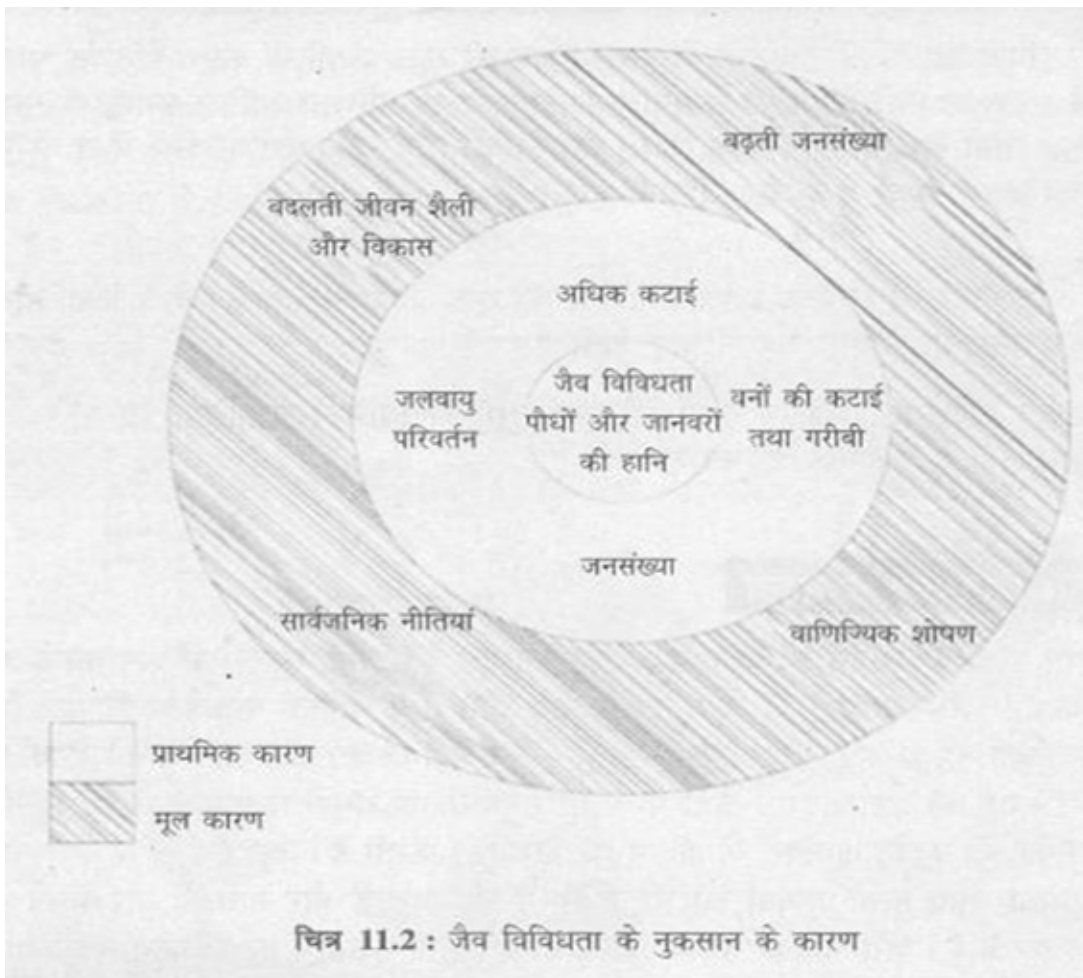
11.2 जैव विविधता के महत्व

जैव विविधता पृथ्वी पर जीवन के अस्तित्व के लिए आधार है। इसके महत्व को कम करके आँका नहीं जा सकता। विभिन्न प्रकार के जीव क्षेत्र में पाये जाने वाले भौतिक वातावरण में रहते हैं। ये एक पारिस्थितिकी तंत्र के रूप में अन्योन्याश्रित और अन्तर्संबंधित हैं। क्या आप जानते हैं कि पौधों को समान जलवायु की दशाओं वाले क्षेत्रों में अलग समुदायों या समूहों में पाये जाते हैं? किसी भी क्षेत्र में वनस्पति की प्रकृति जानवरों के जीवन को निर्धारित करती है। जब एक जगह के वनस्पति में बदलाव लाया जाता है तो जानवर को भी जीवन में भी बदलाव और साथ ही यह मानव जाति को प्रभावित करती है। परिस्थितिकी तंत्र में किसी भी घटक के नुकसान पर प्रतिकूल पारिस्थितिकी तंत्र के अन्य घटकों को प्रभावित करती है। हम पारिस्थितिकी तंत्र का एक अभिन्न भाग हैं। पेड़ काटने और जानवरों को मारने के कारण, मनुष्य पारिस्थितिकी असंतुलन के लिए जिम्मेदार हैं। पारिस्थितिकी तंत्र मनुष्य द्वारा कैसे प्रभावित होता है? समाचार पत्र और पत्रिकाओं से कुछ लेख एकत्रित कीजिए जिससे आपको पारिस्थितिकी तंत्र पर मानव प्रभाव को समझने में मदद मिलेगी। हमें जरूर समझना चाहिए कि सभी पौधों और जानवरों के एक क्षेत्र में अन्योन्याश्रित और उनके भौतिक वातावरण में अन्तर्संबंध हैं? इस पारिस्थितिकी तंत्र में मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं के लिए अत्यंत मूल्यवान है; वे निम्नलिखित हैं

- भोजन, पानी, फाइबर, ईंधन आदि को उपलब्ध कराना।
- जलवायु और रोग के कारण (उदाहरण के लिए लोगों को सर्दियों में सर्दी खांसी से और मानसून में पेट के संक्रमण में पीड़ित होना)।

11.2.1 जैव विविधता के कमी का कारण

बढ़ती आबादी और बदल रही जीवन शैली से प्राकृतिक संसाधनों का व्यापारिक दोहन करना जिम्मेदार कारण है। जैव विविधता के नुकसान में यह परिणाम है। परिणाम स्वरूप यह प्रकृति को योग्यता मानव अस्तित्व के लिए माल और सेवाओं के वितरण की क्षमता को प्रतिकूल प्रभाव डालती है। जैव विविधता की कमी से न केवल भौतिक बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक जीवन में भी ह्रास हो रहा है।



चित्र 11.2 : जैव विविधता के नुकसान के कारण

क्या आप जानते हैं

- संयुक्त राष्ट्र संघ वर्ष 2010 में जैव विविधता के अंतर्राष्ट्रीय वर्ष की घोषणा की थी।
- आई.यू.सी.एन. (प्रकृति के संरक्षण के लिए अंतर्राष्ट्रीय संघ) के अनुसार 2010 में 52,017 में से लगभग 18,788 प्रजातियों विलुप्त होने की सूचना दी है। संसार की 5490 स्तनधारियों की 78 विलुप्त हो गए हैं, 188 गंभीर खतरे में, 540 खतरे में और कमजोर हो गए हैं। एम्फीबिया भी विलुप्त होने के खतरों में हैं। संसार के कुल 6,285 में 1895 मौजूद प्रजातियों का सबसे अधिक समाप्त होने की धमकी दी है।
- अलग-अलग प्रजातियों के विलुप्त होने, प्राकृतिक निवास, भूमि उपयोग रूपांतरण, जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण और निम्नीकरण में ह्रास खतरनाक दर पर जारी है। क्या आपको लगता है कि विभिन्न प्रजातियों के विलुप्त होने के उपरोक्त कारणों का कोई हाथ है?

क्रियाकलाप 11.1

आप के क्षेत्र में पाए जाने वाले किन्हीं तीन पौधों, जानवरों और पक्षियों की प्रजातियों का वर्णन कीजिए और स्थानीय निवासियों के लिए उनके महत्व को बताइए। एक उदाहरण आपके लिए दिया गया है।

क्र.सं. पौधे विशेषताएं

क्र.सं. पशु/पक्षी विशेषताएं

1. यह हमें दवाई,
लकड़ी,
नीम ऑक्सीजन और
छाया प्रदान
करती है।

मरे हुए जीवों और कचरों से
पर्यावरण को मुक्त रखता है,
गिद्ध जिससे रोगों का प्रसार नहीं
होती है। कीट की संख्या को
नियंत्रित रखता है, जैसे- चूहा

2.

2.

3.

3.

4.

4.

पाठगत प्रश्न 11.1

1. जैव विविधता पृथ्वी पर जीवन के अस्तित्व के लिए आधार है। किसी दो कारणों से इस कथन की पुष्टि कीजिए।
2. 30 शब्दों में आकर्षण के केंद्र की व्याख्या कीजिए।

11.3 प्राकृतिक वनस्पति और वन्य जीव

हमारे पारिस्थितिकी तंत्र में, वनस्पति और वन्य जीवन मूल्यवान संसाधन हैं। हम सभी जानते हैं कि पौधे हमें लकड़ी प्रदान करते हैं। मानव और जानवरों को आश्रय देते हैं। ऑक्सीजन उत्पन्न करते हैं जो हमारी साँस लेने में मदद करती है। मिट्टी का कटाव रोकने और प्राकृतिक आपदाओं, जैसे बाढ़, तेज पवनें रोकने और भूमिगत पानी के भंडारण में मदद करने के लिए, हमें फल देना, गिरीदार फल, तारपीन का तेल, गोंद, औषधीय पौधे और कागज भी हमारे अध्ययन के लिए आवश्यक है। इन कुछ पौधों का असंख्य उपयोग होता है। वन्यजीव के अन्तर्गत पशु, पक्षी, कीड़े, सरीसृप के रूप में जलीय जीवन शामिल है। वे हमें दूध, मांस, खाल, और ऊन प्रदान करते हैं। मक्खियाँ हमें फूलों के परागण की सहायता से शहद प्रदान करती हैं और पारिस्थितिकी तंत्र में अपघटन के रूप में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। पक्षियों का भोजन कीड़े हैं और अपघटन रूप में अच्छी तरह से अपना कार्य करते हैं। अपने मृत पशुओं का भोजन करने की क्षमता के कारण गिद्ध एक मेहतर है और वातावरण की एक महत्वपूर्ण सफाई करने वाला माना जाता है। सभी जीव छोटे या बड़े, पारिस्थितिकी तंत्र में संतुलन बनाए रखने में अभिन्न हैं।

11.3.1 भारत में प्राकृतिक वनस्पति

संसार के किसी अन्य भागों के रूप में, भारत की प्राकृतिक वनस्पति का निर्धारण भी जलवायु, भौगोलिक, और मिट्टी कारकों द्वारा होता है। यदि हम चित्र 11.3 को देखें तो हम पाते हैं कि तापमान, वर्षा, और स्थलाकृतिक स्थितियों के कारकों के आधार पर, भारत की विविध वनस्पति

के वितरण नीचे संक्षेप में वर्णित है। घने प्राकृतिक वनस्पति उत्तर - पूर्वी क्षेत्र, पश्चिमी घाट और अंडमान निकोबार में पाया जाता है। उत्तरी मैदान और उत्तरी - पश्चिमी क्षेत्र में बहुत कम वनस्पति है। अधिकांश क्षेत्र पर खेती की जाती है। डेक्कन क्षेत्र पूर्ण रूप से काटेदार झाड़ियों और पर्णपाती जंगलों से भरा है। भारत की प्राकृतिक वनस्पति मोटे तौर पर निम्नलिखित वर्गों में विभाजित किया जा सकता है :

i) उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन

ii) उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन

iii) कँटीले वन

iv) ज्वारीय वन

v) हिमालय वन

जंगल भी मानव कृत होते हैं। यह शहरी क्षेत्रों में विकसित किया जा सकता है। हालांकि, इस पाठ में केवल प्राकृतिक वनों को ही प्राकृतिक वनस्पति के रूप में चर्चा करेंगे।

i) उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन

इस वन क्षेत्र में पूरे साल नम और गर्म जलवायु के कारण पेड़ हरे बने रहते हैं। इन पेड़ों की पत्तियाँ किसी विशेष मौसम में नहीं गिरती हैं। इसलिए, वे सदाबहार वन हैं। ये वन एक छोटी शुष्क ऋतु के साथ 200 सेमी से अधिक वर्षा वाले क्षेत्र में पाए जाते हैं। पेड़ 60 मीटर या अधिक ऊँचाई तक पहुँच जाते हैं। इन घने वनों में सभी प्रकार के मिश्रित वनस्पतियाँ पाई जाती हैं। इसके अन्तर्गत पेड़, झाड़ियों, लताएं जमीन पर फैलने वाले पौधे और फर्न जैसे बहुपरतीय संरचना वाले होते हैं। इसलिए, इन वनों का आर्थिक उपयोग स्वीकार्य नहीं है। पेड़ों की प्रजातियों की संख्या छोटे से क्षेत्र में बहुत बड़ी होती है। सुगन्धित लकड़ी, आबनूस, महोगनी, रबर, जैक लकड़ी और बांस आदि महत्वपूर्ण पेड़ हैं जो उष्ण सदाबहार वनों में पाया जाता है। भारत में, इस प्रकार के वन भारी वर्षा वाले क्षेत्रों में पाए जाते हैं जैसे पश्चिमी घाट, लक्षद्वीप, अंडमान और निकोबार के द्वीपों और असम के ऊपरी हिस्सों में। इन जंगलों की लकड़ी फर्नीचर, हस्तकला, आदि में प्रयोग किया जाता है। भूस्खलन और भूमिक्षरण को रोकने के लिए भी प्रयोग किया जाता है।

ii) उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन

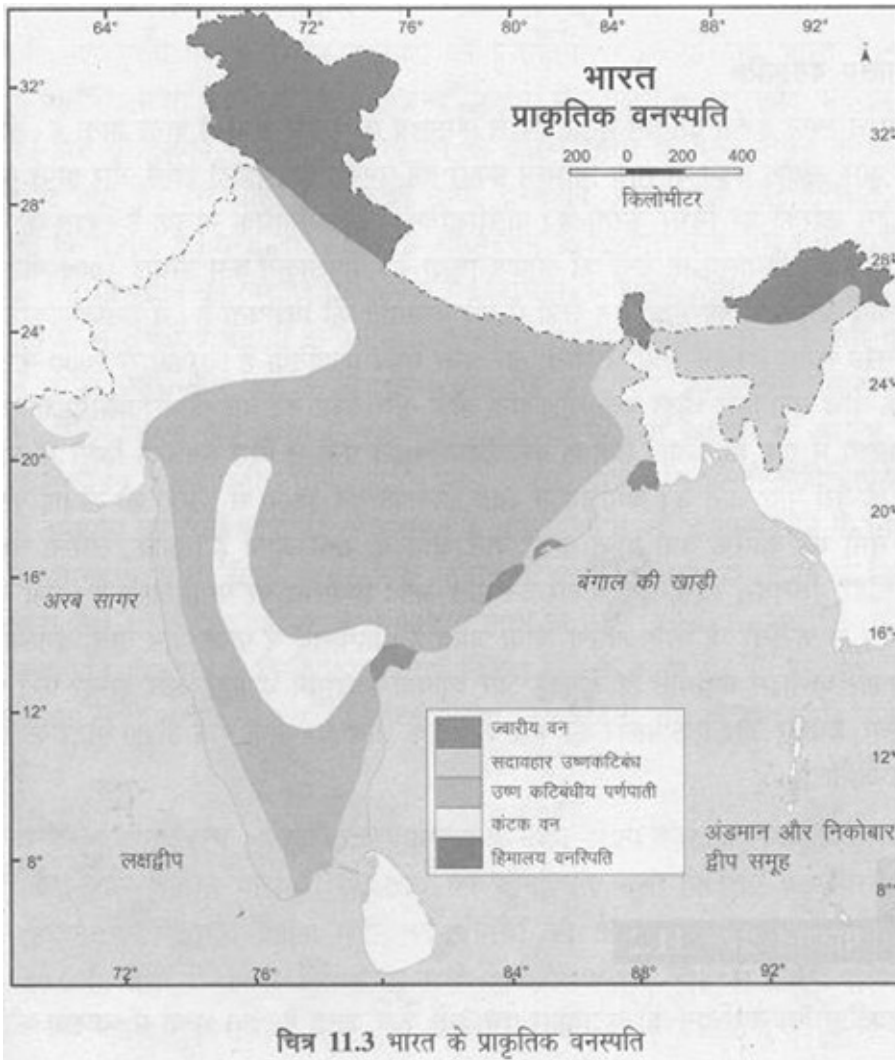
इन वनों के पेड़ अपने पत्तों को वर्ष में एक बार के गिराते हैं। यही कारण है कि उन्हें उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन कहा जाता है। ये वन भारत के सबसे बड़े क्षेत्र पर फैले हैं। ये वन 75 से 200 सेंटीमीटर वार्षिक वर्षा प्राप्त करने वाले क्षेत्रों में पाए जाते हैं। जहाँ तक इस प्रकार के वनों की भौतिक वितरण का संबंध है, वे डेक्कन के पठार, उत्तर - पूर्वी क्षेत्र, पश्चिमी घाट और पूर्वी तट के कुछ हिस्सों को छोड़कर पूरे देश में पाए जाते हैं। इन वनों को खेती के उद्देश्य के लिए मानव द्वारा व्यापक तौर पर उपयोग में लाया गया है। फिर भी प्राकृतिक वनस्पति को कुछ क्षेत्र हिमालय की तलहटी, प्रायद्वीपीय पठार और देश के मध्यवर्ती भाग के पर्वतीय क्षेत्रों में साथ पाए जाते हैं। वर्षा की उपलब्धता के आधार पर इन वनों को आर्द्र पर्णपाती और शुष्क पर्णपाती में विभाजित किया जाता है।

(क) आर्द्र पर्णपाती वन 100 से 200 सेमी. वर्षा प्राप्त करने वाले क्षेत्रों में पाए जाते हैं। देश के पूर्वी भागों, हिमालय की तलहटी, झारखंड, ओडिशा, छत्तीसगढ़, और पश्चिमी घाट के पूर्वी ढलानों के साथ पूर्वोत्तर राज्यों में मुख्य रूप से पाए जाते हैं। सागौन, बांस, साल, शीशम, चंदन, खैर, कुसुम, अर्जुन, महुआ, जामुन और शहतूत इन वनों के महत्वपूर्ण पेड़ हैं।

(ख) शुष्क पर्णपाती वन 75 से 100 सेंटीमीटर वर्षा प्राप्त करने वाले क्षेत्रों में फैले हुए हैं। वन प्रायद्वीपीय पठार और उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और बिहार के मैदानी क्षेत्रों के आंतरिक भागों में पाया जाता है। इस वनस्पति के पेड़-सागौन, साल, पीपल, और नीम किस्म की प्रजातियां हैं।

(iii) कैटीले वन

कैटीले वन 75 सेमी से कम वर्षा वाले क्षेत्रों में पाई जाती है। इनकी विशेषताएं कांटेदार पेड़ और झाड़ियां हैं। इस भाग की जलवायु मुख्य रूप से घने वनस्पति का समर्थन नहीं करती। वे मुख्य रूप से उत्तर-पश्चिमी भारत, गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और महाराष्ट्र के अर्द्ध शुष्क क्षेत्रों सहित प्रायद्वीपीय भारत के आंतरिक भागों



चित्र 11.3 भारत के प्राकृतिक वनस्पति

में पाया जाता है। इन वनों की वनस्पति व्यापक रूप से छोटे पेड़ों और झाड़ियों के रूप में गहरी जड़ों के साथ पाया जाता है। इन वनों की जड़ें जल संरक्षण में सहायक हैं। पत्तियां ज्यादातर मोटी और छोटे होने से वाष्पीकरण कम होता है। अकालिया, बबूल, कैकटी, खैर, खजूर, ताड़ के प्रकार के पेड़ सामान्यतः पाए जाते हैं।

(iv) ज्वारीय वन

नाम से ही साफ है, कि ये वन ज्वार और आर्द्रभूमि स्थलाकृति से प्रभावित दलदली ज्वार खाड़ियों में पाए जाते हैं। इन क्षेत्रों की विशेषताएं मिट्टी, गाद, और पानी धरातल पर जमे होते हैं। जड़ें और पेड़ की शाखाओं विशिष्ट अवधि के लिए जलमग्न रहते हैं। इन्हें मैंग्रोव वन कहा जाता है। मैंग्रोव व्यावहारिक रूप से मोटी पत्तियों के साथ सदाबहार रहते हैं। वनों के इस प्रकार के सुंदरवन, महानदी, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी नदियों के डेल्टा में और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में पाए जाते हैं। मैंग्रोव या सुंदरी वृक्ष सुंदरवन में अधिकांशतः पाया जाता है। जबकि ताड़, नारियल, क्योरा, और अगर अन्य महत्वपूर्ण ज्वारीय वनों की प्रजातियां हैं। यह दिलचस्प है कि इस प्रकार वन बड़े पैमाने पर वाणिज्यिक दोहन से दूर पाए जाते हैं। ये वन तटों के सहारे स्थित हैं। ये चक्रवात के खिलाफ संरक्षण प्रदान करते हैं।

(v) हिमालय वनस्पति

जैसा नाम से स्पष्ट है कि यह वन मुख्य रूप से हिमालय के पहाड़ी क्षेत्रों में पाया जाता है। तापमान के घटने और ऊंचाई बढ़ने के साथ विभिन्न प्रकार की वनस्पतियां पहाड़ी ढालों और प्राप्त सूर्य की किरणों जैसे कारकों पर निर्भर करता है। पारिस्थितिकी तंत्र अत्यधिक नाजुक है। हाल के दशकों में कई तरीकों से हिमालय के वनों का शोषण किया है। अपेक्षाकृत कम ऊंचाई 1000 मीटर तक गर्म जलवायु और वर्षा की मात्रा इन क्षेत्रों में घने वनस्पति की विशेषता है। ये वन उष्णकटिबंधीय वन की तरह लगते हैं। इन क्षेत्रों में साल और बांस मुख्य प्रजातियां हैं। 1000 से 2000 मीटर की ऊंचाई के बीच सदाबहार चौड़ी पत्ती वाले वन ओक और चेस्ट नेट पाई जानी वाली प्रजातियां हैं। पूर्वी हिमालय में एक ही ऊंचाई उपोष्ण कटिबंधीय पाइन वनों से घिरा है। एक हिस्से में आमतौर पर चीड़ के वृक्ष पाए जाते हैं। हिमालय में आर्द्र शीतोष्ण तन 1500 से 3500 की ऊंचाई पर 100 से 250 सेमी की वार्षिक वर्षा प्राप्त करने वाले क्षेत्रों में पाया जाता है। ओक, लॉरेल, चेस्टनेट, देवदार, सीडर, सिल्वर, स्प्रूस, एक प्रकार का फल आदि हिमालय पर पाया जाता है। यहाँ के वन व्यापक रूप से फर्नीचर के लिए शोषण किया जाता है। हिमालय में पायी जाने वाली वनस्पति का अंतिम प्रकार एल्पाइन वनस्पति है, जो बड़े और व्यापक उच्चभूमि चरागाह और दूर-दूर फैले पाइन, बर्च, सिल्वर, देवदार और एक प्रकार का फल के पेड़ के साथ 3000 के बीच 3800 मीटर की ऊंचाई पर पाया जाता है।

1. उष्णकटिबंधीय वर्षा वन को सदाबहार वन क्यों कहा जाता है? 30 शब्दों में व्याख्या कीजिए ।

2. कारण दीजिए

(क) हाल के वर्षों में पूर्वी तट के साथ ज्वारीय वन क्षेत्रों में चक्रवात के दौरान गंभीर विनाश हुआ है क्योंकि

(ख) हिमालय वन उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन की तुलना में अधिक आर्थिक शोषण हुआ है। क्योंकि

11.3.2 भारत में वन्यजीव

आप पहले के पाठों में अध्ययन कर चुके हैं कि अपनी अनोखी भौगोलिक स्थिति के कारण, भारत में वन्य जीवन समृद्ध है। भारतीय वन्यजीव एक महान प्राकृतिक विरासत है। यह अनुमान है कि सभी ज्ञात पृथ्वी पर पौधे और जानवरों की प्रजातियों में 80 प्रतिशत भारत में पाए जाते हैं। कई पौधे संश्लेषित पदार्थ मानव और अन्य जानवरों में स्वास्थ्य के रखरखाव के लिए उपयोगी होते हैं। हाल के दशकों में, मानव अतिक्रमण के कारण भारत के वन्य जीवन के लिए खतरा उत्पन्न हो गया है। इस संदर्भ में, राष्ट्रीय पार्क, वन्यजीव अभयारण्यों और संरक्षित क्षेत्रों को विकसित किया गया है। वन्य जीवन संरक्षण अधिनियम 1972 द्वारा वन्य जीवन के संरक्षण प्रदान करने के लिए प्रावधान का विस्तार किया गया है। विभिन्न कार्यक्रमों के तहत हमारे देश में जैविक विविधता के संरक्षण एवं बचावों के प्रयास किए जा रहे हैं। भारत में प्राकृतिक निवास के विशाल क्षेत्रों में संरक्षित पौधे और पक्षी के लिए 551 वन्यजीव अभयारण्य, 96 राष्ट्रीय उद्यान, 25 झीलों और 15 जैव आरक्षित क्षेत्र भारत के लगभग सभी राज्यों में फैला है। इस के अलावा, यहाँ 33 बोटनिकल गार्डन, 275 प्राणी उद्यानों, हिरण पार्क, सफारी पार्क, एक्वारिया आदि अपने संबंधित क्षेत्रों में लुप्तप्राय वन्यजीव प्रजातियों के संरक्षण के बारे में लोगों को जानकारी देने के लिए बनाया गया है। भारत में, वन्य जीवन के प्राकृतिक निवास के परभावी संरक्षण के उद्देश्य के लिए विशेष परियोजना जैसे 1973 बाघ परियोजना, 1992 में हाथी के लिए विशेष योजनाएं शुरू की गई हैं। ये जानना अति महत्वपूर्ण है कि कुछ प्रजातियां विलुप्त होने के कगार पर हैं। इसलिए इन प्रयासों की सफलता तभी सम्भव है जब हर भारतीय जैव - विविधता संरक्षण में अपनी भूमिका अदा करे।

(क) वन्यजीव अभयारण्य : वन्यजीव अभयारण्यों के मुख्य उद्देश्य वन्य जीवन की व्यवहार्य आबादी और अपने वांछित वास के रखरखाव को सुनिश्चित करने के लिए है। भारत वन्यजीव अभयारण्यों, लगभग 2000 पक्षी, स्तनधारियों की 3500 प्रजातियां, कीड़ों की लगभग 30,000, पौधों के 15000 किस्मों का घर है। इन अभयारण्यों और वन क्षेत्र में एशियाई हाथी, रॉयल बंगाल टाइगर, हिम तेंदुए और साइबेरियन क्रेन की तरह कई लुप्तप्राय जानवरों और

पक्षियों की प्रजातियां निवास करती हैं। भारत के वन्यजीव अभयारण्य कई जानवरों की कुछ विशेष प्रजातियों के लिए प्रसिद्ध हैं। उदाहरण के लिए, असम में काजीरंगा भारतीय गैंडा लिए जाना जाता है, जबकि केरल में पेरियार उसके हाथियों के लिए प्रसिद्ध है। भारत में 551 वन्यजीव अभयारण्य हैं। भारत भी कई प्रवासी पशुओं और ओलिव रिडले, समुद्री कछुए, साइबेरियन क्रैन और राजहंस की तरह पक्षियों का घर है।

(ख) नेशनल पार्क : राष्ट्रीय पार्कों की स्थापना का उद्देश्य प्राकृतिक और ऐतिहासिक वस्तुओं और वन्य जीवन संरक्षण है जिसमें वन्य जीवों को खुला छोड़ दिया जाय और भावी पीढ़ी द्वारा किसी भी प्रकार का नुकसान न पहुँचाया जाय। 1970 में भारत में केवल पांच राष्ट्रीय उद्यान थे। 1972 में, भारत वन्यजीव संरक्षण अधिनियम विलुप्त प्रजातियों के संरक्षण देने के लिए की गयी थी। इस अधिनियम के दो मुख्य उद्देश्य हैं, लुप्तप्राय प्रजातियों को अधिनियम में सूचीबद्ध, सुरक्षा प्रदान करना और राष्ट्रीय पार्क के रूप में वर्गीकृत देश के संरक्षण के क्षेत्र में कानूनी समर्थन प्रदान करना।

तालिका 11.1 राष्ट्रीय पार्कों में पाए जाने वाले दुर्लभ प्रजाति

राष्ट्रीय पार्क (वन्य जीव अभयारण्य)	दुर्लभ प्रजाति के वन्य जीव संरक्षण
1. दाचीग्राम (जम्मू और कश्मीर)	हंगुल, मस्क हिरण
2. कावेरट (उत्तराखंड)	बाघ, हाथी, पैंथर, हिरण
3. दुधवा (उ.प्र.)	बाघ, हाथी
4. कान्हा (म.प्र.)	बाघ, बारासिंघा
5. बांदीपुर (कर्नाटक)	बाघ और बारासिंघा
6. परियार (केरल)	हाथी
7. भरतपुर (राजस्थान)	विभिन्न प्रकार के जलीय पक्षी
8. मरुस्थलीय पार्क (राजस्थान)	मरुस्थलीय भेड़, लोमड़ी
9. गिर (गुजरात)	शेर, पैंथर, चीतल
10. काजीरंगा (असम)	गैंडा, जंगली भैंसे
11. मानस (असम)	हाथी, गैंडे, जंगली भैंसे
12. मिदफा (अरुणाचल प्रदेश)	बाघ, गौड़, जंगली भैंसे

13. सुन्दरवन (पश्चिमी बंगाल)

रायल बंगाल शेर

अंतर्राष्ट्रीय संधि है। संधि का प्राथमिक उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय महत्व के आदर्भूमियाँ की सूची तैयार करना और संसार की आदर्भूमियाँ के संरक्षण की अंतिम लक्ष्य के साथ बुद्धिमत्तापूर्वक उपयोग को बढ़ावा देना है। विभिन्न विधियों द्वारा आदर्भूमि क्षेत्रों के अधिकांश भाग को उपयोग सीमित करना और जनता को शिक्षित करके भ्रम दूर करता है कि आदर्भूमियाँ बरबाद भूमि नहीं है।

क्या आप जानते हैं

तालिका 11.2 : भारत की आदर्भूमियां

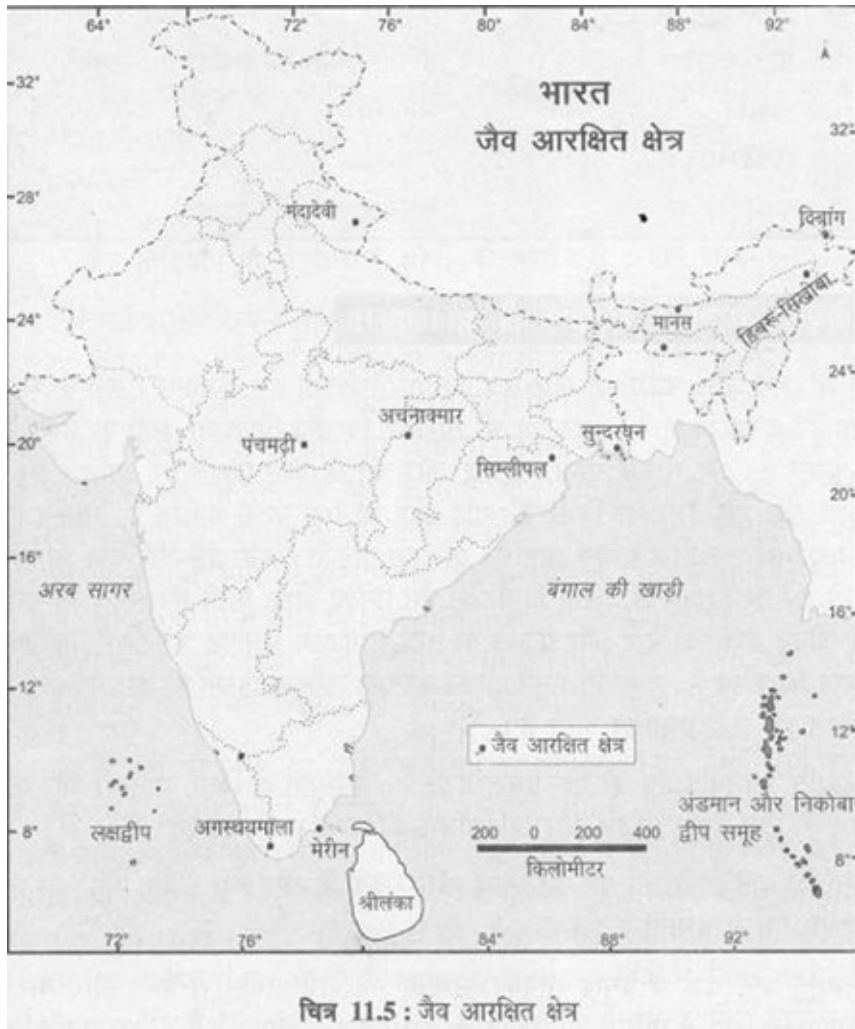
क्र.सं. नाम	राज्य	क्षेत्रफल (प्रतिवर्ग किमी.)
1. अष्टामुडी	केरल	614
2. भीतरकणिका मैंग्रोव	ओडिशा	650
3. चिल्का झील	ओडिशा	1165
4. पूर्वी आदर्भूमियां	कोलकाता पश्चिम बंगाल	125
5. कोल्लेरू झील	आंध्र प्रदेश	901
6. लोकतक झील	मणिपुर	266
7. प्वांट कालीमर	तमिलनाडु	385
8. पोंग डैम झील	हिमाचल प्रदेश	157
9. सांभर झील	राजस्थान	240
10. सोमोरीरी	जम्मू और कश्मीर	120
11. ऊपरी गंगा नहर	उत्तर प्रदेश	266

12.	विबंनाद कोल आदर्भूमि केरल	1512
13.	बुलर झील	जम्मू और कश्मीर 189
14.	हारेक झील	पंजाब 41
15.	भोज आदर्भूमि	मध्य प्रदेश 32

(घ) जैव आरक्षित क्षेत्र

जीवमंडल सुरक्षा बहुउद्देशीय संरक्षित क्षेत्रों के पारितंत्र प्रतिनिधि में आनुवंशिक विविधता को संरक्षित कर रहे हैं। भारत सरकार ने 15 जीवमंडल सुरक्षा स्थापित की है। जो कि एक बड़े प्राकृतिक निवास स्थान (एक राष्ट्रीय पार्क या वन्यजीव अभयारण्य से), और प्रायः एक या एक से अधिक राष्ट्रीय पार्क और/या अन्तस्थ क्षेत्र है और वे कुछ आर्थिक उपयोग करने के लिए खुले रहते हैं। संरक्षण न केवल संरक्षित क्षेत्र की वनस्पतियों और जानवरों के लिए प्रदान किया जाता है, बल्कि यह भी

मानव समुदायों के लिए भी है जो कि इन क्षेत्रों में रहते हैं और उनके अनुसार जीवन बिताते हैं। इन्हें स्थापित करने के मुख्य उद्देश्य हैं (क) पौधों, जानवरों और सूक्ष्म जीवों के जीवन की विविधता और अखंडता संरक्षण, (ख) क्षेत्रों में पर्यावरण के अनुकूल टिकाऊ जीवन को बढ़ावा देने के लिए, और (ग) पारिस्थितिकी संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए, अनुसंधान, शिक्षा, जागरूकता, और ऐसे क्षेत्रों में जीवन जीने का प्रशिक्षण।



चित्र 11.5 : जैव आरक्षित क्षेत्र

तालिका 11.3 : जीवमंडल आरक्षित क्षेत्र

क्रम नाम	राज्य
1. नीलगिरी	तमिलनाडु, केरल तथा कर्नाटक
2. मन्नार की खाड़ी	तमिलनाडु
3. सुन्दरवन	पश्चिम बंगाल
4. नमदा देवी	उत्तराखंड

5. दिहांग-दिबांग अरूणाचल प्रदेश

6. पंचमढ़ी	मध्य प्रदेश
7. सिम्लीपल	ओडिशा
8. अचनाकुमार अमरकंटक	मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़
9. मानस	असम
10. कंचनजंघा	सिक्किम
11. अगस्थयमाला	केरल
12. ग्रेट निकोबार	अंडमान और निकोबार द्वीप समूह
13. नोकरेक	मेघालय
14. डिब्रू-सिखोबा	असम
15. कच्छ का रन	गुजरात

खंड 11.1 में हमने जीन, प्रजातियों और क्षेत्र की पारिस्थितिकी तंत्र की कुल संख्या के रूप में जैव-विविधता का वर्णन किया है। हमने यह भी सीखा है कि जैव विविधता पृथ्वी पर हमारे अस्तित्व के लिए आधार है। हम भोजन, पानी, आश्रय, और तंतु के लिए प्रकृति पर आश्रित हैं। ये सभी अन्तर्संबंधित और एक-दूसरे पर निर्भर हैं। यदि कोई भी एक घटक बाधित है, तो जैव विविधता के अन्य घटकों पर एकाधिक प्रभाव होता है। यदि हम प्राकृतिक वनस्पति और वन्य जीवन संरक्षण चाहते हैं तो हमें उसी संदर्भ में देखना होगा जैसे हम उनका दोहन करते हैं। समय आ गया है कि हम अपने जीवन शैली को देखें और प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करें। यह प्रकृति के साथ सद्भाव लाने का समय है। वनस्पति हमारे जीवन का एक अभिन्न हिस्सा है। हम सब देखें कि पौधे और वनस्पति हमें कैसे प्रभावित करते हैं।

(क) वनस्पति जैव विविधता का एक प्रमुख घटक है। वनस्पति के बिना, जानवरों और कुछ सूक्ष्म जीव के लिए वास, भोजन और ऑक्सीजन की कमी से मर जाएंगे।

(ख) पौधों की जड़ें मिट्टी तंत्र को एक साथ बाँधे रखती हैं और हवा में उड़ रही धूल एवं पानी द्वारा कटाव से बचाती हैं।

(ग) वनस्पति जल चक्र में प्रमुख भूमिका निभाती है। पौधे जमीन से पानी खींच कर हवा में जलवाष्प के रूप में पत्तियों के माध्यम से वायुमण्डल में छोड़ देते हैं। अतः वनस्पति जमीन और वातावरण के बीच एक कड़ी प्रदान करते हैं।

(घ) वनस्पति एक प्राकृतिक बाधा है और धरातल की सतह पर पानी के प्रवाह को कम कर देती है।

(ङ) प्रकाश संश्लेषण के माध्यम से, वनस्पति हवा में मौजूद कार्बन डाइऑक्साइड को दूर करता है और यह ऑक्सीजन प्रदान करता है। हवा में विद्यमान अन्य प्रदूषक भी वनस्पति द्वारा सोख लिया जाता है।

(च) ग्रीनहाउस प्रभाव में वनस्पति एक स्थिर व संतुलन के रूप में कार्य करता है। उसके विपरीत वनस्पति के साफ करने से कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा अधिक निकलती है और यही ग्रीनहाउस गैस का मुख्य कारण है।

(छ) वन्यजीव संतुलित भोजन को बनाए रखने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये भूमिका पारिस्थितिकी संतुलन को बनाए रखने में मदद करती है। इसके परिणामस्वरूप जैव विविधता भी संतुलित रहती है।

(ज) अदृश्य सूक्ष्म जीव सफाई करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मिट्टी की उर्वरता में सुधार और विशाल औषधीय महत्व के हैं।

अब आप महसूस कर सकते हैं कि जैव विविधता के संरक्षण न केवल दुनिया अथवा राष्ट्रीय विरासत के लिए बल्कि संसार के किसी भी भाग के स्थानीय लोगों के अस्तित्व के लिए अति महत्व का है। हमें संसार के एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में सकारात्मक भूमिका को समझने की जरूरत है। यह जैव विविधता के संरक्षण में हमारा योगदान होगा।

जैव विविधता के संरक्षण में लोगों की भागीदारी : एक अध्ययन

पच्चीस वर्षीय राजेन्द्र सिंह अपनी नौकरी छोड़कर स्वयं को ग्रामीण विकास के लिए प्रतिबद्ध थे। चार साथियों के साथ वह एक बस में चढ़े और अलवर के निकट एक उजाड़ गांव के लिए चल पड़े। इस बार अलवर में खनिक और संग्रह करने वालों के लिए काम करने की अनुमति दे दी गई थी। वे लोग अपने जंगलों का नाश कर दिया था। इससे नदियां और नाले सूख गए। उनके खेतों में खतरनाक बाढ़ मानसून की वर्षा के साथ आने लगी। इन आपदाओं से अत्यधिक, ग्रामीण अपने जोहड़ों को छोड़ दिया और उन्हें शहरों में काम के लिए स्थानांतरित कर दिया गया। महिलाओं ने शुष्क भूमि पर हल्कीफुल्की फसले उगाई और कई किलोमीटर की दूरी पर दिन में पानी खोजने के लिए जाती थी। यह अलवर था जब राजेन्द्र सिंह पहली बार 1985 में पहुंचे सबसे पहले वे खानाबदोश जनजातियों के साथ काम किया है और ग्रामीण क्षेत्रों में प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन के मुद्दों को समझने की कोशिश की।

स्थानीय गांव के बड़ों की सलाह पर उन्होंने ग्रामीणों को संगठित किया। उन्हें पुराने जोहड़ की मरम्मत और उनकी गहराई बढ़ाने के तरीकों की जानकारी दी। वे ग्राम स्वावलंबन के लिए एक जागरूकता अभियान शुरू किए। यह हर वर्ष गर्मियों के महीनों में चालीस दिन तक सैकड़ों गांवों में आयोजित किया जाता है। इस अभियान में, स्वावलंबी ग्राम, मृदा संरक्षण, उन्नत बीज, हर्बल दवा का संग्रह और श्रमदान मुख्य गतिविधियां थी। सिंह ने इन सभी गतिविधियों को समन्वित ग्रामीण पारंपरिक अनुष्ठानों के चक्र के साथ शुरू किया। 1058 गांवों में फैले 6500 वर्ग किमी. क्षेत्रफल में 8600 जोहड़ों (जल संचयन संरचनाओं) के निर्माण में एक उत्प्रेरित भूमिका निभाई। इन में से 3500 जोहड़ टीबीएस द्वारा बनाया गया था। और इन समुदाय द्वारा बनाए गए जोहड़ों की सफलता को देखते हुए शेष 5100 संरचनाओं का निर्माण करने के लिए आम जनता को प्रेरित किया।

अपने दृढ़ संकल्प, दूर दृष्टि, कड़ी मेहनत और समर्पण के माध्यम से, वह अरावली पहाड़ियों के 1058 गांवों में लोगों के जीवन को बदल दिया है। वह शुष्क भूमि को कृषि योग्य भूमि में बदल दिया है। घने वृक्षारोपण के द्वारा बड़े भाग को जल प्रबंधन द्वारा एक वन्य जीव अभयारण्य में बदल गया है। सूखी नदियों में साल भर जल का प्रवाह शुरू हो गया है। जलीय जीवन और पक्षी अभयारण्य विकसित हुई है। पशु जीवन जीवंत बन गया है। रेगिस्तान में पशु जीवन सभी ओर मुस्कुराते चेहरे के साथ जीवंत बन गया।

क्या आप जानते हैं

यहां हम प्रकृति को बचाने के लिए बहुत कुछ कर सकते हैं

सोचिये क्या हम प्रकृति से लेने के स्थान पर कुछ भी वापस देते हैं? अगर हम एक पेड़ काटे तो, हमें दो छोटे पौधे लगाने चाहिए। केवल उन उत्पादों को खरीदें जो जानवरों पर परीक्षण नहीं किया गया हो। कागज बर्बाद मत करें। कागज का उपयोग पुनर्नवीनीकरण करने की कोशिश कीजिए।

क्रियाकलाप 11.2

यदि आपके राज्य में कोई भी आदर्भूमि है तो आपके निवास से इसकी दूरी पता लगाइए ।

1. कोष्ठक में दिए गए विकल्प से रिक्त स्थान को सही ढंग से भरें।

(क) वर्तमान में ——— वन्य जीवन अभयारण्य हैं (551/441)

(ख) ——— असम में भारतीय गैंडों के लिए जाना जाता है। (मानस/काजीरंगा)

(ग) हरेक आदर्भूमि ——— में स्थित है (पंजाब/हिमाचल प्रदेश)

(घ) ——— जैव आरक्षित क्षेत्र तमिलनाडु राज्य में है। (मन्नार की खाड़ी/पिचमढ़ी)

2. आदर्भूमि को परिभाषित करें।

3. आप अपने आसपास के जैव विविधता की रक्षा करने के लिए किसी भी तीन प्रयासों की सूची बनाइए।

(i) _____

(ii) _____

(iii) _____

आपने क्या सीखा

- हम भाग्यशाली हैं जो हम इस तरह के महान जैव विविधता वाले ग्रह पर रहते हैं।
- प्रकृति का एक अभिन्न हिस्सा होने के नाते, हमें इसे बचाना महत्वपूर्ण है।
- दुनिया भर में लोगों को इस अपूरणीय प्राकृतिक धन और जैव विविधता की रक्षा के लिए काम कर रहे हैं।
- प्राकृतिक वनस्पति और वन्य जीवन, जैव विविधता के महत्वपूर्ण पहलू हैं।

- भारत 12 समृद्ध वन्य जीव विरासत और प्राकृतिक वनस्पति की बड़ी श्रृंखला वाले संसार के मेगा जैव विविधता के देशों में से एक है।
- यह वास्तव में महत्वपूर्ण खतरों और प्राकृतिक संपदा के संरक्षण की आवश्यकता के बारे में जानते हैं।

पाठान्त प्रश्न

1. जैव विविधता को परिभाषित कीजिए। प्राकृतिक वनस्पति, वन्य जीवन और सूक्ष्म जीवों के बीच आपसी संबंधों की व्याख्या कीजिए।
2. भारत में उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन की विशेषताओं और वितरण का संक्षेप में वर्णन कीजिए।
3. भारत में नम पर्णपाती वन और शुष्क पर्णपाती वनों में अंतर किन्हीं दो बिन्दुओं में कीजिए।
4. भारत में जैव आरक्षित क्षेत्र की स्थापना के लिए तीन उद्देश्य बताइए।
5. जैव विविधता के नुकसान का मुख्य कारण क्या है? किन्हीं चार कारणों को बताइए।
6. उपयुक्त कारणों के साथ प्राकृतिक वनस्पति, वन्य जीवन और सूक्ष्मजीवों के संरक्षण के लिए आवश्यकता की पुष्टि कीजिए।
7. नीचे दी गयी तालिका का अध्ययन कीजिए और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

राष्ट्रीय उद्यान/ वन्य जीवन अभ्यारण्य

1. काजीरंगा
2. मानस
3. पेरियार
4. कार्बेट
5. दाचीग्राम
6. जंगली भैंस
7. तेंदुआ

संरक्षित जंगली जानवर

1. बाघ
2. हाथी
3. कस्तूरी हिरण
4. शेर
5. गैंडा

(क) जानवर के नाम का मिलान कीजिए कि जिस राष्ट्रीय पार्क में उनकी रक्षा हो रही है।

(ख) उन जानवरों के नाम में घेरा लगाइए जिनकी किसी भी पार्क में रक्षा नहीं हो रही है।

(ग) जिस पशु को एक से अधिक राष्ट्रीय उद्यान में संरक्षित रखा गया है उनका नाम लिखिए।

8. चित्र संख्या 11.3 से संबंधित प्रश्न

(क) अपने राज्य में वनस्पति के प्रकार का पता लगाइए।

(ख) किस क्षेत्र में कांटेदार वनस्पतियां हैं?

(ग) किन क्षेत्रों में ज्वारीय वन है और वे उन क्षेत्रों को क्यों प्रतिबंधित किया गया है?

11.1

(क) जैव विविधता पृथ्वी पर जीवन के अस्तित्व के लिए आधार है क्योंकि यह जीवन के विभिन्न पहलुओं के लिए अति महत्वपूर्ण है जो भोजन, पानी, फाइबर, ईंधन आदि सम्मिलित है और जलवायु और रोगों को नियंत्रित करता है।

(ख) जैव विविधता उच्चस्तर के देशज प्रजातियों का एक आर्कषण क्षेत्र है। ये प्रजातियां एक निश्चित क्षेत्र में पाई जाती हैं।

11.2

1. इन वनों के सभी पेड़ हमेशा वर्ष भर हरे भरे रहते हैं। इस क्षेत्र की जलवायु वर्ष भर गर्म और आर्द्र रहती है। पेड़ों के पत्तों किसी विशेष मौसम में झड़ते नहीं हैं। इसलिए वे सदाबहार वन कहलाते हैं।

2. पूर्वी तट के साथ ज्वारीय वन चक्रवात से संरक्षण प्रदान करते हैं। लेकिन हाल ही के वर्षों में इन वनों की बड़े पैमाने पर कटाई के कारण इन क्षेत्रों में चक्रवातों का सामना करना पड़ा जिससे गंभीर विनाश का सामना करना पड़ा।

3. उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन में सभी प्रकार के घने और मिश्रित वनस्पति पाई जाती है और इसलिए, उनका आर्थिक शोषण हो रहा है जबकि हिमालयीय वनस्पति प्रजातियों में कम घने और अस्थिर वाले वन में पाये जाते हैं।

11.3

1. क) 551

ख) काजीरंगा

ग) पंजाब

घ) मन्नार की खाड़ी

2. आर्द्रभूमि एक ऐसा भूमि क्षेत्र है जिसकी मिट्टी नमी के साथ या तो स्थायी रूप से या मौसम संतृप्त है। ऐसे क्षेत्रों में भी पानी के उथले तालाब द्वारा आंशिक रूप से या पूरी तरह से घिरा रहता है।

3. आप अपने आसपास की जैव विविधता की रक्षा कर सकते हैं। कुछ प्रयास इस प्रकार हैं

(क) पेड़ के काटने पर रोक

(ख) वृक्षारोपण

(ग) सभी जानवरों की रक्षा

(घ) घायल पक्षियों या पशुओं के लिए अस्पतालों की स्थापना

(ङ) कचरा को न फेंकना और

(च) पर्यावरण प्रदूषण को रोकना।

12. भारत में कृषि

पिछले पाठों में हमने भारत के भूआकृति, जलवायु और प्राकृतिक वनस्पति का अध्ययन किया है। अब, हम कृषि के बारे में अध्ययन करेंगे जो भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। भारत में लगभग 70% लोग कृषि से अपनी आजीविका चलाते हैं। कृषि अभी भी हमारे देश में अधिकांश लोगों को आजीविका प्रदान करती है। यह मनुष्य और अन्य जीवों की बुनियादी जरूरत को पूरा करती है। यह कई कृषि आधारित उद्योगों के लिए कच्चे माल का महत्वपूर्ण स्रोत है। भारत की भौगोलिक स्थिति कृषि के लिए अद्वितीय है क्योंकि यह बहुत अनुकूल परिस्थितियों प्रदान करता है। ये मैदानी क्षेत्र, उपजाऊ मिट्टी, लंबा फसल वर्धन काल और जलवायु की विविध परिस्थितियाँ आदि। अद्वितीय कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए भारत लगातार विज्ञान और प्रौद्योगिकी के द्वारा नवीनतम प्रयास कर रहा है।

इस पाठ में हम खेती के विभिन्न प्रकार और फसल प्रारूप के बारे में चर्चा करेंगे और विभिन्न भौगोलिक कारकों के साथ उनके संबंध स्थापित करेंगे। इस पाठ में हम कुछ प्रमुख मुद्दों और चुनौतियों का भी विवेचन करेंगे जिसे भारतीय कृषि को सामना करना पड़ता है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- भारत में खेती की विभिन्न प्रकार की व्याख्या कर सकेंगे;
- भारतीय कृषि की मुख्य विशेषताओं का वर्णन कर सकेंगे;
- भारत में उगाई जाने वाली प्रमुख फसलों एवं उनकी उपयोगिता की सूची बना सकेंगे;
- फसलों को मिट्टी के प्रकार और जलवायु परिस्थितियों के साथ संबंध स्थापित करेंगे;
- भारत के रेखा-मानचित्र पर प्रमुख फसल उत्पादन क्षेत्रों को दर्शा सकेंगे; और
- भारतीय कृषि में किसानों को आ रही चुनौतियों का विश्लेषण कर सकेंगे ।

12.1 भारत में खेती के प्रकार

आपको पता है कि भारत स्थलाकृति विविधताओं का देश है। आपने पहले से ही भारत के भूआकृति पाठ में इसके बारे में सीखा है। हिमालय पर्वत श्रृंखला भारत के पश्चिम में जम्मू-कश्मीर से,

उत्तर - पूर्व में अरुणाचल प्रदेश तक है। पूर्वी घाट और पश्चिमी घाट के रूप में पहाड़ी श्रृंखला भी है। क्या आप जानते हैं कि भारत का सिंधु-गंगा मैदान दुनिया की सबसे बड़े मैदानी क्षेत्रों में से एक है? भारत के मध्य भाग में पठार क्षेत्र का प्रभुत्व है। भूआकृति में विविधता के अतिरिक्त भारत में जलवायु और मृदा में भी विविधता है। भारत में भौतिक विविधता के साथ-साथ अन्य कारक जैसे सिंचाई की उपलब्धता, मशीनरी का उपयोग, आधुनिक कृषि निवेश तथा बीजों का उच्च उपज किस्में (HYV), कीटनाशक आदि का विविध खेती पद्धति के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। खेती के कुछ प्रकारों की चर्चा निम्न है :

1. निर्वाह और वाणिज्यिक खेती : भारत के अधिकांश किसान निर्वाह खेती करते हैं। इसका मतलब यह हुआ कि खुद के उपभोग के लिए खेती। दूसरे शब्दों में, पूरे उत्पादन का बड़ा हिस्सा किसानों और उनके परिवार द्वारा उपभोग किया जाता है और बाजार में बेचने के अधिशेष नहीं होता है। इस प्रकार की खेती में, जमीन के जोत छोटे और खंडित हैं। खेती तकनीक आदिम और सरल किस्म के हैं। दूसरे शब्दों में आधुनिक उपकरण जैसे ट्रैक्टर एवं खेती निवेश तथा रासायनिक उर्वरकों का पूर्णतः अभाव है। इस प्रकार की खेती में किसान ज्यादातर अनाज के साथ तेलहन, दाल और सब्जियां उगाती हैं।

वाणिज्यिक खेती निर्वाह खेती के विपरीत है। इस मामले में, उत्पादन का अधिकतर भाग धन प्राप्ति के लिए बाजार में बेचा जाता है। इस प्रणाली में, किसान को सिंचाई, रासायनिक उर्वरक, कीटनाशक और बीज की उच्च उपज वाली किस्मों का उपयोग करता है, भारत के विभिन्न भागों में उगाई जाने वाली फसलों में कपास, जूट, गन्ना, मूंगफली आदि हैं। हरियाणा में चावल की खेती मुख्य रूप से व्यावसायिक उद्देश्य के लिए है क्योंकि इस क्षेत्र के लोगों का मुख्य भोजन गेहूं है। तथापि भारत के पूर्वी और उत्तर-पूर्वी राज्यों में चावल की खेती निर्वाह प्रकार की है जो बड़े पैमाने पर की जाती है।

2. गहन और विस्तृत खेती : खेती के इन दो प्रकारों के बीच बुनियादी अंतर उत्पादन की राशि के प्रति इकाई भूमि है। संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, और पूर्व सोवियत संघ के समशीतोष्ण क्षेत्रों की साथ तुलना में, भारत विस्तृत खेती अभ्यास नहीं करता है। जब हम खेती के लिए देश के बड़े क्षेत्र का उपयोग करें तो हम इसे विस्तृत खेती कहते हैं। यहाँ बड़ा क्षेत्र होने के कारण कुल उत्पादन ज्यादा हो सकता है परन्तु प्रति इकाई भूमि उत्पादन कम होता है। व्यापक खेती भारत में पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में देखी जा सकती है। गहन खेती में प्रति इकाई भूमि से उत्पादन ज्यादा अंकित किया जाता है। जापान में गहन खेती का सबसे अच्छा उदाहरण है, जहाँ खेती के लिए भूमि की उपलब्धता बहुत सीमित है। इसी प्रकार की स्थिति भारत के केरल राज्य में देखी जाती है।

3. वृक्षारोपण खेती : बागान खेती एक कृत्रिम और स्थापित प्रकार है। यह एक बागान है जहाँ एक ही नकदी फसल की बिक्री के लिए उगाया जाता है। इस प्रकार की कृषि में एक ही प्रकार के नगदी फसल का उगाना एवं प्रसंस्करण सन्निहित होता है जिसे बेचने के लिए किया जाता है। चाय, कॉफी, रबर, केला, और मसाले वृक्षारोपण फसलों के उदाहरण हैं। इन फसलों में से अधिकांश भारत में 19 वीं सदी में अंग्रेजों द्वारा शुरू किए गए थे।

4. मिश्रित खेती : यह एक स्थिति है, जिसमें फसलों को उगाना और पशुपालन दोनों साथ-साथ किया जाता है। यहाँ मिश्रित खेती में लगे किसान आर्थिक रूप से दूसरों की तुलना में बेहतर

हैं। सभी वर्गीकरण खेती की प्रकृति और: उसके उद्देश्य पर आधारित हैं। यह कभी-कभी अंशच्छागिल हो सकता है। उदाहरण के लिए केले की खेती एक बागान प्रकार की है। यह व्यावसायिक खेती के रूप में भी वर्गीकृत किया जा सकता है।

क्या आप जानते हैं

हरित क्रांति : भारत में यह कृषि वृद्धि के लिए एक प्रमुख तकनीकी सफलता पर आधारित है (i) अधिक उपज देने वाली किस्मों के सुधरे के बीज, (ii) सिंचाई के लिए पानी की पर्याप्त और आश्वासन आपूर्ति, और (iii) कृषि उत्पादन में वृद्धि के लिए बढ़ते एवं उपयुक्त रासायनिक उर्वरक का प्रभाव।

श्वेत क्रांति : यह दूध उत्पादन में असाधारण वृद्धि है। इसके अंतर्गत राष्ट्रीय दूध गिर्ड का गठन, क्षेत्रीय तथा मौसमी असंतुलन का निराकरण सन्निहित है। तकनीकी आदानों में हैं (i) स्वदेशी गायों को यूरोपीय नस्त के ज्यादा दूध देने वालों के साथ प्रजनन (ii) लंबी अवधि तक रखने के लिए दूध की पास्तुरीकरण, (iii) ग्रामीण क्षेत्रों के सदस्यों से गुणात्मक दूध का संग्रहण और (iv) प्रशीतित परिवहन प्रणाली से दूध को सड़क और रेल मार्गों द्वारा दूर महानगरीय केन्द्रों तक भेजने में मदद करता है।

नील क्रांति. यह ताजे पानी और समुद्री जल से मछली पकड़ने में बड़ी वृद्धि करने के लिए संदर्भित करता है।

पीला क्रांति : यह निरंतर और आश्वासन कुस्कट उत्पादों की आपूर्ति करने के संदर्भ में है।

गुलाबी क्रांति : यह हिमाचल प्रदेश और जम्मू और कश्मीर राज्यों में विशेष रूप से सेब की मात्रा के उत्पादन में वृद्धि करने के लिए संदर्भित करता है।

अपने निवास के एक किलोमीटर की परिधि के भीतर एक सर्वेक्षण करें। उस क्षेत्र में किस प्रकार के फसलों को उगाया जाता है। और पता लगायें, जो फसलों के प्रकार है कि विशिष्ट क्षेत्र में बड़े हो रहे हैं। नीचे दी गई तालिका में अपने निष्कर्षों को रिकार्ड करें और उसके कारण दें।

फसल	राज्य	खेती	के
का नाम		प्रकार	कारण

संकेत : हिमांचल प्रदेश वाणिज्यिक उपयुक्त जलवायु परिस्थितियाँ बाजार में उच्च मांग के लिए बड़ी मात्रा में उपज।

(क) निर्वाह कृषि : जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, भारत के अधिकांश भागों में निर्वाह कृषि की जाती है। भारत में इस प्रकार की कृषि कई सौ वर्षों से की जा रही है। यह भारत के बड़े भूभाग पर आज भी किया जाता है। तथापि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद कृषि में बड़े पैमाने पर बदलाव आया है।

(ख) कृषि पर जनसंख्या का दबाव : शहरीकरण और औद्योगिकरण में वृद्धि के बावजूद, जनसंख्या का लगभग 70% अभी भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है।

(ग) खेती का मशीनीकरण : भारत में हरित क्रांति साठ के दशक के अंत और सत्तर के दशक के शुरू में जगह ले ली। हरित क्रांति कृषि मशीनरी और उपकरणों के क्षेत्र में क्रांति के चालीस से भी अधिक वर्षों के बाद, पूर्ण मशीनीकरण अभी भी दूर का सपना है।

(घ) मानसून पर निर्भरता : आजादी के बाद से यहाँ सिंचाई के बुनियादी ढांचे का तेजी से विस्तार किया गया है। बड़े पैमाने पर विस्तार के बावजूद आज कुल फसल क्षेत्र का केवल एक तिहाई भाग ही सिंचित है। परिणामस्वरूप फसली क्षेत्रों के दो तिहाई भाग अभी भी मानसून पर निर्भर है। जैसा कि आप जानते हैं, भारत में मानसून अनिश्चित और अविश्वसनीय है। यह जलवायु में परिवर्तन के कारण और भी अविश्वसनीय हो गया है।

(ङ) फसलों के विभिन्न प्रकार : क्या आप अनुमान लगा सकते हैं, भारत में फसलों के विभिन्न प्रकार क्यों हैं? जैसा कि पाठ के शुरुआत में उल्लेख किया गया है, भारत में जलवायु, स्थलाकृति और मिट्टी में विविधता है। चूंकि भारत में दोनों उष्णकटिबंधीय और शीतोष्ण जलवायु के क्षेत्र हैं, यहाँ दोनों जलवायु की फसलें उगाई जाती हैं। दुनिया में बहुत कम देशों में ऐसी विविधता पाई जाती है जैसी विविधता भारत में मिलती है। इसका अनुभव आपको तब होगा जब हम विस्तार से फसलों के विभिन्न प्रकार पर चर्चा करेंगे। इसकी जानकारी के लिए तालिका संख्या 12.1 देखिये।

(च) खाद्य फसलों की प्रधानता : चूंकि भारतीय कृषि के माध्यम से देश की बड़ी जनसंख्या को भोजन प्रदान करना होता है। लगभग सर्वत्र भारत में किसानों की प्राथमिकता खाद्यान उगाने की है हालाँकि, हाल के वर्षों में खाद्यान उगाये जाने वाले भूमि के हिस्सों में कमी आई है क्योंकि अन्य वाणिज्यिक खेती से ज्यादा लाभ उन भूमि से प्राप्त हो रहा है।

(छ) मौसमी पैटर्न : भारत के तीन अलग-अलग कृषि/फसल मौसम हैं। आप खरीफ, रबी, और जायद के बारे में सुने होंगे। भारत में विशिष्ट इन तीन मौसमों में उगाई फसलों के उदाहरण के लिए चावल खरीफ फसल है, जबकि गेहूं रबी की फसल है।

पाठगत प्रश्न 12.2

1. दो-दो उदाहरण देते हुए गहन और विस्तृत खेती के बीच अंतर बताएं ।

2. ऊपर पढ़े हुए मुख्य बातों के आधार पर आपके क्षेत्र में एक उपयुक्त (लागू होने वाले) तथ्य को पहचानें (उदाहरण : हरियाणा में बड़े पैमाने पर यंत्रीकृत और अच्छी तरह से सिंचित कृषि है। इस तरह यह मानसून पर कम निर्भर है।)

भारत में लगभग हर प्रकार की फसलें होती हैं। क्या आप सोच सकते हैं, क्यों? यदि हम कश्मीर से कन्याकुमारी और गुजरात के पश्चिमी तट से अरुणाचल प्रदेश के चरम उत्तर-पूर्वी भागों को ध्यान में रखें तो यहाँ सैकड़ों प्रकार की फसलें मिलती हैं। इन सभी प्रकार की फसलों को हम चार वर्ग में रखते हैं। प्रत्येक वर्ग के अंतर्गत मुख्य फसलों की चर्चा की जाएगी:

क्र. सं.	फसलों के प्रकार	अर्थ	प्रमुख फसलें
1.	खाद्य फसलें	ये फसलें मानव उपभोग के लिए उपयोग किया जाती है।	चावल, गेहूं, मक्का, बाजरा और दालें
2.	नकदी फसलें	ये फसलें शुद्ध या अर्द्ध प्रसंस्करित रूप से बेचने के लिए उगाई जाती है।	कपास, जूट, गन्ना, तम्बाकू और तिलहन
3.	वृक्षारोपण	ये फसलें वृक्षारोपण के क्षेत्र पर उगाई जाती है।	चाय, कॉफी, नारियल और रबड़
4.	बागवानी फसलें	कृषि का वह भाग जो फल और सब्जियां उगाई जाती है।	फल और सब्जियां

1. खाद्य फसल

(i) चावल : चावल भारत की सबसे महत्वपूर्ण खाद्य फसल है। यह मुख्य रूप से खरीफ या गर्मी की फसल है। यह देश की कुल खेती क्षेत्र का लगभग एक तिहाई भाग पर होता है। भारत का यह भारत की आधी आबादी से ज्यादा लोगों को भोजन प्रदान करता है। कुल आबादी का ज्यादातर लोग चावल खाने वाले हैं। क्या आप जानते हैं, चावल उत्पादन के लिए किस-किस तरह की भौगोलिक परिस्थितियों की आवश्यकता होती है। यदि आप भारत में चावल उत्पादित क्षेत्रों को देखें तो आपको पता चलेगा कि चावल ही एक ऐसी फसल है जो विविध परिस्थितियों में उगाई जाती है।

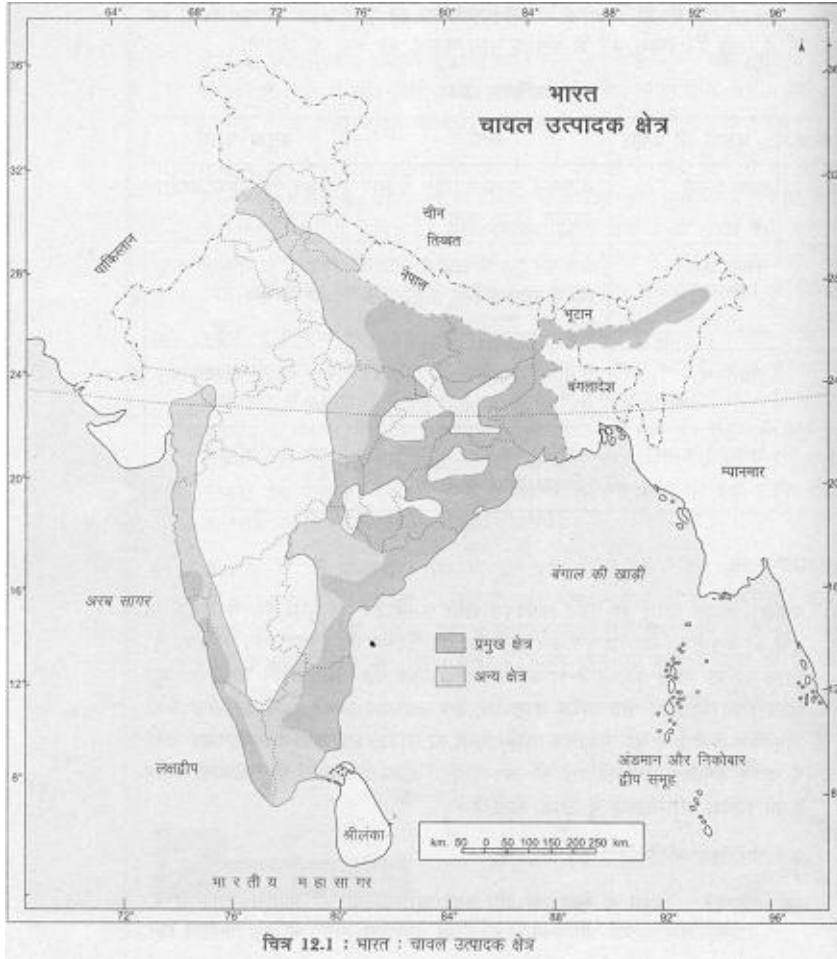
कुछ भौगोलिक परिस्थितियां इस प्रकार हैं :

(क) तापमान : चावल के लिए गर्म और आर्द्र परिस्थितियों की आवश्यकता होती है। तापमान सामान्यतया अधिक यानी 24 डिग्री सेल्सियस औसत मासिक तापमान होना

चाहिए। साथ ही चावल की अच्छी उपज के लिए औसत तापमान 22 से 32 डिग्री सेल्सियस की बीच उत्तम है।

(ख) वर्षा : चावल उत्पादन के लिए 150-300 सेमी के बीच वर्ष उपयुक्त है। पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश जहाँ वर्षा की मात्रा 100 सेमी से कम है, चावल की खेती सिंचाई की मदद से की जाती है।

(ग) मृदा : चावल विभिन्न प्रकार की मिट्टी परिस्थितियों में उगाया जाता है, लेकिन गहरी चिकनी मिट्टी और बलुई मिट्टी आदर्श स्थितियां प्रदान करता है। चावल मुख्य रूप



चित्र 12.1 : भारत :चावल उत्पादक क्षेत्र

से मैदानी क्षेत्रों में उगाया जाता है। यह समुद्रतल से भी नीचे केरल के कुहिनाद, उत्तर पूर्वी राज्यों के पहाड़ी ढलानों तथा कश्मीर घाटी में उगाया जाता है।

(घ) श्रम : चावल की खेती के लिए आसानी से उपलब्ध सस्ते श्रम की आवश्यकता होती है। चावल की खेती से सम्बन्धित गतिविधियों के केन्द्र में श्रम होता है। इसकी खेती में मशीनीकरण ज्यादा उपयुक्त नहीं है।

(ङ) वितरण : चावल भारत के लगभग सभी राज्यों में उगाया जाता है। मुख्य चावल उत्पादक राज्यों में तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल, आंध्र प्रदेश, बिहार, झारखंड, उत्तराखंड, छत्तीसगढ़, पंजाब, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश, कर्नाटक, असम और महाराष्ट्र हैं। यह हरियाणा, मध्य प्रदेश, केरल, गुजरात और कश्मीर घाटी में उगाया जाता है।

(ii) गेहूं : गेहूं दूसरा सबसे महत्वपूर्ण खाद्यान्न है। यह भारत में चावल के बाद रबी या सर्दियों की फसल है। यह सर्दियों की शुरुआत में बोया जाता है और गर्मियों की शुरुआत में काटा जाता है। आम तौर पर उत्तर भारत में गेहूं की बुवाई अक्टूबर - नवंबर के महीने में होती है और कटाई मार्च - अप्रैल के महीने में किया जाता है। यह विशेष रूप से भारत के उत्तरी और उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में लोगों का मुख्य भोजन है। चावल के विपरीत, गेहूं ज्यादातर रबी या सर्दियों की फसल के रूप में उगाया जाता है।

कुछ भौगोलिक परिस्थितियाँ इस प्रकार हैं :

(क) तापमान : यह मुख्य रूप से मध्य अक्षांशीय चरागाह की फसल है। इसे ठंडी जलवायु की आवश्यकता होती है। बुवाई के समय आदर्श तापमान 10 से 15 डिग्री सेल्सियस तथा पकने एवं कटने के समय 21 से 26 डिग्री सेल्सियस तापमान होना चाहिए।

(ख) वर्षा : लगभग 75 सेमी वर्षा वाले क्षेत्रों में गेहूं की फसल बहुत सफल है। गेहूं की खेती के लिए अधिकतम वर्षा की मात्रा 100 सेमी है। आपको पता है, 100 सेमी से ज्यादा वर्षा वाले क्षेत्रों में चावल उगाया जाता है। चावल की तरह ही यहाँ वर्षा की मात्रा 75 सेमी से कम है वहाँ सिंचाई द्वारा गेहूं उगाया जा सकता है। पकने के समय हल्की वर्षा पैदावार बढ़ाने में मददगार होती है परन्तु दूसरी और पुष्पण के समय पाला और काटने के समय ओला वृष्टि गेहूं की पैदावार को काफी कम कर देते हैं।

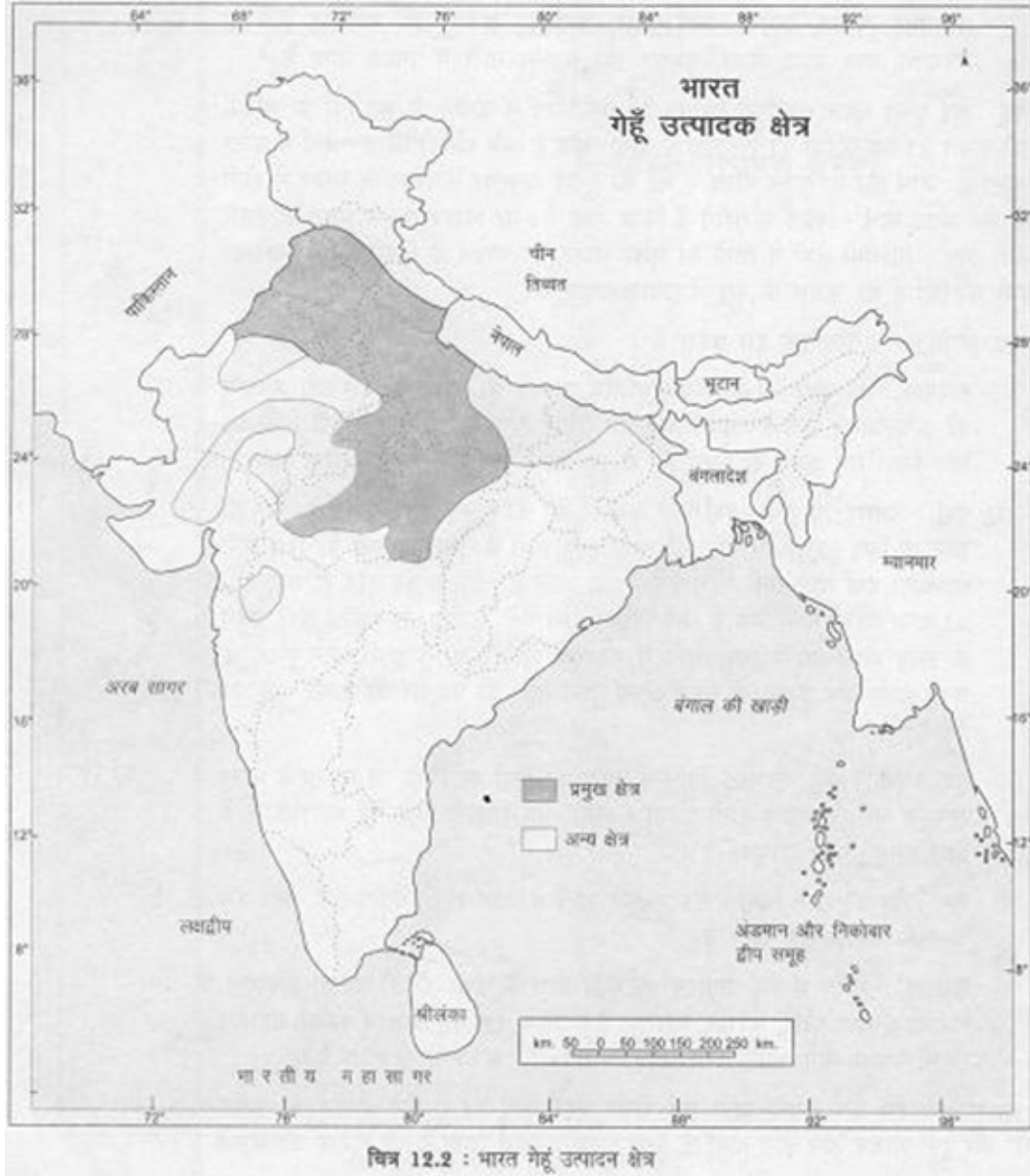
(ग) मृदा : यद्यपि गेहूं की खेती विभिन्न प्रकार की मिट्टी पर किया जा सकता है परन्तु अनुकूल जल निष्कासन वाली उपजाऊ दोमट और चिकनी मिट्टी गेहूं के उत्पादन के लिए सबसे ज्यादा उपयुक्त है।

(घ) श्रम : गेहूं की खेती विस्तृत क्षेत्र पर की जाती है। यह काफी यंत्रिकृत है अतः कम श्रम की आवश्यकता होती है।

(ङ) वितरण : भारत में गेहूं उत्पादन के मुख्य क्षेत्रों में उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र हैं। देश में कुल गेहूं उत्पादन का 66 प्रतिशत से भी ज्यादा भाग केवल उत्तर प्रदेश, पंजाब और हरियाणा से होता है।

(iii) बाजरा : बाजरा कम अवधि वाला गर्म मौसम का फसल है। ये मोटे अनाज की फसल हैं और इन्हें भोजन और चारा दोनों के लिए उपयोग किया जाता है। ये खरीफ की फसलें

हैं। ये मई - अगस्त में बोया जाता है और अक्टूबर- नवम्बर में काटा जाता है। आज बाजरा आमतौर पर गरीब लोगों का मुख्य भोजन है। भारत में बाजरा बहुत उगाया जाता है और विभिन्न भागों में अनेक स्थानीय नामों से जाना जाता है। उनमें से कुछ ज्वार, बाजरा, रागी, कोरा, कोदों कुटकी, राका, बाउटी, राजगिरा आदि है। भारत में ज्वार, बाजरा और रागी बड़े क्षेत्र पर उगाया जाता है पर दुर्भाग्य से इन फसलों के अंतर्गत क्षेत्रों की कमी बड़ी तेजी से हुई है।



चित्र 12.2 : भारत गेहूँ उत्पादन क्षेत्र

इन फसलों को उगाने के लिए कुछ भौगोलिक परिस्थितियाँ इस प्रकार हैं :

(क) तापमान : ये फसलें वहाँ उगाई जाती हैं जहाँ उच्च तापमान होता है। यहाँ तापमान 27 से 32 डिग्री सेल्सियस के बीच होना चाहिए।

(ख) वर्षा : जैसा कि पहले भी चर्चा की गई है कि बाजरा शुष्क भूमि फसल है। इसलिए, 50 से 100 सेमी की वर्षा बाजरा के लिए उपयुक्त है।

(ग) मृदा : मिट्टी की कमियों के प्रति बाजरा कम संवेदनशील है। ये निम्न जलोढ़ या चिकनी बलुई मिट्टी में उगाया जा सकता है।

(ग) वितरण : ज्वार बाजरा उत्तर और दक्षिण भारत में उगाया जाता है, जबकि आम तौर पर रागी दक्षिणी भारत में केन्द्रित है। मध्य प्रदेश, गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, हरियाणा और पंजाब में ज्वार-बाजरा उगाया जाता है। आम तौर पर रागी दक्षिण भारत में तमिलनाडु, कर्नाटक और आन्ध्र प्रदेश में केन्द्रित है।

(iv) दलहन : दलहन में अनेक फसलों को रखा जाता है जो ज्यादातर फली हैं। ये भारत के शाकाहारी लोगों के लिए अमूल्य प्रोटीन प्रदान करते हैं। मांस और मछली खाने वालों की तुलना में शाकाहारियों को प्रोटीन प्राप्ति के श्रोत कम है। ये पशुओं के लिए चारा और अनाज का प्रमुख श्रोत है। इसके अतिरिक्त ये फली फसलें वायुमण्डलीय नाइट्रोजन को मिट्टी में यौगिकृत करती है। सामान्यतया अन्य फसलों से आवर्तित करके मृदा की उर्वरता को बनाए रखे जाता है। भारत में विभिन्न प्रकार के दलहन पाया जाता है। ये चना, तूर या अरहर, उड़द, मूंग, मसूर, काल्फी, मटर आदि है। परन्तु इन सबों में चना और तूर या अरहर ही ज्यादा महत्वपूर्ण है।

चना: चना सभी दालों में सबसे महत्वपूर्ण है। कुल दलहनों के उआदन का 37 प्रतिशत भाग चने से आता है जबकि चना दालों के कुल क्षेत्रफल का 30 प्रतिशत पर चना होता है। यह रबी की फसल है जो सितंबर से नवंबर के बीच में बोया जाता है और फरवरी से अप्रैल के बीच काटा जाता है। यह या तो एक एकल फसल के रूप में खेती की जाती है या गेहूं, जौ, अलसी या सरसों के साथ मिलाकर खेती की जाती है।

कुछ भौगोलिक परिस्थितियाँ इस प्रकार हैं :

(क) तापमान : विस्तृत जलवायु परिस्थितियों में चना की खेती की जाती है। 20 डिग्री सेल्सियस से 25 डिग्री सेल्सियस तापमान के साथ हल्के शीतल जलवायु एवं शुष्क अवस्था उत्तम है।

(ख) वर्षा : 40 से 45 सेमी वर्षा चना की खेती के लिए अनुकूल है।

(ग) मृदा : यह चिकनी बलुई मिट्टी पर अच्छी उपज देता है।

(घ) वितरण : हालांकि चना देश के कई भागों में होता है। तथापि, कुल उत्पादन का 90 प्रतिशत भाग पांच राज्यों से आता है। ये राज्य मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा और महाराष्ट्र हैं।

क्या आप जानते हैं

1. चावल और गेहूं जलवायु संवेदनशील फसलें हैं जबकि बाजरा जलवायु प्रतिरोधी फसल है
2. भारत में विभिन्न प्रकार के बाजरा खाद्यान के रूप में इस्तेमाल होता रहा था। लेकिन पिछले कुछ वर्षों में जनसमुदाय का बड़ा हिस्सा मुख्य भोजन के रूप में चावल या गेहूं का उपयोग करता है
3. जीवन शैली में बदलाव के कारण अनेक देश व्यापी रोगों का प्रकोप बढ़ा है। आजकल विभिन्न प्रकार से बाजरा को खाने की सलाह दी जा रही है क्योंकि इनमें काफी रेशेदार पदार्थ पाये जाते हैं। इनसे विभिन्न रोगों पर काबू पाया जा सकता है।

1. भारत में क्षेत्रों/राज्यों का पता करें जहां चावल, गेहूं और बाजरा मुख्य भोजन है। भारत के निम्नलिखित में से प्रत्येक में प्रधान भोजन (चावल, गेहूं, बाजरा) का उल्लेख करें।

राज्य प्रमुख भोजन

राजस्थान गेहूं, बाजरा

कर्नाटक

आपके राज्य

2. भारत के एक रेखा मानचित्र पर उन राज्यों को दो अलग-अलग छायाचित्रों से दर्शाये जहाँ गेहूं और चावल मुख्य भोजन है।

2. नकदी फसलें

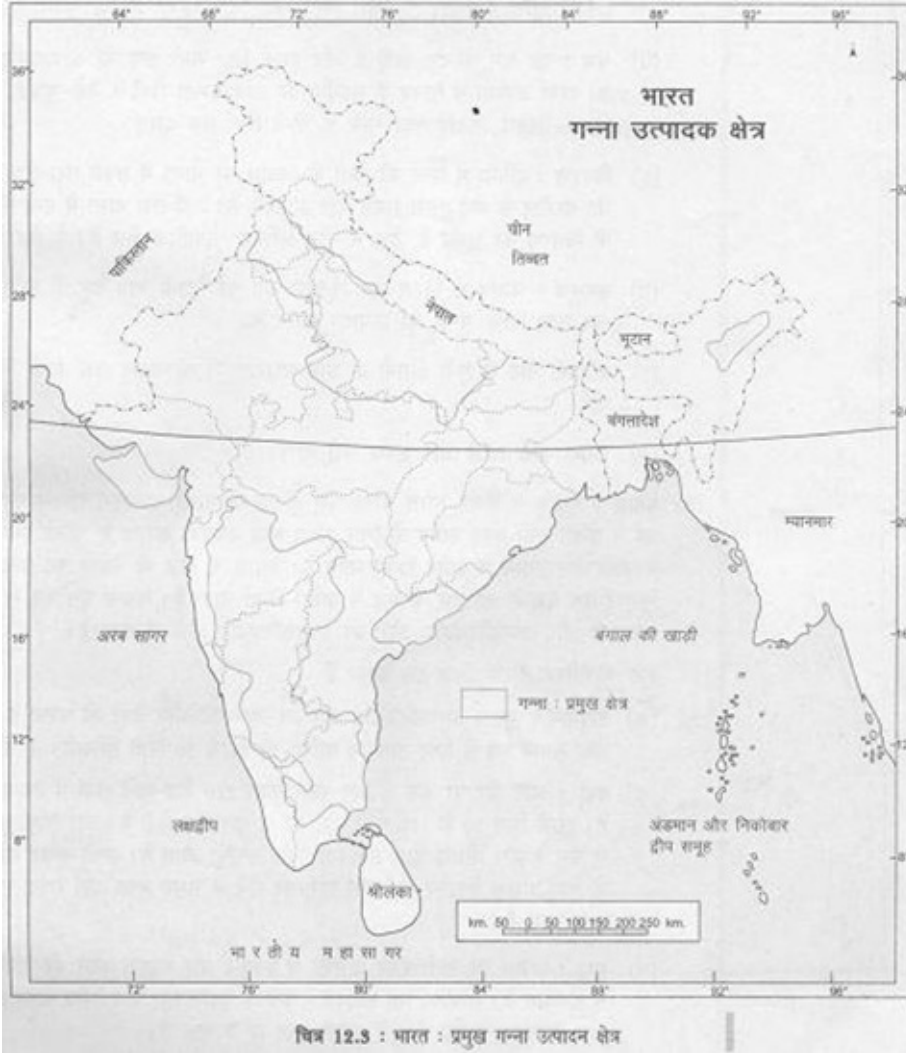
यद्यपि पाठ की शुरुआत में उल्लेख किया, नकदी फसलें उन फसलों को कहा जाता है जिसे या तो शुद्ध या अर्द्ध प्रसंस्कृत रूप में बेचने के लिए उगाया जाता है। इस भाग में कुछ चुने हुए नगदी फसलों के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे जैसे गन्ना, कपास और जूट, दो पेय पदार्थ-चाय और कॉफी तेल के बीज तेलहन- मूंगफली, सरसों और रेपसीड। इस भाग में हम अधिक चयनित नकदी फसल यानी गन्ना, कपास और जूट के बारे में सीखेंगे।

(i) गन्ना : क्या आप अपने दिनचर्या में बिना चीनी के जीवन की कल्पना कर सकते हैं? चीनी के बिना जीवन के बारे में सोचना असंभव है। क्या आप जानते हैं कि गन्ना बांस परिवार के अंतर्गत आता है और यह भारत के लिए स्वदेशी है? यह खरीफ फसल है। यह चीनी, गुड़, और खांडसारी का मुख्य स्रोत है। यह शराब तैयार करने के लिए कच्चे माल भी प्रदान करता है। खोई, कुचले गन्ने का अवशेष का भी कई उपयोग है। यह कागज बनाने के लिए प्रयोग किया जाता है। यह पेट्रोलियम उत्पादों के लिए एक कारगर विकल्प है। इसके अतिरिक्त अन्य रसायनिक उत्पादों का भी विकल्प के रूप में है। इसे चारे के रूप में भी प्रयोग किया जाता है।

गन्ने के उत्पादन के लिए कुछ भौगोलिक स्थितियाँ इस प्रकार हैं :

(क) तापमान : इसके लिए वार्षिक औसत तापमान 21 से 27 डिग्री सेल्सियस के साथ गर्म और आर्द्र जलवायु की आवश्यकता होती है ।

(ख) वर्षा : गन्ना की खेती के लिए 75-150 सेमी वर्षा अनुकूल है । जहाँ वर्षा निर्धारित सीमा से कम है, उन क्षेत्रों में सिंचाई की आवश्यकता होती है ।



चित्र 12.3 : भारत : प्रमुख गन्ना उत्पादक क्षेत्र

(ग) मृदा: यह विभिन्न प्रकार की मृदा में उगाया जा सकता है। वास्तव में गन्ना किसी भी मृदा में हो सकता है जिसमें नमी बनाए रखने की क्षमता हो। लेकिन गहरी चिकनी बलुई मिट्टी इसके पैदावार के लिए आदर्श है। मिट्टी नाइट्रोजन, कैल्शियम और फॉस्फोरस में समृद्ध होना चाहिए लेकिन न तो यह अम्लीय हो और न ही क्षारीय हो। समतल मैदान और चौरस पठार इसकी खेती के लिए लाभदायक है क्योंकि खेतों की सिंचाई और गन्ने की ढुलाई आसान होती है। गन्ने की खेती के लिए ज्यादा खाद और उर्वरक की आवश्यकता है क्योंकि यह जल्दी और बड़े पैमाने पर मिट्टी की उर्वरता खींच लेता है।

(घ) श्रम : यह श्रम केन्द्रित खेती है और इसके लिए सस्ते श्रम की आवश्यकता होती है। हरेक अवस्था में मानव के सहयोग की आवश्यकता होती है जैसे- बुवाई, गोड़ाई, निराई, सिंचाई, कटाई तथा गन्ने के चीनी मिल तक ढुलाई।

(ङ) वितरण : दुनिया में गन्ने की खेती के आधार पर भारत में सबसे बड़ा क्षेत्र है और यह ब्राजील के बाद दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है। जहाँ तक भारत में गन्ने की खेती के वितरण का संबंध है, देश में तीन विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र हैं। ये क्षेत्र हैं:

(च) सतलुज - पंजाब से बिहार तक सतलुज-गंगा का मैदानी भाग देश के 51% गन्ना क्षेत्र तथा 60% गन्ना का उत्पादन करता है।

(इ) पश्चिमी घाट के पूर्वी ढलानों के साथ महाराष्ट्र से तमिलनाडु तक काली मिट्टी की पट्टी।

(ब) तटीय आंध्र प्रदेश और कृष्णा नदी घाटी।

(ii) कपास : कपास न केवल भारत बल्कि पूरी दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण रेशेदार फसल है। यह न केवल सूती वस्त्र उद्योग के लिए कच्चा माल उपलब्ध कराता है, बल्कि इसके बीज वनस्पति तेल उद्योग में प्रयोग किया जाता है। कपास के बीज भी बेहतर दूध उत्पादन के लिए दुधारू पशुओं को चारे के रूप में प्रयोग किया जाता है। कपास मूल रूप से खरीफ फसल है और उष्णकटिबंधीय और उप उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में होता है।

कुछ भौगोलिक परिस्थितियां इस प्रकार हैं :

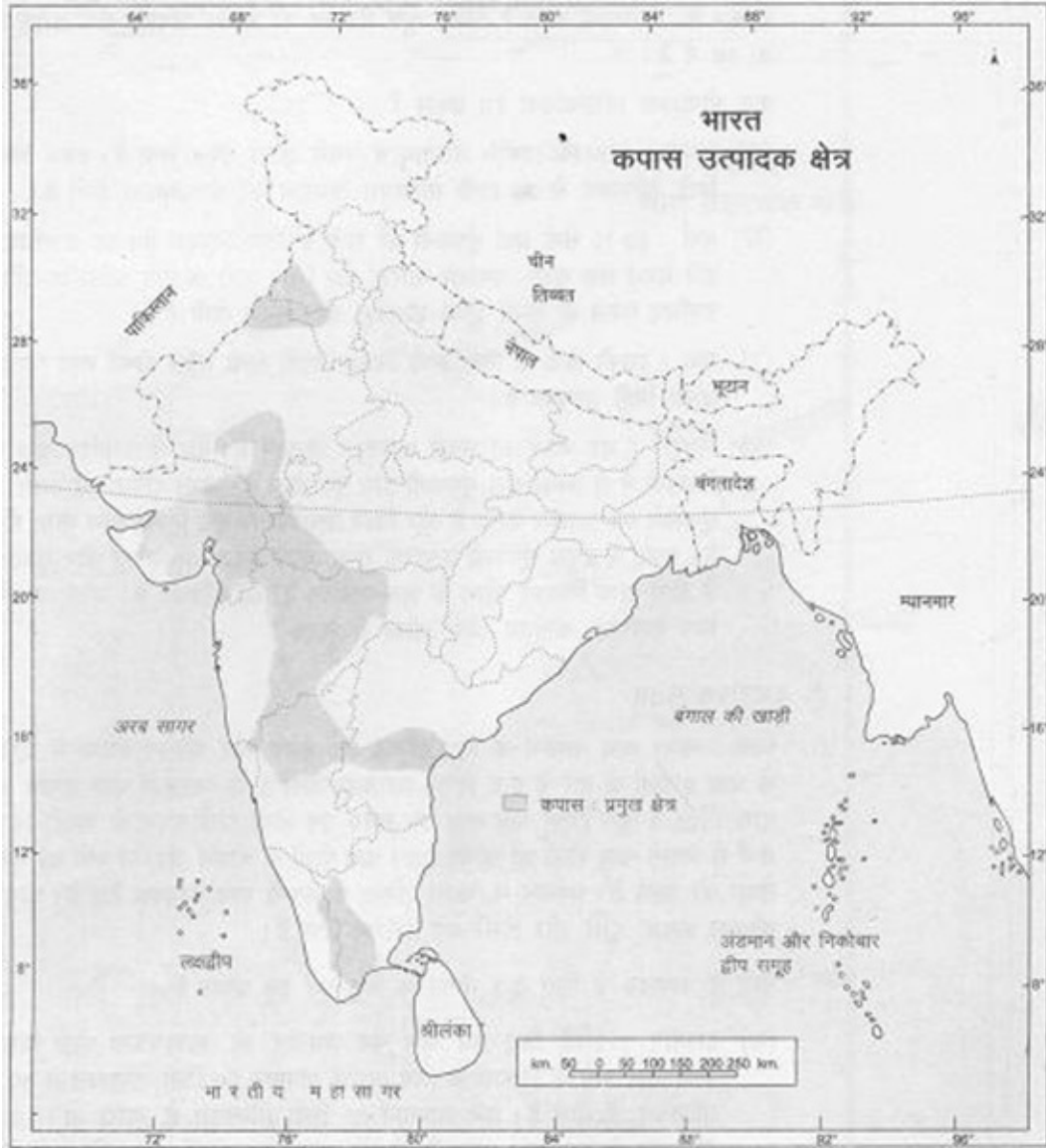
(क) तापमान : कपास उष्णकटिबंधीय और उप उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों की फसल है। इसके लिए समान रूप से उच्च तापमान चाहिए जो 21 से 30 डिग्री सेल्सियस के बीच हो।

(ख) वर्षा : आम तौर पर कम से कम पाला मुक्त 210 दिन वाले क्षेत्रों में उगाया जाता है। इसके लिए 50 से 100 सेमी वर्षा की आवश्यकता होती है। जहाँ वर्षा 50 सेमी से कम है वहाँ सिंचाई द्वारा सफलता पूर्वक उगाया जाता है। अच्छे कपास की उपज के लिए प्रारम्भ में उच्च वर्षा और परिपक्व होने के समय शुष्क और धूपवाला मौसम लाभदायक है।

(ग) मृदा : कपास की खेती बहुत बारीकी से डेक्कन और मालवा पठार की काली मिट्टी से संबंधित है। हालांकि, यह सतलुज-गंगा के मैदान और प्रायद्वीपीय भारत के लाल और लेटराइट जलोढ़ मृदा में अच्छी तरह से उपजता है।

(घ) श्रम : कपास के चुनने के काम को अब तक यंत्रिकृत नहीं किया जा सन्का है, अतः कपास को चुनने के लिए सस्ते एवं कुशल मजदूर की जरूरत होती है ।

(ङ) वितरण : भारत में विश्व का सबसे बड़ा कपास उगाने का क्षेत्र है । तथा यह विश्व का तीसरा बड़ा उत्पादक देश है । चीन और संयुक्त राज्य अमेरिका के बाद । देश के भीतर कुल क्षेत्रफल और उत्पादन का दो तिहाई भाग चार राज्यों से आता है । कपास उत्पादन के लिए मुख्य राज्य पंजाब, महाराष्ट्र, गुजरात और हरियाणा हैं ।



चित्र 12.4 : भारत : प्रमुख कपास उत्पादन क्षेत्र

चित्र 12.4 : भारत : प्रमुख कपास उत्पादन क्षेत्र

(ii) तिलहन : भारत में वाणिज्यिक फसलों के महत्वपूर्ण समूहों में से तिलहन एक है । भारत तिलहन के क्षेत्र और उत्पादन में विश्व में अग्रणी है । वास्तव में, भारत की तिलहन से निकाले तेल न केवल हमारे आहार का एक महत्वपूर्ण भाग है बल्कि हाइड्रोजनीकृत तेलों, पेंट, वार्निश, साबुन, चिकनाई आदि के निर्माण के लिए कच्चे माल के रूप में भी इस्तेमाल किया जाता है । तिलहन से तेल निकालने के बाद बचा अवशेष महत्वपूर्ण पशु आहार और खाद के रूप में इस्तेमाल होता है ।

मूंगफली : यह भारत की सबसे महत्वपूर्ण तिलहन है । मूंगफली खरीफ और रबी फसल दोनों के रूप में उगाया जाता है लेकिन कुल क्षेत्रफल का 90-95 प्रतिशत क्षेत्र खरीफ फसल के रूप में है ।

कुछ भौगोलिक परिस्थितियां इस प्रकार हैं :

(क) तापमान : उष्णकटिबंधीय जलवायु में सबसे अच्छा उपज होता है। इसके लिए 20 डिग्री सेल्सियस से 30 डिग्री सेल्सियस तापमान की आवश्यकता होती है।

(ख) वर्षा : 50-75 सेमी वर्षा मूंगफली की खेती के लिए अनुकूल है। यह अत्यधिक ठंड, लंबे समय तक सूखा, लगातार बारिश और स्थिर पानी के प्रति अतिसंवेदनशील है। इसलिए पकने के समय शुष्क शीतऋतु की जरूरत होती है।

(ग) मृदा : इसकी खेती के लिए अच्छे निकास वाली हल्के रेतीले दोमट लाल पीली और काली मिट्टी उपयुक्त है।

(घ) वितरण : यह भारत का सबसे महत्वपूर्ण तिलहन है। देश में उत्पादित कुल प्रमुख तिलहनों में से आधा भाग मूंगफली द्वारा पूरा होता है। भारत दुनिया में सबसे ज्यादा मूंगफली का उत्पादन करता है और विश्व उत्पादन का एक तिहाई भाग भारत में होता है। भारत में प्रमुख मूंगफली उत्पादक राज्य आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु और गुजरात है। ये तीनों राज्य मिलकर भारत के कुल उत्पादन का 60 प्रतिशत है। अन्य 40 प्रतिशत भाग महाराष्ट्र, कर्नाटक और उड़ीसा से आता है।

3. वृक्षारोपण फसल

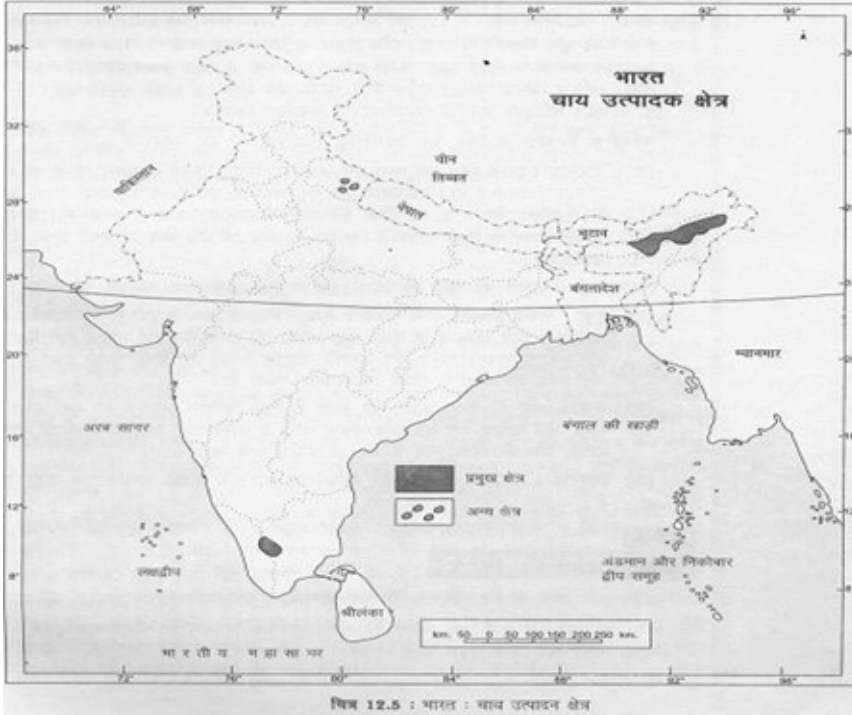
(i) चाय : भारत चाय बागानों के लिए प्रसिद्ध है। असम और पश्चिम बंगाल में दार्जिलिंग के चाय बागानों के बारे में सुना होगा। यह कहा जाता है कि भारत में चाय बागान अंग्रेजों द्वारा 1923 में शुरू किया गया था। उस समय उन लोगों द्वारा असम के पहाड़ी और वन क्षेत्रों में जंगली चाय पौधों को खोजा गया। चाय पौधों के कोमल अंकुरित पत्तों को सुखाकर तैयार की जाती है। वर्तमान में, भारत दुनिया में अग्रणी चाय उत्पादक देश है। चीन और श्रीलंका क्रमशः दूसरे और तीसरे बड़े उत्पादक देश हैं।

चाय के उत्पादन के लिए कुछ भौगोलिक स्थितियां इस प्रकार हैं :

(क) तापमान : इसके लिए गर्म और नम जलवायु की आवश्यकता होती है। चाय पौधों और पत्ती के विकास के लिए आदर्श तापमान 20 डिग्री सेल्सियस से 30 डिग्री सेल्सियस के बीच है। यदि तापमान 35 डिग्री सेल्सियस से ज्यादा या 10 डिग्री सेल्सियस से कम चला जाता है तो यह चाय की झाड़ियों और पत्तियों के विकास के लिए हानिकारक होता है।

(ख) वर्षा : जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, चाय उत्पादन के लिए ज्यादा वर्षा चाहिए। वर्षा का वितरण पूरे वर्ष भर कुल मिलाकर एक जैसा होना चाहिए। लम्बा सूखा काल चाय के लिए घातक है। वार्षिक वर्षा 150 से 300 सेंमी. होनी चाहिए।

(ग) मृदा : चाय पौधे अच्छी निकास वाले गहरे, मुरमुरे चिकनी बलुई मिट्टी में बहुत बढ़ता है। यद्यपि अच्छा जंगली मृदा, जो ह्यूमस और लौह तत्व युक्त हो, चाय बागानों के लिए सर्वोत्तम मानी जाती है। चाय छाया स्नेही पौधा है और जब छायादार पेड़ के साथ लगाया जाता है तो इसका अच्छा विकास होता है।



चित्र 12.5 : भारत : चाय उत्पादन क्षेत्र

(घ) श्रम : सस्ता और कुशल मजदूर चाय उत्पादन के लिए आवश्यक है

(ङ) वितरण : असम चाय उत्पादकों में अग्रणी है और भारत के कुल चाय उत्पादन का 50 प्रतिशत से भी अधिक असम में होता है। असम के चाय उत्पादक क्षेत्र ब्रह्मपुत्र और सूरमा घाटियों के पहाड़ी ढलानों पर हैं। पश्चिम बंगाल चाय का दूसरा बड़ा उत्पादक है जहां चाय ज्यादातर दार्जिलिंग, सिलिगुड़ी, जलपाईगुड़ी और कूच बिहार जिलों में उगाया जाता है। तमिलनाडु तीसरा बड़ा उत्पादक है जहां चाय ज्यादातर नीलगिरि पहाड़ियों के कुछ खास भागों में सीमित है।

(ii) कॉफी : क्या आप जानते हैं, भारत में कॉफी कहाँ से लाया गया? यह इथियोपिया (अबिसनिया पठार) का मूल निवासी पौधा है। इथियोपिया से यह 11 वीं सदी में अरब लाया गया था। अरब से बीज बाबा बुदन द्वारा 17 वीं सदी में कर्नाटक के बाबा बुडान पहाड़ियों पर लगाया गया। लेकिन ब्रिटिश बागान मालिकों ने गहरी रुचि लिया और बड़े कॉफी बगान के रूप में उत्पादन पश्चिमी घाट की पहाड़ियों पर स्थापित किया।

कॉफी के विकास के लिए कुछ भौगोलिक स्थितियाँ का इस प्रकार हैं :

(क) तापमान : इसके लिए गर्म तथा नम जलवायु चाहिए जिसमें तापमान 15 से 28 डिग्री सेल्सियस के बीच हो। यह आम तौर पर छायादार वृक्ष के नीचे ज्यादा बेहतर उगता है। इसलिए तीव्र धूप, 30 डिग्री सेल्सियस से ज्यादा तापमान, पाला और हिमवर्षा कॉफी बगान के लिए घातक हैं। कॉफी के फलों के प्रौढ़ होने के समय शुष्क मौसम जरूरी है।

(ख) वर्षा : कॉफी की खेती के लिए 150 से 250 सेमी वर्षा अनुकूल है।

(ग) मृदा : अच्छी निकास वाली उपजाऊ मुरमुरी चिकनी बलुई मिट्टी हो ह्यूमस, लौह और कैल्शियम जैसे खनिजों से युक्त मृदा कॉफी की खेती के लिए आदर्श होते हैं। मृदा की उर्वरता बनाए रखने एवं उसकी आपूर्ति बढ़ाने के लिए भरपूर खाद डालना आवश्यक हो जाता है ताकि उत्पादकता ज्यादा हो।

(घ) श्रम : चाय की तरह, कॉफी की खेती के लिए विभिन्न जरूरतों को पूरा करने हेतु सस्ते और कुशल श्रम की आवश्यकता होती है जैसे बुवाई, प्रतिरोपण, छंटाई, तोड़ाई, रंगाई, क्रम निर्धारण तथा कॉफी की बंधाई डब्बे भराई।

(ङ) वितरण : कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु भारत में कॉफी उत्पादन के मुख्य राज्य हैं।

1. कपास की खेती के लिए किसी भी तीन भौगोलिक परिस्थितियों की व्याख्या कीजिए ।
2. अगर लगातार कई वर्षों तक कपास की खेती असफल हो जाय तो भारत एक अरब से भी ज्यादा लोगों को किस प्रकार वस्त्र उपलब्ध करा पाएगा?
3. वाणिज्यिक फसल क्योँ नकदी फसल के रूप में जाना जाता है?

यदि हम भारतीय कृषि की चुनौतियों को देखें तो हम उन्हें मोटे तौर पर दो वर्गों में बाँट सकते हैं। काफी समय से चलती आ रही बहुत-सी समस्याएँ प्रथम वर्ग में आती हैं। दूसरे वर्ग की समस्याएँ नई हैं इनका जन्म प्रचलित कृषि प्रथा, प्रणाली एवं बदलते जलवायु एवं अर्थतन्त्र से सम्बन्धित है। मुख्य चुनौतियों पर विस्तार से चर्चा किया जाएगा।

1. प्रमुख फसलें : कुछ प्रमुख खाद्यान्न जैसे चावल और गेहूँ के उत्पादन में कुछ लम्बे समय से ठहराव देखा गया है। यह स्थिति हमारे कृषि वैज्ञानिक, आर्थिक और नीति-निर्माताओं के लिए चिन्ता का विषय है। अगर यही प्रवृत्ति बनी रही तो लगातार बढ़ती हुई जनसंख्या एवं उत्पादन का अन्तर बड़ा होता चला जाएगा। जिस तरह की स्थिति हरित क्रान्ति से पहले रही है उस स्थिति में जाने के लिए कोई भी भारतीय नहीं चाहता है। हरित क्रान्ति से पहले की अवधि की स्थिति का पता कीजिए।

2. खेत निवेश में उच्च लागत : पिछले वर्षों में खेत निवेश के दर में कई गुना वृद्धि हुई है। इसके अन्तर्गत उर्वरक, कीटनाशक, उत्तम किस्म के बीज, कृषि श्रम लागत आदि आते हैं। इन सबों के कारण निम्न एवं मध्यम जोत वाले किसान ज्यादा घाटे में होते हैं।

3. मृदा उर्वरता का हास : एक ओर हरित क्रान्ति भारत से भूख को कम करने में एक सकारात्मक भूमिका निभाई है। दूसरी ओर वह नकारात्मक परिणाम भी लाई है। इसमें मृदा उर्वरता का हास एक है। मृदा उर्वरता हास का अभिप्राय है मृदा से पोषक तत्वों की कमी जो एक ही जमीन पर एक ही फसल के बार-बार बोन से होता है। यह आमतौर पर वर्षा वन में होता है।

4. मीठा भूमिगत जल की कमी : हरित क्रान्ति का दूसरा प्रमुख नकारात्मक परिणाम मीठा भूमिगत जल की कमी है। आपको याद होगा कि जिन क्षेत्रों में हरित क्रान्ति सफल रही थी, वह रसायनिक उर्वरक और सिंचाई के उपयोग के कारण था। पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के शुष्क क्षेत्रों में भूमिगत जल के अधिकाधिक उपयोग कर सिंचाई के द्वारा हरित क्रान्ति को सफल बनाया गया। इन राज्यों में भूमिगत जल की स्थिति और भी भयानक है। अगर इसी प्रकार की खेती आगे आनेवाले कुछ वर्षों तक जारी रही तो इन राज्यों में जल का अकाल पड़ जाएगा।

5. वैश्विक जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभाव : विभिन्न चुनौतियों में से वैश्विक जलवायु परिवर्तन नवीनतम है। यह भविष्यवाणी की गई है कि कृषि पर इसके प्रभाव असीम होगा। 70% भारतीय लोग कृषि गतिविधियों में लगे हुए हैं। आप इसके परिणाम की कल्पना कर सकते हैं। यह भविष्यवाणी की है कि जलवायु परिवर्तन के कारण तापमान 2 से 3 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि होगी। समुद्र के स्तर में वृद्धि होगी, अधिक तीव्र चक्रवात आएगा और वर्षा की भविष्यवाणी असम्भव होगी। भारत के तटवर्ती भागों में समुद्री जल प्रवेश और चक्रवातों की आवृत्ति में वृद्धि के कारण चावल का उत्पादन प्रभावित होगा।

6. वैश्वीकरण का प्रभाव : भारत के वैश्वीकरण का प्रभाव कृषि के विभिन्न क्षेत्रों में आप देख सकते हैं। सभी विकासशील देश इससे प्रभावित हो रहे हैं। इसका सबसे बड़ा प्रभाव किसानों की घटती आय और भारत में खेती की व्यवहार्यता पर प्रश्नचिह्न है। इसका मुख्य कारण लागत खर्च में वृद्धि और निर्गत किमत में कमी है। आर्थिक सहायता की कमी और किसानों की सुरक्षा का मिला-जुला प्रतिबिम्बन है। व्यापार उदारीकरण के कारण अन्य देशों के साथ किसानों की प्रतिस्पर्धा हो जाती है जबकि विकसित देशों में उन्हें आर्थिक सहायता दी जाती है।

वैश्वीकरण संस्कृति, जनता और आर्थिक गतिविधि का विश्वस्तरीय बढ़ते सम्बन्ध है। व्यवसाय या व्यक्ति/जनता की मदद के लिए सरकार द्वारा दिए जाने वाले धन को आर्थिक सहायता कहते हैं। देश के किसी भी भाग में किसी भी समय किसी भी तरह की आर्थिक गतिविधि उदारीकरण के अन्तर्गत आती है। इसके लिए किसी भी तरह का सरकारी या गैर-सरकारी प्रतिबन्ध आमतौर पर नहीं होता है।

7. खाद्य सुरक्षा : भारत में हरित क्रान्ति के शुरुआत से पहले, हमारे खाद्यान्न पर्याप्त नहीं थे। 1947 में भारत के विभाजन के कारण नहर सिंचाई प्रणाली, कपास की पट्टी और गेहूँ का कटोरा पश्चिम पाकिस्तान, जो अब पाकिस्तान है, में चला गया। इसी प्रकार जूट की पट्टी और धान का कटोरा पूर्वी पाकिस्तान, जो अब बांग्लादेश है, में चला गया। हरित क्रान्ति के शुरुआत के साथ अनाज उत्पादन में काफी वृद्धि हुई है और भारत पर्याप्त अनाज पैदा करने लगा। हालाँकि, पिछले एक दशक के दौरान कुल उत्पादन स्थिर सा हो गया है। दूसरी ओर इसी अवधि में 16 से 18 करोड़ आबादी बढ़ गई है। भारत खाद्यान्न में आत्मनिर्भर बन गया है। इसे खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए बहुत कुछ करना है क्योंकि यह उपलब्ध पौषणिक भोजन की सुलभता और समर्थता पर निर्भर करता है। भारत के लिए अपने लोगों को खाद्य सुरक्षा प्रदान करना बड़ी चुनौतियों में से एक है।

8. किसानों की आत्महत्या : हरेक आत्महत्या के अनेकों कारण होते हैं। लेकिन जब लगभग 200,000 आत्महत्या का सवाल हो तो उस बड़े समूह में कारण का पता लगाना आवश्यक है। आत्महत्या कृषि की उच्च व्यावसायीकरण और बहुत उच्च किसान ऋण के क्षेत्रों में केन्द्रित दिखाई देता है। खाद्य फसल उगाने की तुलना में नगदी फसल उगाने वाला किसान आत्महत्या की चपेट में ज्यादा है। अभी भी संकट की बुनियादी अन्तर्निहित कारण अछूता है। कृषि निवेश में भारी गिरावट के साथ-साथ देश के व्यावसायीकरण के कारण आत्महत्या बढ़ी। बढ़ते हुए लागत खर्च एवं घटते कृषि आय के समय पर बैंक ऋण की वापसी आत्महत्या की समस्या को और गम्भीर व जटिल बना दिया। करोड़ों लोगों का खाद्य फसल से नगदी फसल की ओर बदलाव का अपना ही जोखिम है। कई संसाधनों का निजीकरण भी समस्याओं को और बढ़ा दिया है।

तबही 5 बड़े राज्यों महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में केन्द्रित है। 2003-08 अवधि के दौरान सभी खेत आत्महत्या के दो-तिहाई मौतें इन 5 राज्यों से है। कुछ प्रमुख उत्तरदायी कारणों में से ऋणग्रस्तता, उपज की असफलता तथा किसानों की आर्थिक स्थिति में हास है। सामाजिक स्थिति में गिरावट, स्थानीय सरकारों द्वारा उच्च दर पर कर्ज, परिवार में पुरानी बीमारी, पीने की आदत किसानों की कठिनाइयों को बढ़ा दिया है।

क्रियाकलाप 12.3

यदि आपको देश का राजनीतिक नेतृत्व सौंपा जाता है तो ऊपर लिखित चुनौतियों से निबटने के लिए कौन-सा उपाय अपनाएँगे? कौन से दो चुनौतियों को अपनाएँ और कैसे?

1. भारत में जलवायु परिवर्तन किस प्रकार कृषि को प्रभावित करेगा? किसी भी दो स्थितियों का वर्णन कीजिए।

आपने क्या सीखा

- भारत में खेती के विभिन्न प्रकार प्रचलित हैं। इन प्रकारों तरीकों में निर्वाह और वाणिज्यिक खेती, गहन और विस्तृत खेती, बागानी और मिश्रित खेती हैं।
- भारतीय कृषि की प्रमुख विशेष निर्वाह कृषि है जो मानसून पर बहुत कुछ आधारित है। साथ ही यहाँ की खेती में विभिन्न प्रकार की फसलों के समावेश के साथ पालतू जानवरों का बड़ा योगदान है।
- भारत में प्रमुख फसलों को मोटे तौर पर चार वर्गों खाद्य फसलें, नकदी फसलें, वृक्षारोपण फसलें और फलों में विभाजित किया जा सकता है।
- भारतीय कृषि के लिए कुछ प्रमुख चुनौतियाँ उत्पादन में स्थिरता, कृषि निवेश की उच्च लागत मृदा उर्वरता का ह्रास, मीठे भूमिगत जल की कमी, जलवायु परिवर्तन, वैश्वीकरण, अर्थव्यवस्था का उदारीकरण, खाद्य सुरक्षा और किसानों की आत्महत्या है।

पाठान्त प्रश्न

1. भारतीय कृषि की किसी भी चार प्रमुख विशेषताओं को समझाइए ।
2. चावल और गेहूँ की खेती के लिए भौगोलिक परिस्थितियों की तुलना कीजिए ।
3. चाय और कॉफी की खेती के लिए किन्हीं चार भौगोलिक परिस्थितियों को पहचाने और लिखें ।
4. भारतीय कृषि द्वारा सामना किए जाने वाले किन्हीं चार प्रमुख चुनौतियों का विश्लेषण कीजिए ।
5. खाद्य सुरक्षा की आवश्यकता को समझाइए । यह भोजन में आत्मनिर्भरता से किस तरह अलग है?
6. भारत के रेखा मानचित्र पर उत्पादन क्षेत्रों को दर्शाइए :
 - (i) दो गहन श्रम वाली फसलें
 - (ii) विभिन्न क्षेत्रों में उगाई जाने वाली दो फसलें

पाठान्त प्रश्नों के उत्तर

12.1

1. खेती के इन दो प्रकारों के बीच बृनियादी फर्क जमीन की प्रति इकाई से उत्पादन की मात्रा है । संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, पूर्व सोवियत संघ जैसे प्रमुख देशों में विस्तृत खेती प्रचलित है, जबकि जापान गहन खेती का प्रमुख उदाहरण है ।
2. शिक्षार्थियों के अनुभव के अनुसार

12.2

1. (i) समान रूप से उच्च तापमान, 21 डिग्री सेल्सियस से 30 डिग्री सेल्सियस के बीच हो ।
 - (ii) यह एक साल में कम-से-कम 210 पाला मुक्त दिनों वाले क्षेत्रों में आमतौर पर होता है ।
 - (iii) यह 50 से 100 सेमी की वर्षा की आवश्यकता है । हालाँकि जहाँ वर्षा 50 सेमी से कम होती है, सिंचाई द्वारा कपास की खेती सफल है ।
 - (iv) प्रारम्भ में उच्च वर्षा और पकने के समय शुष्क और खीला धूप बहुत उपयोगी है ।
 - (v) कपास की खेती काली मिट्टी से सम्बन्धित है । हालाँकि, यह सतलुज और गंगा के मैदान की जलोढ मिट्टी तथा प्रायद्वीपीय भारत के लाल और लेटेराइट मिट्टी भी अच्छी उपज देती है ।

(vi) कपास की चुनाई का यान्त्रिकरण नहीं हो पाया है। अतः चुनाई के लिए सस्ते एवं कुशल मजदूर की बड़ी संख्या में जरूरत होती है। (कोई तीन)

3. वाणिज्यिक फसलों को नकदी फसलों के रूप में भी जाना जाता है क्योंकि अधिकांश उत्पादन पैसे कमाने के लिए बाजार में बेचा जाता है।

12.3

1. जलवायु परिवर्तन के कारण तापमान में 2 से 3 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि हो सकती है। समुद्र के स्तर में वृद्धि, अधिक तीव्र चक्रवात, अप्रत्याशित वर्षा आदि के घटित होने की सम्भावना है। इन परिवर्तनों के कारण चावल और गेहूँ की पैदावार विपरीत ढंग से प्रभावित होगी। सर्दी के मौसम में तापमान का बढ़ना विशेष तौर पर उत्तरी भारत के गेहूँ उत्पादन को प्रभावित करेगा। तटवर्ती भागों में समुद्री जल के अन्तर्गमन और चक्रवात की बढ़ती बारम्बारता से चावल का उत्पादन भी प्रभावित होगा।

13. यातायात तथा संचार के साधन

राकेश और उसकी पत्नी एक छोटे से गांव में रहे थे। एक शाम वहां भारी वर्षा और आधी तूफान आया था। उसकी पत्नी को गंभीर पेट दर्द हो रहा था। गांव की नर्स ने उसे नजदीकी अस्पताल ले जाने की सलाह दी। चूंकि वहां संचार की सुविधा उपलब्ध नहीं थी, यह संभव नहीं था कि राकेश कोई अस्पताल, डॉक्टर या एम्बुलेंस से संपर्क कर सके। राकेश ने नजदीकी अस्पताल में छोड़ने के लिए अपने मित्र से अनुरोध किया। दुर्भाग्य से उसका ट्रैक्टर कुछ सौ मीटर की दूरी से अधिक नहीं जा सका। क्योंकि सड़क टूटी हुई थी और वर्षा के पानी में जलमग्न थी। राकेश को क्या करना चाहिए? समस्या का समाधान क्या हो सकता है? यह घटना हमारे जीवन में परिवहन और संचार के महत्व पर प्रकाश डालती है। इस पाठ में आप विभिन्न प्रकार के परिवहन और संचार के साधन और राष्ट्र के विकास के लिए उनके महत्व को बतलाने की योजना है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- क्षेत्र के सामाजिक - आर्थिक विकास में परिवहन और संचार के साधनों के महत्व के साथ सम्बन्ध स्थापित कर सकेंगे;
- सड़कों को विभिन्न मापदंडों के आधार पर वर्गीकृत कर सकेंगे और हमारे दैनिक जीवन एवं राष्ट्र के विकास में सड़क परिवहन के महत्व एवं भूमिका को बता सकेंगे;
- भारत में रेलवे नेटवर्क के घनत्व और वितरण को प्रभावित करने वाले कारकों का परीक्षण कर सकेंगे और इस क्षेत्र में तकनीकी उन्नति को जानकर क्षेत्र में उनके महत्व समझ सकेंगे;
- जल परिवहन के विभिन्न साधनों के महत्व की व्याख्या कर सकेंगे;
- बढ़ते हुए वायु परिवहन के महत्व और अनवरत बढ़ती आर्थिक महत्व की कर सकेंगे; और
- लोगों को जोड़ने और दूरी कम करने में संचार की भूमिका को स्पष्ट कर सकेंगे ।

13.1 परिवहन एवं संचार – देश की जीवन रेखा

परिवहन और संचार के साधन आज हमारे जीवन का अभिन्न अंग हैं। क्या हम उनके बिना अपने जीवन की कल्पना कर सकते हैं? जरा कल्पना कीजिए, यदि एक दिन आप को पता चलता है कि परिवहन और संचार के सभी आधुनिक साधन ईंधन की अनुपलब्धता की वजह से बंद कर दिया है। कल्पना कीजिए कि आप किस तरह की समस्या का सामना करना पड़ सकता है।

आप समस्याओं की सूची

- _____
- _____
- _____
- _____

13.1.1 परिवहन एवं संचार की भूमिका

उत्पादन के क्षेत्र से उपभोग के क्षेत्र तक वस्तुओं की दुलाई में कर व्यापार और वाणिज्य में परिवहन मदद करता है। वस्तु के आधिक्य वाले क्षेत्र से वस्तु के अभाव वाले क्षेत्र में स्थानान्तरित किया जाता है। लोगों का भ्रमण एक स्थान से दूसरे स्थान तक शिक्षा, नौकरी की तलाश या आकस्मिक कार्यों के लिए परिवहन ही माध्यम है। संचार हमें संसार की घटनाओं और प्रवृत्तियों के बारे में सूचित करता है। यह लोगों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाता है जिससे उनकी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ होती है।

13.2 यातायात के साधन

लोगों के वृद्धि और विकास के लिए देश निम्नलिखित परिवहन के साधनों पर निर्भर करता है :
परिवहन के साधन

1. स्थल

i. सड़क

ii. रेलवे

2. जल

i. समुद्री

ii. अंतर्देशीय

3. वायु

i. घरेलू

ii. अंतर्राष्ट्रीय

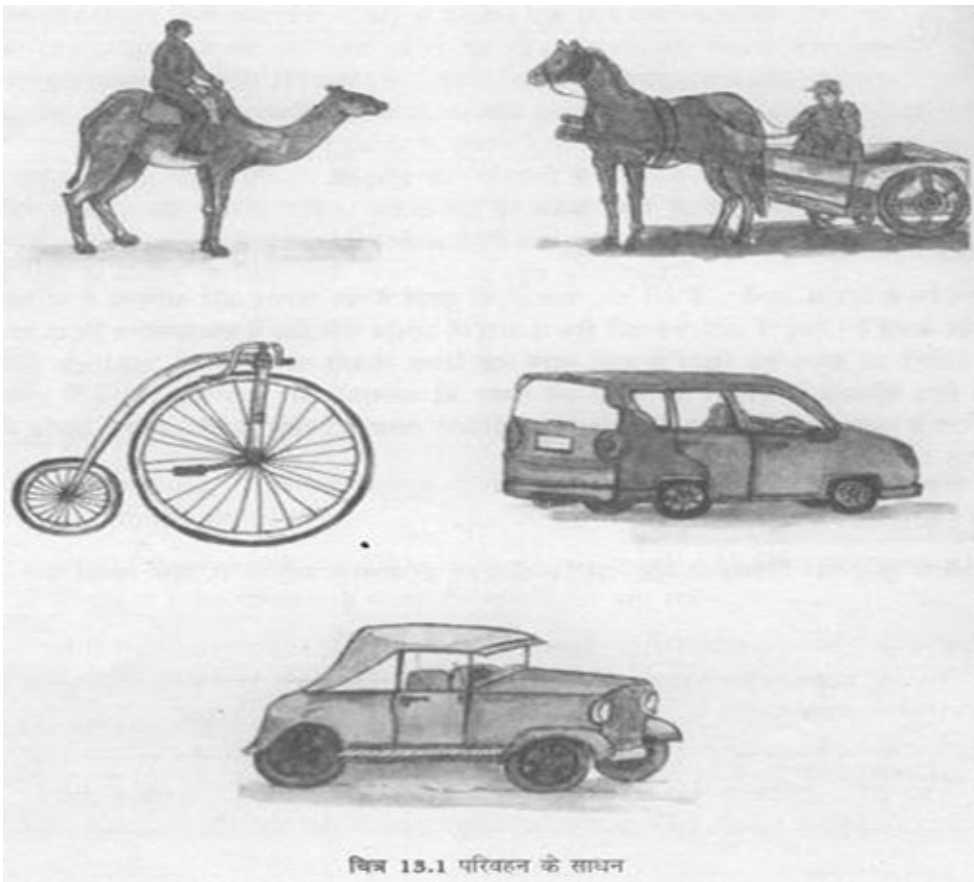
13.2.1 स्थल परिवहन

स्थल परिवहन को मुख्य रूप से दो प्रकारों में बांट सकते हैं -

1. सड़क मार्ग 2. रेल मार्ग

1. सड़क मार्ग

चित्र 13.1 देखिए। इन चित्रों के आधार पर क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि प्राचीन काल से आधुनिक समय तक हमारे परिवहन में क्या बदलाव आया है? मान लें, आपको अपने मित्र के घर जाना है, जो आपके घर से केवल 500 मीटर की दूरी पर है। या किसी रिश्तेदार को मिलने जाना है जिसका घर आपके घर से 200 किलोमीटर दूर है। एक ग्रामीण व्यक्ति को गांव से शहर आने के लिए बस पकड़नी पड़ती है। निश्चित रूप से सड़क का प्रयोग करेंगे।



चित्र 13.1 परिवहन के साधन

चित्र 13.1 : परिवहन के साधन

अब सभी समझ चुके हैं कि अधिकांश सड़कें सामान्य रूप से परिवहन के साधन के रूप में प्रयोग करते हैं। सड़कें लोगों को जोड़ने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं और देश के सामाजिक-आर्थिक विकास को निश्चित करती हैं जैसा कि नीचे दिया गया है –

- सड़कें रिक्शा, कार, साइकिल, स्कूटर या ट्रक के माध्यम से घर-घर जाने के लिए सेवा प्रदान करते हैं।
- सड़क निर्माण, मरम्मत और रख-रखाव की लागत परिवहन के अन्य साधनों की तुलना में कम है।
- यह कुछ लोगों के लिए और कम दूरी पर माल की ढलाई के लिए सबसे सस्ता और सुविधाजनक परिवहन का साधन है।
- इन सड़कों के माध्यम हम रेलवे स्टेशनों, हवाई अड्डों, और समुद्री पत्तनों तक पहुंचते हैं।
- दूध, फल और सब्जियां जैसे खराब होने वाला माल जल्दी से शहर या महानगर सड़क मार्ग से पहुंचाया जाता है।
- सड़कें ग्रामीण क्षेत्र को शहरी क्षेत्रों से जोड़ती हैं। साथ ही सभी प्रकार के धरातल पर इनका निर्माण किया जा सकता है जैसे पहाड़ी रेगिस्तान, पर्वतीय और पठारी क्षेत्र।

सड़कों का वर्गीकरण

क्या आपको एक ही प्रकार की सड़कें हर जगह मिलती हैं? कतई नहीं! कुछ सड़कें कच्ची, पक्की, संकीर्ण या व्यापक हो सकती हैं। सड़कों को निम्न आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है-

क) निर्माण के लिए सामग्री प्रयोग के आधार पर

ख) निर्माण कार्य और रखरखाव करने वाले प्राधिकरण के आधार पर

क) निर्माण के लिए प्रयोग सामग्री प्रयोग

कच्ची एवं पक्की सड़कों के निर्माण के लिए प्रयुक्त सामग्री के आधार पर सड़कों को वर्गीकृत किया जा सकता है। पक्की सड़कें आमतौर पर ईंट, कंक्रीट, सीमेंट और तारकोल के द्वारा बनाई जाती हैं। अन्य पक्की सड़कें रेत, मिट्टी और पुआल से बनाई जाती हैं।

सड़कों के निर्माण के लिए प्रयुक्त सामग्री की पहचान कीजिए :

पक्की सड़कें (पक्का सड़क) कच्ची सड़कें (कच्चा सड़क)

ख) निर्माण कार्य एवं रखरखाव करने वाले प्राधिकरण

क्या आपको कभी आश्चर्य हुआ है कि इन सड़कों का निर्माण किसने किया और वे धन कहां से प्राप्त किये? जनता के द्वारा करों के रूप में किसने भुगतान किए गये पैसों से इनका निर्माण हुआ है। अच्छे प्रबंधन और सड़कों के संतुलित विकास के लिए विभिन्न सरकारी अधिकारी जिम्मेदार है।

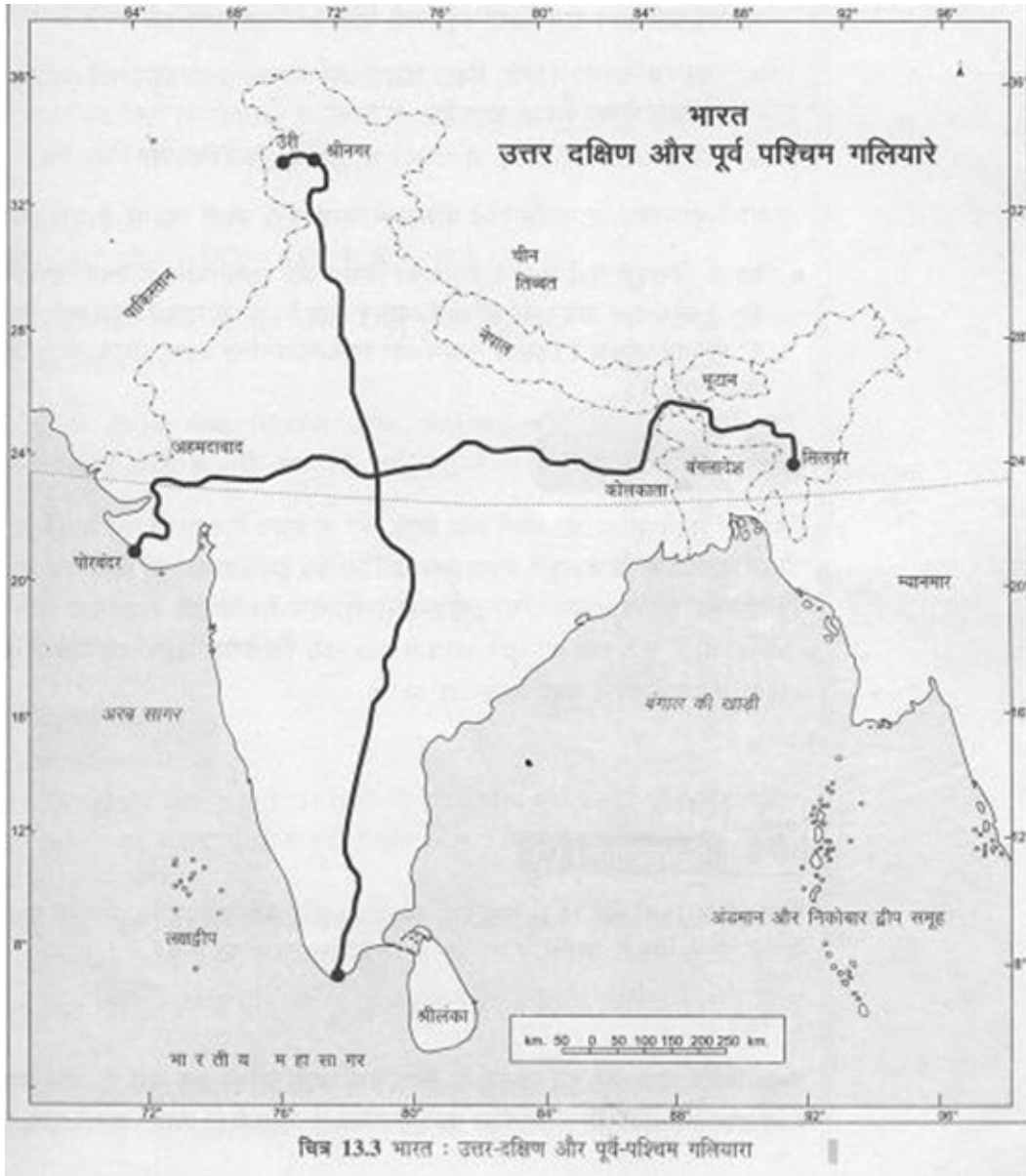
- ग्रामीण सड़कों का विकास केंद्र सरकार द्वारा शुरू की गई 'प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना' द्वारा किए जाते हैं। ये गांव से गांव और गांव को ग्रामीण क्षेत्रों में मुख्य सड़कों से जोड़ते हैं। भारत



चित्र 13.2 भारत : स्वर्णिम चतुर्भुज

में कुल सड़कों की लंबाई में, लगभग 80 प्रतिशत ग्रामीण सड़कों के रूप में वर्गीकृत है।

- जिला परिषद सड़कों को जिले के अन्य शहरों और कस्बों के साथ जिला मुख्यालय को जोड़ने के लिए उत्तरदायी है। ये जिला सड़कें भारत में कुल लंबाई का 14 प्रतिशत है।
- राज्य लोक निर्माण विभाग (एस.पी.डब्ल्यू.डी.) सड़कों का निर्माण और रख-रखाव करता है। यह राज्य राजमार्ग, जिला मुख्यालयों के साथ राज्यों की राजधानी को जोड़ता है। ये देश में कुल सड़कों की लंबाई का 1 प्रतिशत है।



चित्र 13.3 भारत : उत्तर-दक्षिण और पूर्व-पश्चिम गलियारा

- भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण राष्ट्रीय राजमार्ग (एन.एच.) का निर्माण और रखरखाव करता है। यह महत्वपूर्ण सड़कें भारत के विभिन्न भागों को मुख्य शहरों को राज्य और राजधानियों से जोड़ता है। ये कुल सड़कों की लंबाई का केवल 2 प्रतिशत है, लेकिन सड़क यातायात का 40 प्रतिशत आवागमन इनसे होता है।
- सरकार ने एक प्रमुख सड़क विकास परियोजना शुरू की है जो उत्तर, दक्षिण पूर्व और पश्चिम भारत को जोड़ता है। इससे समय और ईंधन की बचत होगी। इससे भारत के बहुत बड़े शहरों के बीच यातायात के तेज प्रवाह को बनाए रखने में मदद मिलेगी। यह भारत की राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण द्वारा कार्यान्वित किया जाता है। प्रमुख वृहत राजमार्ग हैं –

क) स्वर्णिम चतुर्भुज दिल्ली, मुंबई, चेन्नई और कोलकाता को जोड़ता है जो ज्यामितीय आकार में चतुर्भुज की तरह है।

ख) उत्तर-दक्षिण गलियारा जो श्रीनगर से कन्याकुमारी को जोड़ता है।

ग) पूर्व-पश्चिम गलियारा जो पश्चिम में पोरबंदर से पूर्व में सिलचर से जुड़ा हुआ है।

- देश के सीमावर्ती क्षेत्रों में सीमा सड़क का निर्माण और आपातकाल के समय रक्षाकर्मियों की जरूरत और अन्य समान का परिवहन आसान होता है। इसके साथ ही वहां रहने वाले लोगों को भी लाभ पहुंचता है। इसका निर्माण और रखरखाव सीमा सड़क संगठन (बीआरओ) द्वारा किया जाता है।

क्या आप जानते हैं

भारत में सबसे पुराना और सबसे लंबा सड़क गंगा के मैदान में उत्तर-पश्चिम से पूर्व की ओर 16वीं शताब्दी में शेरशाह सूरी ने बनवाया था जिसे ग्रेंड ट्रंक रोड का नाम दिया गया था। यह वर्तमान में राष्ट्रीय राजमार्ग 1 (अमृतसर से दिल्ली) और राष्ट्रीय राजमार्ग-2 (दिल्ली से कोलकाता) में बांटा गया है। आज भारत में 330 लाख किलोमीटर सड़कों का जाल है जबकि 1947 में यह केवल 4 लाख किलोमीटर था।

(चित्र संख्या 13.1 और 13.2) मानचित्रों को देखिए और पता कीजिए कि कौन-सा प्रमुख मार्ग आपके घर के पास है और कौन सा संगठन इसका रख-रखाव करता है।

2. रेलवे

“यह अपनी मांगों को पूरा कराने के लिए यह सरल तरीका बन गया है और यहां कोई सख्त मजा भी नहीं होती।” अखबार पढ़ते हुए अनु के पिताजी ने कहा। अनु ने पूछा, पिताजी

क्या हुआ? पिताजी ने कहा “कोई नई बात नहीं है, प्रदर्शनकारी के एक समूह ने रेलवे पटरी को अवरुद्ध किया है। उन लोगों ने गाड़ियों को बंद कर दिया और आगरा-दिल्ली मार्ग पर दो बोगी जला दी है।” अनु ने पिताजी से पूछा, आप इतना परेशान क्यों हैं? पिताजी ने कहा है कि “आप नहीं जानते कि हजारों लोगों के कई वर्षों के प्रयास से लाखों रुपये खर्च करके रेल की पटरियां एवं रेलवे के डिब्बे का निर्माण किया गया है। यह हमारी सुविधा, यात्रियों एवं सामान के तीव्र परिवहन के लिए है। केवल यही नहीं, यह यात्रियों के लाखों रुपये की हानि का कारण है और व्यापार को प्रभावित करता है।” अनु को रेलवे के महत्व का एहसास हो गया है जैसा कि नीचे वर्णित है –

- यह सबसे सस्ता परिवहन का साधन है जिसके द्वारा हजारों लोगों के साथ शिक्षा, व्यापार, तीर्थ स्थल देखने या दोस्तों या रिश्तेदारों से मिलने के उद्देश्य से देश के एक कोने से दूसरे कोने तक हजारों यात्री एक साथ यात्रा करते हैं।
- सभी आय वर्ग के लोग रेलवे से यात्रा कर सकते हैं इनमें साधारण, शयनयान और एसी कुर्सीयान कार की तरह विभिन्न प्रकार के डिब्बे होते हैं।
- कोई भी शयनयान डिब्बे बर्थ और शौचालय की सुविधा के साथ एक आरामदायक रात की यात्रा कर सकता है।
- यह देश के कोयला, सीमेंट, खाद्यान्न उर्वरक, पेट्रोलियम, ऑटोमोबाइल से उद्योगों तक और उद्योगों से खपत के क्षेत्रों तक जैसे भारी वस्तुओं की सबसे बड़ी मात्रा में परिवहन करता है।

यही कारण है कि देश में इस महत्वपूर्ण संसाधन को बनाए रखने में हम सभी को सहायता करनी चाहिए। रेलवे माल ढुलाई और यात्रियों के आगमन की सुविधा दोनों ही प्रदान करता है और हमारी अर्थव्यवस्था के विकास में योगदान देता है।

क्या आप जानते हैं

‘भारतीय रेल 1853 में मुंबई से ठाणे’ 34 किमी की दूरी के बीच शुरू की गई थी। वर्तमान में, भारतीय रेलवे नेटवर्क एशिया में सबसे बड़ा है और 64,000 किलोमीटर से अधिक की लंबाई के साथ संसार में चौथा बड़ा है।

यह सबसे बड़ा सरकारी उपक्रम है जिसमें 16 करोड़ लोग कार्यरत हैं और इसके लिए अलग बजट प्रस्तुत किया जाता है।

अच्छे प्रशासन और प्रबंधन के लिए इसे 16 क्षेत्रों में बांटा गया है।

जब अनु और उसके पिताजी रेलवे की महत्व के बारे में बातचीत कर रहे थे, तो उनकी एक सहेली जिया उनके घर आई। वह दिल्ली विश्वविद्यालय में पढ़ रही थी। जबकि उसकी मातृभूमि सिक्किम

थी। जिया ने तार्किक रूप से समझा और उसके मन में प्रश्न था कि सिक्किम देश के दूसरे भागों के साथ कभी नहीं क्यों जुड़ा। अंकल, मेरे राज्य में रेलवे लाइन कम क्यों है? जबकि अन्य राज्यों में रेलवे का अच्छा नेटवर्क है। उन्होंने बताया कि रेलवे के विकास के लिए कई कारक जिम्मेदार हैं-

- रेलवे का निर्माण पहाड़ी क्षेत्र में बहुत मुश्किल और महंगा है जबकि समतल भूमि के क्षेत्रों में इसे आसानी से किया जा सकता है। इसलिए भारत में गंगा के मैदान में घने रेलवे नेटवर्क हैं जबकि रेगिस्तान, पहाड़ियों, दलदली क्षेत्रों, बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों, घने जंगल, रेपिड्स और नदियों के क्षेत्रों में ज्यादा विकसित नहीं किया जा सकता।
- पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल राज्य रेलवे से अच्छी तरह जुड़े हुए हैं क्योंकि इन राज्यों की स्थिति मैदानी इलाकों में है। उन्होंने यह भी कहा कि भारत के इन क्षेत्रों में अनाज का भंडार और यहां अधिक उगाई जाने वाली फसलों को रेलवे के माध्यम देश के अन्य भागों में लाया जाता है।
- जहां खनन और उद्योगों का विकास अधिक हुआ है वहां वस्तुओं को आसानी से परिवहन के लिए रेलवे की अच्छी सुविधाएं हैं। जिन क्षेत्रों में औद्योगिक विकास कम हुआ है, रेलवे के निर्माण की लागत की क्षतिपूर्ति नहीं कर सकता। इसलिए वहां पर कम रेलवे नेटवर्क है।
- जो क्षेत्र घनी आबादी वाले हैं, वहां अधिक आना-जाना होगा और वे निश्चित रूप से रेलवे से जुड़ा है।
- शहरी क्षेत्रों या बड़े शहरों में रोजगार, व्यापार, शिक्षा, व्यापार, बैंकिंग आदि को अधिक आकर्षित किया है और वहां पर लोगों को आने जाने के लिए रेलवे नेटवर्क का घनत्व अधिक है।

अनू के पिता ने हंसते हुए कहा कि “ऐसा नहीं है। देश के विभिन्न भागों, विशेष रूप से दूरस्थ क्षेत्रों को जोड़ने के महत्व के प्रति सरकार जागरूक है। यह प्राथमिकता से किया जा रहा है।” जिया को समझ आया कि कोई भी संसार के किसी भी क्षेत्र को इंटरनेट से जोड़ा जा सकता है।

भारतीय रेल द्वारा प्रदान की गई तकनीकी उन्नति

देश के उत्तर से दक्षिण को सीधे रेल सेवा उपलब्ध हैं (अर्थात् जम्मू से कन्या कुमारी) 71 घंटे में 3751 किलोमीटर की दूरी को तय करती है। सुविधाएं प्रथम वातानुकूलित, द्वितीय वातानुकूलित, तृतीय वातानुकूलित, तृतीय वातानुकूलित, कुर्सीयान वातानुकूलित, द्वितीय रेणी शयनयान और सामान्य वर्ग में यात्रा करने के लिए विभिन्न आर्थिक तबके के लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उपलब्ध हैं। डीजल और विद्युत लोकोमोटिव बड़ी लाइन पर उपयोग करके प्रदूषण मुक्त यात्रा प्रदान की जाती है। यात्रियों को घर से आसानी से इलेक्ट्रॉनिक टिकट बुकिंग की सुविधा ले सकते हैं माल से लदे ट्रकों को सीधे उपभोक्ताओं या कारखानों विशेष रेल डिब्बों में दिया जाता है।

नीचे दिए गए गिर्ड में प्रमुख रेलवे जोन के मुख्यालय को खोजिए –

प ओर ई त स मु
यू प न क ज ओम्
क ल म त रे प ब
क् प व अ इ फ ई
कोल काता आता आ
ज ब इ प ए न प
चै न् न ई र त व
त क ल ग क दि फ
ज फ र श्रफ ल् म
इ त च छ ख ल न
न पु र ट ठ ीम

1. निम्नलिखित कथन को पूरा कीजिए –

(क) देश के पूर्व-पश्चिम गलियारे — और — के रूप — में स्थित है।

(ख) प्रमुख राजमार्ग चार मेट्रो शहरों को जोड़ने — के रूप में जाना जाता है और यह — ।

2. (अ) रेलवे के घनत्व को प्रभावित करने वाले मुख्य कारकों की व्याख्या कीजिए।

(ब) सड़क और रेल परिवहन के प्रत्येक के दो फायदे और दो नुकसान की पहचान कीजिए।

3. “भारत के कुछ राज्यों में अच्छे रेलवे नेटवर्क का अभाव है” 30 शब्दों में इस कथन की पुष्टि कीजिए।

अपने परिवार को नीचे दिए गए रेलवे के आरक्षण फार्म को दिखाइए। नीचे दिए कालम के महत्व और उसके अर्थ पर चर्चा कीजिए और इसे भरने का प्रयास कीजिए -

(i) मेडिकल परामर्शदाता

(ii) वरिष्ठ नागरिक

(iii) सीटों का चुनाव

(iv) कुछ ट्रेनों में खाने की उपलब्धता

————रेलवे सी.एम. 257

आरक्षण/ रद्दकरण मांग-पत्र

यदि आप डाक्टर हैं तो कृपया खाने में सही (सही) का निशाना लगाए। (आपात स्थिति में आपसे मदद ली जा सकती है।) —

यदि आप गर्भवती हैं और महिला कोटे के अन्तर्गत शायिका आरक्षित कराना चाहती हैं। तो कृपया बॉक्स में सही (सही) का निशाना लगाएं एवं राजि. डा. का प्रमाण-पत्र प्रस्तुत करें। —

यदि आप वरिष्ठ नागरिक रियायत चाहते हैं तो बॉक्स में हाँ/ नहीं लिखें। (यदि हाँ, तो कृपया वर्तमान रेलवे नियमों के अन्तर्गत दंड से बेचने के लिए यात्रा को दौरान आयु का प्रमाण साथ रखें)। —

यदि आप अपग्रेडेशन योजना का लाभ प्राप्त नहीं करना चाहते हैं तो बॉक्स में 'नहीं' लिखें। (यदि इस विकल्प का प्रयोग नहीं किया जाता तो पूरे किराए का भुगतान करने वाले यात्रियों को स्वतः अपग्रेड किया जा सकता है)

गाड़ी सं. और नाम ————— यात्रा की तारीख ———

श्रेणी ————— शायिकाओं/ सीटों की सं. ———

स्टेशन सं. ————— स्टेशन तक

यात्रा आरम्भ करने का स्टेशन ————— स्टेशन पर आरक्षण

नाम	स्पष्ट लिंग	रियायत/
क्र.सं.	अक्षरों में (15 पुल्लि	पात्रों
	अक्षरों से /	आयु
	अधिक न हों) स्त्री	प्राधिकार
		सं.
		विशेष

1.

निचली/ ऊपरी शायिका
शाकाहारी/ मांसाहारी
भोजन (केवल राजधानी /
शताब्दी एक्सप्रेस के
लिए)

2.

3

4.

5.

6.

5 साल से कम आयु के बच्चे (जिनके लिए टिकट जारी नहीं किए जाते हैं)

क्रम संख्या नाम स्पष्ट अक्षरों में लिंग (पु./ स्त्री) आयु

1.

2.

आगे की/वापसी यात्रा का विवरण

गाड़ी सं. और नाम ——— तारीख ———

श्रेणी ——— स्टेशन सं. ——— स्टेशन तक

आवेदक का पता ———

पूरा पता ———

टेलीफोन नं., यदि हो ——— तारीख ——— समय ———

आवेदक/ प्रतिनिधि के हस्ताक्षर

केवल सरकारी प्रयोग के लिए

मांग पत्र की क्रम सं. ——— पी.एन. आर.सं. ———

शायिका/ सीट सं. ——— वसूल की गई राशि ———

आरक्षण लिपिक के हस्ताक्षर

नोट: 1. एक मांग-पत्र में अधिक से अधिक 6 व्यक्तियों के नाम दिए जा सकते हैं।

2. एक व्यक्ति केवल एक ही बार मांग-पत्र दे सकता है।

3. कृपया खिड़की छोड़ने से पहले अपनी टिकट और शेष राशि की जांच कर ले। 4. ठीक ढंग से न भरे गए या अपाटच मांग-पत्र स्वीकार नहीं किए जाएंगे।

5. विशेष मांग पर केवल स्थान उपलब्ध होने पर ही विचार किया जाएगा। 6. एक टिकट पर बुक किए गए यात्रियों को अपग्रेड की गई श्रेणी में एक साथ इकट्ठे भी स्थान दिया जा सकता है अथवा नहीं भी दिया जा सकता है।

7. गर्भवती महिला, महिला कोटे के अन्तर्गत आरक्षक निचली शायिका के लिए मांगपत्र में उचित स्थान पर सही का निशान लगाएँ उन्हें प्रथम आओं और प्रथम पाओं के आधार पर

13.2.2 जल परिवहन

क्या आपने कभी सोचा है कि क्यों लोग प्राचीन काल में नदियों के निकट निचले भाग में बसे? कैसे दूर भूमि से कारोबार संभव हुआ था? हां, यह नदियों और समुद्र के माध्यम से किया गया था। पुराने दिनों से अब तक जल परिवहन का महत्वपूर्ण साधन है। क्योंकि-



चित्र 13.4 परिवहन के साधन

चित्र 13.4 परिवहन के साधन

- परिवहन के अन्य साधनों की तुलना में यह सबसे सस्ता है क्योंकि इसमें कोई भी निर्माण या रख-रखाव पर अतिरिक्त व्यय शामिल नहीं है।
- यह माध्यम बड़ी और भारी माल परिवहन के लिए बहुत उपयोगी है। एक जहाज पर एक समय में लाखों टन माल को ले जाया जा सकते हैं।
- यह पेट्रोलियम के लिए अच्छा परिवहन है और अपने उत्पादों के रूप में महाद्वीपों के पार स्थानान्तरण शामिल है। भारत में पेट्रोलियम जमा की कमी है और यह सबसे अधिक मध्य पूर्व देशों से आयात किया जाता है।
- परिवहन के साधनों में ईंधन की बचत और पर्यावरणीय मित्त्र के रूप में भी है।

जल मार्ग को दो प्रकार में वर्गीकृत किया गया है - क्या आप उन्हें जानते हैं? पता लगाइए क्यों उसे अंतर्देशीय जलमार्ग और महासागर मार्ग कहा जाता है?

1. अंतर्देशीय जलमार्ग : भारत अंतर्देशीय नौगम्य जलमार्ग की लम्बाई 14,500 किलोमीटर है जिसमें नहरें, नदियां, बैक वॉटर्स और संकीर्ण खाड़िया आदि शामिल हैं। लेकिन नदी नौगम्य मार्ग की कुल लंबाई के केवल 3700 किलोमीटर उत्तर में गंगा और ब्रह्मपुत्र और दक्षिण में गोदावरी, कृष्णा और कावेरी नदियों में मशीनी नौकाओं के लिए उपयुक्त है। राजमार्गों पर यातायात का भसार कम करने में अंतर्देशीय जलमार्ग का अच्छा नेटवर्क अहम भूमिका निभाता है। यह भी वस्तुओं के परिवहन में सहयोग करता है।

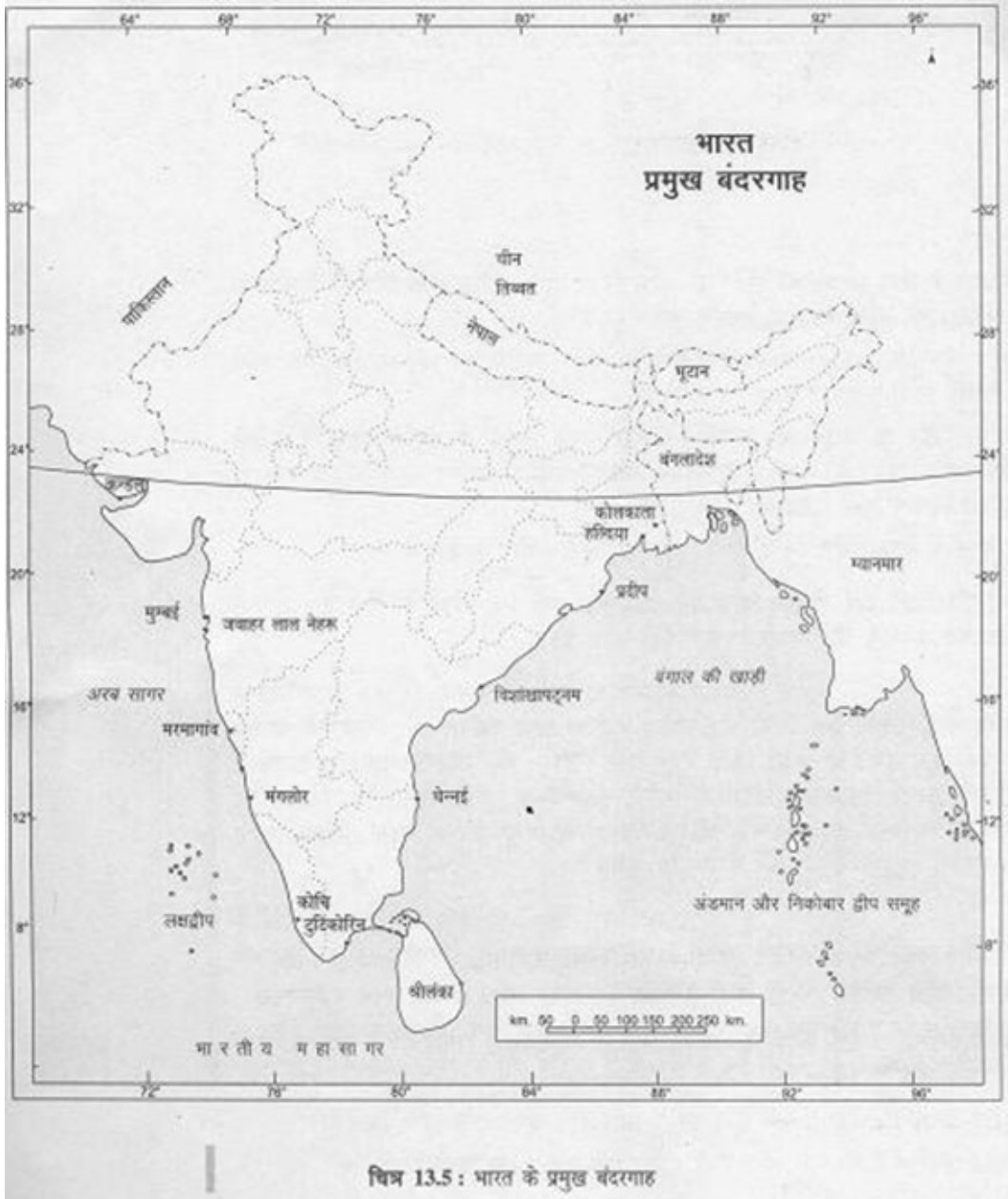
भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण का गठन 1986 में किया गया था और देश में अंतर्देशीय जल मार्गों के विकास, रखरखाव और प्रबंधन करता है। निम्नलिखित तीन जलमार्ग को ही राष्ट्रीय जलमार्ग घोषित किया गया है-

राष्ट्रीय जलमार्ग-1 उत्तर प्रदेश में गंगा नदी (1620 किलोमीटर) इलाहाबाद से पश्चिम बंगाल में हल्दिया तक

राष्ट्रीय जलमार्ग-2 ब्रह्मपुत्र नदी में असम में सादिया से धुबरी तक (891 किलोमीटर)

राष्ट्रीय जलमार्ग-3 केरल में कोल्लम से कोट्टापुरम् तक (205 किलोमीटर)

2. समुद्रीय जलमार्ग : यदि आप भारत के मानचित्र पर देखेंगे तो आप पाएंगे कि भारत तीन ओर से अरब सागर, बंगाल की खाड़ी और हिंद महासागर में घिरे हुए 7516 किलोमीटर लम्बी की तट रेखा है। 1946 में भारत 1,27,083 टन क्षमता के साथ केवल 49 जहाज थे। आजादी के बाद, सरकार ने 2004 में विभिन्न आकार वाले 616 जहाजों की खरीद से 7,00,000 टन क्षमता जहाज खरीदा गया।



चित्र 13.5 : भारत के प्रमुख बंदरगाह

भारतीय समुद्र जलमार्ग की दो श्रेणियां हैं :

(अ) तटीय नौवहन : देश के तट पर स्थित बंदरगाहों के बीच यात्रियों और माल परिवहन तटीय जलमार्ग के द्वारा किया जाता है। नेविगेशन कंपनियां 100 जहाजों से 12 प्रमुख बंदरगाहों और 189 छोटे और मध्यम वर्ग के बंदरगाहों के माध्यम से तटीय जलमार्ग द्वारा माल के लगभग 7 लाख टन माल को ढोने में व्यस्त हैं।

(ब) अंतर्राष्ट्रीय नौवहन : भारत के नौवहन की क्षमता का अधिकांश भाग अंतर्राष्ट्रीय नौवहन में है। म्यांमार, मलेशिया, इंडोनेशिया, ऑस्ट्रेलिया, चीन, जापान से पूर्वी तट के बंदरगाहों के माध्यम से और पश्चिमी तट के बंदरगाहों से संयुक्त राज्य अमेरिका, यूरोप और पश्चिम एशिया के लिए निर्यात और आयात करने के लिए प्रयोग में लाया जाता है।

1. (अ) नीचे दिए गए मानचित्र की सहायता से तालिका को पूरा कीजिए :

बंदरगाह राज्य तट

मुंबई महाराष्ट्र पश्चिमी

(ब) उस क्षेत्र का नाम बताइए जहां बंदरगाह नहीं है। उसके लिए एक कारण दीजिए।

13.2.3 वायुमार्ग

क्या आप पक्षी की तरह उड़ना चाहते हैं? वायुमार्ग द्वारा बिना किसी रुकावट के आप शीघ्र अपने गंतव्य स्थान पर पहुंच सकते हैं। हमारे आधुनिक हवाई जहाज को 1903 में राइट ब्रदर्स ने डिजाइन किया था। भारत में हवाई परिवहन 1911 में शुरू हुआ। आज यह सड़क और रेलवे परिवहन की तरह एक महत्वपूर्ण यातायात का साधन है। भारत में दोनों राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय उड़ान की सुविधाएं हैं। दोनों सुविधाओं के रूप में के रूप में अच्छी तरह से अंतरराष्ट्रीय एवं घरेलू वायुमार्ग हैं। आधुनिक युग में इसके महत्व पर हम सब चर्चा करें -



चित्र 13.6 : हवाई परिवहन

- हवाई परिवहन के द्वारा संसार एक वैश्विक गांव बनता जा रहा है। यह परिवहन का सबसे तेज साधन है और कुछ घंटों में गंतव्य स्थान की सैकड़ों किलोमीटर की दूरी तय की जा सकती है।
- यह दुर्गम पहाड़ों, घने जंगलों, दलदली भूमि या बाढ़ क्षेत्रों के रूप में किसी भी अवरोध से मुक्त है।
- यह राष्ट्रीय रक्षा में अपनी उपयोगिता के कारण सबसे महत्वपूर्ण है।
- पृथ्वी को एक वैश्विक गांव बनाने में विभिन्न महाद्वीपों के देशों को यह जोड़ता है।
- यह समय सीमा में महंगी दवाइयां, अत्याधुनिक मशीनों, फल, सब्जियों या उच्च मूल्य के सामान के लिए यह परिवहन उपयुक्त है।
- यह प्राकृतिक या किसी अन्य आपदा में लोगों को बचाने या उनकी जरूरतों का सामान तुरंत आपूर्ति के लिए भी बहुत उपयोगी है।

यात्रा की उच्च लागत ही एक मात्र कमी है। यही कारण है कि यह अभी भी साधारण व्यक्ति के पहुंच से बाहर है। पिछले कुछ वर्षों में हवाई परिवहन के प्रयोग में तीव्र वृद्धि दर्ज की गई है।

भारत में हवाई परिवहन सेवाओं को निम्नलिखित श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है-

13.2.4 घरेलू एवं अंतर्राष्ट्रीय सेवाएं

घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय सेवाएं सरकार और प्राइवेट द्वारा प्रदान की जाती हैं। पवनहंस हेलीकाप्टर लिमिटेड (सरकारी उपक्रम) यह कंपनी तेल और प्राकृतिक गैस निगम, इंडियन ऑयल और देश के पूर्वोत्तर भाग में हवाई परिवहन प्रदान करता है।

पाठगत प्रश्न 13.3

1. किस राज्य में एक से अधिक अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा है?
2. उन दो राज्यों के नाम लिखिए जहां पर कोई अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा नहीं है।
3. आपके घर से सबसे निकट अंतर्राष्ट्रीय एवं घरेलू हवाई अड्डा कौन है?

13.3 संचार और इसके महत्व

आपकी बहन की शादी तय हो गयी है और आप अपने सभी रिश्तेदारों और मित्रों को शादी में उपस्थित देखना चाहते हैं। आप उनको कैसे सूचित करना चाहेंगे? अचानक, आपके दादा को दिल का दौरा पड़ता है और आपके पिता श्री अपने कार्यालय में है, आप उन्हें कैसे तुरंत सूचित करेंगे? आपको जापान में सुनामी के बारे में कैसे पता चला या मिस्र की घटना के बारे में, जहाँ पर लाखों लोगों ने अपने राष्ट्रपति का विरुद्ध विरोध कर रहे थे। उपरोक्त



चित्र 13.7 : प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे

स्थितियों के लिए आपकी प्रतिक्रिया अवश्य होगी कि दैनिक जीवन में संचार का महत्व, इसकी आवश्यकता और इसके विभिन्न साधन हैं। इस प्रकार संचार, विचारों और सूचनाओं और संदेशों को ले जाने और अपने परिवार के सदस्यों या मित्रों के साथ अपने दुःख और सुख को बांटने का भी एक साधन है।

अब आप समझ गये होंगे कि संचार में परिवर्तन का अर्थ संचार के उद्देश्यों को प्राप्त करना है। संचार के विभिन्न साधन हैं। लोगों को पत्र लिख कर, टेलीग्राम भेजकर, रेडियो, टेलीविजन, कम्प्यूटर तकनीकी समाचार पत्र, मैगजीन, पम्पलेट्स, फैक्स, ई-मेल, व्यवसाय, व्यापार और अन्य सेवाओं के लिए करते हैं। ई-मेल संचार की सबसे तेज साधन के रूप में उभरा है और लगभग निःशुल्क है। यह भी जानने के लिए महत्वपूर्ण है कि विशेष संचार के साधन का चुनाव हमारे उद्देश्य पर निर्भर करता है। अब हम, हमें दो समूहों में संचार के विभिन्न साधनों को दो वर्गों में वर्गीकृत किया जाता है-

1. संचार के निजी साधन

2. जन संचार के साधन

1. संचार के निजी साधन : हम संचार के निजी साधन के दो भागों में वर्गीकृत करते हैं

(अ) डाक सेवा

(ब) टेलीफोन सेवा

(अ) डाक सेवा : डाक सेवा संचार का एक बहुत पुराना साधन है। हालांकि पत्र लेखन अब लोकप्रिय नहीं है, लेकिन अभी भी महत्वपूर्ण है। भारतीय डाक सेवा दुनिया में सबसे बड़ा है। 2001 में भारत को 155000 डाकघरों ने विभिन्न सेवाएं प्रदान की जैसे-पत्र, मनीआर्डर, पार्सल, डाक बचत योजनाएं आदि।

(ब) टेलीफोन (दूरभाष) सेवा : यह आज की दुनिया में सबसे महत्वपूर्ण और व्यापक रूप से प्रयोग होने वाला संचार के साधन के रूप में प्रयोग किया जा रहा है। यह शीघ्र और सस्ती है, हमारी आवश्यक मूल सेवा है।

2. जन संचार के साधन : इस साधन के द्वारा बहुत बड़ी संख्या में लोगों को जानकारी दी जा सकती है। इसे मीडिया या जनसंचार कहते हैं। जैसे रेडियो, टेलीविजन, अखबार, सिनेमा किताबें, पत्रिकाएं, पारंपरिक लोक रीति और संचार उपग्रह आदि।

(अ) आकाशवाणी (रेडियो) : भारत में रेडियो प्रसारण 1927 में मुंबई और कोलकाता से मनोरंजन करने, शिक्षित बनाने और महत्वपूर्ण जानकारी देने के लिए शुरू किया गया। आज ऑल इंडिया रेडियो (एआईआर) के कार्यक्रम देश के 90 प्रतिशत क्षेत्र में 98.8 प्रतिशत लोगों के लिए उपलब्ध हैं।

(ब) दूरदर्शन (टेलीविजन) : भारत की राष्ट्रीय टेलीविजन प्रसारण सेवा 1959 में शुरू किया जो संसार का सबसे बड़ा स्थल प्रसारण संगठनों में से एक है। आज, 87 प्रतिशत जनसंख्या इसे देख सकती हैं। टेलीविजन राष्ट्रीय कार्यक्रम प्रसारण, राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और स्थानीय दूरदर्शन और बड़ी संख्या में निजी चैनलों द्वारा शिक्षा, सूचना और मनोरंजन के लिए उपलब्ध हैं।

(स) कम्प्यूटर (सूचना प्रौद्योगिकी) : आज कंप्यूटर संचार और आर्थिक विकास का आधार बन गया है क्योंकि यह प्रत्येक जगह घरों और कार्यालयों से दुकानों, अस्पतालों, रेलवे, हवाई अड्डों, बैंकों, शैक्षिक संस्थाओं आदि के लिए प्रयोग किया जाता है।

13.3.1 नवीन संचार तकनीक

हाल के वर्षों में नई तकनीकी के विकास से लोगों को बहुत अच्छे तरीके से सहायता मिली है जैसे

(अ) इंटरनेट : यह सभी प्रकार की सूचनाओं को प्रदान करता है। यह दुनिया भर में सभी प्रकार के जानकारी को कम्प्यूटर के एक बटन के दबाने पर प्राप्त होता है।

(ब) विडियो दूरसंचार (टेलीकांफ्रेंसिंग) : दूर स्थानों पर बैठे लोग बात कर सकते हैं और दूर संचार और कंप्यूटर की सहायता के साथ अपने विचार व्यक्त कर सकते हैं।

(स) ई-कामर्स : इंटरनेट और फैक्स के माध्यम से अच्छी खरीद और बिक्री के लिए उपलब्ध सुविधा है।

(द) इंटरनेट दूरभाषा (टेलीफोनी) : यह एक सॉफ्टवेयर प्रोग्राम है जो कंप्यूटर एक टेलीफोन की तरह काम करने के लिए बनाता है। यह सुविधा कॉल दरों में काफी कमी लाई है।

(इ) ई-मेल : यह इंटरनेट के माध्यम से पत्र या सूचनाएं एक बटन दबाने के साथ ही दुनिया में किसी को भेजने की विधि है।

(फ) टेली-मेडिसिन : इस विधि से डॉक्टर हजारों किलोमीटर की दूरी पर बैठे रोगियों का निरीक्षण कर लेता है।

इस प्रकार वैज्ञानिक उन्नति और प्रौद्योगिकी संचार की परणाली में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ है। यह लोगों को बहुत करीब ला दिया है। यह दुनिया को एक वैश्विक गांव बना दिया है।

पुराने खेल कार्ड का एक पैकेट लीजिए। पुरानी पत्रिकाओं और पुराने समाचार पत्रों से संचार के विभिन्न साधनों के चित्र काट लें। प्रत्येक कार्ड पर एक चित्र चिपकाएं। पीछे की ओर इसके बारे में एक प्रश्न लिखें। अब आपके पास अपना संचार कार्ड का सेट है। इसे अपने मित्रों और परिवार के साथ खेलिए।

संकेत : संचार का कौन सा साधन देशभर में एक ही समय में एक ही तरह की जानकारी वितरित कर सकता है? (उत्तर टीवी)

पाठगत प्रश्न 13.4

1. निम्नलिखित को परिवर्तन के साधन और जन संचार के साधन या साधनों अन्य को श्रेणीबद्ध कीजिए।

इलेक्ट्रानिक मनीटर, उपयोगिता वैन, टैक्टर, तार, मेट्रो रेल, मोबाइल, पोस्टकार्ड, फैक्स, रेडियो, एम्बुलेंस, ट्रॉली, फेसबुक, ट्विटर, मैगजीन और एम.एम.एस.।

2. निम्न कथन के बारे में एक वाक्य लिखें:

(क) विचारों का आदान-प्रदान, विचारों और जानकारी के लिए संदेश ले जाने की एक प्रणाली है।

(ख) जिस सेवा के माध्यम से पत्र, पार्सल, और मनीऑर्डर भेजा जाता है।

(ग) इंटरनेट के माध्यम से पत्र लिखने की एक प्रणाली है।

(घ) भारत में रेडियो के माध्यम से कार्यक्रमों के प्रसारण के लिए उत्तरदायी प्राधिकरण है।

(च) भारत में वर्तमान में सबसे सामान्य और लोकप्रिय निजी संचार के माध्यम है।

आपने क्या सीखा

- परिवहन और संचार के साधनों की आवश्यकता और महत्व।
- भारत में निर्मित सड़कों के प्रकार।

- देश के विकास में रेलवे की भूमिका ।
- जलमार्ग के प्रकार एवं देश के व्यापार में उनका महत्व ।
- भारत जैसे देश में वायुमार्ग की आवश्यकता और इसका महत्व ।
- संचार के आधुनिक साधन एवं हमारे जीवन में उनकी उपयोगिता ।

पाठान्त प्रश्न

1. परिवहन और संचार के साधन देश की अर्थव्यवस्था की जीवन रेखा के रूप में क्यों माना जाता है?

2. सड़क मार्ग के तीन गुण और तीन दोष बताइए ।

3. भारत के लिए जल मार्गों का क्या महत्व है?

4. प्रमुख बंदरगाहों के मानचित्र का अध्ययन कीजिए और निम्नलिखित प्रश्नों को उत्तर दीजिए

(क) पूर्वी तट पर गिनती करें और बताइए कि कितने बंदरगाह हैं?

(ख) जिन राज्य में दो बंदरगाह हैं, उनकी सूची बनाइए ।

(ग) किस राज्य में पारादीप बंदरगाह स्थित है नाम बताइए ।

(घ) गोवा में स्थित बंदरगाह का नाम बताइए ।

(च) भारत के दक्षिणतम बंदरगाह का नाम बताइए ।

5. परिवहन के अन्य साधनों की अपेक्षा वायुमार्ग के क्या लाभ हैं?

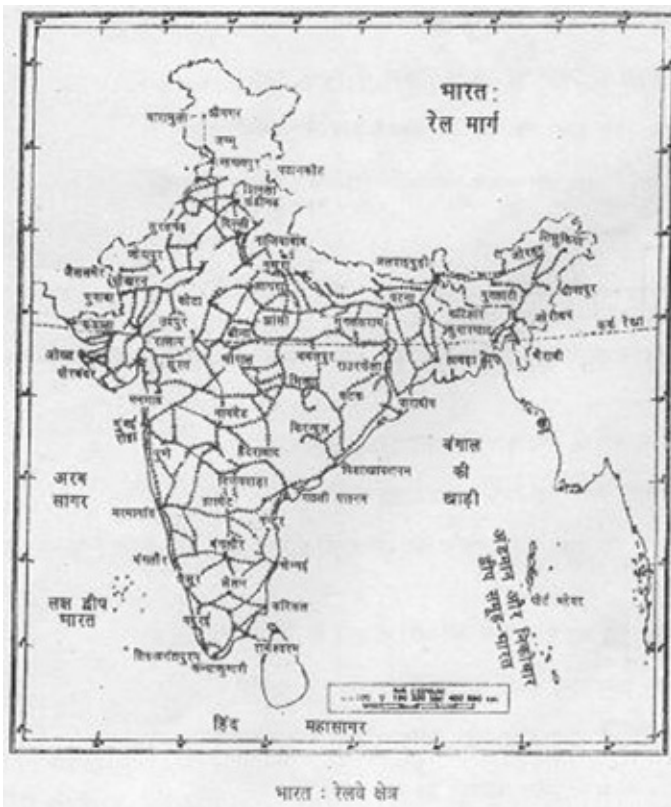
6. अपने दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों में संचार की महत्ता को बताइए ।

7. निजी संचार और जन संचार के बीच अंतर कीजिए ।

8. ट्रेन में पिछले यात्रा के दौरान महसूस की गई पांच समस्याओं की सूची तैयार कीजिए । आप के द्वारा महसूस की गई प्रत्येक समस्याओं के समाधान के लिए एक सुझाव दीजिए ।

9. भारत के रेखा मानचित्र में उच्च, मध्यम और कम रेल घनत्व वाले राज्यों की पहचान कीजिए और उनका नाम लिखिए । इस तरह घनत्व उन राज्यों में क्यों हैं?

(संकेत : कठिन क्षेत्र, जलावायवीक परिस्थितियाँ, अर्थव्यवस्था आदि)



चित्र: भारत : रेलवे क्षेत्र

परियोजना

अपने क्षेत्र में कम से कम पांच लोगों से साक्षात्कार कीजिए, जो पिछले दस वर्षों से वहां रह रहे हैं और उनसे पूछिए कि नई सड़कों/रेलवे के निर्माण के कारणों से इस अवधि में क्या परिवर्तन हुए हैं।

अथवा

अपने क्षेत्र में, सड़कों के निर्माण हेतु उत्तरदायी प्राधिकरण को पता कीजिए। आप उनके कार्यालय में अवश्य जाइए और विस्तृत ब्यौरा प्राप्त करें।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

13.1

1. (क) देश के सिलचर, पोरबंदर के रूप में पूर्वी और पश्चिमी किनारे में स्थित हैं।

(ख) स्वर्ण चतुर्भुज और यह देशभर में विभिन्न प्रकार धरातलीय विशेषताओं का ज्यामितीय चतुर्भुज है।

2. (अ) इन क्षेत्रों में अधिक रेलवे घनत्व के निम्नलिखित कारण हैं-

पंजाब और हरियाणा - कृषि उत्पादन के कारण

महाराष्ट्र और गुजरात - उद्योग के कारण

झारखंड और छत्तीसगढ़ - खनिज खादान के कारण

(ब) (i) दोनों लोगों के लिए परिवहन का महत्वपूर्ण साधन हैं।

(ii) दोनों क्षेत्र के विकास के लिए आवश्यक है।

(iii) रेलवे लंबी दूरी के लिए प्रायः उपयोग किया जाता है।

(iv) सड़क मार्ग को प्रायः कम दूरी के लिए अधिक पसंद करते हैं।

(v) रेलवे को बहुत बड़ी मात्रा का में प्रयोग में ले सकते हैं।

(vi) सड़क मार्ग से कम मात्रा सामान ले जा सकता है।

(vii) रेलवे उच्च निर्माण और रखरखाव की लागत अधिक आती है।

(viii) रोडवेज के निर्माण और रखरखाव में कम लागत शामिल है।

3. ऊंची पहाड़ी, ऊबड़ खाबड़ धरातल। जैसे - सिक्किम और अरुणाचल प्रदेश।

13.2

1. (अ) तालिका

बंदरगाह	राज्य	तट/ किनारा
कांदला	गुजरात	पश्चिमी
मुंबई	महाराष्ट्र	पश्चिमी
जवाहरलाल नेहरू	महाराष्ट्र	पश्चिमी
मारमागाव	गोवा	पश्चिमी
नयामंगलौर	कर्नाटक	पश्चिमी
कोच्चि	केरल	पश्चिमी
तूतीकोरिन	तमिलनाडु	पूर्वी
चेन्नई	तमिलनाडु	पूर्वी

विशाखापत्तनम् आंध्र प्रदेश पूर्वी

पाराद्वीप ओडिशा पूर्वी

हल्दिया पश्चिमी बंगाल पूर्वी

कोलकाता पश्चिमी बंगाल पूर्वी

(ब) राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, बिहार इत्यादि में कोई बंदरगाह नहीं है क्योंकि ये समुद्र से बहुत दूर हैं।

13.3

(i) महाराष्ट्र

(ii) हरियाणा एवं राजस्थान

(iii) शिक्षार्थी के अनुभव के अनुसार

13.4

1. (i) परिवहन के साधन : उपयोगिता वैन, ट्रैक्टर, मेट्रो रेल, एम्बुलेंस, ट्राली

(ii) संचार के साधन : तार, मोबाइल, पोस्टकार्ड, फैक्स, फेसबुक, ट्विटर

2. क) संचार

ख) डाक सेवा

ग) ई-मेल

घ) आकाशवाणी

च) मोबाईल फोन

14. जनसंख्या हमारा प्रमुख संसाधन

हम सभी ने कई लोगों को कहते सुना हैं कि भारत की जनसंख्या एक बड़ी समस्या है। आप भी ऐसा महसूस कर रहे होंगे। आप जानते हैं कि भारत की जनसंख्या एक अरब से अधिक है और यह अभी बढ़ रही है। हो सकता है, यह अगले कुछ दशकों में चीन की जनसंख्या से आगे निकल जाये। तत्पश्चात भारत दुनिया का सबसे अधिक आबादी वाला देश बन जाएगा। इस दृष्टिकोण से आबादी एक भार है, विकास और गुणात्मक जीवन के लिए रोड़ा है। पर क्या यह सत्य है? आइये इसे सोचा और समझा जाए। क्या आबादी देश के लिए संसाधन या सम्पत्ति नहीं है? आज भारत दुनिया में मानव शक्ति के मामले में एक अग्रणी राष्ट्र के रूप में माना जाता है। इस वैश्विक स्तर पर कीर्तिमान स्थापित करने में हमारे देश के युवा, शिक्षित और उत्पादक लोगों की अहम भूमिका है। वे न केवल हमारे देश के विकास के लिए योगदान दे रहे हैं, बल्कि दूसरे देशों के विकास में भी इनका सहयोग है। इस संदर्भ में जनसंख्या अर्थव्यवस्था के लिए एक परिसंपत्ति है, देश का सबसे बड़ा संसाधन है न कि भार। हमारे देश की जनसंख्या किस प्रकार से हमारा सबसे बड़ा संसाधन है, इसके विषय में इस पाठ में जानेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पूरा करने के बाद आप :

- देश की आबादी को मात्र संख्या और समस्या के रूप में नहीं बल्कि सबसे बड़े संसाधन के रूप में विश्लेषण कर सकेंगे;
- कारकों का आप वर्णन कर सकेंगे जिसके, चलते आबादी एक मानव संसाधन है;
- आबादी के उच्च, मध्यम और कम घनत्व के क्षेत्रों की पहचान कर सकेंगे और भारत की मानचित्र पर उन्हें दिखा सकेंगे;
- जनसंख्या के वितरण और घनत्व को प्रभावित करने वाले कारकों का विश्लेषण कर सकेंगे;
- जनसंख्या संरचना जैसे ग्रामीण-शहरी संरचना, उम्र संरचना, लिंग संरचना और साक्षरता में परिवर्तन के कारण होने वाले प्रभावों की जाँच कर सकेंगे;

- एक महत्त्वपूर्ण जनसंख्या समूह के रूप में किशोरों की जरूरतों को संभावित मानव संसाधन के रूप की सराहना कर सकेंगे;
- भारत में महिलाओं के सशक्तिकरण की जरूरत की पहचान करेंगे, और भारत सरकार द्वारा अपनाई गई जनसंख्या नीतियों का मानव संसाधन के विकास के संदर्भ में विशेष रूप से मूल्यांकन करेंगे ।

आम तौर पर आबादी का मतलब लोगों का एक संग्रह या संख्या से है। आइये, नीचे दिए गये बॉक्स में जनसंख्या के अर्थ को पढ़ें। जनसंख्या का अर्थ विभिन्न संदर्भ में अलग-अलग है। जनसंख्या का अर्थ विज्ञान या जीवविज्ञान की पाठ्यपुस्तक में बिल्कुल अलग है। अगर हम सामाजिक विज्ञान जैसे भूगोल, अर्थशास्त्र या समाजशास्त्र की पाठ्यपुस्तकों से तुलना करें तो। बाद में आप यह भी सीखेंगे कि सांख्यिकी में इसका अर्थ अलग है।

क्या आप पता लगाना पसंद करेंगे कि यह क्या है। आप इसके लिए सांख्यिकी की किताबों को देखें। हालांकि, वर्तमान पाठ में हम जनसंख्या शब्द का प्रयोग मानव समूह या मानव संख्या रूप में किया जाएगा। जनगणना में भी यही अर्थ लिया जाता है। प्राथमिक तौर पर जनसंख्या का मतलब लोगों के समूह की संख्या से है। परन्तु जनसंख्या एक संसाधन, मानव संसाधन के रूप में भी माना जाता है।

संसाधन क्या है? यह वह है जिसे इस्तेमाल और पुनः इस्तेमाल किया जा सके। कमरे में चारों ओर देखें हम विभिन्न वस्तुएँ, जैसे लकड़ी के सामान, किताबें, कॉपियाँ, कलम एवं अन्य पाते हैं। हम उन्हें अपने संसाधनों के रूप में विचार करते हैं और उन्हें अपने दैनिक जीवन में उपयोग और पुनः उपयोग करते हैं।

आइये अब हम उनके स्रोत का पता लगायें। ये उन संसाधनों से बनाये गये हैं जिन्हें हम प्रकृति से पाते हैं। फर्नीचर लकड़ी से बनाया गया है जो हम जंगल से प्राप्त करते हैं। पुस्तकें और कॉपियाँ भी जंगल से आते हैं जिसे लकड़ी की लुगदी से बनाते हैं। कलम प्लास्टिक से बना है जो पेट्रोलियम का गौण उत्पाद है। कप मृदा से बनता है जिसे हम मिट्टी से प्राप्त करते हैं। ये और इसके अतिरिक्त अन्य चीजें हैं जो हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा हैं। हम उन्हें प्राकृतिक संसाधनों से निकालते हैं। संसोधित करते और निर्मित करते हैं। यह मानव हैं, जो शारीरिक और मानसिक प्रयासों से प्राकृतिक संसाधनों को उपयोगिता की वस्तुओं में बदल देता है।

बॉक्स प्रारंभ

जनसंख्या से क्या अभिप्राय है?

- किसी भी क्षेत्र विशेष में निवास करने वाले लोगों की कुल संख्या (उदाहरण-गाँव, शहर, राज्य, देश, विश्व की जनसंख्या) ।
- किसी भी समूह, नस्ल, वर्ग या श्रेणी के लोगों की कुल संख्या (उदाहरण- अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, धार्मिक समूह जैसे हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, सिक्ख) ।
- जीवविज्ञान में किसी भी नस्ल के अंतर प्रजनन जीवों के सम्मिलित कुल संख्या (उदाहरण-बाघ, हिरण आदि की संख्या) ।

क्या आप जानते हैं

भारत सरकार ने 1985 में मानव संसाधन विकास मंत्रालय बनाया। इसके पूर्व इसे शिक्षा और संस्कृति मंत्रालय के रूप में जाना जाता था। कुछ राज्यों ने भी ऐसा किया है। इससे पता चलता है कि मानव संसाधन की अवधारणा की स्वीकृति प्राप्त है।

यदि संसाधन खास वस्तुएँ हैं जिसका प्रयोग और पुनः प्रयोग किया जाता है तो जनसंख्या एक संसाधन कैसे माना जा सकता है? हम सभी जानते हैं कि अनाज खेतों में उपजता है। खनिज का खनन किया जाता है। कारखानों में वस्तुएँ बनाई जाती हैं। ये सभी मानव द्वारा की जाती हैं देश के लोग विभिन्न प्रकार की सुविधाएँ एवं सेवाओं को उत्पादित एवं विकसित करते हैं। जो हमारे जीवन को आरामदेह बनाती हैं। ये सुविधाएँ चाहे यातायात के साधन, स्कूल, कॉलेज, अस्पताल बिजलीघर सिंचाई आदि कोई भी आधारभूत संरचना देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

उत्पादन के लिए ऐसी सुविधाओं के विकास और उन्हें उपयोगी संसाधनों में परिवर्तित करने के लिए मनुष्य सबसे अच्छा संसाधन की भूमिका निभाता है। बिना मनुष्य के अन्य संसाधनों को सही ढंग से विकसित और उपयोग नहीं किया जा सकता है। इसलिए संख्या के साथ-साथ लोगों की गुणवत्ता दोनों ही देश के वास्तविक और सर्वोच्च संसाधन हैं।

उपरोक्त बातों को ध्यान में रखते हुए लोगों की मात्र संख्या जो आवधिक अंतराल पर जनगणना द्वारा निर्धारित किया जाता है भार हो सकता है लेकिन गुणात्मक जनसंख्या देश का मनाव पूंजी बन जाता है मानव संख्या को मानव पूंजी में परिवर्तित करने के लिए देश को लोगों के स्वास्थ्य एवं पौष्टिक आहार की व्यवस्था, सही शिक्षा, विशिष्ट प्रशिक्षण एवं उनके जीवन में गुणात्मक बदलाव लाने के लिए देश को बहुत बड़ा निवेश करने की आवश्यकता पड़ती है। मानव के जीवन में गुणात्मक सुधार के लिए सरकार एवं समाज द्वारा किया गया निवेश बहुत महत्व रखता है। यह आवश्यक है कि हर व्यक्ति पूरी क्षमता के अनुरूप विकसित हो और देश के विकास की प्रक्रिया में उन्हें काम करने का मौका प्रदान किया जाये। इसीलिए यह महत्वपूर्ण बात समझने की है कि मानव संसाधन के विकास के रूप में एक वस्तु और विकास में भागीदारी है। जैसा कि पहले चर्चा किया गया है, मानव संख्या संसाधन नहीं है, लेकिन कुछ महत्वपूर्ण कारक हैं जो मानव संख्या को उपयोगी संसाधन में परिवर्तित कर देते हैं।

क्या आप जानते हैं

मानव पूंजी कई वर्षों से कर्मचारियों और कारोबार में जुड़े व्यक्तियों के वर्णन करने के लिए इस्तेमाल होने वाले शब्दों में बदलाव आया है। हम कर्मचारी से मानव संसाधन एवं मानव पूंजी इस्तेमाल करने लगे हैं। आर्थिक संदर्भ में मानवीय गुणों को मानव पूंजी में दर्शाते हैं। यह व्यक्ति में सन्निहित कौशल और तकनीकी ज्ञान का मिश्रित रूप में सम्बन्धित है।

जनगणना : किसी भी दिये गये जनसंख्या के कुल इकाइयों के सुव्यवस्थित एवं क्रमबद्ध तरीके से अभिलेख की प्रक्रिया जनगणना कहलाती है। इस शब्द का इस्तेमाल प्रत्येक दश वर्षों के अंतराल पर “राष्ट्रीय स्तर पर घर-घर की जनगणना” के रूप में किया जाता है। लोगों के विभिन्न जनांकिकी और सामाजिक आर्थिक संदर्भों के बारे में राज्यों की सहायता से भारत सरकार आंकड़े एकत्रित करती है।

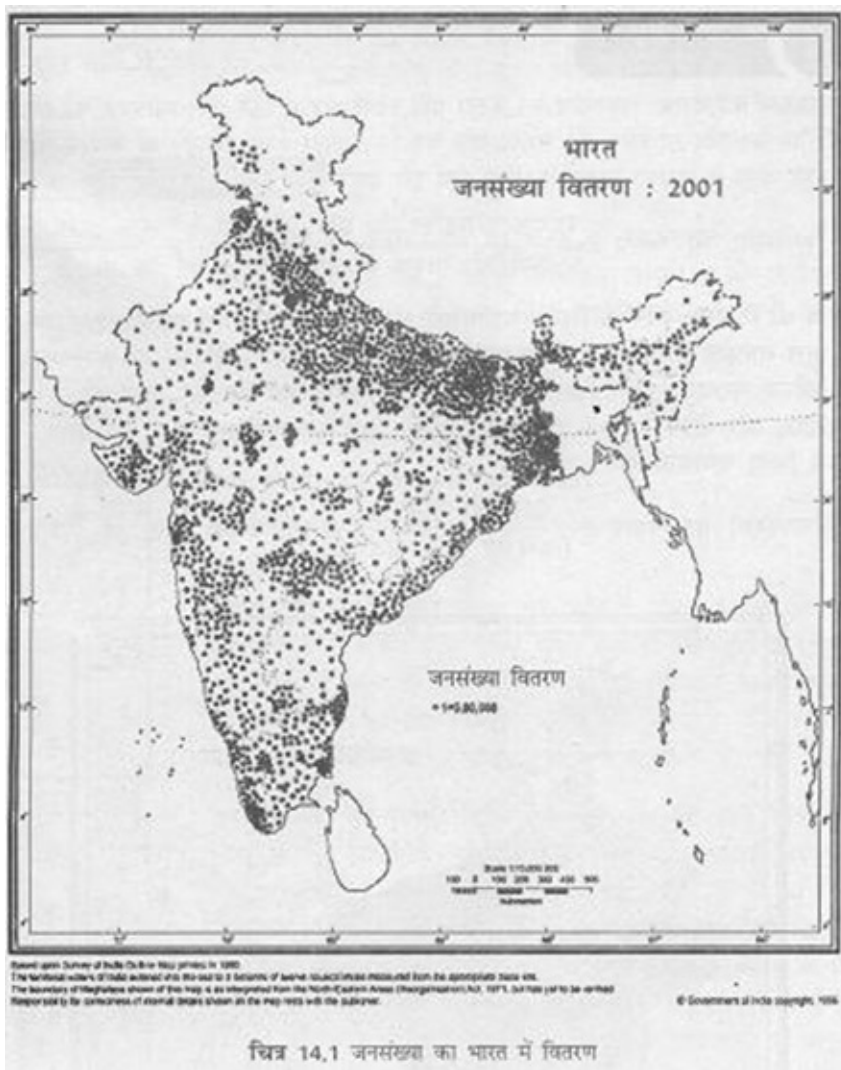
जनसंख्या को मानव संसाधन बनाने के कारक

जनसंख्या को मानव संसाधन के रूप में प्रभावित करने वाले कारक क्या हैं? ऊपर की चर्चा के आधार पर आप अनुमान कर सकते हैं कि लोगों की शिक्षा, स्वास्थ्य और पोषण की स्थिति और उनके विशेष प्रशिक्षण मानव संसाधन के रूप में जनसंख्या की गुणवत्ता निर्धारित करते हैं। लेकिन इन के अलावा सामाजिक जनसांख्यिकीय कारक प्रमुख हैं जिसका प्रभाव जनसंख्या पर एक संसाधन के रूप में पड़ता है। ये हैं : (i) जनसंख्या वितरण, (ii) जनसंख्या परिवर्तन और (iii) जनसंख्या संरचना। हम इन तीन कारकों को समझने की कोशिश करेंगे। हम जनसंख्या के वितरण के साथ शुरू करते हैं।

पाठगत प्रश्न 14.1

1. संसाधन से क्या अभिप्राय है?
2. मानव को संसाधन बनाने के लिए आवश्यक गुणों को बताइये ।

आपको पता है, संसाधन चाहे प्राकृतिक हो या कोई अन्य, उनका वितरण एकसा नहीं है। उदाहरण के लिए जंगल या लौह अयस्क या कोयला जैसे प्राकृतिक संसाधन दुनिया में समान रूप से वितरित नहीं है और हमारे अपने देश में वितरण में एकरूपता नहीं है। मानव संसाधन के साथ भी यही मामला है। वे दुनिया में हर जगह समान रूप से नहीं फैले हैं और उनकी संख्या बदलते रहती हैं। एक क्षेत्र में आबादी के प्रसार को जनसंख्या वितरण कहते हैं चाहे वह एक राज्य हो या पूरा देश निम्न दिए गये भारत के मानचित्र (चित्र संख्या 14.1) पर नजर दौड़ाएंगे तो आपको दिलचस्प सा लगेगा। यह दर्शाता है कि जनसंख्या का विस्तार भारत के विभिन्न राज्यों एवं केन्द्र शासित प्रदेशों में किस प्रकार है। इसे बिन्दु द्वारा दिखाया गया है। प्रत्येक बिन्दु पाँच लाख लोगों को प्रदर्शित करता है। आप देखते हैं कि कुछ राज्यों में बिन्दुओं की संख्या कम है जबकि उनका क्षेत्रफल काफी बड़ा है। जिसका मतलब है कि उन राज्यों में जनसंख्या दूर-दूर या साधारण विस्तार है। परन्तु कुछ राज्यों में बिन्दु एक दूसरे के बिल्कुल करीब-करीब हैं, इतने करीब कि मानचित्र का भाग बिन्दु से रंगा हुआ सा लगता है। उनमें जनसंख्या का विस्तार बहुत सघन है। कम आबादी, मध्यम आबादी और घनी आबादी वाले भारत के राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों की एक सूची तैयार करें।



चित्र 14.1 जनसंख्या का भारत में वितरण

ऊपर गये चित्र के आधार पर किसी भी दो राज्य के बीच जनसंख्या वितरण की तुलना बहुत ही रोचक होगा। चलिए, महाराष्ट्र और पश्चिम बंगाल राज्यों (चित्र संख्या 14.1) को देखें। इनमें जनसंख्या प्रसार का प्रतिरूप भिन्न है। सामान्य नजर दौड़ाने पर लगता है कि महाराष्ट्र की तुलना करने पर पश्चिम बंगाल में जनसंख्या ज्यादा है। परन्तु यह सही नहीं है। महाराष्ट्र में जनसंख्या पश्चिम बंगाल की तुलना में ज्यादा है पर महाराष्ट्र में जनसंख्या वितरण विरल सा लगता है क्योंकि यह पश्चिम बंगाल से क्षेत्र में बड़ा है। फलस्वरूप जनसंख्या की स्थिति को केवल संख्या को आधार मान कर तुलना नहीं कर सकते। क्षेत्रफल का भी विचार करना आवश्यक है। यही कारण है कि किसी भी देश प्रदेश या देश की जनसंख्या की तुलना जनसंख्या घनत्व द्वारा किया जाता है।

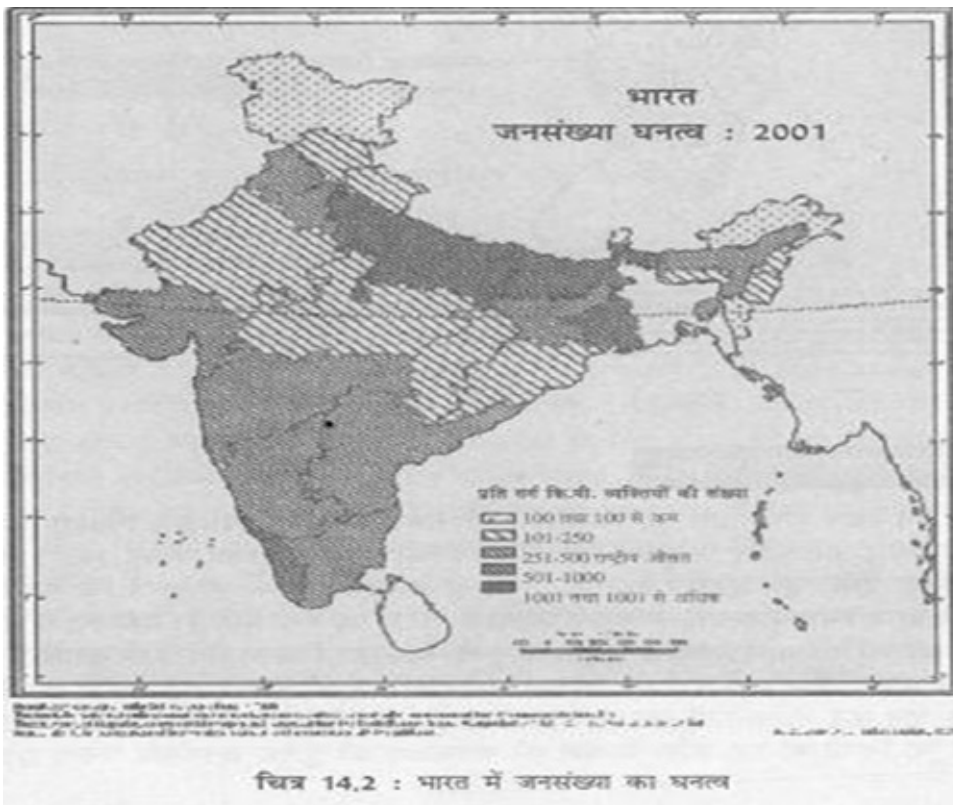
क्या आप जानते हैं

जनसंख्या का घनत्व : जनसंख्या का घनत्व प्रति इकाई क्षेत्र में रहने वाले व्यक्तियों की संख्या है। यह आमतौर पर लोग की संख्या प्रति वर्ग किलोमीटर (वर्ग किमी) के रूप में व्यक्त किया जाता है। इसकी गणना के लिए सूत्र इस प्रकार है।

जनसंख्या का घनत्व = एक परिभाषित क्षेत्र इकाई में लोगों की कुल संख्या/ उसी क्षेत्र विशेष का कुल क्षेत्रफल वर्ग कि. मी. में

घनत्व का निर्धारण करने के लिए एक विशिष्ट क्षेत्र में रहने वाले लोगों की संख्या में उस क्षेत्र के कुल क्षेत्रफल से विभाजित किया जाता है। यह प्रति वर्ग किमी क्षेत्र में रहने वाले व्यक्तियों की औसत संख्या बताता है। उदाहरण के लिए मान लिया जाय कि एक जिले की जनसंख्या 250,000 और क्षेत्रफल 1000 वर्ग किमी है। इस जिले की जनसंख्या घनत्व की गणना निम्न प्रकार किया जा सकता है।

जनसंख्या का घनत्व = 250000 व्यक्ति/ 1000 वर्ग किमी क्षेत्र = 250 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी



चित्र 14.2 : भारत में जनसंख्या का घनत्व

मानचित्र (14.2) से पता चलता है कि भारत में जनसंख्या का घनत्व असमान है। यह एक राज्य से दूसरे राज्य में भिन्न है।

14.2 चित्र को देखिए और उन राज्यों के नाम बताइये जिसकी उच्च (500 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी से अधिक), मध्यम (100 - 500 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी) और कम (100 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी से कम) घनत्व है।

उच्च घनत्व वाले राज्यों के नाम बताएं।

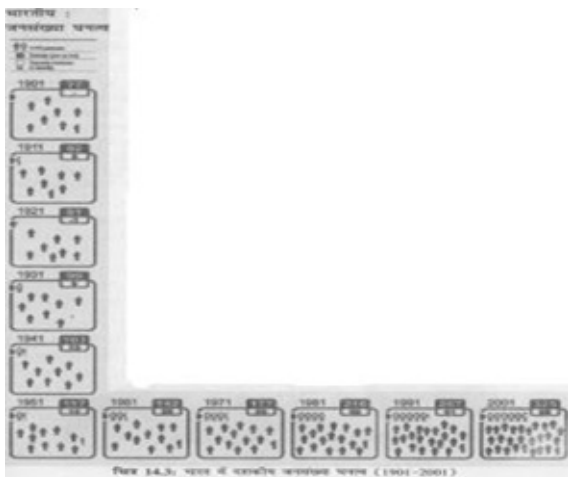
मध्यम घनत्व वाले राज्यों के नाम बताएं।

कम घनत्व वाले राज्यों के नाम बताएं।

क्या आप राज्यों के बीच घनत्व में होने वाले बदलाव के कारणों को बता सकते हैं?

संकेत : प्रतिकूल कठोर जलवायु परिस्थितियों, बीहड़ इलाके और निम्न मृदा उर्वरता कम घनत्व के लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार हैं। उपजाऊ मृदा वर्षा की बहुतायत, विकसित सिंचाई की सुविधाएं मध्यम जलवायु और शहरीकरण अधिक जनसंख्या घनत्व का कारण है। औसत उर्वरता, वाले भागों में सामान्य जनसंख्या घनत्व पाया जाता है।

जनसंख्या का घनत्व भी बदलते रहता है। जैसा कि आप चित्र संख्या 14.3 से देख सकते हैं कि 1901 में भारत में जनसंख्या का घनत्व प्रति वर्ग किमी के 77 व्यक्ति था। यह तेजी से 1931 में 90 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी से बढ़कर 2001 में 325 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी हो गया। आप इस बात को जानने में रुचि रखते होंगे कि भारत के किस राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश में सबसे ज्यादा जनसंख्या घनत्व है। इसके लिए आपको जनगणना रिपोर्ट देखना होगा। 2001 की जनगणना के अनुसार, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली का जनसंख्या घनत्व उच्चतम 9340 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी है। इसके बाद केन्द्र शासित राज्य चंडीगढ़ का 7900 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी है। अरुणाचल प्रदेश में सबसे कम घनत्व 13 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी है। राज्यों में पश्चिम बंगाल का उच्चतम घनत्व 903 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी है।



चित्र 14.3 : भारत में दशकीय जनसंख्या घनत्व (1901-2001)

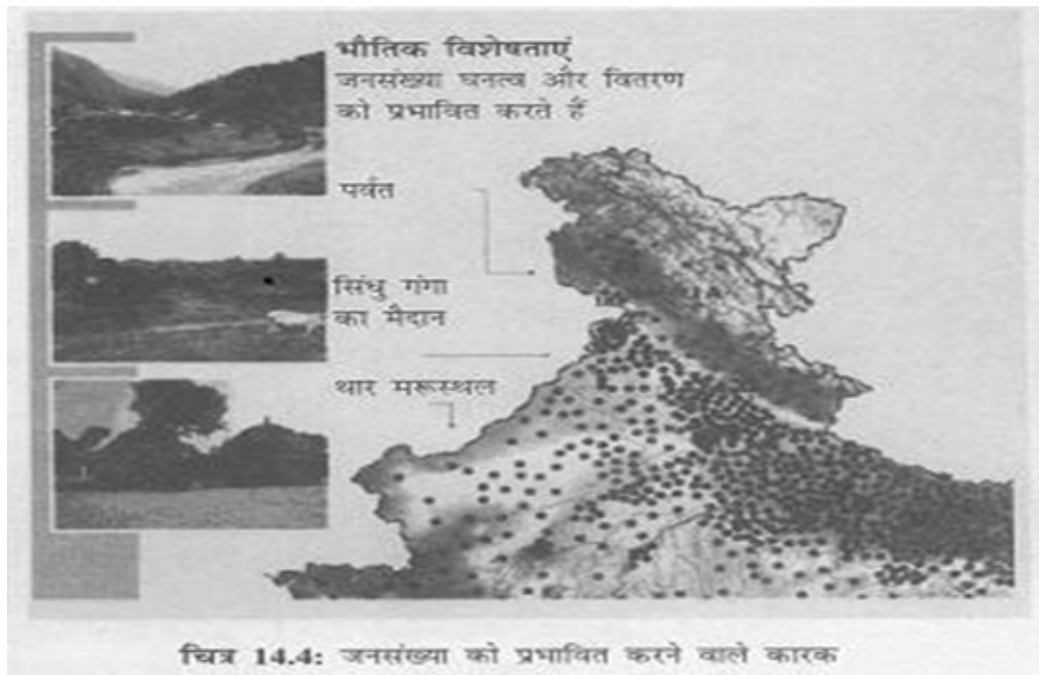
जनसंख्या घनत्व और उसके वितरण को प्रभावित करने वाले कारक

जनसंख्या का वितरण असमान क्यों है? यह मानव प्रवृत्ति है कि जहाँ संसाधन आसानी से उपलब्ध होते हैं वहाँ लोग रहना पसंद करते हैं। इन संसाधनों में मीठे पानी, उपजाऊ मृदा, भोजन, आश्रय, काम के अवसर आदि हो सकता है। इन संसाधनों की उपलब्धता भौगोलिक विशेषताओं द्वारा प्रभावित करता है जो असमान वितरण के कारण हैं। इसलिए जनसंख्या का घनत्व और वितरण भी असमान है। जनसंख्या के वितरण और घनत्व को प्रभावित करने वाले कारकों को दो प्रमुख वर्गों में रख सकते हैं-प्राकृतिक और सामाजिक-आर्थिक।

प्राकृतिक कारक

जनसंख्या के वितरण और घनत्व को प्रभावित करने वाले तीन प्रमुख प्राकृतिक कारक हैं यानी उच्चावच, जलवायु और मृदा।

(i) उच्चावच: आप पहाड़ी क्षेत्र या नदी घाटी और सपाट मैदानी इलाके का दौरा किये होंगे। आपने देखा होगा कि मैदानों की तुलना में पर्वतीय क्षेत्र में आबादी कम है। किसी भी दिए गये क्षेत्र का उच्च और निम्न ऊँचाई और ढाल के बीच का अंतर उच्चावच होता है। ये उच्चावच और ढाल वहाँ की सुगम्यता को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। जो क्षेत्र ज्यादा सुगम है वह लोगों द्वारा बसावट से भरी होने की सम्भावना है। यही कारण है कि सपाट मैदानों में ज्यादा बसावट देखी जाती है जबकि बीहड़ उच्चावच वाले पर्वतीय और पठारी भाग ऐसे नहीं हैं। अगर आप जनसंख्या के घनत्व और वितरण को उत्तरी मैदान और हिमालय पर्वतीय क्षेत्रों की तुलना करें तो आपको उच्चावच का प्रभाव प्रत्यक्ष अनुभव कर सकेंगे।



चित्र 14.4 : जनसंख्या को प्रभावित करने वाले कारक

उच्चावच : भूतट की ऊँचाई में बदलाव जिसके कारण पहाड़ियों एवं घाटियों का निर्माण होता है।

(ii) जलवायु : जनसंख्या के घनत्व और वितरण को प्रभावित करने वाले कारकों में से एक महत्वपूर्ण कारक जलवायु की स्थितियों है। अनुकूल जलवायु मनुष्य के रहने के लिए सुविधाजनक स्थिति प्रदान करता है। जनसंख्या के उच्च घनत्व उन क्षेत्रों में ज्यादा है जलवायु अनुकूल पायी जाती है। लेकिन कठोर जलवायु, अर्थात् बहुत गर्म, बहुत ठंडा, बहुत सूखा, बहुत नम क्षेत्रों में कम घनत्व होता है। भारत में शुष्क क्षेत्र जैसे राजस्थान एवं अति ठंडा क्षेत्र जैसे जम्मू और कश्मीर घाटी, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखण्ड में निम्न जनसंख्या घनत्व है।

(iii) मृदा : मनुष्य कृषि के लिए मिट्टी की गुणवत्ता पर निर्भर करता है। इसलिए उपजाऊ मृदा के क्षेत्रों, में बड़ी आबादी का भरण पोषण होता है। यही कारण है उपजाऊ मिट्टी के क्षेत्रों जैसे उत्तर भारत और तटीय जलोढ़ मैदानों में जनसंख्या के उच्च घनत्व है। दूसरी ओर कम उपजाऊ मिट्टी के क्षेत्रों जैसे राजस्थान, छत्तीसगढ़; और मध्यप्रदेश के कुछ हिस्सों में जनसंख्या का कम घनत्व है।

2. सामाजिक-आर्थिक कारक

जनसंख्या का घनत्व और वितरण निम्न सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों पर भी निर्भर है :

(i) औद्योगिकरण और शहरीकरण : जैसा कि आप हमेशा देखते हैं, उद्योग धंधों वाली जगहों पर बड़ी संख्या में लोग निवास करते हैं। वे शहरी क्षेत्रों और नगरों में रहना पसंद करते हैं। खनिज संसाधनों से समृद्ध क्षेत्र भी बड़ी जनसंख्या को आकर्षित करते हैं। झारखंड के खनन क्षेत्रों में बहुत घनी आबादी है। क्योंकि इन क्षेत्रों में कई आर्थिक गतिविधियों हैं जो रोजगार अवसरों को बढ़ा देती हैं। इसके अलावा, शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाएँ भी इन क्षेत्रों में बेहतर हैं। हम जानते हैं कि भारत के बड़े नगरों जैसे दिल्ली, मुंबई, बंगलौर, हैदराबाद, चेन्नई, कोलकाता और कई अन्य जनसंख्या के उच्च घनत्व के केन्द्र हैं।

(ii) परिवार और संचार : अन्य भागों की तुलना में देश के कुछ भागों में परिवहन और संचार सुविधाओं के साथ उत्तरी मैदानी क्षेत्र में परिवहन काफी अच्छा है परन्तु उत्तर पूर्वी क्षेत्रों में यह व्यवस्था उतनी अच्छी नहीं है। ऐसे सभी क्षेत्रों में जहाँ सार्वजनिक सुविधाओं का विकास अच्छा है, अपेक्षाकृत उच्च जनसंख्या घनत्व मिलता है। कभी-कभी हम पाते हैं कि सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व के स्थानों की भी घनी आबादी है।

सभी उपरोक्त कारक एक संयोजन में कार्य करते हैं। हम गंगा के मैदान में उच्च जनसंख्या घनत्व का उदाहरण ले सकते हैं। यह कई कारकों के संयोजन के कारण है जैसे चौरस मैदान, उपजाऊ मृदा, अनुकूल जलवायु, औद्योगिकरण, शहरीकरण और अपेक्षाकृत अच्छी तरह से परिवहन और संचार के साधनों का विकसित होना है। दूसरी ओर बीहड़ पहाड़ी इलाके, प्रतिकूल जलवायु,

निम्न परिवहन के साधन और संचार जैसे कारकों के कारण अरूणाचल प्रदेश में जनसंख्या का कम धनत्व है।

पाठ 11 : हमारी मातृभूमि का चहकता चेहरा से उतरी पर्वत श्रेणी और प्रायद्वीपीय पठार के बारे में भूआकृतिक वर्गीकरण मानचित्रों के माध्यम से अध्ययन कीजिए। इस पाठ के चित्र संख्या 14.1 14.2 और 14.4 में जनसंख्या के वितरण एवं घनत्व दर्शाया गया है। उपरोक्त चित्रों को ध्यान में रखते हुए पाठ 11 पढ़ें।

मानचित्रों का विश्लेषण करते हुए सहसम्बन्ध स्थापित कीजिए और उन क्षेत्रों की पहचान कीजिए जहाँ प्राकृतिक परिस्थितियों मानव के लिए अनुकूल हैं।

1. 2001 की जनगणना के अनुसार निम्नलिखित राज्यों में से किसमें सबसे ज्यादा जनसंख्या का घनत्व है?

अ) पश्चिम बंगाल

ब) केरल

स) तमिलनाडु

ड) उत्तर प्रदेश

2. एक जिले की जनसंख्या 3,00,000 और इसका क्षेत्रफल 1000 वर्ग किमी है। जनसंख्या का घनत्व क्या होगा?

अ) 150 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी

ब) 200 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी

स) 250 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी

द) 300 व्यक्ति प्रति वर्ग मी

3. दिल्ली, मुंबई, कोलकाता और चेन्नई जैसे बड़े नगरों में जनसंख्या के उच्च घनत्व के लिए, जिम्मेदार चार महत्वपूर्ण कारकों का उल्लेख कीजिए।

4. उत्तराखंड में जनसंख्या का घनत्व कम क्यों है? दो कारण दीजिए

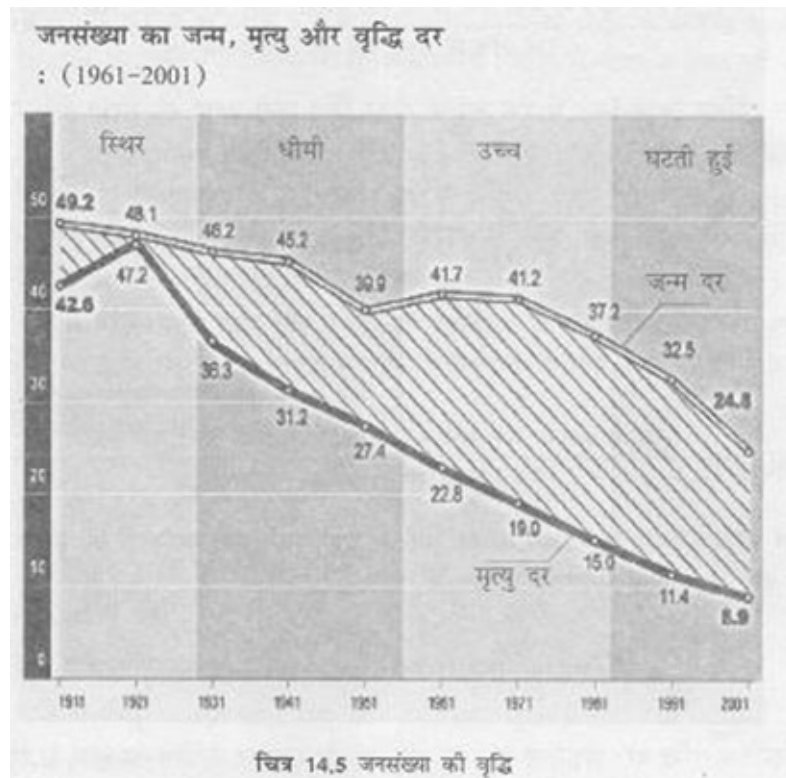
14.4 जनसंख्या परिवर्तन

किसी भी देश में मानव संसाधन के रूप में जनसंख्या का गुणात्मक सम्बन्ध यहाँ के जनसंख्या परिवर्तन के प्रतिरूप से काफी प्रभावित होता है। यह परिवर्तन जनसंख्या की वृद्धि या जनसंख्या में कमी के संदर्भ में हो सकता है। हालांकि दुनिया की आबादी अभी भी बढ़ रही है, कुछ ऐसे भी देश हैं जहाँ जनसंख्या घट रही है। जनसंख्या परिवर्तन की दोनों स्थितियों में मानव संसाधन की गुणवत्ता पर उनके प्रभाव पड़ता है। यदि जनसंख्या तेज दर से बढ़ती है, तो जनसंख्या और देश के संसाधनों के बीच एक असंतुलन की स्थिति बनेगी।

भारत की जनसंख्या लंबे समय से बढ़ रही है। वर्ष 1901 में 238 करोड़ की आबादी से, वह वर्ष 2001 में 1028 करोड़ हो गई है। जनसंख्या में यह वृद्धि एक सदी की अवधि में चार गुना बढ़ी है। दूसरी ओर पश्चिमी यूरोपीय देशों में जनसंख्या घट रही है। ऐसा क्यों है? हम उन कारकों की पहचान करते हैं जो जनसंख्या में बदलाव/परिवर्तन के लिए जिम्मेदार हैं।

जनसंख्या परिवर्तन के कारक

किसी भी देश की जनसंख्या में वृद्धि या कमी के तीन प्रमुख जनसांख्यिकीय कारक होते हैं- (क) जन्म दर (ख) मृत्यु दर और (ग) प्रवास। जन्मदर और मृत्युदर को प्रभावित करने वाले अनेकों सामाजिक-आर्थिक कारक हैं जो अंततः जनसंख्या परिवर्तन को प्रभावित करते हैं। हालांकि चित्र संख्या 14.5 से आप स्वयं ही देख सकते हैं कि भारत में तीव्र गति से वृद्धि का कारण उच्च जन्मदर एवं निम्न मृत्युदर है। राष्ट्रीय स्तर पर प्रवास जनसंख्या वृद्धि में एक नगण्य कारक है।



चित्र 14.5 जनसंख्या की वृद्धि

यदि आप चित्र संख्या 14.5 को ध्यान से अध्ययन करें तो आप पाएंगे कि मृत्यु दर 1921 के बाद से गिरावट रही है। इसी अवधि में जन्म दर में भी गिरावट आनी शुरू हो गई। परन्तु मृत्यु दर में गिरावट की दर जन्मदर में गिरावट की से ज्यादा रही। यही कारण है कि जन्म दर एवं मृत्युदर के बीच का अंतर बढ़ता चला गया जिसके कारण जनसंख्या में वृद्धि हुई।

जब आप चित्र संख्या 14.6 पर दिए गये दशकीय जनसंख्या वृद्धि पर नजर दौड़ाते हैं तो भी यह बात स्पष्ट हो जाती है जनसंख्या की दशकीय वृद्धि में मामूली गिरावट आई है 1981 से 1991 तथा 1991 से 2001 के बीच। यह एक सुखद संकेत है। परन्तु आश्चर्य की बात यह है कि घटते वृद्धि दर के बावजूद भी शुद्ध जनसंख्या में वृद्धि लगातार होती चली जा रही है। सन 1901 से 2001 तक में बीच जन्म दर और मृत्युदर के परिणाम के आधार पर पूरी अवधि को चार भागों में बांटा जाता है स्थिर, क्रमिक या धीमी वृद्धि उच्च वृद्धि और घटते अवस्था की जनसंख्या वृद्धि।

क्या आप जानते हैं

एक निश्चित भूभाग पर किसी दिए वर्ष में प्रति हजार जनसंख्या के तुलना में कुल जन्मे बच्चों की संख्या शुद्ध जन्म दर कहलाती है। इसे जन्मदर भी कहते हैं। अतः -

जन्मदर = किसी क्षेत्र में एक वर्ष के अंतर्गत ज़िंदा जन्मे बच्चों की संख्या / (उसी क्षेत्र में मध्य वर्ष की जनसंख्या) गुणा 1000

मान लीजिए किसी जिले में एक वर्ष के दौरान ज़िंदा जन्मे बच्चों की संख्या 800 है और अर्द्धवार्षिक जनसंख्या 25,000 है, तो

जन्मदर = $800 / 25,000$ गुणा 1000 = 32 प्रति हजार जनसंख्या

मृत्यु दर: एक विशेष क्षेत्र के तहत दिए गए वर्ष में प्रति हजार जनसंख्या में से हाने वाली मौतों की संख्या शुद्ध मृत्यु दर कहलाती है। सामान्य तौर पर इसे मृत्युदर भी कहते हैं। अतः-

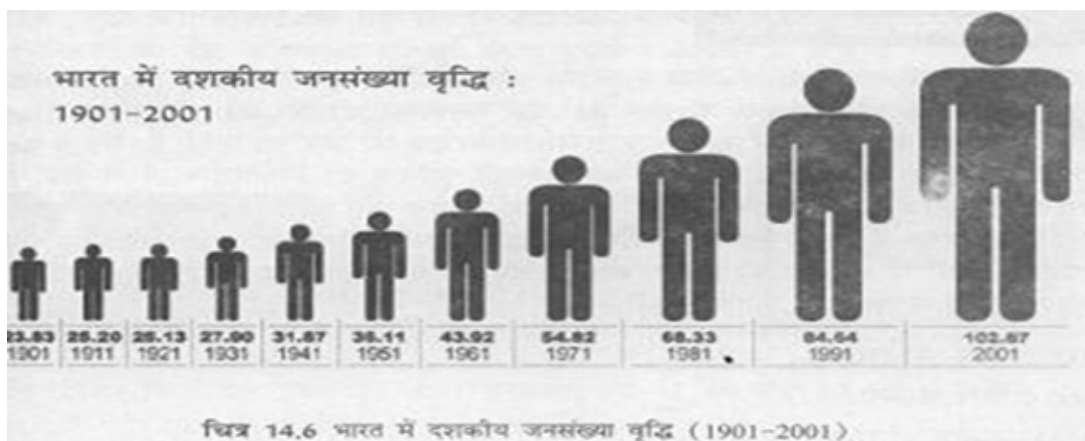
मृत्यु दर = किसी क्षेत्र में एक वर्ष के अंतर्गत मरने वाले लोगों की संख्या / (उसी क्षेत्र में मध्य वर्ष की जनसंख्या) गुणा 1000

मान लीजिए किसी एक जिले में एक वर्ष के दौरान मरने वाले व्यक्तियों की संख्या 600 हैं और अर्द्धवार्षिक जनसंख्या 25,000 है, तो

मृत्यु दर = $600 / 25,000$ गुणा 1000 = 24 प्रति हजार जनसंख्या

प्राकृतिक वृद्धि दर : प्राकृतिक वृद्धि दर जन्म दर और मृत्यु दर के बीच का अंतर है। इसलिए प्राकृतिक वृद्धि दर = जन्म दर - मृत्यु दर।

मान लीजिए कि किसी खास वर्ष में एक क्षेत्र के लिए जन्म दर 32 है और मृत्यु दर 24 है। तो प्राकृतिक वृद्धि $32 - 24 = 8$ प्रति हजार जनसंख्या होगी।



चित्र 14.6 : भारत में दशकीय जनसंख्या वृद्धि (1901-2001)

जैसा कि हम 20वीं शताब्दी के आरंभ से देखते हैं, भारत की जनसंख्या 1921 को छोड़कर शुद्धरूप में बढ़ी है। 1921 को भारतीय जनसंख्या की जनसांख्यिकीय इतिहास में महान विभाजन वर्ष कहा जाता है।

आइये भारत में तेज जनसंख्या वृद्धि दर के कारणों को समझने की कोशिश करें। सबसे महत्वपूर्ण कारकों में निरक्षरता, शिक्षा के निम्न स्तर, असंतोषजनक स्वास्थ्य, पोषण की स्थिति और गरीबी हैं। पुरुष बच्चों की वरीयता, छोटी उम्र में शादी, धार्मिक विश्वास और महिलाओं का समाज में निम्नस्तर आदि कुछ अन्य महत्वपूर्ण सामाजिक-सांस्कृतिक कारक हैं।

1. यदि एक क्षेत्र में, जन्म दर 45 प्रति हजार है और मृत्यु दर 25 प्रति हजार है, तो प्राकृतिक वृद्धि दर कितना होगा?

अ) 15 प्रति हजार

ब) 18 प्रति हजार प्रति

स) 20 प्रति हजार

द) 25 प्रति हजार

2. भारत में तीव्र जनसंख्या वृद्धि के लिए निम्न में से कौन सा प्रमुख कारण है?

अ) उच्च जन्म दर और उच्च मृत्यु दर

ब) कम जन्म दर और कम मृत्यु दर

स) उच्च जन्म दर और कम मृत्यु दर

द) कम जन्म दर और उच्च मृत्यु दर

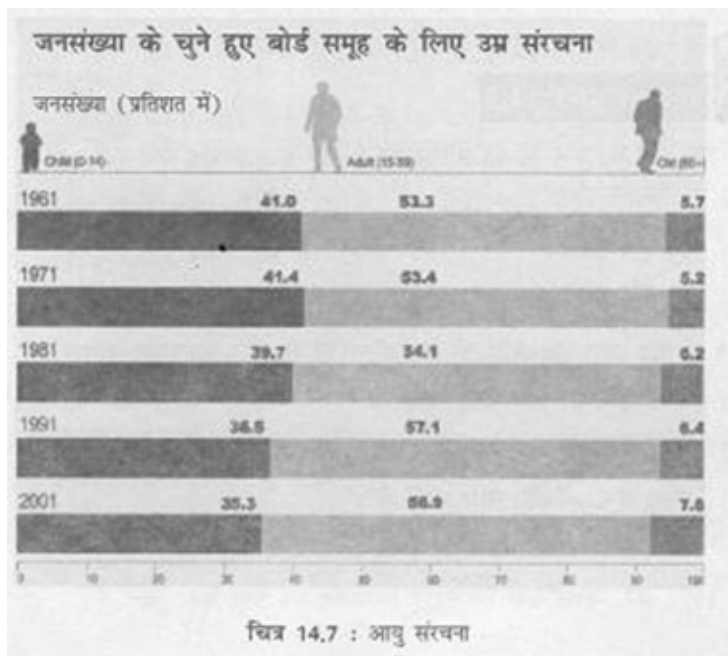
3. सन 1921 को, जनसांख्यिकीय महान विभाजन वर्ष क्यों कहा जाता है?

हमने अभी तक जनसंख्या के वितरण, घनत्व और वृद्धि का अध्ययन किया है। आप समझते हैं कि जन्म दर और मृत्यु दर के बीच का अंतर जनसंख्या परिवर्तन की गति और प्रवृत्ति का निर्धारण करता है। वास्तव में यह प्रभाव जनसंख्या संरचना को प्रमाणित करता है। यह न केवल जनसंख्या वृद्धि की गति बल्कि मानव संसाधन की गुणवत्ता को निर्धारित करने के लिए एक महत्वपूर्ण कारक है। क्या आप जानते हैं-जनसंख्या संरचना क्या है? जनसंख्या संरचना जनसंख्या का वर्णन करता है जिसमें विभिन्न विशेषताओं द्वारा परिभाषित किया जाता है जैसे- उम्र, लिंग, ग्रामीण, शहरी या साक्षरता की स्थिति। इसलिए हम, भारत में जनसंख्या संरचना के निम्नलिखित पहलुओं को समझने की कोशिश करेंगे :

- (i) आयु संरचना,
- (ii) लिंग संरचना,
- (iii) ग्रामीण - शहरी, संरचना और
- (iv) साक्षरता

(i) आयु संरचना

देश के वर्तमान और भविष्य के विकास के लिए आबादी की उम्र संरचना का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। सामान्यतया आबादी को तीन वर्गों में रखा जाता है- बच्चे (0-14 वर्ष), वयस्क (15-60 वर्ष) और वृद्ध (60 वर्ष की उम्र से ज्यादा)। इन तीन वर्गों में भारतीय आबादी की उम्र संरचना को चित्र संख्या 14.7 दर्शाता है। यदि हम 1971 के आकड़ों की तुलना करें तो यह स्पष्ट है कि बच्चों की संख्या में गिरावट और वयस्कों की संख्या में वृद्धि हो रही है।



चित्र 14.7 : आयु संरचना

हालांकि, वृद्धों की आबादी भी बढ़ रही है। वृद्ध और बच्चों की कुल आबादी को आश्रित आबादी कहते हैं। जब आश्रित आबादी की संख्या बढ़ती है तो निर्भरता अनुपात ज्यादा हो जाता है। इसके कारण सरकार को बच्चों के विकास और वृद्धों के कल्याण पर ज्यादा खर्च करना पड़ता है। अगर ऐसा न हो तो इन्हीं संसाधनों को अन्य विकास के मदों में इस्तेमाल किया जा सकता है।

क्या आप जानते हैं

निर्भरता अनुपात = निर्भर जनसंख्या (0-14 वर्ष तथा 60 वर्ष से अधिक)/ कार्यरत जनसंख्या (15-59 वर्ष)

मान लीजिए किसी एक जिले की निर्भर जनसंख्या (0-14 वर्ष तथा 60 वर्ष से अधिक) 7000 है और कार्यरत जनसंख्या (15-59 वर्ष) 18000 है। तो

निर्भरता अनुपात = $7000/18000$ गुणा 100 = 38.89

इसका तात्पर्य यह हुआ कि प्रत्येक 100 व्यक्तियों में 38.89 व्यक्ति निर्भर और 61.11 व्यक्ति कार्यरत हैं।

सोच विचार

अपने दादा-दादी की आयु 60 वर्ष अधिक है। वे आश्रित जनसंख्या समूह में हैं। क्या आपको लगता है कि वे बोझ हैं? क्या वे परिवार और समाज के कल्याण की दिशा में योगदान नहीं करते हैं? यदि 'हाँ', तो कैसे योगदान दे रहे हैं? यदि 'नहीं' तो योगदान क्यों नहीं दे रहे हैं।

‘किशोर’ एक अलग जनसंख्या समूह के रूप में

जनसंख्या के उम्र संरचना को समझने के लिए विशिष्ट समूह के रूप में युवावर्ग पर जोर देना नविनतम दृष्टिकोण है। परंपरागत रूप से जनसंख्या को हम तीन चरणों में विभाजित करते हैं। बचपन, वयस्कता और बुढ़ापा। लेकिन जैसा कि हम देखते हैं, कुछ लोग न तो बच्चे और न ही वयस्क। यदि आप अपने जीवन के उस दौर में हैं, तो आप अपने माता-पिता या अन्य वयस्कों से कहते हुए सुना होगा, ‘क्यों तुम यह कर रहे हो?’ अब तुम एक बच्चा नहीं हो। दूसरे समय वे ही वयस्क भी कहते होंगे, ‘यह तुम कैसे कर सकते हो?’ तुम अभी वयस्क नहीं हो। वास्तव में, बचपन और वयस्कता के बीच जीवन के चरण को (10 साल और 19 या कुछ और साल के बीच) किशोरावस्था के रूप में जाना जाता है। इस आयु वर्ग के व्यक्तियों को किशोर के रूप में पहचानते हैं। किशोर के बारे में बेहतर जानकारी के लिए बॉक्स में दिए गये उदाहरण को आप पढ़ सकते हैं।

क्या आप जानते हैं

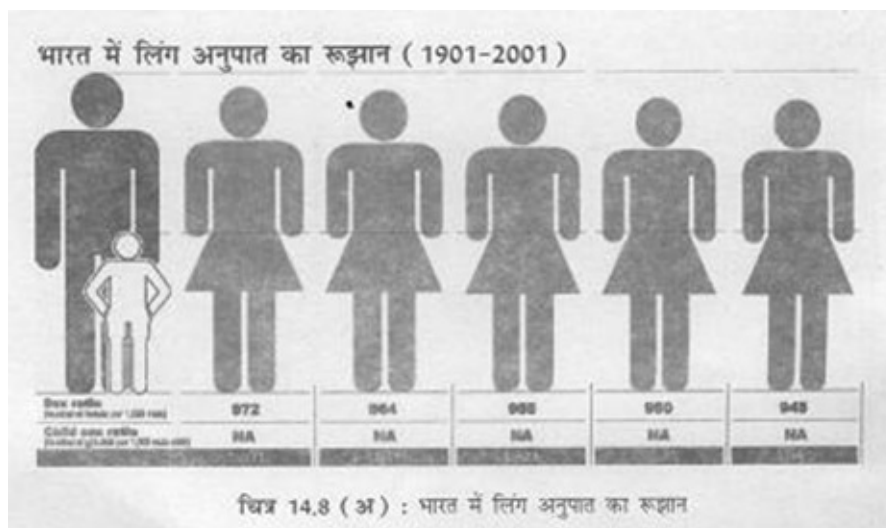
किशोर से क्या मतलब है?

संयुक्त राष्ट्र की परिभाषा उम्र की संख्या के आधार पर इस तरह से है :

- किशोर : 10 - 19 वर्ष के बच्चे
- युवा : 15 - 24 वर्ष के बच्चे
- कमसिन : 10 - 24 वर्ष के बच्चों

आबादी समूह के रूप में किशोरों को मात्र उनके उम्र के आधार पर ही नहीं देखा जा सकता है। क्योंकि किशोरावस्था की अवधि हरेक व्यक्ति के लिए अलग हो सकती है। किशोर व्यक्ति के विकासात्मक अवधि के लिए इस्तेमाल किया जाता है जो बाल्यावस्था के अंत से व्यस्क अवस्था के प्रारम्भ तक होता है। किशोरावस्था को उस अवधि के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसमें शारीरिक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक परिपक्वता आती है जो यौवनारंभ से यौवनपूर्ण प्रजनन परिपक्वता तक होती है।

जैसा कि तालिका संख्या 14.1 में दिखाया गया है, किशोर भारत की कुल आबादी का लगभग 22 प्रतिशत भाग विशिष्ट जनसंख्या समूह के रूप में हैं। यह प्रतिशत 2001 के जनगणना के अनुसार है। उनकी संख्या अभी भी बढ़ रही है और वर्तमान में (2009) में उनके प्रतिशत हिस्सेदारी बढ़ गयी है। राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 के अनुसार भी कम ध्यान दिए गये समूह के रूप में माना गया है क्योंकि उनकी जरूरतों को अभी तक विशिष्ट तौर पर संबोधित नहीं किया गया है। यह जनसंख्या नीति किशोरों की विभिन्न आवश्यकताओं को संबोधित करने के लिए विभिन्न रणनीतियों का उल्लेख करती है। ये हैं (i) किशोरावस्था में होने वाली शारीरिक, शरीरक्रियात्मक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक परिवर्तन व विकास के बारे में पूर्ण एवं ठीक-ठीक जानकारी उपलब्ध करना (ii) खतरनाक स्थितियों से बचने और सही शारीरिक, मानसिक और सामाजिक स्वास्थ्य की प्राप्ति के लिए उचित व जरूरी जीवन कौशल विकसित कर उन्हें सशक्त करना; (iii)



चित्र 14.8(अ) : भारत में लिंग अनुपात का रुझान

आहारपूरक और पोषण सेवाएं उपलब्ध कराना; और (iv) जरूरी स्वास्थ्य और परामर्श सुविधाएं उन्हें उपलब्ध कराना।

तालिका 14.1 : लिंग के अनुसार भारत में किशोर (10-19 वर्ष) (संख्या हजार में) जनसंख्या 1991 और 2001 के अनुसार

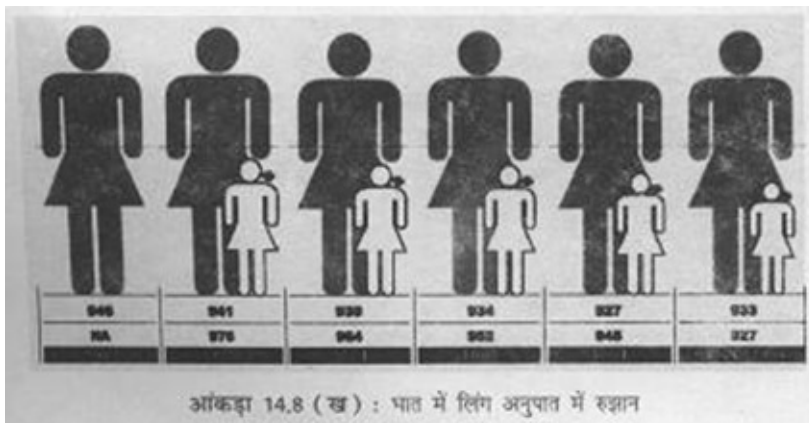
जनगणना वर्ष	किशोरों की कुल संख्या	कुल जनसंख्या का प्रतिशत	पुरुष का प्रतिशत	कुल पुरुष का प्रतिशत	महिला	कुल महिला
1991	181419	21.4	95969	21.9	85450	21.0
2001	225061	21.9	119571	22.4	105490	21.2

तालिका संख्या 14.1 को देखिए और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दृढ़िए:

1. किशोर लड़कियों की संख्या किशोर लड़कों की तुलना कम क्यों हैं? यद्यपि जैविक आधार पर लड़कियों की संख्या अधिक होनी चाहिए थी।
2. 1991 से 2001 के दौरान पुरुष और महिला किशोरों के प्रतिशत की प्रवृत्ति क्या है?
3. किशोरों को कम ध्यान दिए गये समूह के रूप में क्यों माना जाता है?
4. क्या आप किशोरों की जरूरतों की एक सूची तैयार कर सकते हैं जिसे समाज द्वारा संबोधित किया जाना चाहिए।

(ii) लिंग संरचना

मानव संसाधन के रूप में किसी भी देश की जनसंख्या की लिंग संरचना एक महत्वपूर्ण गुणात्मक सूचक है। वास्तव में, यह मुख्य रूप से लिंग अनुपात के आधार पर समझा जाता है। लिंग अनुपात प्रति 1000 पुरुषों पर महिलाओं की संख्या के रूप में परिभाषित किया जाता है। किसी भी समय पर पुरुषों और महिलाओं के बीच मौजूदा समानता स्थिति मापने



चित्र 14.8 (ब) : भारत में लिंग अनुपात में रुझान

के लिए यह एक महत्वपूर्ण सामाजिक सूचक है। लिंग अनुपात अनुकूल होना चाहिए। लेकिन हमारे देश में लिंग अनुपात हमेशा से महिलाओं के लिए प्रतिकूल बनी हुई है, और चिंता की बात है कि यह गिरावट लगातार बनी हुई है। वर्ष 1901 में प्रति 1000 पुरुषों पर 972 महिलाएं थी। वर्ष 2001 में, यह घटकर 923 आ गया है। इस प्रवृत्ति चित्र संख्या 14.8 (क) और (ख) में दिखाया गया है।

क्या आप जानते हैं

लिंग अनुपात की गणना निम्न प्रकार है :

लिंग अनुपात = एक विशेष क्षेत्र में कुल स्त्रियों की संख्या / (उसी क्षेत्र में कुल पुरुषों की संख्या) गुणा 1000

मान लीजिए किसी एक जिले में महिलाओं की कुल संख्या 12000 हैं और पुरुषों की कुल संख्या 13000 है, तो:

लिंग अनुपात = $12000 / 13000$ गुणा = 923 महिलाएं प्रति एक हजार पुरुष

आइये विचार करें कि क्यों हमारे देश में लिंग अनुपात प्रतिकूल है? यह मुख्य रूप से हमारे समाज में प्रचलित महिलाओं के खिलाफ भेदभाव है। अनुकूल लिंग अनुपात मात्र एक राज्य और एक संघ शासित क्षेत्र में ही है। यह 1058 केरल राज्य और 1001 पांडिचेरी संघ राज्य क्षेत्र में हैं। अब

इसे पुडुचेरी के नाम से जाना जाता है।

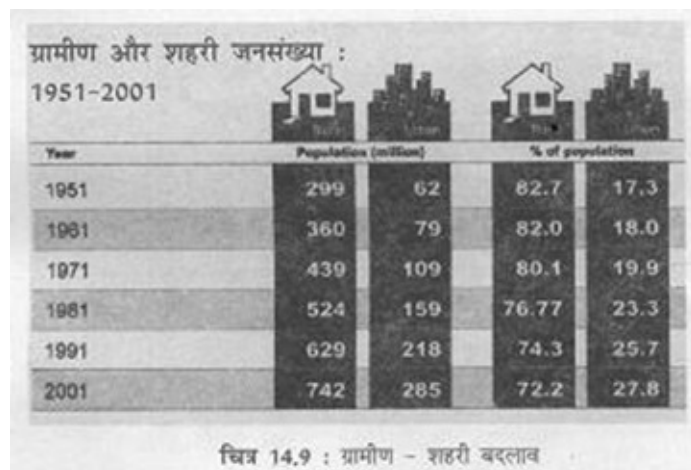
बाल लिंग अनुपात

देश में बाल लिंग अनुपात में गिरावट की प्रवृत्ति बड़ी चिंता की बात है। 0-6 वर्ष की आयु (बच्चा जनसंख्या) में लिंग अनुपात लगातार कम होता जा रहा है। जबकि 1991 और 2001 की जनगणना के अनुपात समग्र लिंग अनुपात में मामूली सा सुधार दर्शाता है जबकि 0-6 वर्ष के बीच की अवधि में लिंग अनुपात में तेजी से कमी आई है। 28 राज्यों और 7 संघ शासित क्षेत्रों में से केवल चार राज्यों, यानी केरल, मिजोरम, सिक्किम, त्रिपुरा और लक्षद्वीप केन्द्र शासित क्षेत्र में ही बाल लिंग अनुपात समग्र लिंग अनुपात के अनुरूप है। बुरी तरह से प्रभावित राज्यों में हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, गुजरात, पंजाब और उत्तराखंड और संघ शासित क्षेत्रों में चंडीगढ़ और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली हैं। बाल लिंग अनुपात इस बात को दर्शाता है कि इन राज्यों में कन्या भ्रूणहत्या और कन्या शिशुहत्या की प्रथा आज भी है। पता चलता है कि यह व्यवहार एक सभ्य समाज के नियमों के खिलाफ है।

(iii) ग्रामीण-शहरी संरचना

भारत किसानों की भूमि और गांवों का देश रहा है। बीसवीं सदी के शुरूआत में दस लाखों में से नौ लोग गांवों में रहते थे। हमारी आबादी का लगभग तीन चौथाई लोग अभी भी ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं। भारत में शहरी क्षेत्र उन्हें कहा जाता है जहाँ तीन-चौथाई से ज्यादा लोग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से गैर कृषि कार्य में संलग्न हों, जनसंख्या कम से कम 5000 तथा जनसंख्या घनत्व 400 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी हो।

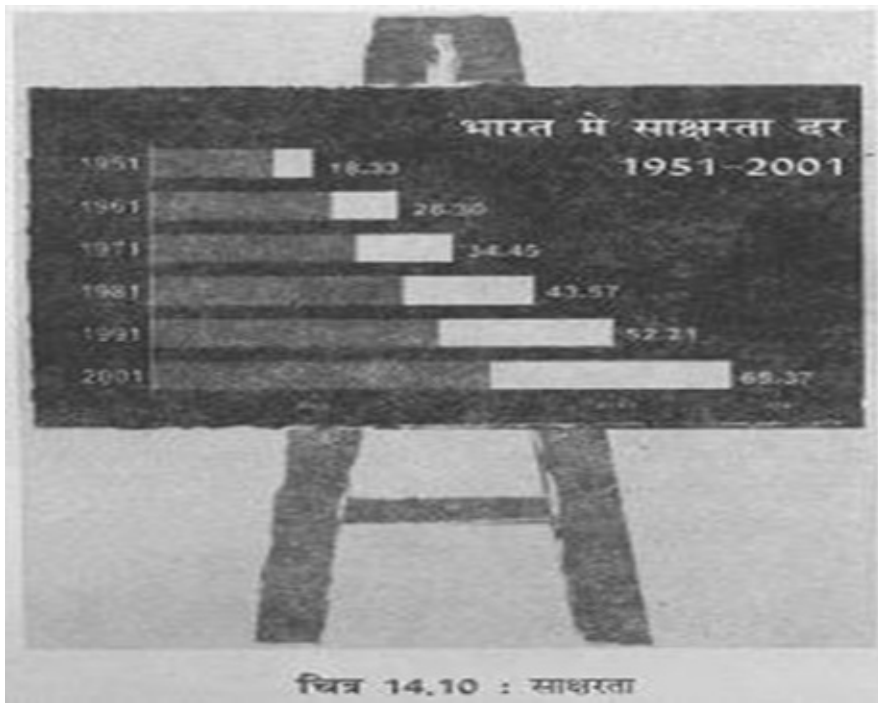
ऐसा लगता है, (चित्र संख्या 14.9 देखें) हम लोग शहरीकरण की ओर बहुत ही तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। परन्तु इसके साथ इसके दुष्परिणाम जैसे आवास की कमी जल, बिजली और पर्यावरण पर अतिक्रमण आदि सन्निहित हैं।



चित्र 14.9 : ग्रामीण-शहरी बदलाव

(iv) साक्षरता

साक्षरता किसी भी समाज के विकास का एक महत्वपूर्ण संकेतक है। जैसा कि जनगणना रिपोर्ट में परिभाषित किया गया है- सात वर्ष या उससे ज्यादा का व्यक्ति किसी भी भाषा में समझदारी के साथ लिखना और पढ़ना जानें। 1951 में हमारे देश में साक्षरता दर 18.83 प्रतिशत थी। यह 2001 में बढ़कर 65.38 प्रतिशत हो गई है। हमारे देश के विभिन्न राज्यों में केरल में उच्चतम साक्षरता 90.86 प्रतिशत है। यह मिजोरम में 88.49 प्रतिशत और लक्षद्वीप में 97.52 प्रतिशत है। लेकिन सामान्य रूप से पुरुषों की तुलना में महिला साक्षरता दर कम है (चित्र संख्या 14.10)।



चित्र 14.10 : साक्षरता

अपने आसपास से लग भग 10 - 15 घरों से निम्नलिखित जानकारी प्राप्त कीजिए ।

1. साक्षात्कार देने वाले व्यक्ति का नाम ———
2. उम्र (वर्षों में) ———
3. शैक्षणिक योग्यता ———
4. परिवार में कमाई करने वाले व्यक्तियों की संख्या ———
5. सदस्यों की कुल संख्या : पुरुष — स्त्री ———
6. आयु समूहों में परिवार के सदस्यों की संख्या
(क) 14 वर्ष की उम्र तक : ———
(ख) 15 वर्ष से 60 वर्ष तक ———
(ग) 60 वर्ष से अधिक ———
7. ऊपर एकत्रित आँकड़ों के आधार पर गणना और विश्लेषण कीजिए :
(क) लिंग अनुपात ———
(ख) निर्भरता अनुपात ———
(i) 14 वर्ष से कम — और इसकी प्रतिशत —
(ii) 60 से अधिक वर्षों — और इसकी प्रतिशत —

इस प्रकार हम समझ पाये हैं कि किसी भी देश की आबादी वहाँ का सबसे बड़ा संसाधन मात्र संख्या के आधार पर ही नहीं बन सकता । देश के लिए जनसांख्यिकीय विशेषताओं की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए देश को एक बड़ा - सा निवेश करना पड़ता है ताकि बड़ी संख्या को एक संसाधन के रूप में परिवर्तित किया जा सके । देश की आबादी को मानव संसाधन के रूप में परिवर्तित करने के लिए दुनिया के कई अन्य देशों की तरह भारत भी नीतियों और कार्यक्रमों को लागू करता है । इसलिए अगले अनुभाग में हम महिलाओं के सशक्तिकरण के संबंध में भारत सरकार की जनसंख्या नीतियों को समझने की कोशिश करेंगे ।

1. 2001 की जनसंख्या के अनुसार, भारत का लिंग अनुपात :

अ) 920

ब) 927

स) 933

द) 943

2. 2003 की जनगणना के अनुसार शहरी जनसंख्या का प्रतिशत है :

अ) 27.8

ब) 26.7

स) 25.7

द) 24.0

3. अगर निर्भरता अनुपात अधिक हो तो क्या परिणाम हो सकता है?

4. भारत में प्रतिकूल लिंग अनुपात के लिए जिम्मेदार कोई भी दो कारण बताएँ ।

क्या आप जानते हैं कि भारत में जनसंख्या वृद्धि और जनसंख्या नीति अपनाने की जरूरत पर विचार-विमर्श स्वतंत्रता से पहले भी शुरू हो गया था? अंतरिम सरकार द्वारा 1938 में एक राष्ट्रीय योजना समिति स्थापित की गई जिसने जनसंख्या पर एक उप-समिति बनाई। इस समिति ने 1910 में अपने संकल्प में कहा, “सामाजिक अर्थव्यवस्था परिवार की खुशी और राष्ट्रीय योजना के हित में परिवार नियोजन और बच्चों की सीमा आवश्यक है।”

1952 में भारत दुनिया का पहला देश बना जो राष्ट्रीय जन्म जनसंख्या परिवार नियोजन पर बल देते हुए कार्यक्रम का शुभारंभ किया। कार्यक्रम का उद्देश्य जनम दर को कम कर “राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की आवश्यकता के स्तर पर जनसंख्या को स्थिर करना” था। भारत जब से समय-समय पर जनसंख्या नीति में सुधार करता रहा है जिसके विस्तार से जानकारी संगत किताबों से प्राप्त कर सकते हैं अथवा आप उच्च कक्षा में पढ़ सकते हैं। वर्तमान में हम नवीनतम जनसंख्या नीति को समझने की कोशिश करेंगे जो भारत सरकार द्वारा 2000 में अपनाया गया था।

राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000

राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 जनसंख्या के मुद्दों पर अपने दृष्टिकोण में गुणात्मक परिवर्तन दर्शाता है। यह सीधे जनसंख्या नियंत्रण पर जोर नहीं देता है। इसमें कहा गया है कि आर्थिक और सामाजिक विकास का उद्देश्य लोगों के जीवन में गुणात्मक सुधार करना, उनके कल्याण में वृद्धि करना, समाज में लोगों को सुअवसर विकल्प प्रदान कर उन्हें उत्पादनकारी परिसम्पत्ति के रूप में विकसित करना है। जनसंख्या स्थिर करना सतत विकास को बढ़ावा देने के लिए अनिवार्य आवश्यकता है। राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 के तात्कालिक उद्देश्य गर्भनिरोधक, स्वास्थ्य देखभाल में बुनियादी सुविधाओं, स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के अपूर्ण जरूरतों को पूरा करना है। इसके साथ ही साथ प्रजनन एवं शिशु स्वास्थ्य की देखभाल के लिए एकीकृत सेवा प्रदान करना है। मध्यकालीन उद्देश्य कुल प्रजनन दर को 2010 तक प्रति स्थापन दर तक लाना है जिसके लिए अंतर क्षेत्रीय संचालन रणनीतियों की जोरदार कार्यान्वयन नीति है।

2045 तक सतत आर्थिक विकास, सामाजिक विकास और पर्यावरण संरक्षण के साथ एक स्थिर जनसंख्या प्राप्त करना है।

क्या आप जानते हैं

प्रतिस्थापन स्तर पर कुल जननक्षमता दर : यह कुल प्रजनन दर है जिसमें एक नवजात बच्ची अपने जीवन काल में औसतन एक बेटी को जन्म देती है। अधिक परिचित शब्दों में हर औरत उतने ही बच्चे को जन्म देती है जिससे वह प्रतिस्थापित हो रही है। इसका परिणाम शून्य जनसंख्या वृद्धि होता है। इस प्रकार की जनसंख्या उम्र के आधार पर वितरण एक-सा होता है जहां समान दर से जनसंख्या में वृद्धि होती है। जहाँ जन्म और मृत्युदर एक-सा है जनसंख्या स्थिर रहती है। और एक स्थिर दर से बढ़ती है। जहां प्रजनन और मृत्यु दर बराबर हैं, जनसंख्या स्थिर रहती है।

मानव संसाधन के रूप में जनसंख्या की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए महिलाओं का सशक्तिकरण बहुत महत्वपूर्ण है। भारत में कुल जनसंख्या का लगभग 50 प्रतिशत भाग महिलाओं का है फिर भी उन्हें भेदभाव का सामना करना पड़ता है और उन्हें निम्न समझा जाता है। सरल तर्क के अनुसार यह मानव संसाधन के रूप में अपनी आबादी के आधे के योगदान को राष्ट्र से वंचित किया है। जो भी विकसित विश्व में देखा और अनुभव किया जाता है यह उसके विरुद्ध है। हमारे देश में महिलाओं की भूमिका खाना पकाने से परिवारों की देखभाल करने के लिए सीमित कर दिया गया है। समाज उनके प्रति हर प्रकार के भेदभाव, दुर्व्यवहार और अपराध के लिए मूक दर्शक है।

यह आप भारतीय संविधान के अनुच्छेद 14, 15, 16, 19, 39, 42, 51 में पढ़ें तो पता चलेगा कि सभी के लिए न्याय और समानता को सुनिश्चित करने के लिए प्रावधान है। कई तरह के कानून पारित किए गये हैं जैसे विशेष विवाह अधिनियम 1954, गर्भावस्था की चिकित्सीय समापन अधिनियम 1971 और 1978 की बाल विवाह रोकथाम (संशोधन) अधिनियम। तथापि अभी तक महिलाओं की स्थिति बड़ी चिंता का विषय बना हुआ है।

इस दिशा में कुछ कदम उठाए गए हैं और यह आशा की जाती है कि महिलाओं की स्थिति में गुणात्मक परिवर्तन होगा। महिला सशक्तिकरण की दिशा में प्रमुख बढ़ावा तब मिला जब 73 वें और 74 वें संविधान संशोधन कर पंचायतीराज संस्थाओं और शहरी स्थानीय निकायों में महिलाओं के लिए सीटों में 33 प्रतिशत आरक्षण संसद द्वारा पारित किया गया। एक और संविधान संशोधन विधेयक पेश किया गया है जिसका उद्देश्य लोकसभा और राज्य विधान सभाओं में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण प्रदान करना है। महिलाओं के लिए एक राष्ट्रीय आयोग 1990 में पारित अधिनियम के माध्यम से 1992 में अस्तित्व में आया। आयोग को व्यापक कार्य आवंटित किया गया है। इसमें महिलाओं के हितों की सुरक्षा हेतु उनके साथ होने वाले दुर्व्यवहार की जानकारी की जांच पड़ताल करना भी शामिल है।

इसका परम उद्देश्य उन्नति, विकास और महिलाओं के सशक्तिकरण को बढ़ावा देना और भेदभाव के सभी रूपों को समाप्त करना है। ये कदम उनके जीवन और गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करेगा। महिला सशक्तिकरण की जरूरतों और प्रयासों के बारे में पढ़ सीख और समझ सकते हैं जब विस्तार से सामाजिक आर्थिक विकास और वंचित समूहों के सशक्तिकरण पाठ में बताया जाएगा।

1. मान लीजिए कि एक विशेष जिले का क्षेत्रफल 200 वर्ग किलोमीटर है। उसी जिले में जनसंख्या 17,400 26,200, 36,200, 42,200, 59,800 और 75,200 जनगणना वर्ष क्रमशः 1951, 1961, 1971, 1981, 1991 और 2001 के अनुसार है।

(v) सभी छह जनगणना के लिए जनसंख्या घनत्व की गणना कीजिए।

(ब) घनत्व में दशकीय परिवर्तन का पता लगाइये।

(स) आपके जनसंख्या घनत्व की गणना के आधार पर कोई प्रवृत्ति मिल सकती है?

आपने क्या सीखा

- जनसंख्या एक निश्चित समय पर देश में रहने वाले लोगों की कुल संख्या है। हमारी जनसंख्या की विभिन्न सामाजिक - आर्थिक और जनसांख्यिकीय पहलुओं के बारे में आकड़े प्रत्येक दशक की शुरुआत में भारत सरकार द्वारा एकत्र किया जाता है। इसे जनगणना कहा जाता है।
- 2001 की जनगणना के अनुसार भारत की कुल जनसंख्या 1028.7 करोड़ है जो 1901 की जनगणना (238.3 करोड़) की तुलना में चार गुना से भी ज्यादा है। जन्म दर और मृत्यु दर के बीच के अंतर को प्राकृतिक वृद्धि दर कहा जाता है।
- जनसंख्या का घनत्व प्रति वर्ग किलोमीटर में व्यक्तियों की संख्या के रूप में परिभाषित किया गया है। भारत में इसका वितरण बेहद असमान है। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में सबसे ज्यादा घनत्व 9294 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. है। जबकि अरुणाचल प्रदेश में सबसे कम 14 व्यक्ति वर्ग किमी. है।
- लिंग अनुपात कुल आबादी में प्रति 1000 पुरुषों की तुलना में महिलाओं की संख्या के रूप में परिभाषित किया गया है। भारत में लिंग अनुपात प्रतिकूल है। यह 2001 की जनगणना के अनुसार 933 है। महिलाओं को सशक्त बनाकर लिंग अनुपात में सुधार किया जा सकता है।
- भारत की जनसंख्या को मुख्य रूप से तीन आयु समूह में बांटा गया है, (i) बच्चों (0- 14 वर्ष), (ii) वयस्कों (15-60 वर्ष) और (iii) वृद्धों (60 वर्ष से अधिक)। बच्चे और वृद्ध मिलाकर निर्भर जनसंख्या है जो कुल जनसंख्या के 43 प्रतिशत है।
- एक जागृत समाज के लिए साक्षरता एक महत्वपूर्ण सूचक है। जनगणना के अनुसार सात वर्ष और उससे ज्यादा आयु के लोगों को पढ़ने और समझने के साथ लिखने में सक्षम होना चाहिए। हमारे देश में साक्षरता दर में बहुत सुधार हुआ है। यह 1951 में मात्र 18.33 प्रतिशत था जो 2001 में बढ़कर 65.37 प्रतिशत हो गया है। केरल में उच्चतम साक्षरता दर 90.86 प्रतिशत है।
- राष्ट्रीय जनसंख्या नीति का मुख्य उद्देश्य जन्म और मृत्यु दर को कम करने, परिवार कल्याण, जनसंख्या स्थिरकरण आर्थिक विकास, सामाजिक विकास और पर्यावरण संरक्षण द्वारा लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार है। जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने हेतु उचित निवेश करके, हमारी बड़ी आबादी को देश के उत्पादक संसाधन के रूप में तब्दील किया जा सकता है।

पाठांत प्रश्न

1. लिंग अनुपात को परिभाषित करें। भारत में लिंग अनुपात प्रतिकूल क्यों है?
2. जनसंख्या वृद्धि दर को परिभाषित करें और इसके गणन की विधि समझाइये।

3. हम भारत की उम्र संरचना के आंकड़ों से क्या निष्कर्ष निकाल सकते हैं?
4. विशाल जनसंख्या को हम किस तरह संसाधन के रूप में बदल सकते हैं?
5. निम्नलिखित शब्दों को परिभाषित करें :
 - (i) जनसंख्या का घनत्व
 - (ii) जन्म दर, मृत्यु दर और वृद्धि दर.
 - (iii) साक्षरता
6. राष्ट्रीय जनसंख्या नीति को समझाइये ।
7. महिला सशक्तिकरण का क्या मतलब है? महिला सशक्तिकरण कैसे पूरे समाज/ समुदाय को सशक्त करता है?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

14.1

1. कुछ जिसे इस्तेमाल तथा पुनः इस्तेमाल किया जा सकता है ।
2. शिक्षा, स्वास्थ्य और पोषण, विशेष प्रशिक्षण.

14.2

1. पश्चिम बंगाल ।
2. (द) 300 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी
3. (i) औद्योगीकरण, (ii) शहरीकरण, (iii) रोजगार के अवसर, (iv) परिवहन और संचार के साधन
4. (i) ऊबड़ खाबड़ स्थलाकृति
- (ii) कठोर जलवायु हालत

14.3

1. (स) 20 प्रति हजार
2. (स) उच्च जन्म दर और निम्न मृत्यु दर
3. वर्ष 1921 में जनसंख्या में कमी दिखाता है लेकिन उसके बाद यह लगातार बढ़ रहा है ।

14.4

1. (स) 933

2. (v) 27.8

3. सरकार निर्भर आबादी के कल्याण के लिए सरकार को बड़ा निवेश करना पड़ता है। इसलिए देश में अधिक से अधिक विकास कार्यों के लिए कम धन उपलब्ध होता है।

4. (i) महिलाओं के खिलाफ भेदभाव।

(ii) महिला भ्रूण हत्या और शिशु हत्या।

14.5

वर्ष	(अ) घनत्व	(ब) घनत्व में दशकीय बदलाव	(स)

1951	87		जनसंख्या घनत्व की प्रवृत्ति में लगातार वृद्धि

1961	131	44	

1971	181	50	

1981	236	55	

1991	299	63	

2001	376	77	

सामाजिक विज्ञान का पाठ्यक्रम माध्यमिक स्तर पर

मानव समाज का अध्ययन आपने आप में जटिल है। यह अध्ययन सामाजिक सम्बन्धों नेटवर्क है। समाज को भलीभाँति समझने के लिए अनेक विषयों के तथ्यों की जानकारी आवश्यक है। अतः सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम की एकीकृत व समन्वित पद्धति के अन्तर्गत मानव-विज्ञान समाजशास्त्र, इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र तथा राजनीति विज्ञान आदि की जानकारी व ज्ञान आवश्यक है।

सामाजिक विज्ञान छात्रों एवं छात्राओं के ज्ञान बोध तथा समझने की क्षमता द्वारा लाभान्वित होने के लिए ऐतिहासिक, सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा समाज के भौतिक पहलुओं की खोज का प्रयास करता है। यह ज्ञान, बोध तथा जीवन की वास्तविक स्थितियों के बीच सम्बन्ध स्थापित करने में सहायता करता है। यह अनुभावात्मक अधिगम छात्र/छात्राओं में महत्त्वपूर्ण मूल्यों का विकास कर उन्हें उत्तरदायी नागरिक बनाने में सहायता करता है। यह शिक्षार्थियों को विकास एवं राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में प्रभावी ढंग से भागीदारी व सहायक बनने के लिए प्रेरित करता है।

उद्देश्य

पाठ्यक्रम का लक्षण है कि :

- हमारी पिछली पीढ़ियों के अनुभवों एवं संघर्षों से समुचित शिक्षा ली जाए;
- देश के संसाधनों का विवेकपूर्ण प्रयोग तथा उन्हें सुरक्षित रखा जाए;
- इस तथ्य को स्थापित करना कि भारत में कार्यरत लोकतन्त्र हमारे संविधान में वर्णित मूल्यों द्वारा प्रेरित है; समकालीन पर जानकारी एकत्रित कर इन समस्याओं के समाधान में प्रत्येक नागरिक के योगदान की पहचान की जाए ।

मूल्यांकन

निर्माणात्मक और सारांशात्मक दोनों ही प्रकार के मूल्यांकन का प्रयोग किया जाना आवश्यक है। निर्माणात्मक अर्थात् समय-समय पर होने वाला मूल्यांकन टीएमए के रूप में किया जाएगा और पाठ्यक्रम के अन्त में बाह्य परीक्षा जो वर्ष में दो बार अर्थात् मार्च एवं अक्टूबर में 100 अंकों के पेपर के दो रूप में होगा। इसी प्रकार तीन बार 20,20 अंकों के टीएमए भी होंगे। इन दो के अतिरिक्त स्वयं मूल्यांकन पाठगत प्रश्नों, पाठान्त प्रश्नों तथा विभिन्न गतिविधियाँ भी प्रत्येक अध्याय का अभिन्न हिस्सा होंगे।

मॉड्यूल 1 : भारत तथा विश्व विभिन्न युगों में

अध्ययन अवधि : 75 घण्टे अंक : 32

उपागम : इस मॉड्यूल का लक्ष्य शिक्षार्थियों को विभिन्न युगों में भारत तथा विश्व के निर्माण व विकास से परिचित कराना है। नीचे दी गई घटनाएँ तथा परिक्रियाएँ नई राजनीतिक तथा आर्थिक शक्तियों का प्रतिनिधित्व करती हैं यद्यपि वे एक दूसरे से पूर्णतः भिन्न हैं। एक ओर जहाँ फ्रांस क्रान्ति ने उदारवाद तथा लोकतन्त्र को प्रोत्साहित किया, दूसरी ओर रूस की क्रान्ति ने समाजवादी विचारों को सृजित तथा कार्यान्वित किया, जर्मनी में नाजीवाद ने लोकतन्त्र तथा समाजवाद दोनों को ही नकार दिया। उस अध्ययन का उद्देश्य छात्र तथा छात्राओं को भारत पर उपनिवेशवाद के प्रभाव के साथ-साथ समाज सुधार तथा ब्रिटिश शासन के विरुद्ध प्रतिरोध एवं भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन के उद्भव विकास से पूर्ण रूपेण परिचित कराना है। यह दिखलाता है कि किस प्रकार लोकप्रिय प्रभुसत्ता तथा समान नागरिकता की धारणा, स्वतन्त्रता संघर्ष द्वारा विकसित की गई थीं। राष्ट्रीय संघर्ष में भाग लेने वाले नेताओं एवं सहभागियों द्वारा भारत के भविष्य सम्बन्धी दृष्टिकोणों से भी भलीभाँति

परिचित कराना है। पाठों की विषय वस्तु का प्रस्तुतिकरण उपर्युक्त उदाहरणों, गतिविधियों, सर्वेक्षणों, स्थिति अध्ययन (केस स्टडी) इत्यादि के माध्यम से जीवन कौशलों जैसे चिन्तन, सम्वाद और बातों कौशल के विकास पर विशेष ध्यान देगा।

सामाजिक विज्ञान की प्रस्तावना

1. प्राचीन विश्व
2. मध्यकालीन विश्व
3. आधुनिक विश्व – I
4. आधुनिक विश्व – II
5. भारत पर ब्रिटिश शासन का प्रभाव : आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक (1757-1857)
6. औपनिवेशिक भारत में धार्मिक एवं सामाजिक जागृति
7. ब्रिटिश शासन के विरुद्ध लोकप्रिय जन प्रतिरोध
8. भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन

मॉड्यूल II : भारत : प्राकृतिक पर्यावरण संसाधन तथा विकास

अध्ययन अवधि : 64 घण्टे अंक : 27

उपागम : इस मॉड्यूल की रूपरेखा, शिक्षार्थियों को प्राकृतिक वातावरण, संसाधनों एवं विकास के पारस्परिक सम्बन्धों से परिचित कराने के उद्देश्य से तैयार की गई। यह मॉड्यूल शिक्षार्थियों को पर्यावरणत था इसके मौलिक तत्वों एवं इसकी प्रगतिशीलता को समझने के योग्य बनने का प्रयास करता है। यही नहीं, यह पर्यावरणीय विज्ञान के सन्तुलन को निर्धारित एवं प्रकाशित करता है ताकि सम्पूर्ण जीवन जिसका मानव एक इकाई मात्र है वह पृथ्वी पर न केवल अपना अस्तित्व बनाए रखे अपितु समृद्ध भी हो।

इस मॉड्यूल की रूप रेखा शिक्षार्थियों को प्राकृतिक संसाधन आधार तथा सतत् पायेगी वैज्ञानिक विकास की अवधारणा से परिचित कराती है। यह मुख्यता, अनेक प्राकृतिक तथा मानवकृत संसाधनों के वितरण, उपयोग तथा प्राकृतिक वातावरण के संरक्षण एवं संचालन की आवश्यकता को उजागर करता है। इस मॉड्यूल का विकास भारत के सन्दर्भ में शिक्षार्थियों को देश की भौतिक और सांस्कृतिक विभिन्नताओं तथा उसमें निहित एकात को समझाने के लिए किया गया है। भौतिक विभिन्नताओं में स्थल आकृतियाँ जलवायु, मिट्टी, वनस्पति तथा वन्य जीवन आदि सम्मिलित हैं। सांस्कृतिक पहलुओं में भारत के सन्दर्भ में संस्कृति का अर्थ सांस्कृतिक विभिन्नताएँ और भौतिक वातावरण से इसके सम्बन्ध सन्निहित हैं। इसमें देश की बहुल प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक विरासत व परम्परा जिसे भविष्य की आवश्यकताओं के लिए सुरक्षित रखना है, पर विशेष एवं महत्वपूर्ण बल दिया गया है। इस नई पाठ्यसामग्री का प्रस्तुतिकरण व विकास उपर्युक्त उदाहरणों गतिविधियों, सर्वेक्षणों, केस, स्टडी इत्यादि के माध्यम से किया गया है ताकि शिक्षार्थियों चिन्तन, सम्वाद और वार्ता जैसे जीवन कौशलों का विकास किया जा सके।

1. भारत का भौतिक भूगोल
2. जलवायु
3. जैव विविधता
4. भारत में कृषि
5. यातायात तथा संचार के साधन

6. जनसंख्या हमारा प्रमुख संसाधन

मॉड्यूल III : लोकतन्त्र की कार्यप्रणाली

अध्ययन अवधि : 68 घण्टे अंक : 28

उपागम : इस मॉड्यूल की रूप रेखा के अन्तर्गत एक अच्छे नागरिक, उसके अधिकारों एवं कर्तव्यों तथा राज्य और नागरिकों के पारस्परिक सम्बन्धों की विषयवस्तु को समाजित किया गया यह कल्याणकारी राज्य की संरचना और कार्यप्रणाली को उजागर करता है तथा इसके साथ ही शिक्षार्थियों को सरकार के निम्नतर लेकर उच्चतम तक के विभिन्न स्तरों से परिचित कराने का प्रयास करता है। स्थानीय स्तर पर तीन संस्थाओं का वर्णन किया गया है पंचायती राज, नगरीय तथा जिला प्रशासन। इस के पश्चात् दो अन्य स्तर सरकारी राज्य तथा केन्द्र सरकार की विस्तृत व्याख्या की गई है। पाठों की विषय-वस्तु प्रस्तुतिकरण उपयुक्त उदाहरणों गतिविधियों के माध्य से जीवन कौशलों जैसे चिन्तन, सम्वाद व वार्ता समस्या समाधान जैसे जीवन कौशलों के विकास को विशेष महत्त्व देते हुए किया गया है।

1. संवैधानिक मूल्य तथा भारत की राजनीतिक व्यवस्था
2. मौलिक अधिकार तथा मौलिक कर्तव्य
3. भारत एक कल्याणकारी राज्य
4. स्थानीय शासन तथा क्षेत्रीय प्रशासन
5. राज्य स्तर पर शासन
6. केन्द्रीय स्तर पर शासन
7. राजनीतिक दल तथा दबाव समूह
8. जनता की सहभागिता तथा लोकतान्त्रिक प्रक्रिया

मॉड्यूल IV: समसामयिक भारत : मुद्दे एवं चुनौतियाँ

अध्ययन अवधि : 32 घण्टे अंक : 13

यह मॉड्यूल देश के भीतर तथा बाहर राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक चुनौतियों की पहचान कराने का प्रयास करता है। शिक्षार्थियों को राष्ट्र के समक्ष व्याप्त समस्याओं से अवगत करना, आवश्यक ही नहीं अपितु अनिवार्य हैं। पाठों की विषय वस्तु का प्रस्तुतिकरण उपयुक्त उदाहरणों, गतिविधियों सर्वेक्षणों, केस स्टडी इत्यादि के माध्यम से विविध जीवन कौशलों जैसे सहनशीलता, समस्या समाधान, चिन्तन, वार्ता आदि को विशेष रूप से ध्यान में रखकर किया गया है।

1. भारतीय लोकतन्त्र के समक्ष चुनौतियाँ
2. राष्ट्रीय एकीकरण तथा पंथ निरपेक्षता
3. सामाजिक आर्थिक विकास तथा अभावग्रस्त समूहों का सशक्तीकरण
4. पर्यावरणीय क्षरण तथा आपदा प्रबन्धन
5. शान्ति और सुरक्षा

मॉड्यूल नं.	मॉड्यूल का नाम	अंक/ मूल्य	अध्ययन के घण्टे
मॉड्यूल I	भारत तथा विश्व विभिन्न युगों में	32 अंक	76 घण्टे
मॉड्यूल II	भारत : प्राकृतिक पर्यावरण संसाधन तथा विकास	27 अंक	64 घण्टे
मॉड्यूल III	लोकतन्त्र की कार्यप्रणाली	28 अंक	68 घण्टे
मॉड्यूल III	समसामयिक भारत : मुद्दे एवं चुनौतियों	13 अंक	32 घण्टे
कुल जोड़		100 अंक	240 घण्टे